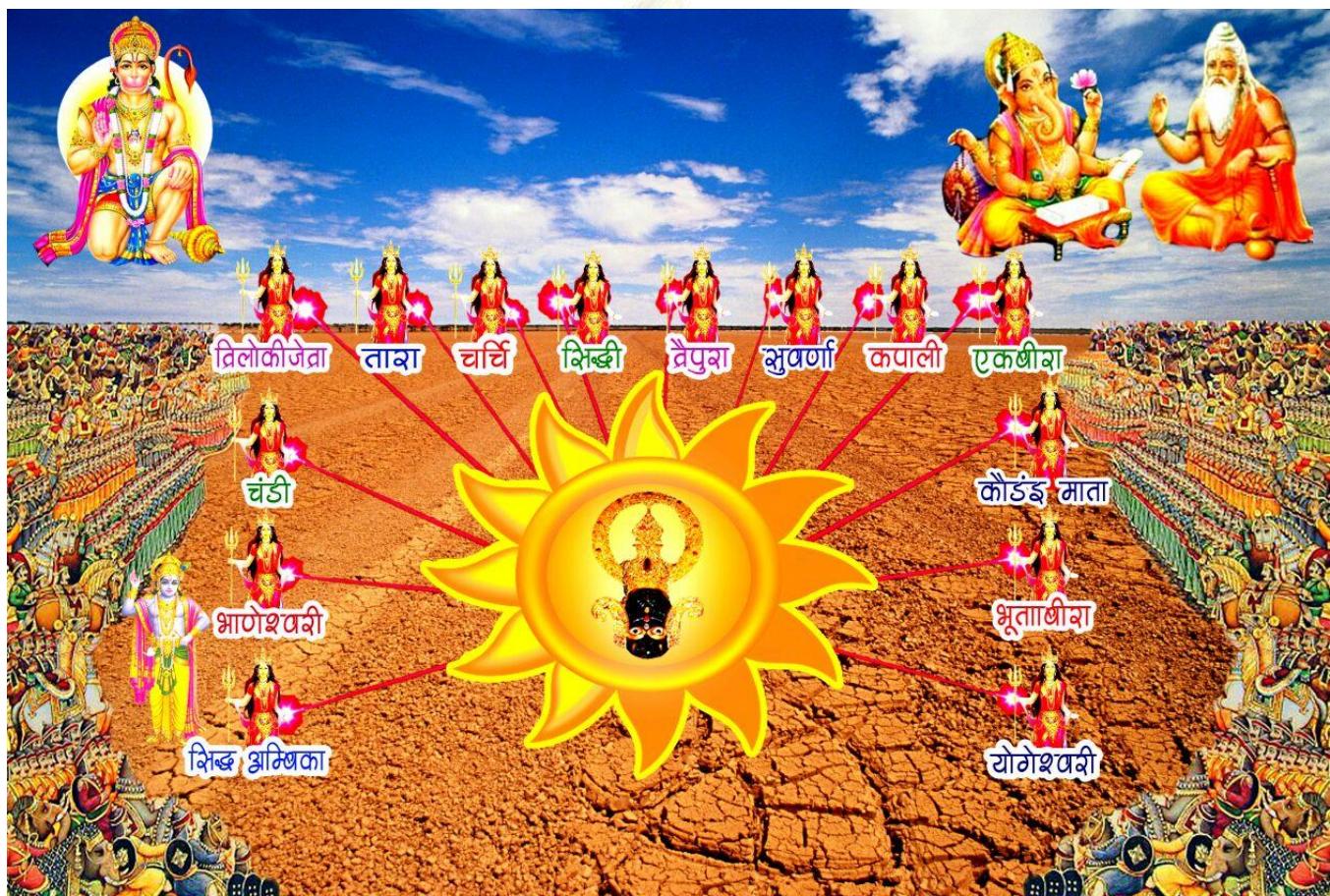


ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति



भगवान् श्री कृष्ण की उपरिथिति में पांडव कुलदीपक घटोत्कच नंदन
गीर षष्ठीक के शीश को अमृत किंचन करती हुए अभी चौकह देखियाँ हैं ।

॥ श्री श्याम सरेहा संग्रह समिति ॥

NO.	BHAJAN NAME	PAGE NO.
1.	शेंदूर लाल चढायो अच्छा गजमुखको	16
2.	सिन्दूरी चोलो, बजरंग बाला कै लागै सोवणो	17
3.	कईया सरसी म्हारा श्याम	18
4.	तुमसे ही मिली खुशियाँ, तुमसे जिंदगानी है	19
5.	श्याम मरै मन की पीड़ा, थानै ही सुणाऊँगा	20
6.	श्याम भगत थारी करै, सतगुरु नितकी याद	21
7.	बृज के ग्वाले मुरलीवाले, मुरली मधुर सुणादे तूं	22
8.	जहाँ बिराजे शीश का दानी	23
9.	दिखला दयो थे दातारी	24
10.	बणजा रै तूं श्याम कै दीवानो	25
11.	सांवरिया रै, एक झलक तो दिखादे	26
12.	श्याम ध्वजाबंध धारी, हमारी सुध कब लोगे	27
13.	हे गिरधर गोपाल कन्हैया, तेरो एक सहारो है	28
14.	जीवन दिया है आपने उसका है शुक्रिया	29
15.	यो पाण्डवकुल अवतार, बड़ो अलबेलो है	30
16.	ग़ज़ब ढा रही है, नज़ाकत तुम्हारी	31
17.	ये आँख लड़ गई है, दिल में मेरे कन्हैया	32
18.	दिलदार कन्हैया की फिर-फिरके यादें आती हैं	33
19.	भगत से बड़ा नहीं भगवान	34
20.	हे गोवर्धन गिरधारी, मन्नै थारो भरोसो भारी	35
21.	सेवकियो अरज़ गुजारै है	36
22.	डगमग मेरी नैया है, और दूर खिवेया है	37
23.	श्री श्याम पथारया उत्सव की शोभा है सुहावणी	38
24.	उत्सव म्है मनावां हां थानै म्है बुलावां हां	39
25.	कैंया रीझौ श्याम, रिझाणो कोनी जाणू मैं	40
26.	हो श्री श्याम महोत्सव आयो गैरी खुशियाँ ल्यायो है	41
27.	आज थारो गुणगान करां हां श्यामबिहारी आओ ना	42
28.	स्वीकारो जी स्वीकारो श्याम निमंत्रण स्वीकारो	43
29.	हसनपुरा मं आसी श्याम चालो जी आपां मिल आवां	44
30.	मनगरियो बाबो श्याम, पधारण वालो है	45
31.	बाबा कुछ ना कुछ तो बोलो जी	46

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

32.	लीलो सो घोड़ो बाबा थारो नाचणो जी	47
33.	यो श्याम ध्वजाबंध धारी जी, खाटू को	48
34.	बाँसुरीवाले तूं है कहाँ नैन व्याकुल हैं आजा यहाँ	49
35.	बंशी चुभीली है, नैणा कटीले तुम भी कन्हैया, गङ्गा ढां रहे हो	50
36.	श्याम थारो नाम, लागै भगतां नै प्यारो है	51
37.	श्याम मेरे आ जाओ तेरी दरकार है	52
38.	गुदगुदी याद में तेरी होती है कभी तो खूब मजा आता है	53
39.	मन की बातां सांवरियै नै आज सुणाकै देखले	54
40.	कन्हैया से यारी पड़ी बहुत भारी	55
41.	बांकै बिहारी हे गिरधारी, बोलो ना	56
42.	श्रृंगार देखो रे मेरे खाटूवाले श्याम को	57
43.	मेरी आँखों में है आँसू ये आँसू पौँछ दो कान्हा	58
44.	आणो पड़सी हे मनमोहन, थानै भगत बुलावै है	59
45.	थांसै विनती करां हां बारम्बार, सुणो जी सरकार	60
46.	बेलै को इक गजरो दे दे, यै ले नकदी दाम	61
47.	बीच मझधार हाथों, छूटी पतवार बाबा	62
48.	काम पटाओ, सारै जग का, देखो ना	63
49.	जब से मिली शरण, कि मेरे दिन बदल गये	64
50.	घट-घट की तूं तो जाने है माँ, तुझे क्या मैं कैसे बयान करूँ	65
51.	खाटू के बाबा श्यामजी, मेरी रखोगे लाज	66
52.	हे श्याम मुरलीवाले, मुझको गले लगाले	67
53.	ऐसा क्या मुझसे गुनाह हो गया है मेरा कन्हैया, खफा हो गया है ॥	68
54.	नैनों की पुतलियों में, घनश्याम की ज्योति है	69
55.	ओ रे कन्हैया, किसको कहेगा तूं मैया	70
56.	मिलके खुशियाँ मनाओ रे आया श्याम सलोना	71
57.	खाटूवाले श्याम धणी की, हो रही जै-जैकार	72
58.	पार करो मेरा बेड़ा ओ बाबा पार करो मेरा बेड़ा,	73
59.	म्हारो बेड़ो पार लगा दीज्यो, खाटुवाला श्याम	74
60.	कलियुग के घोर अंधेरे में	75
61.	बैं मुरलीमनोहर नै, मेरी पीड़ सुणाऊँगा	76
62.	खाली झोली लेकर आयो, झोली भरदे	77
63.	ये प्रीत तुम्हारी श्याम हमें नहीं पोसाती है	78
64.	एक बार आजा रे तुझको निहार ल्यूँ	79
65.	ऐ मुरलीवाले याद तेरी सीने से लगाये बैठे हैं ॥	80
66.	झूला झूलण आन पथारो, लीले के असवार	81

॥ श्री श्याम संवेद संग्रह समिति ॥

67.	या धोनी-धोनी रात, बाबा थारी ग्यारस की	82
68.	तुम्हे इस दिन की खातिर कन्हैया आना ही होगा	83
69.	श्री श्यामबिहारी को, बड़ो दरबार निरालो है	84
70.	श्री श्याम धणी का जैकारा प्रेम से बोल तूं दुबारा	85
71.	कन्हैया तूं ही मेरे, दिल की कली है,	86
72.	कन्हैया हिंडो घाल्यो रे हरियल बागा मं	87
73.	ऐसा मौका मिला है दीवाने को चल पड़ा, कांवरिया, शिवधाम	88
74.	तेरी चौखट पे ओ बाबा, जिन्दगी सजने लगी	89
75.	शुकर सांवरे तेरा शुकर सांवरे	90
76.	है बरसे आसमां इतना तो फिर सुखी जमीं क्यूँ है	91
77.	कलयुग का हो अवतारी लीलै घोड़े की सवारी	92
78.	श्याम थारी ओल्यूं, आवै जी म्हानै रात-दिनां ना चैन पड़े	93
79.	बोलो जी दयालु दिलदार के करूँ	94
80.	तुम्हारी मेरी बात, के जाणेगो कोई	95
81.	फरियाद करता हूँ, दिल साध करता हूँ	96
82.	कन्हैया, ओ कन्हैया मेरी नैया ओ कन्हैया, करदी तेरे हवाले	97
83.	ओ साँवरिया आँखां खोल तेरा सेवक अरज़ गुजारै	98
84.	आँखां रो काज़ल थारो	99
85.	छोटी सी थारी आंगळी जी	100
86.	पता कुछ नहीं है, कहाँ जा रहा हूँ	101
87.	बाबा ये नैया कैसे डगमग डोली जाये	102
88.	हो जाओ तैयार खाटू जाने के लिये	103
89.	तेरे से क्या छुपा है, मेरा सवाल क्या है	104
90.	आजा मेरे कन्हैया बिन मांझी के सहारे	105
91.	पी ले ज़रा, पी ले ज़रा	106
92.	सुनले कन्हैया, अर्जी हमारी	107
93.	हमको तो आसरा है	108
94.	चतुर चोर गोपाल, पहरे गळ बैजन्ती माल	109
95.	इन मन की मुरादों का, कोई ओड़ नहीं मिलता	110
96.	बिन हरिनाम गुजारा नहीं रे बावरे मन किनारा नहीं	111
97.	ओ खाटू वाले श्यामा मुझे तेरा एक सहारा	112
98.	सरकार सांवरे एक नजर इस दर्दी को भी देख ज़रा	113
99.	सारी दुनिया जान गई मैं नौकर हूँ दरबार का	114
100.	जीती हुई बाजी को, तूं हार नहीं जाना	115
101.	नैन से नैन मिलाते रहो मन मोरिया को नचाते रहो	116
102.	मुझे तुम से मिला है प्यार तूने इतना दिया दातार	117
103.	सुख के साधन के लिये, क्यूँ खुद को छलता है	118
104.	मुझे श्याम सांवरे का दरबार मिल गया है	119

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

105.	सब कुछ बदल जाता है यहाँ पर	120
106.	कुण सी घड़ी मं थांसै आँख लड़ाई	121
107.	घनश्याम तुम्हारी चितवन मं जादू है मेरै, जचगी मन मं ॥	122
108.	ये अँधेरा है ये तन्हाई है तेरी फिर-फिर के याद आई है	123
109.	रुस्पोड़ा भगतां नै, सांवरियो मनाय रह्यो	124
110.	श्याम बाबा का नजारा देखलो	125
111.	शीश के दानी, हमने तुमको दिल से अपना मान लिया है	126
112.	श्याम की नगरिया खाटू, उजागर जहान मं	127
113.	माँगा है मैंने श्याम से, वरदान एक ही	128 <small>॥ श्री श्याम इन्स्प्रेशन्स ॥</small>
114.	कान्हा मेरी लाज अनमोल है	129
115.	मुस्कान मोहन की, धड़कन मेरै दिल की	130
116.	खाली झोळी लेकर आयो	131
117.	टेर मेरी, सुणल्यो श्याम धणी	132
118.	लायक नहीं तेरे, फिर भी निभाते हो	133
119.	तूं सब जानता है, तुझे क्या बतायें	134
120.	श्याम बाबा तेरी उल्फत में मेरी	135
121.	सांवलिये तेरा मुझको, दीदार हो जाये	136
122.	नैनों में श्याम बाबा की, सूरत समा गई	137
123.	श्याम तेरे चाहने वालों की क्या पहचान है	138
124.	संसार समन्दर में, डगमग मेरी नैया है	139
125.	कई जुग बीतग्या, तेरै इंतजार मं	140
126.	प्रीत हो गई श्याम से, सखी सुनो-सुनो	141
127.	रिमझिम-रिमझिम आँखां सै आँसूड़ा बरसे	142
128.	यादां आई जी भगत थारी यादां आई जी	143
129.	तेरी मीठी सी मुस्कान रूप माधुरी को पान	144
130.	श्यामजी रंगीला मोहे, शरण में लीजिये	145
131.	पार करो मेरा बेड़ा ओ बाबा	146
132.	घनश्याम तुम्हारी यादों में व्याकुलता बढ़ती जाती है	147
133.	तत्रै एक सवाली	148
134.	खाटुवाला श्यामजी थे, बड़ा ही सुहावणा	149
135.	श्याम बाबा तेरी याद आती रहे	150
136.	लीलै घोड़े वालो मेहरबान चाहिये	151
137.	नैनों से कर इशारा पागल बना दिया	152
138.	तुम्हारे दर पे आये हैं प्रभु कुछ बात करनी है	153
139.	माखनचोर कन्हैया तेरो, काँई श्याम इरादो है	154
140.	हे बांकेबिहारी लाल मत्रै थारी याद सतावै है	155
141.	श्री श्याम रंगीला थां पर टिकायो दाता जीव नै	156
142.	बेदर्द ये ज़माना ऐ बांसुरीवाले तूं	157

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

143.	अगर उसकी दया तूं चाहता है बावले मन	158
144.	आयो सांवलियो सरकार लीलै पै चढ़के	159
145.	ओ जी ओ मिजाजी म्हारा सांवरिया थारी बाबा ओब्बूं आवै	160
146.	बरसां सं यो दिन आयो	161
147.	खाटू के बाबा श्याम मुझे अपनी शरण में ले लेना	162
148.	डारो नहीं डारो, रंग रसिया श्याम	163
149.	होली रे होली, देखो खाटू की होली	164
150.	मंदिर मं बड़ग्यो होली खेलण सैं डरतो सांवरो	165
151.	चालो खाटूधाम फागणियो आयो है	166
152.	आ खाटू के श्याम बुलाते भक्त तुझे धनश्याम	167
153.	ठाठ हैं निराले खाटू के दरबार में	168
154.	आयो फागण मेलो, बाबो मारै हैलो	169
155.	गाजे-बाजे सं बुलाले बाबा श्याम	170
156.	नैण मिलाले खाटूवाले दीनबंधु भगवान	171
157.	हो बाबा श्यामजी को चाकरियो पुराणो	172
158.	सूरत की रूप की प्रभु, तारीफ़ क्या करूँ	173
159.	दीनबंधु दीनानाथ, मेरी सुध लीजिये	174
160.	तेरे से क्या छुपा है, मेरा सवाल क्या है	175
161.	मुझे दीन बंधु निभाना पडेगा	176
162.	लीलै घोड़े रा असवार, करां थारी मनुहार	177
163.	कन्हैया तुमको देखकर दिल झूम जाता है	178
164.	यादां आई है, बैं सांवरियै सरकार की	179
165.	ज्यूँ-ज्यूँ कार्तिक बीत्यो जावै	180
166.	ये दिल बड़ा दीवाना, कहना मानता नहीं	181
167.	दिल दांव पै लगायो नादान के करयो तूं	182
168.	ऐजी म्हरै श्यामधर्णी खाटूवाले को	183
169.	मुझे श्यामसुन्दर रिझाना है तुमको	184
170.	एहसान तेरा, एहसान तेरा मैं भूल ना जाऊँ, इतनी कृपा कर	185
171.	श्याम का नाम मुझे मस्त बना देता है	186
172.	मेरा श्याम रंगीला	187
173.	चलो ना सांवरे के दर, वहीं दिन बीत जायेंगे	188
174.	मंदिर मस्जिद ढूंढे ढूंढे गुरुद्वारे में।	189
175.	मुझ पर मेरे बाबा, इतना सा उपकार हो जाये	190
176.	मेरे भोले दानी, शरण तेरी आया	191
177.	प्यासे की प्यास बुझा देना	192
178.	थारी दुनिया सैं हार, खाई मैं तो सरकार	193
179.	बाबा मतना लोग हंसावै रे	194
180.	खाटू को श्याम बिहारी रे	195

॥ श्री श्याम सरेषा संघ समिति ॥

181.	तूं तो सब जाणै रे, तेरै सैं के छानी रे	196
182.	तेरी दृष्टि मैं दया की बाबा चाहूँ	197
183.	दर्शन को तेरे, आया बड़ी दूर से	198
184.	सांवरिया तुझसे रिश्ता, इतना खास हो जाये	199
185.	ग्यारस की है रात, आज्या लीले चढ़के	200
186.	श्यामसुन्दर महर की नजर	201
187.	साँवरिया रे एक झलक तो दिखादे	202
188.	ये जो मेरे दिल की बातें, तूं कहे तो मैं बतादूँ	203
189.	श्याम सरकार है, मेरो दिलदार है	204
190.	गुरु बिन ज्ञान, ज्ञान बिन भक्ति	205
191.	श्री श्याम भरोसै छोड़ी है नैया भव कै बीच मं	206
192.	हे श्याम मुरलीवाले, मुझको गले लगाले	207
193.	चौखट पे तेरी आँखां नमी है	208
194.	इस दिल के आइने में, तस्वीर यार की	209
195.	सांवरे की महफिल को, साँवरा सजाता है	210
196.	सारी दुनिया रही छै बुलाय	211
197.	संसार समंदर के मांझी ज़रा थाम लेओ पतवार, श्यामसुन्दर	212
198.	मुस्कान मोहन की, धड़कन मेरै मन की	213
199.	श्री श्याम रंगीला थां पर टिकायो, दाता जीव नै	214
200.	बैं श्यामबिहारी सैं मेरो जन्म-जन्म को नातो है	215
201.	लीलै घोड़े का हाँकणिया ठहर ज़रा गम खाले तूं	216
202.	ओ मोहन आओ तो सही, गिरधर आओ तो सही	217
203.	मेरे यार बाँसुरीवाले तेरी यादां करके हार गयो	218
204.	हर घड़ी श्याम दिल में रहा कीजिये	219
205.	गाड़ीवाले मन्नै बिठाले, इक बर गाड़ी थाम	220
206.	श्याम-श्याम रटे जाओ, यही एक सार है	221
207.	एक तो अभिमान से दूजे झूठी शान से	222
208.	बेदर्द ये ज़माना ऐ बाँसुरीवाले तूं मुझको नहीं भुलाना	223
209.	श्याम की नगरिया खाटू, उजागर जहान मं	224
210.	चौखट पे तेरी आँखां नमी है	225
211.	तूं ही साँवले मेरा सरकार है	226
212.	थोड़ी सी देर डटज्या मेरो	227
213.	यो कुण सिणगारयो	228
214.	खाटूवाले तूं मुझको बुलाले, चरण की छाँव में	229
215.	बाबा श्याम, मेरो काम, थानै ही पटाणो है	230
216.	श्री श्याम रंगीला लीलो यो घोड़ो थारो नाचणो	231
217.	आयो हूँ शरण मं तेरी, मन्नै अपनाय ले	232
218.	श्री श्यामबहादुर जैसा अब कोई भगत ना दीखता	233

ॐ श्याम सरेषा संघ समिति

219.	नैया हमारी, सम्हालो मुरारी	234
220.	ॐ श्री श्याम देवाय नमः	235
221.	खाटूवाला-खाटूवाला, ओ लीले घोड़े वाला	236
222.	बीच भंवर में है, मेरी नैया कन्हैया पार करो	237
223.	करता हूँ नमन स्वीकार करो	238
224.	श्याम थारी शोभा न्यारी जी	239
225.	ओ मस्त नजर वाले, तेरी याद सताती है	240
226.	मन मेरा मन, रहे तुझमें मगन	241
227.	यूँ अपने चाहने वालों को तरसाना नहीं अच्छा,	242
228.	दिलदार कन्हैया से, नाता जो पुराना है	243
229.	तूं श्याम रिझा बंदे तेरी बिगड़ी संवर जाये	244
230.	आज भगत भगवान सैं पूछै, मीठी-मीठी बात	245
231.	नेह थांसै लगायो, काँई बदलै मं पायो	246
232.	मेरी कोई नेक कमाई, दर पे तेरे ले आई	247
233.	लीले घोड़े वाला तेरी, के गजब सवारी है	248
234.	शीश के दानी, महा बलवानी	249
235.	मैं के बोलूँ श्यामधर्णी तन्नै सब बातां का बेरा सै	250
236.	दर्शन देओ श्री श्याम, तुम बिन कौन हमारा	251
237.	ये क्रम चल रहा है जहां का सब झूँठे रिश्ते-नाते	252
238.	बोलो तो सही, कुछ तो बोलो तो सही	253
239.	म्हारी सांवरे सैं लागी प्रीत	254
240.	मै हूँ तुम्हारा तुम हो हमारे	255
241.	हो रहो बाबा की नगरी मं	256
242.	चरणों का पुजारी हूँ, तेरे दर का भिखारी हूँ	257
243.	दुनिया बदल दी मेरी, दुनिया बदल दी मेरी	258
244.	खाटू के बाबा श्याम, मुझे अपनी शरण में ले लेना	259
245.	ऐसा कौन गुनाह कर डाला, बृजभूषण गोपाल	260
246.	अरज सुनो मेरे सावरिया	261
247.	सच्चे हृदय से श्याम का सुमिरन किया करो	262
248.	कपटी को तेरे दर पे, इन्साफ नहीं मिलता	263
249.	माखनचोर कन्हैया तेरो, काँई श्याम इरादो है	264
250.	सारी दुनिया मं गूँजे थारो नाम	265
251.	जिद है कन्हैया बिगड़ी बनादो	266
252.	सुन्दर श्याम सलूणा तेरी	267
253.	मौहन कैंया मीट लगाई, थारी दासी मीरां बाई	268
254.	एक बार हमसे साँवरे, नजरें मिलाइये	269
255.	है मुरलीमनोहर मेरा, मैं हूँ मुरलीमनोहर का	270
256.	साँवरा तेरा जलवा निराला	271

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

257.	तेरा नाम हमने, जब भी लिया है,	272
258.	फेरूँ तेरी याद आई रे, मतवाला साँवरिया	273
259.	तेरे दर पे आ गये हैं, हे श्याम अब सम्हालो	274
260.	म्हानै बाबा आस थारी, छोटी सी अरदास म्हारी	275
261.	जो भी फर्माओगे, मुझे बतलाओगे	276
262.	खाटूवाले मुझे बुलाले, ये मेरी अरदास	277 वीर हनुमते नमः ॥
263.	लीलो तो घोड़ो श्यामजी, लेकर कै चाल्या जी	278
264.	बाबा जब भी जिसने, तेरा नाम पुकारा है	279
265.	कन्हैया से रिश्ता, पुराना बहुत है	280
266.	मैं हूँ शरण में तेरी, संसार के रचैया	281
267.	कन्हैया रुलाते हो, जी भर रुलाना	282
268.	फागण मास सुहाणो आयो	283
269.	करकै श्यामधणी को ध्यान, मिलके करल्यो खड्या निशान	284
270.	बाबा कै मेलै चालो जी, खाटू मं	285
271.	महीनो फागण को साँवरिया, इकबर नैन मिलालै रे	286
272.	आई भगतां की टोळी की टोळी खाटू कै दरबार	287
273.	बाबा श्याम को मै प्रेम सैं, निशान ल्याया रे	289
274.	पाछां जातां साँवरा, म्हारो जी दुःख पावै रे	289
275.	साँवरिया आपां होळी खेलां जी	290
276.	तेरे दिल से अपने दिल को जोड़ लिया है	291
277.	तुम झोली भरलो भक्तों, रंग और गुलाल से	292

॥ श्री श्याम सरेषा संघ समिति ॥

278.	घूँघरवाला बाल, शीश पर साफो करै कमाल धजाबंध धारी कै	293
279.	माता अंजनि के ओ लाडले हाजरी तू मेरी माँड ले	294
280.	श्यामा श्याम सलोनी सूरत पर श्रंगार बसन्ती है	295
281.	बाबा के सेवक बन बैठे, अब डरने की कोई बात नहीं	296
282.	मैं ना बोलूँगा, मुँह ना खोलूँगा	297
283.	कन्हैया मुरली बजाई कैसी राचणी	298
284.	मन बागां को मोरियो, तड़फ रह्यो मन मांही	299
285.	ओ गिरधारी ओ गोपाला, वो नटखट वो दीनदयाला	300
286.	वो लीलै घोड़े वाला, बाबा श्याम है कहाँ	301
287.	श्यामधनी के हाथों, में भगतों की डोर	302
288.	यों अपने चाहने वालों को, तरसाना नहीं अच्छा	303
289.	फागणियो नीड़े आय गायो जी, फागणियो	304
290.	सजने का है शौकीन, कोई कसर ना रह जाये	305
291.	तेरे दर पे आ गये हैं, हे श्याम अब सम्हालो	306
292.	बींटा कसल्यो भगतों, फागण मेलो नीड़े आग्यो रे	307
293.	प्यारो लागै ओ श्री श्याम, थारो केशरिया निशान	308
294.	दर्शन मिल जाये सरकार का, भूखा हूँ बाबा तेरे प्यार का	309
295.	बाबा श्याम, मेरो काम, थानै ही पटाणो है	310
296.	लेकर मोरछड़ी हाथां मं, तेरा सेवक नाचै रे	311
297.	हैलो आयो रे साथीड़ो, बाबा श्याम बुलायो रे	312
298.	चंग बाजण दयो साथीड़ो, आपां घूमर घालां रे	313

॥ श्री श्याम सरेहा संघ समिति ॥

299.	बेगो चाल रे, बाबा को खजानों, लुटणे वालो है	314
300.	लीलै पे बैठ्यो सरकार, लागै बनड़ो सो	315
301.	चालो खाटूधाम, फागणियो आयो है	316
302.	खाटू मं दरबार, लगाकर जग को पालणहार	317
303. ॥ श्री गणेशाय म् ॥	शिव भोले तेरे चरणों में, जबसे सर को झुकाया है	318 ॥ श्री श्याम सरेहा संघ समिति ॥
304.	पैदल आस्यां ओ साँवरिया थारी खाटू नगरी	319
305.	डोलै मत श्याम ज्यादा सज धज कर	320
306.	म्हारा श्याम रंगीला, पलकां उघाड़ो फागण आ गयो	321
307.	बाबा कै मेलै चालो जी, खाटू मं	322
308.	गजब ढा रही है, नज़ाकत तुम्हारी, फना कर दिया तूने, बांके बिहारी	323
309.	काळी कोसां सेती आयो, लिज्यो मुजरो	324
310.	श्याम तूने है इतना किया, सांवरे आपका शुक्रिया	325
311.	श्यामसुन्दर को जो देखा, खिल गई मन की कली	326
312.	ऐ जी घनश्याम थारी मुरली कामणगारी, म्हारा राज	327
314.	श्री श्याम सरोवर का जलवा ही निराला है	328
315.	छोड़ेंगे ना हम तेरा द्वार ओ बाबा, मरते दम तक	329
316.	खासो लाग्यो है दरबार, राच्यो नैणां मं सिणगार	330
317.	थां बिन म्हारी आँख्यां हो गई बावळी	331
318.	गुजरी है जो इस दिल पे, वो तुमको सुनाई है	332
319.	हम श्यामबिहारी के चेले हैं, बीत गये जुग दास पुराने	333
320.	खाटूवाले बाबा निराली तेरी शान	334

॥ श्री श्याम सेवा संघ "समिति" ॥

321.	मेरे घनश्याम, सहारा बण जाओ जी	335
322.	हे गिरधारी, कृष्ण मुरारी, नैया करदयो पार	336
323.	टाबरियां रो मान राखज्यो, खाटुवाळा श्याम जी	337
324.	एक यही मेरे दिल में, तमन्ना प्रभु, मैं तेरे ही गुणगान गाया करूँ	338
325. ॥ श्री गणेशाय ॥ म् ॥	आयेगा, आयेगा, आयेगा लीलै चढ़ साँवरा आयेगा	339 ॥ श्री योर हनुमते नमः ॥
326.	चरणों में तेरे, मिला जो ठिकाना, प्यासे को मानो, सावन मिला है	340
327.	तुमको हमारी सौगन्ध, तुमको मेरी दुहाई	341
328	बुला बुलाकर हार गया म्है, क्यूँ नहीं आवै रे	342
329.	मेरा श्याम बाबा, बड़ा लाजवाब है	343
330.	थारी बांकी अदा पर वारूँ प्राण	344
331.	लटक निराली, हे वनमाली, कैसे करूँ बखान	345
332.	मोटो थारो दरबार, सेवक आयो थारै द्वार, बाबा ध्यान रखना	346
333.	जी भरके तुम्हें देखा ही नहीं, जाने का अभी से सवाल नहीं	347
334.	सारी दुनिया मं गूँजे थारो नाम, खाटू का बाबा श्याम	348
335.	श्री श्याम रंगीला, थारी भी लीला अपरम्पार है	349
336.	श्यामसुन्दर को जो देखा, खिल गई मन की कली	350
337.	इस कृष्ण कन्हैया की, चौखट का दिल दीवाना है	351
338.	नैया पार लगादे बाबा, चरणां मं पड़ी	352
339.	म्हारै द्वारे एक दिन मोहन, आओ जी साँवरिया	353
340.	बनके जोगनिया, महलों की रानी, नाचे मीरां दीवानी	354
341.	धीरे से बोले बर्बरीक, माता के कान में, मैया तूं भेज दे	355

॥ श्री श्याम सरेहा संग्रह समिति ॥

342.	तेरे नाम का पुजारी आया, तेरे दर का भिखारी आया	356
343.	ओ मुहब्बत के मसीहा, दास को कुछ प्यार दे	357
344.	धन्य दुंढारो देश है, कोई धन-धन खाटूधाम	358
345.	सबकी जुबां पर एक ही नाम, तुम से बड़ा ना दानी श्याम	359
346.	नजरें मिलाके मुझसे, हे श्याम मुस्कुरा दो	360
347.	जीना है अगर सुख से, हँसते-हँसते जी ले	361
348.	दरबार में आकर दाता के हम दर्द सुनाना भूल गये	362
349.	श्यामजी रंगीला मोहे शरण में लीजिये	363
350.	थारी नगरी मं साँवरिया नाचूँ दोन्यू आंख्यां मीच	364
351.	हे गिरधर गोपाल मेरी सुध, बेगा लिज्यो जी	365
352.	चला भी आ ओ आज्या सांवरा खाटूवाले आजा तेरा लाल बुलाये	366
353.	मैया री मैया, एक खिलौना, छोटा सा दिलवा दे	367
354.	आज्या-आज्या रै सांवरिया, तेरी याद करूँ	368
355.	श्याम तेरे चाहने वालों की क्या पहचान है	369
356.	हमपे हैं तेरा उपकार ओ बाबा हम तो पले हैं, तेरी छाँव में	370
357.	तेरो साँचो दरबार, मेरा श्याम सरकार	371
358.	डोलै मत श्याम ज्यादा सज-धज कर	372
359.	म्हारी सांवरै सैं लागी प्रीत, जुलमण छूटै ना	373
360.	जो भी फर्माओगे, मुझे बतलाओगे	374
361.	मिलके खुशियां मनाओ रे, आया श्याम सलोना	375

॥ श्री श्याम सरेषा संघ समिति ॥

362.	दिन काटां गिण-गिण, थे ही बोलो थारै बिन	376
363.	सांवलिया सरकार द्वार पर दरदी आयो है	377
364.	लाखों को भव से आपने जब पार कर दिया	378
365.	ओ जी ओ गिरधारी नटवर नागरीया	379
366.	इस योग्य हम कहाँ है, भगवन् तुम्हें मनायें ॥ श्री गणेशाय नमः ॥	380 ॥ श्री योर हनुमते नमः ॥
367.	श्याम नै सुणादे, तेरै मन की बातां	381
368.	सांवरिया ओ सांवरिया, भा गई तेरी सुरतिया	382
369.	बजी घडावल बारै सैं, मन्दिर मं पड़ी पुकार, दर्दी हाजर है	383
370.	छुट्यो जावै रै साँवरा, यो धीरज म्हारो रे	384
371.	झूमो नाचो जी, है श्याम जनम दिन	385
372.	आणो पड़सी हे मनमोहन, थानै भगत बुलावै है	386
373.	कभी तो करोगे महर, श्याम हम पर	387
374.	मुरलीवाळो सांवरियो मन भा गयो	388
375.	श्याम मेरे आ जाओ, तेरी दरकार है	389
376.	बोलै नारी, सुणो पियाजी, मानो म्हारी बात, द्वारका थे जाओ	390
377.	हे हनुमान दयानिधान, कर थोड़ा एहसान रे	391
378.	ऐ जी म्हारै श्यामधणी खाटू वाळै को	392
379.	राम लक्ष्मण के संग जानकी	393
380.	मेरा तो तूं ठिकाना, मुरली बजाने वाले	394
381.	म्हारै साँवरिया री भोत मन मं आवै	395

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

382.	घनश्याम म्हारै हिवडै मं बस जाओ	396
383.	कन्हैया रुलाते हो, जी भर रुलाना	397
384.	म्हारो बेड़ो लगा दीज्यो पार, बावड़ी का बालाजी	398
385.	बजरंग बली, बजरंग बली	399
386.	बालासा थानै कुण सजायो जी <small>पृष्ठ ११</small>	400 <small>॥ श्री श्याम रुद्राक्ष उत्तम ॥</small>
387.	भक्ति और शक्ति का दाता, राम चरण से जिनका नाता	401
388.	श्याम का नाम मुझे मस्त बना देता है	402
389.		
390.		
391.		
392.		
393.		
394.		
395.		
396.	श्री श्याम सेवा संघ समिति	
397.	हसनपुरा, जयपुर	
398.		
399.		
400.		
401.		
402.		

ॐ श्री श्यामरैवा संघ समिति ॥

शेंदूर लाल चढायो अच्छा गजमुखको ॥
 दोंदिल लाल बिराजे सूत गौरीहरको ॥
 हाथ लिए गुड-लड्डू साईं सुरवरको ॥
 महिमा कहे ना जाय लागत हूँ पदको जय देव जय देव ॥
 ॥ जय जय श्री गणराज विध्यासुखदाता ॥
 ॥ धन्य तुम्हारा दर्शन मेरा मन रमता जय देव जय देव ॥

॥ जय जय श्री गणराज विध्यासुखदाता ॥
 ॥ धन्य तुम्हारा दर्शन मेरा मन रमता जय देव जय देव ॥

अष्टो सिद्धि दासी संकटको बैरी ॥
 विघ्नाविनाशन मंगल मूरत अधिकारी ॥
 कोटि सूरजप्रकाश ऐसी छबि तेरी ॥
 गंड-स्थल मदमस्तक झूले शाशिहारी जय देव जय देव ॥
 ॥ जय जय श्री गणराज विध्यासुखदाता ॥
 ॥ धन्य तुम्हारा दर्शन मेरा मन रमता जय देव जय देव ॥

॥ जय जय श्री गणराज विध्यासुखदाता ॥
 ॥ धन्य तुम्हारा दर्शन मेरा मन रमता जय देव जय देव ॥

भावभगत से कोई शरणागत आवे ॥
 संतति सम्पति सभी भरपूर पावे ॥
 ऐसे तुम महाराज मोको अति भावे ॥
 गोसावीनंदन निशिदिन गुण गावे जय देव जय देव ॥
 ॥ जय जय श्री गणराज विध्यासुखदाता ॥
 ॥ धन्य तुम्हारा दर्शन मेरा मन रमता जय देव जय देव ॥

॥ जय जय श्री गणराज विध्यासुखदाता ॥
 ॥ धन्य तुम्हारा दर्शन मेरा मन रमता जय देव जय देव ॥

॥ जय जय श्री गणराज विध्यासुखदाता ॥
 ॥ धन्य तुम्हारा दर्शन मेरा मन रमता जय देव जय देव

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



सिन्दूरी चोलो,

बजरंग बाला के लागै सोवणो ॥

ॐ
अंजनि माँ को लाडलो जी,
सियाराम को दास,
मन मं मेरै महावीर को,
है मोटो विश्वास जी ॥

*
कुण सो भारी काम जगत मं,
कर ना सके हनुमान,
पवनपुत्र सो दुनिया मं कुण,
बलबुद्धि को धाम जी ॥

ॐ
दीनबंधु भक्तन हितकारी,
सर्व गुणां की खान,
मेरे जिसै दीन को बाबो,
राखै नित की ध्यान जी ॥

*
श्यामबहादुर बजरंगी को,
करै सदा गुणगान,
'शिव' भी चाकरियो चरणां को,
अरज़ करण की बाण जी ॥

*
श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी भीमराजका
'शिव' द्वारा राजस्थानी तर्ज 'चौमासो'
(म्हारा श्याम रंगीला, पलकां उघाड़ो)
पर रचित हनुमत वन्दना ।



॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षीय वर्ष



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□□□□□□□□□□

कंईया सरसी म्हारा श्याम,
थारै बिना कंईया सरसी,
ओ मिजाजी साँवरिया, थारी याद सतावै,
बाबा हिवडो भर-भर आवै,
थारै बिना कंईया सरसी ॥



॥ श्री गणेशाय नमः ॥



॥ श्री वैष्णवत्मके नमः ॥

बाबा म्हानै थारी नगरी, स्वर्ग सरीखी लागै,
ग्यारस नै सुण थारो हैलो, मनडो म्हारो भागै,
बारस की बेला नै सोचू थानै ले चालू सागै,
ओ जी नटवर नागरिया, थारी याद सतावै,
बाबा हिवडो भर-भर आवै,
थारै बिना कंईया सरसी ॥

भीनी-भीनी इत्तर की खुशबू, रोम-रोम रम जावै,
थारी मनभावन छवि बाबा, म्हारै सागै आवै,
थांसै बिछड़कर एक पल भी, मनडो धीर न ध्यावै,
आँछयां हो गई बावरिया, थारी याद सतावै,
बाबा हिवडो भर-भर आवै,
थारै बिना कंईया सरसी ॥

रातां मांही उठ-उठ बैठूं, सुपनो थारो आवै,
लागै जाणै खड़यो सिराणे, बाबो हाथ फिरावै,
मन की बातां करणो चाहूं, नजर नहीं तूं आवै,
दूँढे थारा टाबरिया, थारी याद सतावै,
बाबा हिवडो भर-भर आवै,
थारै बिना कंईया सरसी ॥

अब तो धीर बंधाजा बाबा, सुणले अर्जी मेरी,
सेवकिया मनुहार करे है, आगै मर्जी तेरी,
'रोमी' बोले बाँथ घालल्यो, क्यांकी बाबा देरी,
आओ म्हारै आंगणियै, थारी याद सतावै,
बाबा हिवडो भर-भर आवै,
थारै बिना कंईया सरसी ॥

□□□

दो अनजाने अजनबी, चले बाँधने बंधन (विवाह) - गीत की तर्ज पर
श्री हरमहेन्द्र पाल सिंह 'रोमी' द्वारा रचित अनुपम भावपूर्ण रचना ।

□□□□□□□□□□

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

तुमसे ही मिली खुशियाँ, तुमसे जिंदगानी है,
जो कुछ भी हूँ मैं बाबा, तेरी मेहरबानी है ॥

सूना मेरा जीवन था, तू बनके बहार मिला,
मेरी नाव झँवर में थी, बनके पतवार मिला,
पहले ग़म के आँसू थे, अब खुशियों का पानी है ॥
जो कुछ भी हूँ मैं बाबा, तेरी....



॥ श्री याम शास्त्र नमः ॥



॥ श्री योग हनुमते नमः ॥

कल तक जो ना बदला था तूने आज बदल डाला,
तूने मेरे जीने का, अंदाज़ बदल डाला,
कल तक ग़म की रातें थी, अब भोर सुहानी है ॥
जो कुछ भी हूँ मैं बाबा, तेरी....

जीवन का हर सपना, तुमने साकार किया,
मुझ जैसे निर्गुण को, तूने कितना प्यार दिया,
तूने लिख दी मोहब्बत से, 'सोनू' की कहानी है ॥
जो कुछ भी हूँ मैं बाबा, तेरी....

कुछ और नहीं चाहूँ, बस तुझमे ध्यान रहे,
तेरे चरणों में हरदम, मेरा स्थान रहे,
तेरी छाया में जीवन की, हर साँस बितानी है ॥
जो कुछ भी हूँ मैं बाबा, तेरी....

□ □ □

श्री आदित्य मोदी 'सोनू' द्वारा 'इक प्यार का
नगमा है' गीत की तर्ज पर रचित रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

श्याम मेरै मन की पीड़ा, थानै ही सुणाऊँगा,
दे दयूंगा ज्यान पर, दर सें ना जाऊँगा ॥

□

जन्मयो हूँ जद सें श्याम, ठोकरां खातो आयो हूँ,
मैं ढूँढ़यो भोत घणो, दयालु ना थांसो पायो हूँ,
आयो हूँ रोतो अंदर, बाहर हंसतो जाऊँगा ॥
दे दयूंगा ज्यान पर



॥ श्री गणेशाय नमः ॥



॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

या नानी बाई श्याम, थानै तो बीर बणायो थो,
द्रौपद की राखी लाज, श्याम थे चौर बढ़ायो थो,
वैसी ही दया की दृष्टि, श्याम थांसै चाहूँगा ॥
दे दयूंगा ज्यान पर

□

या दुनिया पूछैगी, बोल के काम तेरो होग्यो,
तूं फिरै हांडतो सदा, पहनकर श्याम को चोगो,
पूछैगा लोग मन्नै, फिर के बताऊँगा ॥
दे दयूंगा ज्यान पर

□

गफलत मं मत राखो, बोल दयो सीधी-सादी बात,
फैसलों करणो है श्याम, थानै आज इबकी स्यात,
न्याय करणिया थे हो, मैं भी न्याय कराऊँगा ॥
दे दयूंगा ज्यान पर

□

हे मीरां के घनश्याम, म्हारी पत राख्यां सरसी रे,
मैं आन पड़यो दर पे, बोल इब क्यांमे बड़सी रे,
थे ही बतादयो मन्नै, छोड़ कठे जाऊँगा ॥
दे दयूंगा ज्यान पर

□

हसनपु 'आनन्दी' आई दर पे,
श्याम थारै भगतां नै साथ लियां,
यो 'पवन' खड़यो दर पे,
श्याम थारी मोती आस लियां,
जीऊँ हूँ आस लियां, दीदार पाऊँगा ॥
दे दयूंगा ज्यान पर

□ □ □

स्व. पवन जी ऊटवालिया 'पवन' द्वारा 'सौ साल पहले,
मुझे तुमसे प्यार' गीत की तर्ज पर रचित भावपूर्ण रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की उम्मीद

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

श्याम भगत थारी करै, सतगुरु नितकी याद,
सदबुद्धि दयो दास नै, सुणो मेरी फरियाद ।
हे गुरुदेव दया के सागर, दया करो सरकार,
थारै बिना मेरो, कोई ना पालनहार ॥



दृष्टि दया की थारी हो, जद पार पड़ै,
दुखिया सब संसार, देखकै जीव डै,
दीन-दुखी सेवकियै की, सुणल्यो करूण पुकार ॥
थारै बिना मेरो, कोई ना

मैं निरबल थे सबल, भगत हो पूँच्योड़ा,
जे थे थामो हाथ, पार लागै बेड़ा,
बाबाजी सें सल्ला करकै, करो मेरो उद्धार ॥
थारै बिना मेरो, कोई ना

छल-फरेब ऐं दुनिया का, मैं के जाण्
थारै चरणां मांय, सदा मस्ती छाण्
आगै-पीछै थे मेरै, जीवन का आधार ॥
थारै बिना मेरो, कोई ना

श्री श्याम सेवा संघ समिति
सामरथां नै शरम, काम मेरो करणो है,
उदयालै मं आंख्या हो गई, झरणो है,
श्यामबहादुर 'शिव' दर्दी का, संकट दीज्यो टार ॥
थारै बिना मेरो, कोई ना

□ □ □

पूँच्योड़ा = पहुँचे हुये, सल्ला = सलाह

□ □ □

स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा 'बार-बार तोहे
क्या समझाये' गीत की तर्ज पर रचित गुरु वन्दना ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

बृज के ब्वाले मुरलीवाले, मुरली मधुर सुणादे तूं,
प्यासे नैण तेरे दर्शन के, इनकी प्यास बुझादे तूं ॥

□

बीत गए कई जुग साँवरिया, भूल तुम्हें ना पाया मैं,
हे गिरधारी कृष्णमुरारी, कितना तुम्हें लडाया मैं, ॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

अपने इस दीवाने को भी,
एक झलक दरसादे तूं। प्यासे नैण तेरे.....

□

बाबा श्याम तेरी यादें ही, दिल की मेरे दवाई है,
ना जाने तेरी उल्फत मैं, कितनी रैण बिताई है,
महर नजर थोड़ी सी करदे,
स्नेह सुधा बरसादे तूं ॥ प्यासे नैण तेरे.....

□

श्यामबहादुर ने बाबा का, कितना लाड लडाया है,
'शिव' ने खाटूवाले को, अपना मीत बनाया है,
मन मंदिर मैं श्याम रंगीले,

प्रेम की ज्योत जगादे तूं ॥ प्यासे नैण तेरे.....

□ □ □

श्रद्धेय शिवचरणजी भीमराजका द्वारा 'क्या मिलिये ऐसे
लोगों से, जिनकी फितरत छिपी
रहे' गीत की तर्ज पर रचित रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

॥ ००००००००० ॥

जहाँ बिराजे शीश का दानी,
मेरा बाबा श्याम,
दीवाने मुझे ले चल खाटू धाम ॥

□

तन-मन-धन सब इनके अर्पण,
जीवन भी है इनके समर्पण,
नित्य करूँ में इनका अर्चन,
मनमंदिर में छवि निरखूँ मैं,
इनकी आठों याम ॥

दीवाने मुझे ले चल खाटूधाम.....

□

श्याम हमारे भोले-भाले,
अपने भगतों के रखवाले,
खोले बंद किस्मत के ताले,
ऐसे देव दयालु के,
चरणों में मेरा प्रणाम ॥
दीवाने मुझे ले चल खाटूधाम.....

□

श्याम भरोसा - श्याम सहारा,
जीवन नाव का खेवनहारा,
भगतों की आँखों का तारा,
चौखट पर बस टेक लो माथा,
बनेंगे बिगड़े काम ॥

दीवाने मुझे ले चल खाटूधाम.....

□

श्याम वरण पर गोरे मन के,
दानवीर महाभारत रण के,
श्याम सहारे हैं जन-जन के,
श्यामसुन्दर जीवन धन मेरे,
आन-बान और शान ॥

दीवाने मुझे ले चल खाटूधाम.....

॥ ००० ॥

प्रसिद्ध भजन 'कन्हैया ले चल परली
पार' की तर्ज पर रचित रचना ।

लेखक - अज्ञात ।

॥ ००००००००० ॥



॥ श्री याम-शाय नमः ॥



॥ श्री योर हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

हसनपुरा, जयपुर

ॐ श्री श्याम रसेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □

दिखला दयो थे दातारी,
दिखला दयो थे दातारी,
ओ थारो लखदातार है नाम,
दिखला दयो थे दातारी ॥

□

थे जगत सेठ कहलाओ,
हारे का साथ निभाओ,
म्हरै रख दयो सिर पर हाथ,
दिखला दयो थे दातारी ॥



थारो नाम सुण्यो म्है आरी,
थे कलयुग का अवतारी,
ओ थारै नौबत बाजै द्वार,
दिखला दयो थे दातारी ॥

□

म्हानै आज जरूरत थारी,
खाटू के श्याम बिहारी,
म्हारो पूरण करदयो काम,
दिखला दयो थे दातारी ॥

□

म्हारो हिवड़ो मिलबानै तरसै,
आँख्यां मं आँसू बरसै,
म्हानै चरणां सें लिपटाय,
दिखला दयो थे दातारी ॥

□

भगतां का दुखड़ा मिटाओ,
हस्तानी अरजी सुणकर आओ,
थारी होवै जै-जैकार,
दिखला दयो थे दातारी ॥

□ □ □

राजस्थानी तर्ज 'कठे सें आई सूठ, कठे सें
आयो जीरो' की तर्ज पर रचित अति प्राचीन
भावपूर्ण भजन। लेखक - अजात।

□ □ □ □ □ □ □

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षाली वर्ष



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □

बणजा रै तूं श्याम कै दीवानो,
बिगड़ी बात बणावैगो,
अब सें पार लगावैगो ॥



॥ श्री याणशाय नमः ॥



॥ श्री खीर हनुमते नमः ॥

सांवरिये सें प्रीत लगाले,
तैर मन मं ज्योत जगाले,
बैठ्यो मौज मनावैगो ।
अब सें पार लगावैगो ॥

खाटुवालो बड़ो निरालो,
पग-पग पर तेरो रखवालो,
साँची प्रीत निभावैगो ।
अब सें पार लगावैगो ॥

श्यामधणी की जपलै माला,
तेरी बात सुणै नन्दलाला,
हरदम धीर बंधावैगो ।
अब सें पार लगावैगो ॥

यो ही केशव कुञ्जबिहारी,
ऐं नै ध्यावै दुनिया सारी,
देर करयां पछतावैगो ।
अब सें पार लगावैगो ॥

हसनपुरा, जप्पुर

श्यामबहादुर मतना भटकै,
'शिव' तूं श्याम रिझालै डटकै,
यो ही काम बणावैगो ।
अब सें पार लगावैगो ॥

□ □ □

श्रद्धेय शिवचरणजी भीमराजका
द्वारा 'लीला रै म्हानै श्याम सें मिलादे'
भजन की तर्ज पर रचित रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

सांवरिया ऐ, एक झलक तो दिखादे,
अरमां मेरे प्यासे, मस्ती के दरिया से,
दो-चार बूँद पिलादे, एक झलक तो दिखादे ॥

□

तेरे मेरे, रिश्ते जूने,
मुझसे तेरी आँख मिचौनी,
दिल को भाई, रै हरजाई,
सूरत तेरी श्याम सलौनी,
नैना नुकीले हैं, भाव लरजीले हैं,
मस्ती को कायम बनादे, एक झलक दिखादे ॥

□

घायल करकै, मन पंछी को,
तेरा पर्दे में छुप जाना,
मेरी दीवाली, ओ बनमाली,
करते हो क्यों व्यर्थ बहाना,
आशा लगाई है, नजरें बिछाई हैं,
दर्दी को कुछ तो दवा दे, एक झलक दिखादे ॥

□

छड़ के मेरे, अरमानों को,
तड़फाना कोई खेल नहीं है,
मन मंदिर के, ठाकुर से क्या,
मेरा अपना भेल नहीं है,

जीवड़ो दुखावै क्यूँ नैना नचावै क्यूँ
किश्ती किनारे लगादे, एक झलक दिखादे ॥

□

नील वरण धारी, नटवर नागर,
सागर है तूं नाथ दया का,
श्यामबहादुर, लूट लिया है,
सब कुछ मेरा डाल के डाका,
'शिव' दास तेरा है, तूं मीत मेरा है,
सोया नसीबा जगादे, एक झलक दिखादे ॥

□ □ □

श्रद्धेय शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा
'ओ साथी रे, तेरे बिना भी क्या जीना' गीत
की तर्ज पर रचित भावपूर्ण रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □



प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की उम्मीद

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ ? □ □ □ □ □ □

श्याम ध्वजाबंध धारी, हमारी सुध कब लोगे,
दीनन के हितकारी, हमारी सुध कब लोगे ॥

□

मीरां दासी को अपनाया,
सर्प नौलखा हार बनाया,
गोवर्धन गिरधारी,
हमारी सुध कब लोगे ॥



खम्भ फोड़ प्रह्लाद उबारा,
हिरण्यकुश का उदर विदारा,
जागो लीलाधारी,
हमारी सुध कब लोगे ॥

□

धीरज की सीमा नहीं टूटै,
आशा का सम्बल ना छूटै,
भक्तवत्सल बनवारी,
हमारी सुध कब लोगे ॥

मानव-माथव सेवा के 30 गोरक्षाली वर्ष

श्री श्याम सेवा संघ समिति
श्यामबहादुर बेगा धाओ,
दयासिन्धु हो दया दिखाओ,
'शिव' ने अरज़ गुजारी,
हमारी सुध कब लोगे ॥

□ □ □

श्रद्धेय शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा
'जलती रहे खाटवाले, ज्योत तेरी जलती रहे'
भजनकी तर्ज पर रचित रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



हे गिरधर गोपाल कन्हैया, तेरो एक सहारो है,
सिवा तुम्हारै ई दुनिया मं, दूजो कुण हमारो है ॥



तेरी मेरी प्रीत पुराणी,
मतना आँख चुरावै तूं
नाव पुराणी भवजळ गहरा,
छलिया क्यूं तरसावै तूं
पलक उघाड़ करै मत देरी,
दाता दूर किनारो है ॥
हे गिरधर गोपाल कन्हैया.....



दयासिन्धु दीनन हितकारी,
वासुदेव बनवारी नै,
हिम्मतहारी हे गिरधारी,
टेरूं कृष्ण मुरारी नै,
पैल्यां भी तो तूं ही मेरो,
अटक्यो काज संवारयो है ॥
हे गिरधर गोपाल कन्हैया.....



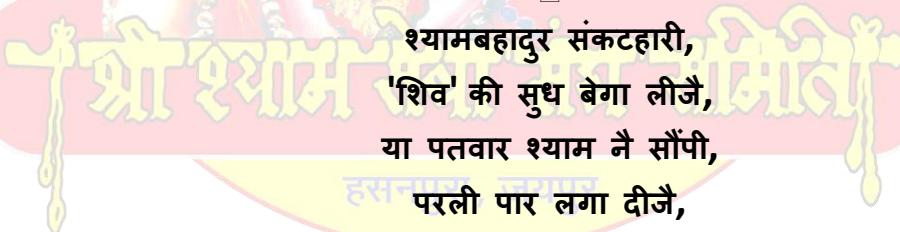
श्यामबहादुर संकटहारी,
'शिव' की सुध बेगा लीजै,
या पतवार श्याम नै सौंपी,
परली पार लगा दीजै,
सामरथां सैं सीर पड्यो है,
तूं ही खेवणहारो है ॥
हे गिरधर गोपाल कन्हैया.....



श्रद्धेय शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा
'फूल तुम्हे भेजा है खत में' गीत की तर्ज पर
रचित भावपूर्ण भजन ।



प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षाली वर्ष



ॐ श्री ईश्वर सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

जीवन दिया है आपने, उसका है शुक्रिया,
साँसे जो दी है आपने, उसका है शुक्रिया ॥

□

तेरी लगन लगी मुझे, जीवन सफल हुआ,
सेवा में बीते जिन्दगी, निश्चय अटल हुआ,
भक्ति जो दी है आपने, उसका है शुक्रिया ॥
साँसे जो दी है आपने.....



मानव-माधव सेवा के 30 गोरक्षाली वर्ष

जब भी मैं देखूँ आपको, खुशियाँ बड़ी मिले,
दर्शन से आपके प्रभु, दिल की कली खिले,
आँखे जो दी है आपने, उसका है शुक्रिया ॥
साँसे जो दी है आपने.....

□

जब तक ये साँस है प्रभु, तेरा भजन करूँ,
तेरा ही नाम लूँ प्रभु, जयकार नित करूँ,
वाणी जो दी है आपने, उसका है शुक्रिया ॥
साँसे जो दी है आपने.....

श्री ईश्वर सेवा संघ समिति ॥

हाथों से मेरे ना कभी, कोई गुनाह हो,
कहता 'रवि' है आपसे, मिलने की चाह हो,
चाहत जो दी है आपने, उसका है शुक्रिया ॥

साँसे जो दी है आपने.....

□ □ □

श्री रविन्द्र के जरीवाल 'रवि' द्वारा 'मिलती है जिंदगी में
मुहब्बत कभी-कभी' गीत की तर्ज
पर रचित भजन ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सरेषा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

यो पाण्डवकुल अवतार, बड़ो अलबेलो है,
करलै करुण पुकार, सौंप दे नैया की पतवार,
बड़ो अलबेलो है ॥



॥ श्री यामशाय नमः ॥



॥ श्री योर हनुमते नमः ॥

घूँघरवाळा बाळ श्याम का, मोरमुकुट मनहारी,
शरणागत की रक्षा करता, श्याम ध्वजाबंद धारी,
मेळा लागै चार, श्याम को है मोटो दरबार,
बड़ो अलबेलो है ॥ यो पाण्डवकुल अवतार...

□

मोटा-मोटा नैण श्याम का, ज्यूँ अमृत का प्याला,
दिल का दरिया, रे मनगरिया, मंगळ करने वाला,
राखै नहीं उधार, मेरो यो, सांवळियो सरकार,
बड़ो अलबेलो है ॥ यो पाण्डवकुल अवतार...

□

श्यामबहादुर सरस सलूणो, 'शिव' रसियो सैलाणी,
तुरता-फुरती काम पटावै, ऐंकी बाण पुराणी,
खूब सज्यो सिणगार, तेरी नैया को खेवणहार,
बड़ो अलबेलो है ॥ यो पाण्डवकुल अवतार...

□ □ □

श्रद्धेय स्व. शिवचरण जी भीमराजका 'शिव' द्वारा 'तेरे
द्वार खड़ा भगवान' गीत की तर्ज पर रचित अदभुत-अनमोल रचना

।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

ग़ज़ब ढा रही है, नज़ाकत तुम्हारी,
फना कर दिया तूने, बांकैबिहारी ॥

□

बांकेपान की किसने, तेरे कीमत आंकी है,
तुमसे टकराकर भी क्या, कुछ मुझमे बाकी है,
कलेजे में नज़रों की, लगी है कटारी ॥
फना कर दिया तूने.....



प्रानव-माधव सेवा के 30 गाँवशाली वर्ष

बाँसुरिया में श्याम तेरे, कोई जादू-टोना है,
मीठी सी मुस्कान तेरी, तूं यार सलोना है,
तेरी याद में, जिंदगी है गुजारी ॥
फना कर दिया तूने.....

□

छूट जायें चाहे प्राण, मगर ये प्रीत ना टूटेगी,
नैनों से रसधार प्रेम की, यूँ ही छूटेगी,
मैं हूँ नेह नगरी का, पुराना जुआरी ॥
फना कर दिया तूने.....

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

श्यामबहादुर तुमसे श्याम, मेरा जूना खाता है,
श्यामधणी के दर पे, ये 'शिव' खैर मनाता है,
अनूठी सी है तेरे, प्यार की खुमारी ॥

फना कर दिया तूने.....

□ □ □

श्रद्धेय स्व. शिवचरण जी भीमराजका 'शिव' द्वारा 'सौ साल
पहले, मुझे तुमसे प्यार था' गीत की तर्ज पर रचित भावपूर्ण रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्यामरसेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

ये आँख लड़ गई हैं, दिल में मेरे कन्हैया,
एक फाँस गड़ गई है ॥

□

दिले-दास्तां सुनाऊँ, मन मीत को मनाऊँ,
पलकों के पालने में, चितचोर को झुलाऊँ,
मुझे बाण पड़ गई है, दिल में मेरे कन्हैया ।
एक फाँस गड़ गई है ॥



मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

यादों की मार मुझ पर, करती है वार तीखा,
दर्शन बगैर तेरे, सारा जहान फीका,
ये रात ढल गई है, दिल में मेरे कन्हैया ।
एक फाँस गड़ गई है ॥

□

बेशक से दूर तूं है, आँखों से प्राण प्यारे,
इस दिल में देखता हूँ, गोपाल के नज़ारे,
आँखे उमड़ गई हैं, दिल में मेरे कन्हैया ।
एक फाँस गड़ गई है ॥

श्री श्यामरसेवा संघ समिति ॥

'शिव' श्यामबहादुर की, तुमसे मिली है राशि,
दिलदार साँवरे से, है मेरी प्रीत खासी ,
धड़कन क्यूँ बढ़ गई है, दिल में मेरे कन्हैया ।

एक फाँस गड़ गई है ॥

□ □ □

श्रद्धेय स्व. शिवचरण जी भीमराजका 'शिव' द्वारा 'मौसम है
आशिकाना' (पागल बना दिया है) गीत की तर्ज
पर रचित अदभुत भावपूर्ण भजन ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □

दिलदार कन्हैया की,
फिर-फिरके यादें आती हैं,
उस बैण बजैया की,
मुस्कान मेरे मन भाती है ॥



॥ श्री यामशाय नमः ॥



॥ श्री खीर हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 गोरक्षाली वर्ष

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

श्यामबहादुर 'शिव' की आँख्यां,
है मुद्दत की प्यासी,
उसकी राहों में पगली सी,
दूँढ रही अविनाशी ॥

दिलदार कन्हैया की.....

□ □ □

श्रद्धेय स्व. शिवचरण जी
भीमराजका 'शिव' द्वारा 'छोड़
गए बालम' (भूल गए श्यामा)
गीत की तर्ज पर रचित भजन ।

□ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

भगत से बड़ा नहीं भगवान्,
काढ़ काळजो स्यात मं देवै, भक्त बड़ा बलवान् ॥

□

श्याम धर्णी नै भगत पुजावै,
घर-घर प्रभु की महिमा गावै,
कर-करके मनुहार रिझावै, मुळकै कृपानिधान ॥
भक्त से बड़ा नहीं भगवान.....



प्रानव-माधव सेवा के 30 गोरक्षाली वर्ष

नेह नगर को मारग न्यारो,
पलकां सैं नित पंथ बुहारो,
सुमिर श्याम नै दे फटकारों, यो निर्गुण पकवान ॥
भक्त से बड़ा नहीं भगवान.....

□

भक्त बडेरा श्यामधर्णी सैं,
नैण उळझाग्या मुकुटमणि सैं,
डरतो रह माया ठगणी सैं, करले हरि रसपान ॥

भक्त से बड़ा नहीं भगवान.....

श्री श्याम सेवा संघ समिति

श्यामबहादुर श्याम दीवाना,
काम मेरा 'शिव' श्याम रिझाणा,

लगा रहेगा आना-जाना, मालिक नै पहचान ॥

भक्त से बड़ा नहीं भगवान.....

□ □ □

श्रद्धेय स्व. शिवचरण जी भीमराजका 'शिव'
द्वारा 'राम से बड़ा राम का नाम' भजन की तर्ज
पर रचित अनुपम भावपूर्ण रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

हे गोवर्धन गिरधारी, मन्नै थारो भरोसो भारी ॥

□

थारै मन की समझ नं आवै,
बण्यो ग्वालियो धेनू चरावै,

मुरली कामणगारी, मन्नै थारो भरोसो भारी ॥



॥ श्री याम शास्त्र नमः ॥



॥ श्री योग हनुमते नमः ॥

काम तिहारो पीड़ा हरणो,

थारै दर पर दे दियो धरणो,

दाता अरज़ गुजारी, मन्नै थारो भरोसो भारी ॥

□

पैल्यां प्रीत को रोग लगायो,

दीन जाण इब क्यूँ छिटकायो,

जागो लीलाधारी, मन्नै थारो भरोसो भारी ॥

□

बाजो थे हारया का साथी,

थे ही समधी थे ही नाती,

करो हुकुम सरकारी, मन्नै थारो भरोसो भारी ॥

□

श्यामबहादुर क्यूँ तरसाओ,

बिगड़ी नै घनश्याम बणाओ,

हाजर 'शिव' दरबारी, मन्नै थारो भरोसो भारी ॥

□ □ □

श्रद्धेय स्व. शिवचरण जी भीमराजका 'शिव'

द्वारा 'वो आ गया खाटूवाला' भजन की तर्ज

पर रचित अनुपम भावपूर्ण रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम रसेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □

सेवकियो अरज़ गुजारै है,
थे उत्सव मं पधारो बाबा श्याम,
टाबरिया बाट निहारै है ॥

□

सावो मांड दियो है थारो,
बेगा आकर काज सुधारो,
तूं सबका काम बणावै है ॥
म्हारै उत्सव मं पधारो....



प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षीय
सेवा संघ की सभा

लीले की थे जीन सम्हालो,
कसल्यो फेटो बेगा चालो,
इब नैया थारे सहारे है ॥
म्हारै उत्सव मं पधारो....

□

आस लगी है मन मं भारी,
आयो रहसी श्यामबिहारी,
यो मनड़ो थांनै पुकारै है ॥
म्हारै उत्सव मं पधारो....

□

स्वागत मं थारै भोग बणाया,
जीमो बाबा थाळ सजाया,
तूं सबकी प्रीत निभावै है ॥
म्हारै उत्सव मं पधारो....

□

साल-सवाई उत्सव आवै,
सेवा संघ है सबनै बुलावै,
'अनिल' थारा शगुन मनावै है ॥
म्हारै उत्सव मं पधारो....

□ □ □

श्री बिनोद कुमार जी गाडोदिया
'बिन्नू' द्वारा रचित भजन की स्थाई
पर आधारित श्री अनिल जी अग्रवाल (हसनपुरा) द्वारा
रचित मनुहार ।

□ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्यामरसेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

डगमग मेरी नैया है, और दूर खिवैया है,
आज्या-आज्या मेरे राजा, तू ही पर लगैया है ॥

□

तेरी बांकी अदाओं का, मेरा दिल ये दीवाना है,
सरकार के चरणों में, मेरा तो ठिकाना है,
तू ही बांके बिहारी है, गऊओं का चरैया है ॥
आज्या-आज्या मेरे राजा, तू ही.....



प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षीय
समाप्ति

तेरा मेरा रिश्ता है, मेरा प्यार बुलाता है,
ओ मस्त नजर वाले, क्यूँ देर लगाता है,
नागिन सी लटों वाला, तू ही रास रचैया है ॥
आज्या-आज्या मेरे राजा, तू ही.....

□

हारे का तू साथी है, तेरी याद सताती है,
उल्फत का तकाजा है, दिले-दर्द की पाती है,
बृजराज तू उंगली पर, गिरवर का उठैया है ॥
आज्या-आज्या मेरे राजा, तू ही.....

तुम श्यामबहादुर के, जिगरी दिलवाले हो,
'शिव' के तो मेरे दाता, तुम्हीं रखवाले हो,
करुणा सुन द्रौपदी की, तू ही चीर बढ़ैया है ॥
आज्या-आज्या मेरे राजा, तू ही.....

□ □ □

श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा 'बचपन' की
मुहब्बत को' गीत की तर्ज पर रचित अनुपम भावपूर्ण रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

॥ श्री श्याम सरेषा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

श्री श्याम पधारया,
उत्सव की शोभा है सुहावणी ॥

□

यै सारा बालकिया थारा, थारो ही परिवार,
पवनपुत्र नै सागे ल्याया,
थी पूरी दरकार ॥ श्री श्याम पधारया...



खाटूवाळे सांवलियै की, अलबेली बारात,
मन इच्छा पूरी कर देसी,
सबकी हाथयूं हाथ ॥ श्री श्याम पधारया...

□

अमिट निशानी शीश का दानी, लीलै का असवार,
श्याम लुटाद्यो आज खजानो,
खोल दया का द्वार ॥ श्री श्याम पधारया...

□

श्यामबहादुर देवकीनंदन, हिवड़े का सिणगार,
'शिव' की अरज़ दर्ज कर लीज्यो,
सांवलिया सरकार ॥ श्री श्याम पधारया...

□ □ □

श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा राजस्थानी तर्ज
'म्हारी चंद्रगवरजा' (म्हारा श्याम रंगीला, पलकां उघाड़ो) गीत की तर्ज
पर रचित अनुपम भावपूर्ण रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□□□□□□□□□□

उत्सव म्है मनावां हां, थानै म्है बुलावां हां,
आज्या खाटवाळा रै,
म्हारी लाज आज थे राखज्यो, बेगा आओ,
नन्दजी रा लाला रे ॥



न्यूतो भेज्यो उत्सव को, कीर्तन मं पथारज्यो,
पहुँची होसी चिठ्ठी म्हारी, आणै की बिचारज्यो,
सावो माणडयो थारै ऊपर, सावै नै सुधारज्यो,
मायत दयालु बात, मतना बिगाइज्यो,
अरज़ गुजारां हां, बाट निहारां हां,
आज्या आणै वाळा रै ॥ म्हारी लाज....

इतणी बतादयूं श्याम, थानै पक्को आणो है,
भूल न जायो सागै, बजरंगी नै ल्याणो है,
दानी तूं कुहावै है, तो खजानों लुटाणो है,
दुखी-दर्दी भगतां रो, काम पटाणो है,
होठ सीयां बैठ्यो क्यूँ है,
म्हांसै अंईया एंठ्यो क्यूँ है,
मतना काटै चाळा रै ॥ म्हारी लाज....

देखैगो सिंघासन तेरो, मन हरसावैगो,
करस्यां थारी खातिरदारी, भूल नहीं पावैगो,
एक बार आयां पीछे, दौड्यो-दौड्यो आवैगो,
अठै कै सिणगार नै तूं, भूल नहीं पावैगो,
छोड़ सारी बातां बाबा, देख म्हारी यारी बाबा,
थानै हिवडै कैद कर डालां रै ॥ म्हारी लाज....

लीपा-पोती छोड़ बोल, तेरो के इरादो है,
श्याम सेवा संघ कै, टाबरिया को दादो है,
'आनन्दी' मैं सकूं कोनी, श्याम तूं तो ठडो है,
श्याम तेरे दर को, 'पवन' तो प्यादो है,
आणो होसी आज थानै, देखूँ कैया कोनी मानै,
थारो आज पड्यो म्हांसै पालो रै ॥ म्हारी लाज....

□□□

भाईजी स्व. पवन जी ॐटवालिया दवारा सुप्रसिद्ध भजन 'दिन काटां गिण-गिण' की
तर्ज पर रचित अद्भुत-अनुपम मनुहार रचना ।

□□□□□□□□□□

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

कैंया रीझौ श्याम, रिझाणो कोनी जाणू मैं,
रिझाणो कोनी जाणू मैं, लुभाणो कोनी जाणू मैं ॥

□

कोई तो पहरावै इनै बागा चमकणिया,
मोटा-मोटा फुलडां का हार महकणिया,
सोणा-सोणा श्याम नै, सजाणो कोनी जाणू मैं ॥
कैंया रीझौ श्याम, रिझाणो.....



खीर-चूरमा को भोग लगाऊँ,
छप्पन भोग सजाकर ल्याऊँ,
करमां को सो खीचड़ो, खुवाणो कोनी जाणू मैं ॥
कैंया रीझौ श्याम, रिझाणो.....

□

नया-नया नित्त की भजन सुणाऊँ,
ढोल-मजीरा भी खूब बजाऊँ,
नरसी जैसा भाव, जगाणो कोनी जाणू मैं ॥
कैंया रीझौ श्याम, रिझाणो.....

मानव-माधव सेवा के 30 गोरक्षाली वर्ष

श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥
साँची-साँची प्रीत ही श्याम नै भावै,
'बिन्न' कैंया श्याम नै रिझावै,
मीरां जैसी प्रीत, लगाणो कोनी जाणू मैं ॥
कैंया रीझौ श्याम, रिझाणो.....

□ □ □

श्री बिनोदकुमार जी गाडोदिया 'बिन्न' द्वारा सुप्रसिद्ध
भजन तेरे बिना श्याम, हमारा नहीं
कोई रे' की तर्ज पर रचित भावपूर्ण रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

ଶ୍ରୀ ସ୍ଥାମରକେଳା ସଂଘ ସମୀତି

हो श्री श्याम महोत्सव आयो
गैरि खुशियाँ ल्यायो हैं ।

ओ मन झूम रहयो, हाँ जी नाच रहयो ॥

१४ श्याम धणी को तीसवों, उत्सव माँड दियो,
पन्दरा-सोळा अकटूबर को, दिन नक्की कियो,
श्री श्याम सेवा, संघ समिति, न्यूतो ल्यायो है ॥
ओ मन झुम रहयो, हाँ जी.....

श्याम धनी को सोवणे सो, खूब सजैगो सिणगार,
ज्योत अखण्डित जागैगी, महक उठैगो दरबार,
हो आपां सगळा मिलकर, भजन गायस्यां,
मतो उपायो है ॥
ओ मन झाम रहयो, हाँ जी.....

छप्पन भोग छत्तीसों व्यंजन, खूब प्रसाद बँटैगो,
 'रवि' कहवै नानी बाई को, मायरो रंग ल्यावैगो,
 थे हसनपूरा मं पूँच्या रहिज्यो, श्याम बुलायो है ॥
 ओ मन झाम रहयो, हाँ जी.....

श्री रविन्द्र केजरीवाल 'रवि' द्वारा राजस्थानी
तर्ज 'उमराव' पर रचित निमंत्रण-रचना ।

श्री श्याम सेवा संघ के 30वें वार्षिकोत्सव के सन्दर्भ में
रवि भाईजी इस भजन की रचना की है।

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □

आज थारो गुणगान करां हां,
श्यामबिहारी आओ ना,
श्याम मिजाजी होज्या राजी,
बेसी थे तरसाओ ना ॥

□

टाबरिया मनुहार करै है,
श्यामधणी इब आओ ना,
कद सें थारी बाटां ढीकां,
आकर रंग जमाओ ना,
थारै आयां बात बणैगी,
आकर बात बणाओ ना ॥
आज थारो गुणगान.....

□

जरीदार जैपुरियो बागो,
चमचम करतो चमक रह्यो,
चन्दन-केशर-इत्तर बरसै,
धरती-अम्बर दमक रह्यो,
छप्पन भोग सजायां बैठ्या,
जीमो भोग लगाओ ना ॥
आज थारो गुणगान.....

□

दिन बीत्या कई महीना बीत्या,
जद यो उत्सव आयो है,
आज तेरो दरबार निरखकर,
हिवड़े आनन्द छायो है,
'राजू' नाचै दे-दे ताळी,
थे पायल छणकाओ ना ॥
आज थारो गुणगान.....

□ □ □

श्री श्याम सेवा संघ समिति, हसनपुरा,
जयपुर के 30वें वार्षिकोत्सव के
सन्दर्भ में श्री राजकुमार शर्मा 'राजू'
(रायपुर) द्वारा 'कस्में वादे प्यार
वफ़ा' गीत की तर्ज़ पर रचित भजन

□ □ □ □ □ □ □ □



॥ श्री यामशाली नमः ॥



॥ श्री योर हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 गोवकशाली वर्ष

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

हसनपुरा, जयपुर

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

स्वीकारो जी स्वीकारो, श्याम निमंत्रण स्वीकारो,
मान बढ़ाओ, बेगा आओ, श्याम धणी दातार,
निमंत्रण स्वीकारो ॥



॥ श्री याम निमंत्रण नमः ॥



॥ श्री योर हनुमते नमः ॥

नाचांगा म्है गावांगा, थानै श्याम रिङ्गावांगा,
'सेवा संघ' के उत्सव मं, थानै श्याम नाचावांगा,
किरपा को अमृत बरसाज्यो, लीलै के असवार ।
निमंत्रण स्वीकारो ॥

बरस तीसवों आयो है, उत्सव फेर मनायो है,
टाबरियां कै मनडै मं, बाबा चाव सवायो है,
लाज राखज्यो जैया राखी, बाबा थे हर बार ।
निमंत्रण स्वीकारो ॥

बालपणा मं तरुणाई, फेर जवानी इठलाई,
'सेवा संघ' की शाख धणी, कदै नहीं या कुम्हलाई,
भक्त 'सुनील' यो संघ साँवरा, चालै बरस हजार ।
निमंत्रण स्वीकारो ॥

श्री सुनील शर्मा (जयपुर) द्वारा श्री श्याम सेवा संघ समिति (हसनपुरा) जयपुर
के 30वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर 'गाड़ी वाले मन्नै बिठाले
' भजन की तर्ज पर रचित अनुपम रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □

हसनपुरा मं आसी श्याम,
चालो जी आपां मिल आवां ॥

□

सेवा संघ दरबार लगासी,
बाबाजी नै न्यूत बुलासी,
आसी लीलै को असवार ।
चालो जी आपां मिल आवां ॥

□

बड़ा बड़ा गावणिया आसी,
बाबाजी नै भजन सुणासी,
सुणसी लखदातार ।
चालो जी आपां मिल आवां ॥

□

भोग यात्रा को निरख नजारो,
अगतां सागै श्याम हमारो,
नाचै बीच बाजार ।
चालो जी आपां मिल आवां ॥

□

देश विदेश सें सेवक आसी,
दास 'विनोद' भी सागै ज्यासी,
होसी जनम साकार ।
चालो जी आपां मिल आवां ॥

□ □ □

श्री विनोद शर्मा (पूना) द्वारा श्री
श्याम सेवा संघ समिति, हसनपुरा,
जयपुर के 30वें वर्षिकोत्सव के
अवसर पर राजस्थानी गीत 'होलीया
मं उडै रे गुलाल' की तर्ज पर रचित
भजन ।

□ □ □ □ □ □ □ □

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री योर हनुमते नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षीया

श्री श्याम सेवा संघ समिति

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

मनगरियो बाबो श्याम, पथारण वालो है,
भगतां नै दरशण श्याम, दिखावण वालो है ॥

□

श्याम धणी को उत्सव मांड्यो,
घँघरु बँधग्या मनडो नाच्यो,
इब सबकी अरजी श्याम, पुरावण वालो है ॥
मनगरियो बाबो श्याम, पथारण....



प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षाली वर्ष

जयपुर हसनपुरा मं आज्यो,
संग-साथी नै सागै ल्याज्यो,
अब सबको जीवन श्याम, सजावण वालो है ॥
मनगरियो बाबो श्याम, पथारण....

□

जगह-जगह से गायक आसी,
निज भक्ति सें श्याम रिङ्गासी,
भगतां संग धूम तो श्याम, मचावण वालो है ॥
मनगरियो बाबो श्याम, पथारण....

□

सब मिलकर कै रंग जमास्यां,
'रवि' कहवै सब मौज उडास्यां,
थानै सबनै अपणो श्याम, बनावण वालो है ॥
मनगरियो बाबो श्याम, पथारण....

हसनपुरा जयपुर

श्री रविन्द्र केजरीवाल 'रवि' द्वारा श्री श्याम सेवा संघ समिति,
हसनपुरा, जयपुर के 30वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर सुप्रसिद्ध भजन
'मेरे गिनियो ना अपराध, लाडली श्रीराधे' की

तर्ज पर रचित रचना।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

॥ श्री ईश्वर सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

बाबा कुछ ना कुछ तो बोलो जी,
कई दिनां मं उत्सव आयो, पलकां खोलो जी ॥



उत्सव थारो मांड दियो जी, करणै लाग्या त्यारी,
छोटी मोटी बात नहीं जी, काम है यो दरबारी,
बाबा मन मं अमृत घोळो जी ॥
कई दिनां मं उत्सव आयो.....

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षीय वर्ष

टाबर थारा बाट उड़ीकै, पण थे तो सूत्या हो,
गळती कुछ हो ज्यावै तो, म्हानै दोष ना दीज्यो,
बाबा नींदड़ली नै तोड़ो जी ॥
कई दिनां मं उत्सव आयो.....

दया करो टाबर पर बाबा, लीलै चढ़कर आओ,
बाबा थारो उत्सव आयों, कुछ तो हुकुम सुणाओ,
बाबा 'बनवारी' तो भोळो जी ॥
कई दिनां मं उत्सव आयो.....

□ □ □

श्री जयशंकर चौधरी 'बनवारी' द्वारा राजस्थानी गीत
'ढोला ढोल मजीरा बाजै रे' की तर्ज पर रचित अनुपम रचना।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

लीलो सो घोड़ो बाबा थारो नाचणो जी,
हाँ जी ज्यांकी मोत्यां जड़ी है लगाम,
सरस सलूणो मन मांही रच गयो जी ॥

□

मनमौजी मेरै मन को, च्यानणो जी,
हाँ जी म्हारो खाटवाळो श्याम,
मेहँदी की ज्यूँ हिये मांही रच गयो जी ॥
लीलो सो घोड़ो बाबा थारो



मानव-माधव सेवा के 30 गाँवशाली वर्ष

बैठ झरोखै मुजरो, ले रहयो जी,
हाँ जी बाबा थारो तीन लोक मं नाम,
निजर बचाके बाबो मेरो हँस गयो जी ॥
लीलो सो घोड़ो बाबा थारो

□

जातो-जातो झालो, दे गयो जी,
हाँ जी म्हारा अटक्या सारे काम,
श्याम रंगीलो मन मं बस गयो जी ॥
लीलो सो घोड़ो बाबा थारो

□

रसिक मिजाजी बाजी, बांसरी जी,
हाँ जी थानै बरसाणै नन्दगाँव,
हेरत-हेरत काठो फँस गयो जी ॥
लीलो सो घोड़ो बाबा थारो

□

श्यामबहादुर नन्दजी को, ग्वालियो जी,
हाँ जी म्हारो मिट गयो दरद तमाम,
जोर ना चालै 'शिव' परबस भयो जी ॥
लीलो सो घोड़ो बाबा थारो

□ □ □

च्यानणो = उजाला, हेरत-2 = ढूँढते-2,
हिये = हृदय, परबस = पराधीन

□ □ □

श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी भीमराजका
'शिव' द्वारा राजस्थानी तर्ज 'पीपळी'
पर रचित अनुपम-अदभुत रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

यो श्याम ध्वजाबंध धारी जी, खाटू को ॥

□

जाण-पिछाण ऐं सें मेरी रे घणेरी,
अणगिणती की मेरी पीड़ निमेड़ी,
तो जगजाहिर दातारी जी, खाटू को ॥
यो श्याम ध्वजाबंध धारी.....

□

देवै फटकारो बाबो मोरछड़ी को,
काज संवारे मेरो अड़ी-भिड़ी को,
तो लीलै की असवारी जी, खाटू को ॥
यो श्याम ध्वजाबंध धारी.....

□

अहिलवती को लाल अनूठो,
अलबेलो गोपाल अनूठो,
नटनागर मदन मुरारी जी, खाटू को ॥
यो श्याम ध्वजाबंध धारी.....

□

ऐं सें मेरो संजोग पुराणो,
चरणां मं ऐं कै मेरो खास ठिकाणो,
यो ही करै मेरी रखवारी जी, खाटू को ॥
यो श्याम ध्वजाबंध धारी.....

□

श्यामबहादुर 'शिव' नै सम्हालै,
प्रीत पुराणी यो तो बेशक पालै,
तो कृष्णचन्द्र गिरधारी जी, खाटू को ॥
हर यो श्याम ध्वजाबंध धारी.....

□ □ □

श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव'
द्वारा राजस्थानी तर्ज 'कंसूबो' (खाटू को
श्याम रंगीलो रे) पर रचित अनुपम रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □



॥ श्री याम ध्वजाबंध धारी जी, खाटू को ॥



॥ श्री योर हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षाली वर्ष

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □

बाँसुरीवाले तूं है कहाँ,
नैन व्याकुल हैं आजा यहाँ,
हिचकियाँ भी तो थमती नहीं,
दर्द-दिल की तूं ही है दवा ॥

□

तेरी नज़रों का मारा हूँ मैं,
साँवरे बेसहारा हूँ मैं,
सुध भुलाई है क्यूँ दास की,
प्रीत की मौन धारा हूँ मैं,
तेरी यादों में है दिल जवाँ ।
नैन व्याकुल हैं आजा यहाँ ॥

□

प्यार का दर्द कैसे सहूँ,
तेरी धुन में विचरता रहूँ,
पूछे दिल से मेरे तूं अगर,
दास्तां अपनी खुलकर कहूँ,
मेरी दुनिया तुम्ही से रवाँ ।
नैन व्याकुल हैं आजा यहाँ ॥

□

मेरा तूं ही तो अरमान है,
क्या निराली तेरी शान है,
ये हकीकत है जाने-जिगर,
मेरे प्राणों का तूं प्राण है,
आजा तूं सुन रहा हो जहाँ ।
नैन व्याकुल हैं आजा यहाँ ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 गोवशाली वर्ष



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

हसनपाटा जाप

श्यामबहादुर की फरियाद को,
अनसुनी 'शिव' ना करना कभी,
यार का द्वार मेरा पता,
बिन तुम्हारे गुजर ना कभी,
तुमको पतवार दी है थमा ।
नैन व्याकुल हैं आजा यहाँ ॥

□ □ □

श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी भीमराजका
'शिव' द्वारा 'जिन्दगी की ना टूटे लड़ी'
गीत की तर्ज पर रचित रचना ।

□ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□□□□□□□□□□

बंशी चुभीली है, नैणा कटीले,
तुम भी कन्हैया, ग़ज़ब ढा रहे हो ।
सदा से ही तुम हो, मुरारी हठीले,
मुझे किस लिये श्याम, भरमा रहे हो ॥

□

नज़र बाण से तूने घायल किया है,
मेरे दिल को काबू सनम कर दिया है,
यों हारे हुये को क्यों, तरसा रहे हो ॥
कि तुम भी कन्हैया ग़ज़ब



तेरी दिल्लगी में छोड़ा ज़माना,
तेरे साथ अपना सफर है पुराना,
मुझे तुम किधर को, लिये रहे हो ॥
कि तुम भी कन्हैया ग़ज़ब

□

तिरछे चरण तेरी तिरछी अदा है,
दीवाना ये दिल मेरा तुम्ही पे फ़िदा है,
क्यों मुझ पर ना दाता, तरस खा रहे हो ॥
कि तुम भी कन्हैया ग़ज़ब

□

बिगड़ा है क्या मैंने किसी को बताओ,
मुझे श्यामबहादुर गले से लगाओ,
वही कर रहा 'शिव', जो फरमा रहे हो ॥
कि तुम भी कन्हैया ग़ज़ब

□□□

श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव'
द्वारा 'तुम्ही मेरे मन्दिर, तुम्ही मेरी पूजा' गीत
की तर्ज पर रचित अनुपम रचना ।

□□□□□□□□□□

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की उम्मीद वर्ष

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

श्याम थारो नाम, लागै भगतां नै प्यारो है,
म्हारै जीणै को सहारो है ॥

□

थारै नाम सें बाबा, पिछाण है म्हारी,

थारै नाम को जोर है,

थारै नाम सें चालै, या गाडली म्हारी,

दुनिया मं शेर है,

श्याम थारो नाम, लागै भगतां नै प्यारो है ।

म्हारै जीणै को सहारो है ॥

११ श्री गणेशाय नमः ॥

११ श्री वीर हनुमते नमः ॥

थारो नाम लेतां ही, लागै है यूँ म्हानै,

कि थे हो स्यामनै,

कितणो ही बड़ो हो काम, थारो नाम कर देवै,

छोटो सो काम नै,

म्हारो तो बाबा, थारै नाम सें गुजारो है ।

म्हारै जीणै को सहारो है ॥

□

जद सें लियो थारो नाम, बणनै लग्या है काम,

कि इब तो मौज है,

खुशियाँ ही खुशियाँ हैं, ई जिन्दगानी मं,

कि मस्ती रोज है,

श्याम थारो नाम, म्हारै जीवन को रखवारो है ।

म्हारै जीणै को सहारो है ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 गोरक्षाली वर्ष

११

थारै नाम सें जीती, हारी हुई बाजी,

थारो नाम ही काफी है,

कितणो ही बड़ो पापी, लेवै जो थारो नाम,

मिल ज्यावै माफ़ी है,

थारै नाम सें बाबा, म्हारै जीवन मं उजियारो है ।

म्हारै जीणै को सहारो है ॥

□ □ □

श्री संजय मित्तल (कलकत्ता) द्वारा 'एक तेरा साथ, हमको दो

जहां से' गीत (कीर्तन की है रात) की तर्ज पर रचित

भावपूर्ण-अनुपम रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

श्याम मेरे आ जाओ, तेरी दरकार है,
साथ छूटे ना बाबा, इतनी मनुहार है ॥

□

श्याम सेवा को तरसे, दीवाना भक्त ये तेरा,
दूर करदो अँधेरे, कर दो रोशन सवेरा,
लेलो अपनी शरण में, अपने ही पास रखलो,
मेरे दिल के भवन में, लगा लो श्याम डेरा,
मेरी सुनी नज़र को, तेरा इंतज़ार है ॥
श्याम मेरे आ जाओ.....

□

तेरी शक्ति को बाबा, मैंने पहचान लिया है,
तूं मेरा पालनहारा, मैंने ये जान लिया है,
मेरा हर काम तुझसे, है मेरा नाम तुझसे,
कोई माने ना माने, मैंने ये मान लिया है,
मेरे सुख-दुःख का साथी, तूं ही हर बार है ॥
श्याम मेरे आ जाओ.....

□

और क्या मांगू तुमसे, बस मेरा मान रखना,
लाज मेरी ना जाये, इतना सा ध्यान रखना,
और कुछ मैं ना चाहूँ, इतनी मेरी अर्ज़ है,
अपनों चरणों में सुरक्षित, मेरा स्थान रखना,
कहदो 'सोनू' की विनती, तुम्हें स्वीकार है ॥
श्याम मेरे आ जाओ.....

□ □ □

श्री आदित्य मोदी 'सोनू' द्वारा 'थोड़ा सा प्यार
हुआ है' गीत की तर्ज पर रचित भावपूर्ण रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 गाँवकाली वर्ष

श्री श्याम

हसनाम द्वारा

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

गुदगुदी याद में तेरी होती है,
कभी तो खूब मजा आता है ।
यादें नश्तर सा ये चुभोती हैं,
कभी तो खूब मजा आता है ॥

□

कोई अंदाज नहीं जाऊँ कहाँ,
मैं दिले-हाल सुनाऊँ कहाँ,
क्या पता कब मिलेगा सौँवलिया,
दिल यों खवाब में झूब जाता है ॥
गुदगुदी याद में तेरी होती है.....

□

आज गरचे मेरा दिलदार मिले,
दिल ये कहता है तेरा यार मिले,
मेरा उसका लगाव दिल से है,
मेरा उसका पुराना नाता है ॥
गुदगुदी याद में तेरी होती है.....

□

तेरी चौखट पे झुकी हैं आँखें,
तेरे मुखड़े पे रुकी हैं आँखें,
देखता हूँ जब मैं ये बांकी अदा,
दिले-नादान बहक जाता है ॥
गुदगुदी याद में तेरी होती है.....

□

श्यामबहादुर का ये इशारा है,
'शिव' तेरे बिन कहाँ गुजारा है,
तेरे दर की मैं खाक हूँ प्यारे,
बिन तेरे कुछ नहीं सुहाता है ॥
गुदगुदी याद में तेरी होती है.....

□ □ □

श्रद्धेय शिवचरणजी भीमराजका 'शिव'
द्वारा 'याद में तेरी जाग-जाग के हम'
गीत की तर्ज पर रचित अनुपम रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □

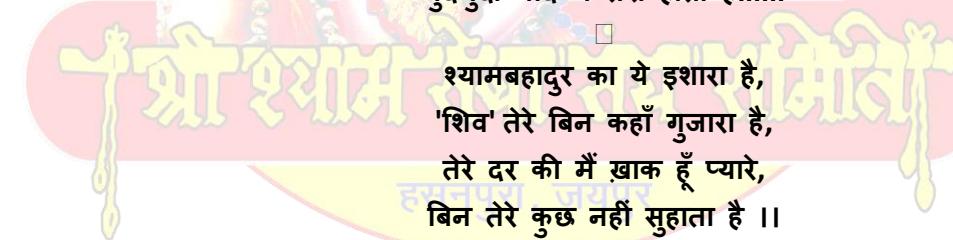


॥ श्री गणेशाय नमः ॥



॥ श्री वैष्णवत्मके नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की शुभाली वर्ष



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

मन की बातां साँवरियै नै, आज सुणाकै देखले,
सुणसी-सुणसी साँवरो तूं टेर लगाकै देखले ॥

□

गळी-गळी क्यूं भटक रहयो तूं,

श्याम खड़यो तेरे आगै,

तेरी पीड़ा बो ही हरैगो, चालैगो तेरे सागै,
गैलो टेढो, बाबो सीधो, बदलै भाग्य की रेख रे ॥

मन की बातां साँवरिया नै.....

□

दुनिया सैं के आस करै है, श्याम ही सांचो साथी,
मन दिवलै नै जगमग करले, घाल प्रेम की बाती,
रोम-रोम मं श्याम रमाले, फेर तमाशो देखले ॥

मन की बातां साँवरिया नै.....

□

खाटू मांही लगी कचहरी, श्याम करै सुणवाई,
साँचो न्याय चुकातो आयो, जाणौ पीड़ पराई,
'अनिल' सुणादे बातां सारी, चरणां माथो टेकले ॥

मन की बातां साँवरिया नै.....

□ □ □

'नगरी-नगरी द्वारे-द्वारे, ढूँढू रे साँवरिया' गीत

की तर्ज पर श्री अनिल जी अग्रवाल (हसनपुरा) द्वारा रचित भजन ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति

□ □ □ □ □ □ □ □

कन्हैया से यारी, पड़ी बहुत भारी,
ख्यालों में ये, जिन्दगी है गुजारी,
मिला है क्या मुझको, अनूठा शिकारी ॥



मैं दिले-हाल किसको सुनाऊँ बता,
मेरा तो कन्हैया के दर पे पता,
निभेगी ये कैसे हमारी तुम्हारी,
लगी है दग्न की चुभीली कटारी ॥
कन्हैया से यारी, पड़ी....



क्या ग़ज़ब का तेरी जुल्फ़ का मोड़ है,
मेरे दिलदार तेरा नहीं जोड़ है,
रंगीले की बेशक़ रंगीली सवारी,
श्रीकृष्ण गोविन्द बांके बिहारी ॥
कन्हैया से यारी, पड़ी....



श्यामबहादुर मुझे तुम सम्हालो ज़रा,
कलेजे से 'शिव' को लगालो ज़रा,
ठाकुर तूं मेरा मैं तेरा पुजारी,
झलक तो दिखा प्राणी प्यारे मुरारी ॥
कन्हैया से यारी, पड़ी....

□ □ □

श्रद्धेय स्व. शिवचरण जी भीमराजका द्वारा
'वो जब याद आये, बहुत याद आये' गीत
की तर्ज पर रचित अनमोल रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □



॥ श्री गणेशाय नमः ॥



॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 गोवशाली वर्ष



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

॥ ०००००००००००० ॥

बांके बिहारी, हे गिरधारी, बोलो ना,
काँई भूल गया, नैणा तो, खोलो ना ॥

□

डार मोहिनी, बस कर लिन्यो, बृजभूषण गोपाला,
मधुरी-मधुरी मुरली तेरी, मन मेरा मतवाला,
कृष्ण-कन्हैया, धेनू चरैया, जोल्यो ना ।
काँई भूल गया, थे नैणा तो, खोलो ना ॥



प्रानव-माधव सेवा के 30 गांवकशाली वर्ष

जीवन ज्योति, मन का मोती, थे मेरा रखवारा,
हिवड़े मांय बसाल्य थाने, रातां का बिणजारा,
थारी काळी, कमली मांय, लखोल्यो ना ।
काँई भूल गया, थे नैणा तो, खोलो ना ॥

□

जूनै चाकरियै नै भूल्या, देख नया हर्षवै,
मरुभूमि की तीस ना मेटो, सागर मांही बरसो,
नींद आवै तो, पाँव दबादयूँ, सोल्यो ना ।
काँई भूल गया, थे नैणा तो, खोलो ना ॥

□

श्यामबहादुर 'शिव' का थे ही, साँचा जीवन साथी,
सांवळिया सरकार मेरै, मन दिवलै की थे बाती,
मारयो-मारयो, थारै ताँई, के डोल्यो ना ।
काँई भूल गया, थे नैणा तो, खोलो ना ॥

हसनपुरा, रुद्रपुर

जोल्यो = देख लो, लखोल्यो = छुपालो,
जूनै = पुराने, तीस = प्यास,

॥ ०००० ॥

श्रद्धेय शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा 'दिल दीवाना,
बिन सजना के' गीत की तर्ज पर रचित अनुपम रचना ।

॥ ००००००००००००००० ॥

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□□□□□□□□□□□□

शृंगार देखो रे, मेरै खाटवाले श्याम को,
शृंगार देखो रे, दरबार देखो रे,
मेरै खाटवाले श्याम को ॥

□

जब-जब सुदी की ग्यारस आवै, सांवरियो हर्षावै,
दादुर-मोर-पपीहा सारा, राग-रागिनी गावै,
बदल-बदल कर बागा पहरै, यो सिणगार करावै,
रंग-रंगीलो छैल-छबीलो, यो दरबार लगावै ॥
शृंगार देखो रे, मेरै खाट.....



मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

सज धज कर सिंधासन ऊपर, बैठ्या श्यामबिहारी,
सिर पे पगड़ी कमर मं फैटो, बांध्या है गिरधारी,
कान मं कुँडल, पगां मं पायल,
आँखां मं काज़ल घाल्या,
थे ही म्हारा सेठ साँवरा, थे ही खाटुवाळा ॥
शृंगार देखो रे, मेरै खाट.....

□

खाटवाले श्यामधणी की, महिमा है बड़ी भारी,
दूर-दूर से दर्शन करने, आते हैं नर-नारी,
खीर-चूरमो, माखन-मिश्री, लाडू पेड़ा बुंदिया,
रुच-2 जीमो जिमावै 'अन्न', खाटुवाळा धणिया ॥
शृंगार देखो रे, मेरै खाट.....

हसनपुरा, राजस्थान

श्री अनूप शर्मा 'अन्न' द्वारा 'झुमका गिरा रे
बरेली के बाजार में' गीत की तर्ज पर रचित
अनुपम रचना ।

□□□□□□□□□□□□

ॐ श्री ईश्वामरसेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □

मेरी आँखों में है आँसू,
ये आँसू पौछ दो कान्हा,
ये अविरल धार बन बहते,
इन्हें तुम रोक दो कान्हा ॥



॥ श्री यामरसेवा समिति ॥



॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

■
ज़माना चोट दे-देकर,
रुलाता जा रहा मुझको,
ज़माने की निगाहों को,
ज़रा तुम मोड़ दो कान्हा ॥
मेरी आँखों में हैं आँसू.....

■
सम्हलना जो अगर चाँहू,
ज़माना मारता ठोकर,
गिरूं जब ठोकरें खाकर,
मुझे तुम थाम लो कान्हा ॥
मेरी आँखों में हैं आँसू.....

■
'रवि' अब हो गया घायल,
सहन शक्ति भी खोई है,
मैं धीरज खो चला हूँ जी,
करूँ क्या बोल दो कान्हा ॥
मेरी आँखों में हैं आँसू.....

■
श्री रविन्द्र के जरीवाल 'रवि'
द्वारा 'ना झटको जुलफ से
पानी' गीत की तर्ज पर रचित
भावपूर्ण भजन।

□ □ □ □ □ □

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□□□□□□□□□□

आणो पड़सी हे मनमोहन, थानै भगत बुलावै है,
दीनानाथ अनाथ का बंधु थानै सब ही बतावै है ॥

□

जद-जद भीड़ पड़ी भक्तन पर,
तब-तब आप पथारया जी,
निर्बल का बल निर्धन का धन,
सबका काज संवारया जी,
हरया हुया का साथी नाथ थे,
अब क्यूँ देर लगावै है ॥

□

थारा भगत के म्हारा प्रभुजी,
थारो ही एक सहारो हैं,
थे नहीं आया तो प्रभु म्हारा,
काँई हाल हमारो है,
पल-पल बीतै बरस बराबर,
इतनो काँई तरसावै है ॥

□

इतनी देर करी काँई मोहन,
दिल म्हारो घबरावै है,
बाट उड़ीकत अँखियां म्हारी,
रो-रो नीर बहावै है,
भक्त वत्सल भगवान कहाकर,
भक्तां को जीव दुखावै है ॥

□

म्हारी नैया बीच भँवर मं,
केवटियो जाणै कठै गयो,
थारे भरोसे छोड़ी नैया,
ते भी जाणै कठै अटैक गयो,
बेगा आओ म्हारा गिरवरधारी,
नैया डूबी जावै है ॥

□

सोता होवो तो जागो मोहन,
जागो हो तो आओ जी,
आओ लाज बचाओ म्हारी,
मतना देर लगाओ जी,
'सोहनलाल' का हाल देखकर,
तू भी क्यूँ चकरावै है ॥

□□□

स्व. सोहनलालजी लोहाकार द्वारा 'चाँदी' की
दीवार ना तोड़ी' गीत की तर्ज पर रचित अति
प्राचीन भावभरा भजन।

□□□□□□□□□□



प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षाली वर्ष

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

हसनपुरा, जयपुर

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

थांसै विनती करां हां बारम्बार, सुणो जी सरकार,
खाटू का राजा महर करो ।
महर करो जी, अबकी बेर करो,
थे मतना देर करो ॥

□

थां बिन नाथ अनाथ की जी, कुण राखैलो टेक,
म्हांसा थांकै मोकळा जी,
थांसा तो म्हारै थे ही एक,
खाटू का राजा महर करो ॥
थांसै विनती करां हां बारम्बार



जाणू हूँ दरबार मं थारै, घणी लगी है भीड़,
थारै बिन किस विध मिटेगी,
भोळा भगत की या पीड़,
खाटू का राजा महर करो ॥
थांसै विनती करां हां बारम्बार

□

ज्यू-ज्यू बीतै टेम हिये को, छुट्यो जावै धीर,
उळझायो आवै काळजो जी,
नैणा सें टप-टप टपकै नीर,
खाटू का राजा महर करो ॥
थांसै विनती करां हां बारम्बार

□

साथी म्हारै जीव का थे, थांसै छानी नाय,
जाण-बूझ कर मत तरसाओ,
हिवड़ सें लेओ लिपटाय,
खाटू का राजा महर करो ॥
थांसै विनती करां हां बारम्बार

□

द्रुपद सुता की लज्जा राखी, गज को काट्यो फंद,
सुण कर टेर देर मत किज्यो,
श्याम 'बिहारी' बृजचन्द,
खाटू का राजा महर करो ॥
थांसै विनती करां हां बारम्बार

□ □ □

श्री कुंजबिहारी सोनी 'बिहारी' द्वारा 'महाने अबकी बचाले म्हारी माय' (म्हारै सिर
पर है बाबाजी रो हाथ) भजन की तर्ज पर रचित अनुपम रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □



प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की उम्मीद



ॐ श्री श्याम रसेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

बेलै को इक गजरो दे दे, यै ले नकदी दाम,
श्याम की मालणिया,
श्यामधणी की सेवा करणो, है मेरो तो काम,
श्याम की मालणिया ॥



॥ श्री यामशाय नमः ॥



॥ श्री योर हनुमते नमः ॥

गैंदा गुलाब चाहे, चम्पा चमेली गुलनार हो,
जावा कनीर चाहे, जूही की माला मजेदार हो,
महक उठे कण-कण धरती को, महके खाटूधाम ।
श्याम की मालणिया ॥ बेलै को एक

मौलश्री को चाहे, चम्पा चमेली चाहे केवड़ो,
कमल सुरंगा सोहै, इत्तर को झीणो-झीणो मेहड़ो,
कोटि-कोटि दातार कहावै, जग मं मोटो नाम ।
श्याम की मालणिया ॥ बेलै को एक

केसर कस्तूरी हीनो,
अम्बर को डम्बर कैसो फूट रहयो,
कूणै मं दूर खड्यो, मैं तो अनूठो मजो लूट रहयो,
नैण मिल्या मुरली वाळे सें, मुळक रहया श्रीश्याम ।
श्याम की मालणिया ॥ बेलै को एक

श्यामबहादुर 'शिव', मोटो धणी के लाजवाब है,
तीनलोक मांही मेरै, दाता को न्यारो ही रुबाब है,
पण मेरी तो ऐं छलियै नै, कर दई नींद हराम ।
श्याम की मालणिया ॥ बेलै को एक

□ □ □

श्रद्धेय शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा
'मिलो ना तुम तो हम घबरायें' गीत की तर्ज
पर रचित अनुपम रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

बीच मङ्गधार हाथों, छूटी पतवार बाबा,
इब ना जाये नैया, श्याम जल्दी से आजा ॥

□

हाथ कमजोर मेरे, कैसे नैया चलाऊँ,
थक गया हूँ दयालु, आजा तुझको बुलाऊँ,
या मुझे पार करदे, या तरीका बताजा ॥
इब जाये ना नैया, श्याम



प्रानव-माधव सेवा के 30 गोरक्षाली वर्ष

एक विश्वास तुझपे, मैंने हरदम किया है,
मुसीबत के समय में, श्याम हाजिर हुआ है,
उस भरोसे की बाबा, आके इज़्जत बचाजा ॥
इब जाये ना नैया, श्याम

□

भक्त के वास्ते तूँ, नंगे पैरों ही आता,
'हर्ष' पूछे बतादे, काहे देरी लगाता,
भक्त-भगवान् का वो, प्यारा रिश्ता निभाजा ॥
इब जाये ना नैया, श्याम

हसनपुरा, ज. □ □ □

श्री विनोद अग्रवाल 'हर्ष' द्वारा 'चाँद आहें
भरेगा, फूल दिल थाम लेंगे' गीत की तर्ज
पर रचित भजन ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

काम पटाओ, सारे जग का, देखो ना,
मेरी बरियां यूँ, चिमटा सैं, सेको ना ॥

□

डरतो बोलूँ, तो भी कोनी, दया तन्नै कुछ आवै,
तरसाणै मं, नम्बर तेरो, पहलो श्याम बतावै,
बालकियै नै, देद्यो दाता, टेको ना ॥
मेरी बरियां यूँ, चिमटा सैं.....



॥ श्री गणेशाय नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 गोरक्षाली वर्ष

तेरी लैरयां गयो जमारो, या तो तूँ भी जाणै,
यादां मं तेरी कोई सूखो, तूँ तो मस्ती छाणै,
देव दयालु, नाम दया को, छेको ना ॥
मेरी बरियां यूँ, चिमटा सैं.....

□

श्यामबहादुर 'शिव' नै भी, सेवा मं दाता लेल्यो,
आंगणियै मं रहस्युं थारै, आंगणियै मं खेल्यो,
चाकरियो हूँ, थारो जग को, ठेको ना ॥
मेरी बरियां यूँ, चिमटा सैं.....

□ □ □

श्रद्धेय शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा
'दिल दीवाना, बिन सजना के' गीत की तर्ज
पर रचित भजन ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

जब से मिली शरण, कि मेरे दिन बदल गये,
ऐसी लगी लगन, कि मेरे दिन बदल गये ॥

□

खाटू जो पहुँचा पहली बार,
मन को लुभाया ये दरबार,
हूँक सी दिल में उठने लगी,
श्याम से हो गया मुझको प्यार,
झुक कर किया नमन, कि मेरे दिन बदल गये ॥
ऐसी लगी लगन, कि मेरे

३०
॥ श्री योर हनुमते नमः ॥

३०
॥ श्री योर हनुमते नमः ॥

३०
श्याम ने सिर पर हथ धरा,

बोझ मेरे सिर का उतरा,
कृपा श्याम ने बरसाई,
बाग हो गया हरा-भरा,
महका मेरा चमन, कि मेरे दिन बदल गये ॥
ऐसी लगी लगन, कि मेरे

३०
अब जीवन में मस्ती है,
मेरी सुखी गृहस्थी है,
जो आनन्द में लेता हूँ,
दुनिया उसे तरसती है,
रहता हूँ मैं मगन, कि मेरे दिन बदल गये ॥
ऐसी लगी लगन, कि मेरे

३०
श्याम के दर पे आता हूँ,

हसनास ले जाता हूँ,
कुछ लेकर ही जाता हूँ,
'बिन्नू' कहता इसीलिए,
श्याम तराने गाता हूँ,
करता हूँ मैं भजन, कि मेरे दिन बदल गये ॥
ऐसी लगी लगन, कि मेरे

३०
□ □ □

श्री विनोद गाडोदिया 'बिन्नू' द्वारा 'उनसे मिली नजर कि
मेरे' गीत की तर्ज पर अनुपम रचना ।

३०
□ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □

घट-घट की तूं तो जाने है माँ,
तुझे क्या मैं कैसे बयान करूँ,
तेरी पूजा-जप-तप ना जानूँ
कैसे तेरा गुणगान करूँ ॥

□

कैसी-कैसी बाधायें हैं माँ,
आ-आकर मुझको तोड़ रही,
नाकमियां और परेशानियां भी,
मुझसे अब नाता जोड़ रही,
तेरे होते ये, सबकुछ हो रहा माँ,
कब तक मैं ये विषपान करूँ ॥
घट-घट की तूं तो जाने है माँ

□

करता हूँ खुद भी मंथन माँ,
कुछ गलत हुआ है क्या मुझसे,
कहदे इतना क्यूँ रुलाती है,
कुछ भी तो छुपा ना माँ तुझसे,
बिन तेरे अकेला पड़ गया हूँ,
किस बात की झूठी शान करूँ ॥
घट-घट की तूं तो जाने है माँ

□

रक्षा कर रक्षा कर माँ,
अब तो सहने की शक्ति नहीं,
मेरा तेरे सिवा कोई और नहीं,
माँ भाव बने क्यूँ भक्ति नहीं,
'लहरी' वर दे माँ मौज करूँ,
आ जाओ तुम्हारा ध्यान करूँ ॥
घट-घट की तूं तो जाने है माँ

□ □ □

श्री चन्द्रशेखर शर्मा 'लहरी' द्वारा
'बाबुल की दुआयें लेती जा' गीत
की तर्ज पर रचित शक्ति वन्दना।

□ □ □ □ □ □



॥ श्री याम नमः ॥



॥ श्री योग नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

हसनपाल जयपाल

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

खाटू के बाबा श्यामजी, मेरी रखोगे लाज,
मीरां के घनश्यामजी, मेरी रखोगे लाज ॥



एक भरोसो थारो है, तू ही पत राखणवारो है,
छोटो सो मेरो काम जी, मेरी रखोगे लाज ॥

खाटू के बाबा श्यामजी, मेरी

टेर सुणो सांवलशाह मेरी,
धीर बंधाओ करो ना देरी,

दुःखहर्ता थारो नाम जी, मेरी रखोगे लाज ॥

खाटू के बाबा श्यामजी, मेरी

□

भीख दया की कब दोगे, मेरी सुध प्रभु कब लोगे,
पूजूँ मैं थारा पाँव जी, मेरी रखोगे लाज ॥

खाटू के बाबा श्यामजी, मेरी

'काशी' चरणां को चेरो, जीवन सफल बणा मेरो,
थां बिन कित आराम जी, मेरी रखोगे लाज ॥

खाटू के बाबा श्यामजी, मेरी

□ □ □

श्रद्धेय काशीरामजी शर्मा द्वारा परम्परागत तर्ज पर
आधारित अति प्राचीन एवं भावपूर्ण भजन ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सरेषा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

हे श्याम मुरलीवाले, मुझको गले लगाले,
मैं तेरा दास साँवरे, नजरें ज़रा मिलाले ॥

□

नैनों मैं नूर तेरा, ये भी कुसूर मेरा,
तेरे बिना मुरारी, चारों तरफ अँधेरा,
रंगीं तेरा नजारा, कितना ही जुल्म ढाले ॥
हे श्याम मुरलीवाले



□

दातार जग बतावै, फिर भी तूं दिल दुखावै,
दर का गुलाम तेरा, तूं नाच क्यूँ नचावै,
उल्फत की ये पुकार है, इसको तूं ही सम्हाले ॥
हे श्याम मुरलीवाले

□

फरियाद सुन हमारी, लीलै की कर सवारी,
नैणा लड़ाकै तूने, अब नीत क्यूँ बिगाड़ी,
'शिव' श्यामबहादुर से, पर्दा ज़रा हटाले ॥
हे श्याम मुरलीवाले

□ □ □

श्रद्धेय शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा
'चूड़ी मजा ना देगी' गीत की तर्ज पर रचित
भावभरी रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □



प्रानव-माधव सेवा के 30 गोरक्षाली वर्ष



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ऐसा क्या मुझसे गुनाह हो गया है,
मेरा कन्हैया, खफा हो गया है ॥

□

ओ सांवलिये सरकार, नजर तूने जबसे फेरी है,
मावस हो या पूनम, मेरी हर रात अँधेरी है,
भरोसा था मुझको, तेरा कन्हैया,
आई मुसीबत तो, तूं सो गया है ॥
ऐसा क्या मुझसे गुनाह



किस गलती पे सरकार, ये नजरें झुकाये बैठे हैं,
हम चौखट पे तेरी, उम्मीद लगाये बैठे हैं,
बोलो जुबां से, कुछ तो ए मोहन,
आखिर तुम्हे ये, क्या हो गया है ॥
ऐसा क्या मुझसे गुनाह

□

दीनों का दिल मोहन, बड़े चुपचाप से रोता है,
'बनवारी' तेरे सिवाय, किसे मालूम होता है,
दिल से भुला दे, दिलदार कन्हैया,
अनजाने में मुझसे, जो हो गया है ॥
ऐसा क्या, मुझसे गुनाह

॥ ॥ ॥

श्री जयशंकर चौधरी 'बनवारी' द्वारा 'सौ साल पहले,
मुझे तुमसे प्यार था' गीत की तर्ज पर
रचित अति भावपूर्ण रचना ।

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥



मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की शुभ वर्षीय

श्री श्याम

ॐ श्री श्याम रसेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

नैनों की पुतलियों में, घनश्याम की ज्योति है,
यादों की कसक दिल में, नस्तर सा चुभोती है ॥

□

तेरे चाहने वालों को, दुनिया मं कमी के है,
तेरी मस्ती को मस्तानो, हो बैंके कमी के है,
तेरी एक झलक दुब्दया, तन-मन को खोती है ॥
यादों की कसक दिल में



प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षीय व्रत

□

मर्जी पे तेरी बंदो, कोई जीव टिकायो है,
मुस्कान पे जो तेरी, सर्वस्व लुटायो है,
आपस में तेरी उसकी, अपनी समझौती है ॥
यादों की कसक दिल में

□

हर हाल मं दास तेरो, खुश है या हक्कीकत है,
दुलमुल नीति वाला, तो खुद ही मुसीबत है,
भावों से भरा दिल ही, दाता की मनौती है ॥
यादों की कसक दिल में

ॐ श्री श्याम रसेवा संघ समिति ॥

'शिव' श्यामबहादुर का, संपर्क पुराना है,
मेरा काम तो बस उसकी, हाजरी बजाना है,
नाता उसका सबसे, नहीं मेरी बपौती है ॥
यादों की कसक दिल में

□ □ □

श्रद्धेय शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा 'ए मेरे दिल-ए-नादां'
गीत की तर्ज पर रचित अनुपम भावपूर्ण रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□□□□□□□□

ओ रे कन्हैया, किसको कहेगा तूं मैया,
एक ने तुझको जन्म दिया रे,
एक ने तुझको पाला ॥

□

मानी मानतायें, देवी-देव पूजे,
पीड़ सही देवकी ने,
दूध में नहलाने का, गोद में खिलाने का,
सुख पाया यशोदा ने,
एक ने तुझको जन्म दिया रे,
एक ने तुझको पाला ॥
ओ रे कन्हैया, किसको कहेगा



□

मरने के डर से, भेज दिया घर से,
देवकी ने रे गोकुल से,
बिना दिए जन्म, यशोदा बनी माता,
तुझको छुपाया आँचल में,
एक ने तन को रूप दिया है,
एक ने मन को ढाला ॥
ओ रे कन्हैया, किसको कहेगा

□

जन्म दिया हो, चाहे पाला हो किसी ने,
भेद ये ममता ना जाने,
कोई भी हो, जिसने दिया प्यार माँ का,
मन तो उसी को माँ माने,
एक ने तुझको दी हैं आँखे,
एक ने दिया उजाला ॥
ओ रे कन्हैया, किसको कहेगा

□□□

1971 में रिलीज़ हुई हिंदी फ़िल्म
'छोटी बहू' में स्व. किशोर कुमार
द्वारा स्वरबद्ध सुप्रसिद्ध गीत ।
लेखक - श्री इंदीवर ।

□□□□□□□

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षाली वर्ष

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

हसनगर जून

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

मिलके खुशियाँ मनाओ रे, आया श्याम सलोना,
श्याम सलोना, मेरा कान्हा सलोना,
गीत खुशी के गाओ रे, आया श्याम सलोना ॥

□

गोकुल नगरिया को दुल्हन बनाओ,
घर-घर खुशी के दीप जलाओ,

मंगल कलश सजाओ रे, आया श्याम सलोना ॥
गीत खुशी के गाओ रे



प्रगटे यहाँ हैं कृष्ण-कन्हाई,

सुन्दर सलोनी छवि मन भाई,

मन-मंदिर में बिठाओ रे, आया श्याम सलोना ॥
गीत खुशी के गाओ रे

□

इनका लगेगा दरबार भारी,

सजधज के बैठेंगे श्याम मुरारी,

दिल का हाल सुनाओ रे, आया श्याम सलोना ॥
गीत खुशी के गाओ रे

□

मालिक 'अनिल' इन्हें मानले अपना,

कर देंगे कान्हा सच हर सपना,

जीवन सफल बनाओ रे, आया श्याम सलोना ॥

गीत खुशी के गाओ रे

□ □ □

'चलत मुसाफिर मोह गयो रे' गीत की तर्ज पर लगभग 28

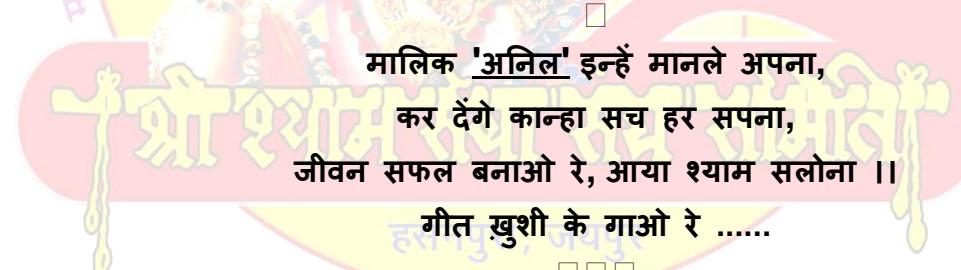
वर्ष पूर्व श्री अनिल जी अग्रवाल (हसनपुरा) को यह भजन

लिखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □



मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षाली वर्ष



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

खाटूवाले श्याम धणी की, हो रही जै-जैकार,
दुनिया भिखारी आवै, मांगे हैं हाथ पसार ॥

□

दान दिया वह जग में दानी कहलाया,
श्यामधणी ने फैला दी पग-पग माया,
श्यामधणी के नाम से दुनिया,
तुमको रही पुकार ॥
दुनिया भिखारी आवै, मांगे.....



मानव-माधव सेवा के 30 गोरक्षाली वर्ष

मांग रहा संतान कोई धन मांग रहा,
कोढ़ी काया और पंगु तन मांग रहा,
नैन हीन कहता है दाता, दर्शन दो इक बार ॥
दुनिया भिखारी आवै, मांगे.....

□

दयावान दाता तूं दुःख हरने वाला,
निर्बल को बल देता है खाटूवाला,
सोई हुई तक़दीर जगादे, ऐसा लखदातार ॥
दुनिया भिखारी आवै, मांगे.....

□

रोम-रोम में रमा श्याम वरदानी को,
सफल बनाले तूं बंदे जिंदगानी को,
वो नैया का बने खिवैया, करदे बड़ा पार ॥
दुनिया भिखारी आवै, मांगे.....

□

मधुसूदन, मनमर्दन, मनमोहन प्यारे,
पार ब्रह्म पुरुषोत्तम पाप हरो सारे,
बृजवासी चमचम की दाता, चमन रहे गुलजार ॥
दुनिया भिखारी आवै, मांगे.....

□ □ □

'बार-बार तोहे क्या समझाये' गीत की
तर्ज पर रचित अनुपम रचना ।
लेखक - श्री 'बृजवासी' (अन्नात) ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री ईश्वामरसेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □

पार करो मेरा बेड़ा ओ बाबा,
पार करो मेरा बेड़ा,
छाया घोर अन्धेरा ओ बाबा,
पार करो मेरा बेड़ा ॥



गहरी नदिया, नाव पुरानी,
दया करो ओ, शीश के दानी,
हमको आसरा तेरा ओ बाबा,
पार करो मेरा बेड़ा ॥

मैं निर्गुण, गुण मुझमें ना कोई,
बाबा जगादो, किस्मत सोई,
देख ना अवगुण मेरा ओ बाबा,
पार करो मेरा बेड़ा ॥

खाटूवाले तेरी, ज्योत जगाई,
एक झलक की, आश लगाई,
हृदय करो बसेरा ओ बाबा,
पार करो मेरा बेड़ा ॥

भक्तों को बाबा, ऐसा वर दो,
प्यार की एक नजर, तुम कर दो,
हस लुटे पाप लूटेरा ओ बाबा,
पार करो मेरा बेड़ा ॥

□ □ □

परम्परागत तर्ज (प्रभाती) पर
आधारित अति प्राचीन एवं
सर्वप्रिय भजन ।

□ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□□□□□□□□□□

म्हारो बेड़ो पार लगा दीज्यो, खाटुवाळा श्याम,
खाटुवाळा श्याम, म्हारा लीलै वाळा श्याम,
भटकयां नै राह दिखा दीज्यो, खाटुवाळा श्याम ॥

□

म्हारी टेर सुणो थे अबकी,
म्हारी नाव भैरव मं अटकी,
अटकी नै पार लगा दीज्यो,

खाटुवाळा श्याम ॥

म्हारो बेड़ो पार लगा दीज्यो

□

है एक आसरो थारो,
नहीं और कोई है म्हारो,
विपदा मं साथ निभा दीज्यो,
खाटुवाळा श्याम ॥

म्हारो बेड़ो पार लगा दीज्यो

□

दुनिया मं तेज तिहारो, चम-चम चमकै उजियारो,
जीवन मं ज्योत जला दीज्यो,
खाटुवाळा श्याम ॥

म्हारो बेड़ो पार लगा दीज्यो

□

म्हारै मन मं आशा जागी, थारै नाम की लगन है लागी,
म्हारै मन का कष्ट मिटा दीज्यो,
खाटुवाळा श्याम ॥

म्हारो बेड़ो पार लगा दीज्यो

□

बाबा इतना ना तरसाओ, कुछ तरस मेरे पर खाओ,
बीती बातां नै भूला दीज्यो,
खाटुवाळा श्याम ॥

म्हारो बेड़ो पार लगा दीज्यो

□

हसनपु थे लखदातार कहाओ,
लीलै पर चढ़कर आओ,
भगतां नै दरस दिखा दीज्यो,

खाटुवाळा श्याम ॥

म्हारो बेड़ो पार लगा दीज्यो

□

घर-घर मं चर्चा थारी, थे दीन-दुःखी हितकारी,
इस बालक नै अपना लीज्यो,
खाटुवाळा श्याम ॥

म्हारो बेड़ो पार लगा दीज्यो

□□□

परम्परागत राजस्थानी तरङ्ग पर आधारित अति प्राचीन, भावपूर्ण भजन ।

□□□□□□□□□□

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 गाँवकाली वर्ष

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

हसनपु

ॐ श्री ईश्वामसेवा संघ समिति ॥

□□□□□□□□□□

कलियुग के घोर अंधेरे में,
तेरी जगमग ज्योत जगे, चमके तेरा नूर,
धरती-अम्बर पाताल में भी,
तेरे नाम का डंका बजे, चमके तेरा नूर ॥

□

मोहन मुरलीवाला तं भक्तों का रखवाला तं
भरी सभा में द्रुपदसुता की, लाज बचाने वाला तं
अर्जुन के रथ को तं हांका,
किया उसका दुखड़ा दूर, चमके तेरा नूर ॥
कलियुग के घोर अंधेरे में.....



नरसी की हुण्डी तारी, सांवलशाह गिरधारी तं
धुव-प्रहलाद की रक्षा की, और तारी मीरां बाई तं
इक बार नजर तो फेर इधर,
और करदे दुखड़ा दूर, चमके तेरा नूर ॥
कलियुग के घोर अंधेरे में.....

□

दर-दर का ठुकराया हूँ, प्रभु शरण में तेरी आया हूँ,
महिमा तेरी सुनकर भारी, चरणों शीश झुकाया हूँ,
प्रभु लेलो शरण में तुम अपनी,
मैं आया होके मजबूर, चमके तेरा नूर ॥
कलियुग के घोर अंधेरे में.....

□

पापी हूँ या कपटी हूँ, चाहे मैं नालायक हूँ,
हाथ धरो मुझ पर मोहन, आखिर तेरा बालक हूँ,
तं जन्म-जन्म का साथी मेरा,
नैनों से मत हो दूर, चमके तेरा नूर ॥
कलियुग के घोर अंधेरे में.....

□

भक्तों के घर आ जाओ,
अपनी ज्योत जगा जाओ,
भक्त खड़े हैं द्वार पे तेरे, भव से पार लगा जाओ,
सदा अमर रहे ज्योति तेरी,
और हो अंधियारा दूर, चमके तेरा नूर ॥
कलियुग के घोर अंधेरे में.....

□□□

'तेरी प्यारी-प्यारी सूरत को, किसी की नजर ना लगे' गीत
की तर्ज पर रचित अति प्राचीन भजन । लेखक - अज्ञात ।

□□□□□□□□□□

ॐ श्री श्यामरसेवा संघ समिति ॥

॥ ०००००००००००० ॥

बैं मुरलीमनोहर नै, मेरी पीड़ सुणाऊँगा,
गिरधारी मनहारी, की सेवा बजाऊँगा ॥

□

पहचान पुराणी है, यै आँख्यां दीवानी है,
दीदार की ये प्यासी, बस प्यास बुझानी है,
बंशी के बजैया सैं, ज़रा नजरें मिलाऊँगा ॥
गिरधारी मनहारी, की.....



दिन-रात निकट जाऊँ, चरणों सें लिपट जाऊँ,
चाकर हूँ तेरे दर का, चौखट पे चिपट जाऊँ,
घड़ियाँ इस जीवन की, इस दर पे बिताऊँगा ॥
गिरधारी मनहारी, की.....

□

'शिव' श्यामबहादुर की, घनश्याम से यारी है,
सुध लेते सदा से ही, मेरे बांकै बिहारी है,
अब तक ना रिझा पायो, पण इब तो रिझाऊँगा ॥
गिरधारी मनहारी, की.....

हसनपुरा, ३०००००

श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव'
द्वारा 'एक प्यार का नगमा है' गीत की तर्ज
पर रचित भावपूर्ण भजन ।

॥ ००००००००००००००० ॥

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

खाली झोली लेकर आयो, झोली भरदे,
तेरो साँचो है दरबार, मेरो न्याय करदे ॥

□

दुर्बल काया पास ना माया, थारै दर पर आयो,
मूँजी क्यूँ बण बैठ्यो दाता, लखदातार कहायो,
थानै नींदड़ली क्यूँ आवै, नैया पास करदे ॥



तेरो साँचो है दरबार मेरो

□

तेरो सो मालिक पाकर के, फिर भी मैं दुःख पाऊँ,
थानै छोड़के तूँ ही बतादे, कैनै हाल सुणाऊँ
थारै चरणां मं पड़यो हूँ, सिर पर हाथ धरदे ॥

तेरो साँचो है दरबार मेरो

□

के तैरै कीच जमी कानां मं, देवै नहीं सुणाई,
बिलख-2 कर हार गयो मैं, किरतां भी ढळ आई,
कद सैं फाइल मं पड़ी है, अर्जी पास करदे ॥

तेरो साँचो है दरबार मेरो

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षाली वर्ष

जगतनियंता पालनकर्ता, खाटू श्यामबिहारी,
कर जोड़यां भगत खड़या है, सुध लेल्यो गिरधारी,

थारो टाबर हूँ मैं, महर मुरारी करदे ॥

तेरो साँचो है दरबार मेरो

□ □ □

राजस्थानी तर्ज 'पगल्यां री पायलड़ी भीजै' पर आधारित
अति प्राचीन भजन । लेखक - अज्ञात ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

ये प्रीत तुम्हारी श्याम, हमें नहीं पोसाती है,
हम बुला-बुला हारे, तुझे लाज न आती है ॥

□

हम तो तुझे याद करें, तुम हमको बिसरा दो,
हम तुमको ना बिसरायें, तुम हमको ठुकरा दो,
क्यों तड़फाते हो हमें, तुम बना के साथी है ॥

ये प्रीत तुम्हारी श्याम.....

□

फेरत-फेरत आँखें, ये पलकें भी दुखने लगी,
नहीं नींद हमें आती, ये रात भी ढ़लने लगी,
कैसे निर्मोही तुम, ये रात बताती है ॥

ये प्रीत तुम्हारी श्याम.....

□

जब हम सो जाते हैं, तुम दौड़े आते हो,
हम आँख दिखाते जब, तुम हँस के दिखाते हो,
कैसी ये प्रीत तेरी, मेरे समझ ना आती है ॥

ये प्रीत तुम्हारी श्याम.....

□

एक भक्त पुकारा था, तुझे जान से प्यारा था,
उसे लगन थी एक तेरी, एक तेरा सहारा था,
नरसी था नाम उसका, थी भक्ति साँची है ॥

हर ये प्रीत तुम्हारी श्याम.....

□ □ □

'ऐ मेरे दिले नादां, तू गम से ना' गीत
की तर्ज पर आधारित अनुपम रचना ।

लेखक - अज्ञात ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की शुभावस्तु



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

एक बार आजा रे, तुझको निहार ल्यूँ
मनड़े मं दाता तेरी, मूरत उतार ल्यूँ ॥

□

अणजाण रस्तो और, छायो अँधियारो,
तेरै बिन दाता मेरो, कुण है सहारो,
ज्योति को उजाळो दे दे, राह निहार ल्यूँ ॥
मनड़े मं दाता तेरी मूरत



प्रानव-माधव सेवा के 30 गोरक्षाली वर्ष

बतिया बणावै देखो, दुनिया दीवानी,
काळजै री पीड़ा मेरी, कोई न जाणी,
मन को गुबार दाता, कहवै तो उतार ल्यूँ ॥
मनड़े मं दाता तेरी मूरत

□

आज बतादे काँई, दोष है मेरो,
स्यामनै खड़यो है दाता, अपराधी तेरो,
चरणां नै आगे करदे, आँसू सैं पखार ल्यूँ ॥
मनड़े मं दाता तेरी मूरत

श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

'मग्न' तिहारो दाता, काँई तो बिचारो,
निर्मोही दाता म्हारी, और निहारो,
चरणां की धूल दे दे, पलकां सैं बुहार ल्यूँ ॥
मनड़े मं दाता तेरी मूरत

□ □ □

'छुप गया कोई रे' गीत की तर्ज़
पर रचित भावपूर्ण रचना ।
लेखक - श्री मग्न (अज्ञात) ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □

ऐ मुरलीवाले याद तेरी,
सीने से लगाये बैठे हैं ॥

□

आशिकः हैं तुम्हारे श्याम प्रभु,
ये बेदर्दी तुम क्या जानो,
इस दिल में ना जाने कितने,
दुःख-दर्द छिपाये बैठे हैं ॥
ऐ मुरलीवाले याद तेरी



॥ श्री गणेशाय नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 गाँवसाली वर्ष

कई बार बुलाया हमने तुम्हें,
पर आप यहाँ आते ही नहीं,
इस ग़म को ना जाने कितने,
बरसों से दबाये बैठे हैं ॥
ऐ मुरलीवाले याद तेरी

□

आयेगी कभी तो निर्माही,
इस दीवाने की याद तुम्हें,
हम राहों में तेरे 'बनवारी',
पलकों को बिछाये बैठे हैं ॥
ऐ मुरलीवाले याद तेरी

□ □ □

श्री जयशंकर चौधरी 'बनवारी' द्वारा
'दीवानों से ये मत पूछो' गीत की तर्ज
पर आधारित अनुपम रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

झूला झूलण आन पधारो, लीले के असवार,
साँवरे स्वागत है ।
पलक बिछाये बैठे सारे, आ जाओ सरकार,
साँवरे स्वागत है ॥



गणपत, हनुमत, शंकरजी, झूला झूलण आये हैं,
गोप-गोपियाँ संग कान्हा, राधाजी को लाये हैं,
बाट निहारें हम सब तेरी, बाबा लखदातार,
साँवरे स्वागत है ॥
पलक बिछाये बैठे सारे

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की उम्मीद

सावण की हरियाली, ये तीज सुहानी आई है,
गाँव-गाँव और गली-गली, झूलण की रुत आई है,
हमने बाबा खूब सजाया, ये तेरा शृंगार,
साँवरे स्वागत है ॥
पलक बिछाये बैठे सारे

मोर-मोरनी नाच रहे, 'हर्ष' नजारा है न्यारा,
ऐसा ये दरबार सजा, मानो मधुबन है प्यारा,
भक्त तेरे दर्शन को तरसें, दे दो अब दीदार,
साँवरे स्वागत है ॥
पलक बिछाये बैठे सारे

□ □ □

श्री विनोद अग्रवाल 'हर्ष' द्वारा सुप्रसिद्ध भजन 'गाड़ी वाले
मुझे बिठाले' की तर्ज पर रचित अनुपम रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम रसेषा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

या धोळी-धोळी रात, बाबा थारी ग्यारस की,
या बड़ी सुहाणी रात, बाबा थारी ग्यारस की ॥

□

मैं नाचूँ और सब मिल नाचां,
थारा ही गुण रात्युं बांचां,

सब मिल जगावां रात, बाबा थारी ग्यारस की ॥
या धोळी-धोळी रात.....



निर्धन और धनवान भी गावे,
निर्बल और सबल हरषावै,

सब मिल मनावां रात, बाबा थारी ग्यारस की ॥
या धोळी-धोळी रात.....

□

पूताणी माया भी आवै,
बाँझ नार दुखड़ो बतलावै,

सब मिल गावां रात, बाबा थारी ग्यारस की ॥
या धोळी-धोळी रात.....

कोई मेवा भेंट चढ़ावै,

कोई पुष्पों से ही रिझावै,

भेंट चढ़े सारी रात, बाबा थारी ग्यारस की ॥
या धोळी-धोळी रात.....

□ □ □

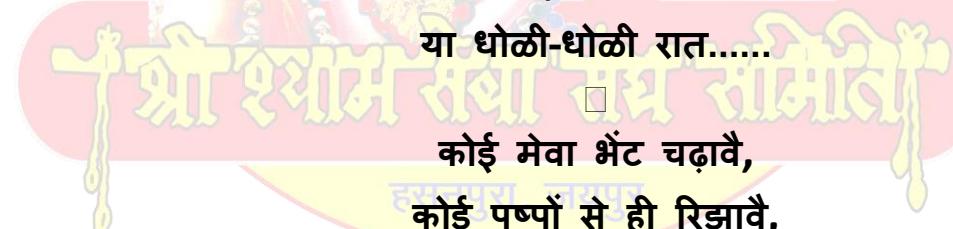
परम्परागत राजस्थानी तर्ज (म्हारी सांवरे से लागी प्रीत)

पर आधारित अति प्राचीन, भावपूर्ण भजन

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □



मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा



ॐ श्री श्याम रसेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □

तुम्हे इस दिन की खातिर कन्हैया,
आना ही होगा,
कहीं अब डूब ना जाये ये नैया,
आना ही होगा ॥



॥ श्री याणशाय नमः ॥



॥ श्री योर हनुमते नमः ॥

अगर होता मेरे वश में,
तुम्हें फिर क्यूँ बुलाते हम,
खुद अपनी नाव को खेकर,
किनारे ले ही जाते हम,
अगर आना है तो आओ,
फिर इतना सोचते हो क्या ॥
तुम्हे इस दिन की खातिर

इधर आँधी उधर लहरों ने,
ऐसा धेरा है मोहन,
निकालना है बहुत मुश्किल,
भरोसा तेरा है मोहन,
भुलाकर दीन-दुखियों को,
कहीं पर सो गये हो क्या ॥
तुम्हे इस दिन की खातिर

अगर लहरों में फँस जायेंगे,
तो ये नाव डूबेगी,
मेरे कमज़ोर हाथों से,
मेरी पतवार छूटेगी,
मुझे 'बनवारी' अब उस पार तक,
ले जाना ही होगा ॥
तुम्हे इस दिन की खातिर

□ □ □

श्री जयशंकर चौधरी 'बनवारी' द्वारा
'जो हमने दास्तां अपनी सुनाइ' गीत
की तर्ज पर आधारित रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □

॥ श्री श्यामरसेवा संघ "समिति" ॥



श्री श्यामबिहारी को, बड़ो दरबार निरालो है,
भक्तन हितकारी को, देखल्यो काम बिलालो है ॥



चाकरियो मैं श्यामधणी को, यो मेरो जजमान,
देखो जद इणका होठां पर, मीठी सी मुस्कान,
गोवर्धनधारी को, बड़ो दरबार निरालो हैं ॥



॥ श्री श्यामबिहारी हनुमते नमः ॥

श्री श्यामबिहारी को, दरबार



इण सें मेरो जूनो नातो, इण सूँ मेरो मेल,
ऐं जग में कोई जाण ना पायो, बाबाजी को खेल,
यो संकटहारी तो, सदा सें देख्यो-भाल्यो है ॥

श्री श्यामबिहारी को, दरबार



अंकै सूँ ही कहदयूँ सारी, मन की बातां खोल,
दूजै की ज्यूँ दुनिया मांही, पीटूँ कोनी ढोल,
ऐं धारमधारी को, हिये मं मेरै उजाळो हैं ॥

श्री श्यामबिहारी को, दरबार

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षाली वर्ष

श्री श्यामरसेवा संघ समिति
श्यामबहादुर 'शिव' सैलानी, यो मोटो दातार,
श्याम सदा सें सुणतो आयो, मेरी करूण पुकार,

यो लीलाधारी तो, सदा सें मेरो रुखाळो हैं ॥

श्री श्यामबिहारी को, दरबार



श्रद्धेय शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा 'तूँ प्यार का
सागर है' गीत की तर्ज पर रचित अनुपम भावपूर्ण रचना ।



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

श्री श्याम धर्णी का जैकारा,
प्रेम से बोल तूं दुबारा ॥

□

जोर से खाटवाले का, जैकारा गूँजेगा,
जैकारा इतना प्यारा, सबका दिल झूमेगा,
बार-बार हर बार सौ बारा ॥



श्री श्याम धर्णी का जैकारा

□

जैकारे की गूँज सूने, बाबा खुश हो जाये,
देव बड़ा ही दयालु है, बेड़ा पार लगाये,
फिर बन जाये काम तुम्हारा ॥

श्री श्याम धर्णी का जैकारा

□

जैकारे से बड़े-बड़े, काम सफल होते हैं,
उनका सहारा श्याम बने, जो निर्बल होते हैं,
दिलदार है वो श्याम हमारा ॥

श्री श्याम धर्णी का जैकारा

मानव-माधव सेवा के 30 गोरक्षाली वर्ष

श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

ये कलयुग का राजा है, इसकी सेवा करले,
श्याम नाम के मोती से, अपनी झोली भरले,
'बनवारी' हो जायेगा गुजारा ॥

श्री श्याम धर्णी का जैकारा

□ □ □

श्री जयशंकर चौधरी 'बनवारी' द्वारा
'तेरा जादू ना चलेगा ओ सपेरे' गीत
की तर्ज पर आधारित भजन ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

कन्हैया तू ही मेरे, दिल की कली है,
मेरी प्रीत पर्द के, पीछे पली है ॥

□

तेरे सामने बोल, कुछ भी ना पाऊँ,
छटा देखकर होश, अपना भुलाऊँ,
ये बांकी अदा तेरी, लगती भली है ॥
कन्हैया तू ही मेरे, दिल की



मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

मेरा हर कदम मेरी, मंजिल तू ही है,
तमन्नाओं की मेरी, महफिल तू ही है,
मेरी प्रीत की तू ही, संकरी गली है ॥
कन्हैया तू ही मेरे, दिल की

□

कमलनयन के शव के, दर का भिखारी,
मुझे ना भुलाना, ऐ बाँकेबिहारी,
ये दुनिया मेरी तुमसे, फूली-फली है ॥
कन्हैया तू ही मेरे, दिल की

सुनो श्यामबहादुर जो, 'शिव' की कहानी,
तुम्हारे से पहचान, दाता पुरानी,
दया से तेरी हर, बलायें टली है ॥
कन्हैया तू ही मेरे, दिल की

□ □ □

श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव'
द्वारा 'मुहब्बत की झूठी कहानी' गीत की
तर्जे पर रचित अनुपम भावपूर्ण रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

कन्हैया हिंडो घाल्यो रे हरियल बाग मं,
आई आई रे सावणिया री तीज कन्हैया,
हिंडो घाल्यो रे हरियल बाग मं ॥



॥ श्री याणशाय नमः ॥



॥ श्री खीर हनुमते नमः ॥

कन्हैया सावण सुरंगों प्यारो मास रे,
चम-चम चमकै रे आभा मं प्यारी भीज कन्हैया,
हिंडो घाल्यो रे हरियल बाग मं ॥

कन्हैया रिमझिम बरसे रे रड़ो मेवड़ो,
म्हारी तारां छाई चूनड़ जावै भीज कन्हैया,
हिंडो घाल्यो रे हरियल बाग मं ॥

कन्हैया संग की सहेल्यां जोवै बाट रे,
बांकी सासू और जिठाणी जावै खीज कन्हैया,
हिंडो घाल्यो रे हरियल बाग मं ॥

कन्हैया राधा दीवानी थारै नाम की,
म्हारी कंचन जैसी काया जावै छीज कन्हैया,
हिंडो घाल्यो रे हरियल बाग मं ॥

कन्हैया दास भँवर की या ही बिनती,
थे तो बादीला भगतां पर जाओ रीझ कन्हैया,
हिंडो घाल्यो रे हरियल बाग मं ॥

□ □ □

राजस्थानी तर्जा 'मोरिया आछो बोल्यो रे ढळती रात' पर आधारित
अति प्राचीन भजन, रचियता - श्री 'भँवर' (अज्ञात) ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

ऐसा मौका मिला है दीवाने को,
चल पड़ा, कांवरिया, शिवधाम, जल चढाने को ॥

□

चाहे कांटे गड़ें, चाहे कंकर गड़ें,
चाहे पैरों में कितने ही कांटे गड़ें,
मन में ठाना है, शिवधाम जाने को ॥
चल पड़ा, कांवरिया, शिवधाम.....



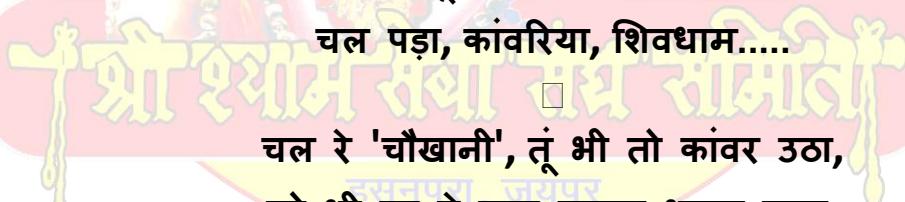
प्रानव-माधव सेवा के 30 गोरक्षाली वर्ष

□

दर पे जाने का, मुझको इशारा मिला,
मेरे जीवन की बगिया का गुल है खिला,
लेके कांवर चला, शिव मनाने को ॥
चल पड़ा, कांवरिया, शिवधाम.....

□

मन में विश्वास था, शिव की भक्ति मिले,
मोह-माया से मुझको तो मुक्ति मिले,
मैं चला झूमता, शिव रिझाने को ॥
चल पड़ा, कांवरिया, शिवधाम.....



चल रे 'चौखानी', तूं भी तो कांवर उठा,
जो भी दर पे गया उसका भाग्य जगा,
कहता हूँ मैं ये, सारे जमाने को ॥
चल पड़ा, कांवरिया, शिवधाम.....

□ □ □

श्री प्रमोद चौखानी द्वारा 'अल्लाह ये अदा'
(देखलो मेरे दिल के नगीनों में) गीत की
तर्ज पर रचित अनुपम शिव वन्दना ।

□ □ □ □ □ □ □ □

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

तेरी चौखट पे ओ बाबा, जिन्दगी सजने लगी,
जिन्दगी सजने लगी, जिन्दगी सजने लगी ॥

□

जो भी तेरे दर पे आया, कुछ ना कुछ लेके गया,
हौले-हौले ही सही पर, जिन्दगी सजने लगी ॥
तेरी चौखट पे ओ बाबा.....



दूँढ आया सारे जग में, देव तुमसा ना मिला,
तेरा दरवाजा खुला और, जिन्दगी सजने लगी ॥
तेरी चौखट पे ओ बाबा.....

□

तूं मुहूरत तूं ही तीरथ, तूं ही सबकुछ है मेरा,
हाथ मेरा तुमने थामा, जिन्दगी सजने लगी ॥
तेरी चौखट पे ओ बाबा.....

□

तेरी नजरें ओ कन्हैया, हमपे तूं रखना सदा,
छोटी सी ख्वाहिश ही मेरी, जिन्दगी सजने लगी ॥
तेरी चौखट पे ओ बाबा.....

□ □ □

श्री पंकज अग्रवाल (बड़ोदा) द्वारा 'साँवली सूरत
पे मोहन, दिल दीवाना हो
गया' भजन की तर्ज पर रचित अनुपम रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



शुकर सांवरे तेरा शुकर सांवरे,
ये जीवन रहा है गुजर सांवरे ॥



मैं जब से तुम्हारी शरण में हूँ आया,
जो कुछ भी माँगा प्रभु तुमसे पाया,
ये तेरी कृपा का, असर सांवरे ॥
शुकर सांवरे तेरा, शुकर सांवरे...



अगर मुझको मिलता ना तेरा सहारा,
ना जाने भटकता मैं कहाँ मारा-मारा,
ये जीवन गया है, संवर सांवरे ॥
शुकर सांवरे तेरा, शुकर सांवरे...



सेवक को ना तेरे कोई कमी है,
आँखों में तेरी कृपा की नमी है,
सताये ना चिन्ता, फिकर सांवरे ॥
शुकर सांवरे तेरा, शुकर सांवरे...



'रोमी' को जो भी हासिल नहीं है,
शायद वो उसके काबिल नहीं है,
मुझको मिला है तेरा, दर सांवरे ॥
शुकर सांवरे तेरा, शुकर सांवरे...



श्री हरमहेन्द्र पाल सिंह 'रोमी'
द्वारा 'बहुत प्यार करते हैं' गीत
की तर्ज रचित भावपूर्ण भजन।



॥ श्री गणेशाय नमः ॥



॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षीय सेवा वर्ष



ॐ श्री श्याम रैषा संघ समिति ॥



है बरसे आसमां इतना
तो फिर सूखी जमीं क्यूँ है,
तेरी रहमत बहुत बाबा
लगे तेरी कमी क्यूँ है ॥



समंदर पास है मेरे,
लगे फिर प्यास क्यूँ इतनी,
मुझे तो आस तुमसे है,
क्यूँ दूरी दास से इतनी,
तेरी जो प्रीत है दाता,
लगे गहरी घनी क्यूँ है ॥
तेरी रहमत बहुत बाबा.....



बिना रूह के क्या काया का,
कभी कोई काम होता है,
बिना राधा के राधेश्याम,
क्या पूरा नाम होता है, तेरे बिन साँस भी बाबा,
लगे जैसे थमी क्यूँ है ॥
तेरी रहमत बहुत बाबा.....



खुशी से जी रहा हूँ मैं,
चमन भी खिल रहा मेरा,
तेरी खुशबू से ओ बाबा, महक उठा ये घर मेरा,
तेरे बिन पूरी फ़िज़ा बाबा,
लगे दुःख में रमी क्यूँ है ॥
तेरी रहमत बहुत बाबा.....



तूं ही दुनिया का मालिक है,
बनाता है मिटाता है,
तेरे 'निर्मल' पे ओ बाबा,
तरस तुझको ना आता है,
दरश बिन आँख है सुनी,
की आँखों में नमी क्यूँ है ॥
तेरी रहमत बहुत बाबा.....



श्री निर्मल झुंझुनवाला 'निर्मल'
द्वारा 'मुझे तेरी मुहब्बत का
सहारा' गीत की तर्ज पर रचित
अनुपम भावपूर्ण रचना ।



॥ श्री श्याम रैषा संघ समिति ॥



॥ श्री श्याम रैषा संघ समिति ॥

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की शुभ वर्षीय सेवा

ॐ श्री श्याम रैषा संघ समिति ॥

हस

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



कलयुग का हो अवतारी,
लीलै घोड़े की सवारी,
दुनिया मं डंका बाजै श्याम का,
सेवक दीवाना थारै नाम का ॥



॥ श्री गणेशाय नमः ॥



॥ श्री खीर हनुमते नमः ॥

७
केशरिया पगड़ी सिर पै, नारंगी फैंटो जी,
हाथां मं मोरछड़ी ले, संकट नै मेटो जी,
पचरंगो बागो सोहै, भगतां रै मन नै मोहै,
सेवक दीवाना थारै नाम का ॥
ओ बाबा दुनिया मं डंका बाजै

८
कार्तिक ग्यारस नै मेळो, लागै है भारी जी,
दुल्हन सी लागै सजके, नगरी या थारी जी,
थारो जनमदिन आवै, सेवकिया नाचै-गावै,
सेवक दीवाना थारै नाम का ॥
ओ बाबा दुनिया मं डंका बाजै

९
जद-जद फागणियो आवै, सेवक हर्षवै जी,
ले-ले निशान थारै, दर पै तो आवै जी,
रंग-गुलाल उड़ावै, 'रोमी' भी चंग बजावै,
सेवक दीवाना थारै नाम का ॥
ओ बाबा दुनिया मं डंका बाजै

१०
श्री हरमहेन्द्र पाल सिंह 'रोमी' द्वारा सुप्रसिद्ध
भजन 'ग्यारस चांदण की आई' की तर्ज पर
रचित लोकप्रिय रचना ।



॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



श्याम थारी ओल्यूं आवै जी,
म्हानै रात-दिनां ना चैन पड़ै,
थारी याद सतावै जी ॥



रंग बसंती फीको लागै, केसर की क्यारी,
मोर-पपीहा की बोली भी, लाग रही खारी,
श्याम म्हानै कुछ ना भावै जी ।
म्हानै रात-दिनां ना चैन पड़ै,
थारी याद सतावै जी ॥



बेगा आओ किशन-कहाई, राह तकुँ थारी,
थां बिन धीर धरै ना मनडो, मोहन गिरधारी,
धीर अब कौण बंधावै जी ।
म्हानै रात-दिनां ना चैन पड़ै,
थारी याद सतावै जी ॥



आओ रंग-गुलाल हाथ मं, लेकर पिचकारी,
'शर्मा' के सागै बाबा खेलो, होळी मतवाळी,
गीत फागण का गावै जी ।
बीत फागण ना जावै जी ।
म्हानै रात-दिनां ना चैन पड़ै,
थारी याद सतावै जी ॥



राजस्थानी तर्ज 'तावडा मंदो
पड़ज्या रे' पर श्री रामलाल जी
शर्मा द्वारा रचित सुप्रसिद्ध भजन ।



॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

*०*०*०*०*

बोलो जी दयालु दिलदार के करूँ,
बोलो-बोलो थारी मनुहार के करूँ ॥



मन को नगीनों थानै सूंप दियो,
जाण कै दरद प्रभु मोल लियो,
जीत और हार को बिचार के करूँ।
बोलो-बोलो थारी मनुहार के करूँ ॥



॥ श्री योर हनुमते नमः ॥



मेरै कनै थे काँई छोड्यो है,
छलियै सूं रिश्तों जोड्यो है,
नेहड़ो लगाकै तकरार के करूँ।
बोलो-बोलो थारी मनुहार के करूँ ॥



फाँस लियो मीठी-मीठी बातां मं,
बिक गयो जीव थारै हाथां मं,
थारै सैं अंकड़ करतार के करूँ।
बोलो-बोलो थारी मनुहार के करूँ ॥



जाण कै गरीब क्यूँई रहम करो,
विनती पै मेरी प्रभु ध्यान धरो,
जीवन की पतवार का रखवार के करूँ।
बोलो-बोलो थारी मनुहार के करूँ ॥

हसनपुरा, ज़



श्यामबहादुर 'शिव' रसिया,
हँस बतळाओ मेरा मन बसिया,
लागी मेरै नेह की कटार के करूँ।
बोलो-बोलो थारी मनुहार के करूँ ॥



स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव'
द्वारा 'नैन रतनारा तेरा' गीत की तर्ज
पर रचित अनमोल रचना ।

*०*०*०*०*

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

श्री श्याम

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

००७००००

तुम्हारी मेरी बात, के जाणेगो कोई,
है कितनी दफा ही, ये पलकां भिगोई ॥

६

जितणा भी तेरी याद का आंसू,
मेरै खातिर दीवाली,
मैं इक बन का फूल हूँ माधव, तूं ही तो इसका माली,
दया से तुम्हारी ये फूला-फला है,
कलाकार की ये निराली कला है,
मैं गुणगान गाऊँ उतने ही कम है,
मेरी क्या है हस्ती तुम्हे ही शरम है,
अणजाणे ही तेरी याद मं, कितनी रातां खोई ॥
तुम्हारी मेरी बात.....

*

मुझमे कोई इलम नहीं है,
तेरी प्रीत निभाने का,
अक्कल काम नहीं करती है,
देखके हाल जमाने का,
किधर से किधर आदमी जा रहा है,
नजर ना कोई रास्ता आ रहा है,
दिलाते तुम्हे याद मैं आ रहा हूँ
इशारे पै तेरे चले जा रहा हूँ,
सिर-आँखां पर हुकम तिहारो,
तूं करसी सो होई ॥
तुम्हारी मेरी बात.....

७

तेरी मेरी प्रीत कै मांही,
तीजो कोई पंच नहीं,
तेरी पूजा-अर्चन का है,
मन मंदिर सा मंच नहीं,
तेरा नाम लेकर जिये जा रहा हूँ,
ये बेजोड़ हाला पिये जा रहा हूँ,
मेरी जिंदगी तेरी बांकी अदा है,
ये 'शिव' तो दीवाना तुम्हीं पे फिदा है,
श्यामबहादुर उड़ता पंछी, दैख जगत क्यूँ रोई ॥
तुम्हारी मेरी बात.....

*

स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव'
द्वारा 'गरीबों की सुनो' गीत की तर्ज
पर रचित अनमोल रचना ।

००७००००००

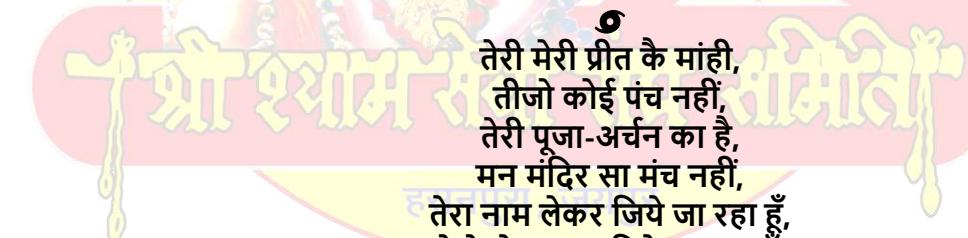


ॐ श्री गणेशाय नमः



ॐ श्री वीर हनुमते नमः

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षीय वर्ष



ॐ श्री श्याम रसेषा संघ समिति ॥

◆◆◆◆◆◆◆◆

फरियाद करता हूँ, दिल साध करता हूँ,
मुरलीमनोहर से हृदय की बात कहूँगा,
खामोश रहूँगा ॥

७

सच कहता हूँ श्याम हकीकत मेरी है,
तेरे फैसले में भी कितनी देरी है,
खुशियाँ दो चाहे ग़म दो,
सर झुका के सहूँगा, खामोश रहूँगा ॥
फरियाद करता हूँ.....



॥ श्री गणेशाय नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

◆

मुरलीवाले श्याम सुनाई कब होगी,
दूरी से गोपाल रिहाई कब होगी,
मीठी यादों की त्रिवेणी के,
बीच बहूँगा, खामोश रहूँगा ॥
फरियाद करता हूँ.....

८

तेरी याद में जितने कदम बढ़ाता हूँ,
लुक-मिचनी खेलो तो मैं रुक जाता हूँ,
बांके बिहारी के हमेशा,
पाँव गहूँगा, खामोश रहूँगा ॥
फरियाद करता हूँ.....

ॐ श्री श्याम रसेषा संघ समिति ॥

श्यामबहादुर 'शिव' के तुम ही साथी हो,
मन दिवलै की कृष्ण कन्हैया बाती हो,
तेरे चाहने वालों के,
आगे तो नऊँगा, खामोश रहूँगा ॥
फरियाद करता हूँ.....

◆◆◆◆◆

स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव'
द्वारा 'जब हम जवाँ होंगे, जाने कहाँ
होंगे' गीत की तर्ज पर रचित भजन ।

◆◆◆◆◆◆◆◆

ॐ श्री श्याम रसेषा संघ समिति ॥

*०*०*०*०*

कन्हैया, ओ कन्हैया,
मेरी नैया ओ कन्हैया, करदी तेरे हवाले,
जाने तूं खाटूवाले,
नैया तेरे हवाले, जाने तूं खाटूवाले ॥

लाखों ही कौशिशों की,
पर इसे चला ना पाया,
जब संभली ना मुझसे नैया,
तो शरण में तेरी आया,
डगमग-डगमग डोला खाये,
हरपल मेरा दिल घबराये,
झूब कहीं ना जाये ॥

नैया तेरे हवाले, जाने तूं खाटूवाले,
कन्हैया ओ कन्हैया

जो बने तूं इसका मांझी,
मस्ती में ये चलेगी,
चाहे लाखों तूफां आयें,
उनकी ना कुछ चलेगी,
छिपती फिरेंगी फिर मझधारें,
सजदा करेंगे तेरा किनारे,
कौन इसे डुबाये ॥

नैया तेरे हवाले, जाने तूं खाटूवाले,
कन्हैया ओ कन्हैया

जिस जिसने तुझको सौंपी,
जीवन की अपनी नैया,
बन गया तूं उसका साथी,
और बन गया खिवैया,
'निर्मल' नैया का बन मांझी,
'संजय' संग है प्रीत ये सांझी,
श्याम तूं पार लगाये ॥

नैया तेरे हवाले, जाने तूं खाटूवाले,
कन्हैया ओ कन्हैया

श्री निर्मल झंझुनवाला 'निर्मल' एवं
श्री संजय मित्तल द्वारा 'भोले औ
भोले' गीत की तर्ज पर रचित
भावपूर्ण रचना ।

*०*०*०*०*०*



॥ श्री याम रसेषा समिति ॥



॥ श्री योर हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

ॐ श्री श्याम रसेषा संघ समिति ॥

हरपल संघ समिति ॥

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

* * * * *

ओ साँवरिया आँखा खोल,
तेरा सेवक अरज गुजारै ॥
तेरा सेवक अरज गुजारै,
यै कद सैं बाट निहारै,
ओ साँवरिया आँखा खोल...

❶

थानै नित की श्याम रिझावां,
म्है नया-नया भजन सुणावां,
मोहन मुख सं इक बर बोल,
तेरा सेवक अरज गुजारै ॥
ओ साँवरिया आँखा खोल...

❷

तनै नेक दया नहीं आवै,
तूं देर मं देर लगावै,
ढळकै ओँसूड़ा अनमोल,
तेरा सेवक अरज गुजारै ॥
ओ साँवरिया आँखा खोल...

❸

थारा लाड लडाकर हारया,
मतना दिन घालै प्यारा,
मिलकर करलै तूं रमझोळ,
तेरा सेवक अरज गुजारै ॥
ओ साँवरिया आँखा खोल...

❹

है कठिन प्रेम को रस्तो,
चाहे महँगो हो चाहे सस्तो,
'काशी' लियो तराजू तोल,
तेरा सेवक अरज गुजारै ॥
ओ साँवरिया आँखा खोल...

❺

श्रद्धेय काशीरामजी शर्मा की
पारम्परिक राजस्थानी तर्ज़
(अनोखी थारी झांकी) पर
आधारित प्राचीन भजन ।

* * * * *

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

००००

ओँखां रो काजल थारो,
होठां री लाली जी, तो अंईयां की लटक ना,
पैल्यां देखी भाली जी ॥

७

मोरमुकुट की थारे,
शोभा घणेरी जी, तो केशर को टीको,
नख बेशर मतवाली जी ॥
होठां की लाली जी.....

*

कानां मं कुण्डल थारे,
गळे मं गळपटियो जी, तो कुण्डल कै नीचै झूमै,
चमचम करती बाली जी ॥
होठां की लाली जी.....

८

हीरा और पन्ना जड़िया, हार जड़ाऊ जी,
तो कटि पर लटकै लट,
नागण जैसी काली जी ॥
होठां की लाली जी.....

*

दुलरी-तिलरी भी झूलै, बाजूबन्द पूँचि जी,
तो फैटो गुलनारी ज्यांकै,
झीणी-झीणी जाली जी ॥
होठां की लाली जी.....

९

पीछे पीताम्बर मांही,
लहर अनूठी जी, तो रुणक-झुणक बाजै,
पैजनियां नखराली जी ॥
होठां की लाली जी.....

१०

श्यामबहादुर थारा,
'शिव' जस गावै जी,
तो उजड़े दिलां का दाता,
थे ही बनमाली जी ॥
होठां की लाली जी.....

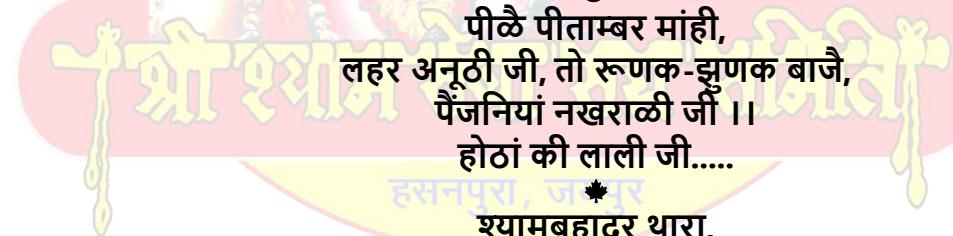
११

स्व. शिवरणजी भीमराजका
'शिव' द्वारा राजस्थानी तर्ज़
'पीछे' पर रवित श्रांगार रस
की अनूठी रचना ।

००००



मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षाली वर्ष



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

*०*०*०*०*
छोटी सी थारी आंगळी जी,
कैया परबत नै उठायो जी,
ओ सांवरा ॥

अजब निराळी थांकी माया,
कोई सैं भी ना जाणी जाय, अनहोनी नै होणी करदयो,
परबत राई बणाय,
अजी थे सुणज्यो यादवराय, जद-जद पाप प्रगट हो जाय,
तब-तब ल्यो अवतार कन्हाई,
लोहै रो मजबूत खंभो फाड़कर जी,
कैया नरसिंह रूप दिखायो जी,
ओ सांवरा ॥

थांकी सौगन थांकी माया,
जादू सैं भी ऊपर श्याम,
निज भगतां की खातिर आओ,
गऊ लोक सैं भू पर श्याम,
एक दिन कौरव दुराचारी,
मन मं खोटी नीत बिचारी,
जुआ जीती पाण्डव नारी,
बीनै देख्या चाहै उधाड़ी,
जद थे सहाय करया बनवारी,
बण गया द्रौपदी की साड़ी,
काई थानै जादू मन्त्र याद छो जी,
झूंगर कपडां को लगायो जी,
ओ सांवरा ॥

नरसी जी को भात भरयो, मीरां को जहर पचायो श्याम,
करमा कै घर जाकर थे ही, बास्यो खीचड़ खायो श्याम,
अजी थे बलदाऊ जी रा भैया, म्हारी झूब रही छै नैया,
ईका बण जाओ खिवैया, थां बिन कुण छै पार लगैया,
अरजी तो पतरी बाँचता ही,
थानै 'नरसिंह दास' बुलायो जी,
ओ सांवरा ॥

*०*०*०*०*
राजस्थानी तर्ज (स्थाई - पणिहारी) पर रचित अति प्राचीन
लोकप्रिय भजन। रचिता - श्री 'नृसिंह दास'

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



पता कुछ नहीं है, कहाँ जा रहा हूँ,
तूँ ले जा रहा है, वहीं जा रहा हूँ ॥



तूँ अंधे की लाठी, पता बे-पता का,
मैं फल पा रहा हूँ, अपनी खता का,
कहाँ से कहाँ, ठोकरें खा रहा हूँ ॥
पता कुछ नहीं है



कदम जो तेरे, आशियाने में रक्खा,
मजा खूब मैं तेरी, उल्फत का चखा,
फना हो रहा फिर भी, रंग ला रहा हूँ ॥
पता कुछ नहीं है



तुम्हारे लिये मैंने, छोड़ा ज़माना,
मगर तुम भी करने, लगे हो बहाना,
मैं तिनके की जैसे, बहा रहा हूँ ॥
पता कुछ नहीं है



सुनो श्यामबहादुर, कन्हैया रंगीला,
ना पहचान पाया, 'शिव' तेरी लीला,
सितम दिलरुबा का, सहे रहा हूँ ॥
पता कुछ नहीं है



स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव'
द्वारा 'मुहब्बत की झूठी कहानी' गीत
की तर्ज पर रचित भावपूर्ण भजन ।



॥ श्री इश्याम सेवा संघ समिति ॥



बाबा ये नैया कैसे डगमग डोली जाये,
बिन मांझी पतवार के इसको,
तूं ही पार लगाये ॥

७

दूर-दूर नहीं दिखे किनारा लहरें भी बिसराये,
बादल भी हैं गरज रहे और मुझको रहे डराये,
जब कि मैं ये सोच रहा, तूं अब आये तब आये ॥
बाबा ये नैया कैसे



★

दुनिया है एक रंगमंच और तूं इसका निर्देशक,
तूं ही बनाये तूं ही मिटाये तूं ही इसका विशेषज्ञ,
फिर क्यूँ ये तेरे हाथ के पुतले, मुझको आँख दिखाए ॥
बाबा ये नैया कैसे

८

तुझको ही मैं समझूँ अपना बाकी सब हैं पराये,
तेरे हाथों सब कुछ संभव तूं ही लाज बचाये,
करदे एक इशारा नैया, पार मेरी हो जाए ॥
बाबा ये नैया कैसे

९

तीन बाण तरकश में तेरे चलें तो ना रुक पायें,
भेदे तूं पत्तो की तरह फिर कोई भी ना बच पाये,
भेदो तुम 'निर्मल' की विपदा, पास मेरे जो आये ॥
बाबा ये नैया कैसे



श्री निर्मल झुंझुनवाला 'निर्मल' द्वारा 'गंगा तेरा

पानी अमृत' गीत की तर्ज पर रचित भावपूर्ण भजन ।



॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

हो जाओ तैयार खाटू जाने के लिये,
शीश के दानी श्याम का दर्शन पाने के लिये ॥

६

किसी ने पूछा क्यूँ जायें हम,
ऐसा क्या होने वाला, हमने कहा लगता है मेला,
फाल्गुन है आने वाला, लगता है दरबार,
खुशी लूटाने के लिये ॥ शीश के दानी श्याम....

७

घण्टा घनन घड़ावल बाजै,
पाँच आरती होती है, शंख-नगाड़ा-नौबत गूंजे,
अखण्ड ज्योति जलती है, कलियुग के अवतार,
चरण रज पाने के लिये ॥ शीश के दानी श्याम....

८

जो कोई आता खुश रहता,
हरदम इनका वरदान है, इनकी शरण में आने से,
निश्चय ही कल्याण है, मत कर सोच विचार,
अमर पद पाने के लिये ॥ शीश के दानी श्याम....

९

सच्चा साथी एक यही है,
बाकी भूल-भूलैया है, भवसागर का केवल केवट,
मेरा श्याम-कन्हैया है, मत करना इंकार,
भव तर जाने के लिये ॥ शीश के दानी श्याम....

१०

श्याम बगीची जाकर देखो, कितनी प्यारी लगती है,
अलूसिंहजी ने जिसे सजाया, बेशुमार महकती है,
श्याम कुण्ड में चाल, दुबकी लगाने के लिये ॥
शीश के दानी श्याम....

हसनपरा, ज



इंद्रधनुष रंगों में धजायें, शिखरबंध लहराती हैं,
चंद्र चाँदनी नील गगन से, श्वेत पुष्प बरसाती है,
महिमा अपरम्पार, शीश झुकाने के लिये ॥

शीश के दानी श्याम....



'महफ़िल में जल उठी शमां'
गीतकी तर्ज पर रचित
सुपरिचित एवं सर्वप्रिय
रचना । लेखक - अज्ञात ।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

॥ श्री श्याम ॥

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

तेरे से क्या छुपा है, मेरा सवाल क्या है,
ये दिल ही जानता है, इस दिल का हाल क्या है ॥

मीठी से चोट खाकर, तुमसे नज़र लड़ाकर,
आबाद हो गया हूँ, हस्ती मेरी मिटाकर,
दिलदार यार प्यारे, मुझको मलाल क्या है ॥
तेरे से क्या छुपा है

चौखट पे ये तुम्हारे, बैठा नज़र पसारे,
जीवन के दिन गुजारे, बन्दा तेरे सहारे,
चित्तवन से चित्त चुराया, तेरा कमाल क्या है ॥
तेरे से क्या छुपा है

बेशक तेरी अदा का, दीवाना दिल मेरा है,
जाना हुआ तुम्हारा, पहचाना दिल मेरा है,
नैणा कृपाण तेरे, धीरज की ढाल क्या है ॥
तेरे से क्या छुपा है

तेरी यादों के सहारे, कटते हैं दिन हमारे,
जिंदा हूँ श्यामसुन्दर, ये दिल तुम्हे पुकारे,
झूठा है तेरा वादा, वादे में माल क्या है ॥
तेरे से क्या छुपा है

'शिव' श्यामबहादुर के, नैनों के नूर तुम हो,
सच मानलो कन्हैया, मेरे गुरूर तुम हो,
हर कोई कुछ भी कहले, तेरी सम्हाल क्या है ॥
तेरे से क्या छुपा है

स्व. शिवचरण जी भीमराजका द्वारा
'चूड़ी मजा ना देगी' गीत की तर्ज पर रचित भजन....



॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



॥ श्री याणशाय नमः ॥



॥ श्री वौर हनुमते नमः ॥

आजा मेरे कन्हैया,
बिन मांझी के सहारे,
झबेगी मेरी नैया ॥
बीच भंवर में नैया,
बन जाओ श्याम खिवैया....

बैठे हैं आप ऐसे, सुनता नहीं हो जैसे,
नैया हमारी मोहन, उतरेगी पार कैसे,
तुझे क्या पता नहीं है, मझधार में पड़े हैं ॥
आजा मेरे कन्हैया

मेहनत से हमने अपनी, नैया थी एक बनाई,
लेकिन भंवर में मोहन, कोशिश ना काम आई,
हारें हैं हम तो जब भी, तूफानों से लड़े हैं ॥
आजा मेरे कन्हैया

पतवार खेते-खेते, आखिर मैं थक गया हूँ,
शायद तूं आता होगा, कुछ देर रुक गया हूँ,
'बनवारी' बेबसी में, चुपचाप हम खड़े हैं ॥
आजा मेरे कन्हैया

हसनपुरा ॥३॥
श्री जयशंकर चौधरी 'बनवारी' द्वारा '
ओ नन्हे से फरिश्ते, तुझसे ये कैसा नाता'
गीत की तर्ज पर रचित भजन

● ● ●

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

१। श्री गणेशाय नमः ॥

१। श्री वीर हनुमते नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 गोवकशाली वर्ष



पी ले ज़रा, पी ले ज़रा,
श्याम की आँखियों से अमृत बरसे,
पी ले ज़रा, जी ले ज़रा ॥

पहले-पहले सारे इसको, शौक से पीते,
बाद में सारे इसको, पीकर के जीते,
अब ये मस्ती ना सर से उतरे, ओ ओ..
पी ले ज़रा, पी ले ज़रा ॥

मस्ती का जिसको इक बर, चस्का लगा है,
सारे जग से वो, बेगाना बना है,
उसको सब कुछ मिला इस दर से, ओ ओ..
पी ले ज़रा, पी ले ज़रा ॥

जिसको नशा ये इक बर, लग जाता है,
उसको प्रभु का दर्शन, मिल जाता है,
बाकी किस चीज को अब तरसे, ओ ओ..
पी ले ज़रा, पी ले ज़रा ॥

बहुत वक्त पहले इसको, हमने चखा था,
इसका असर सीधे, दिल पर चढ़ा था,
अब तो आनंद ही आनंद बरसे, ओ ओ..
पी ले ज़रा, पी ले ज़रा ॥

हसनपुरा, १००
'वादा ना तोड़, तूं वादा ना तोड़' गीत की
तर्ज पर रचित अनुपम रचना । लेखक नहीं चाहते की
उनका नाम जाहिर किया जाये, इसीलिए
वो अपनी रचनाओं में कोई छाप भी नहीं लगाते हैं ।



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



सुनलो कन्हैया, अर्जी हमारी,
तारो ना तारो ये है, मर्जी तुम्हारी ॥



हमपे क्या बीती, कैसे बताऊँ,
किस दौर से गुजरे, कैसे सुनाऊँ,
तुमको पता है, हाल मुरारी ॥
सुनले कन्हैया, अर्जी हमारी....



लाज पे आंच बाबा, आने ना पाये,
जाये तो जान जाये, आन ना जाये,
सारा ज़माना, इसका शिकारी ॥
सुनले कन्हैया, अर्जी हमारी....



लाज की भीख बाबा, झोली में दे दे,
भटक रहा हूँ जग में, शरण में ले ले,
दर पे खड़ा है, तेरा भिखारी ॥
सुनले कन्हैया, अर्जी हमारी....



जो भी कहोगे, वो ही करूँगा,
जैसे भी रखोगे, वैसे रहूँगा,
तुझपे भरोसा, मेरा है भारी ॥
सुनले कन्हैया, अर्जी हमारी....



'सागर किनारे, दिल ये पुकारे'
गीत की तर्ज पर रचित भजन, लेखक - अज्ञात ।



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



हमको तो आसरा है,
ऐ श्याम मुरलीवाले।
ऐ श्याम खाटूवाले॥



कैसे करूँगा मोहन,
मैं पार गहरी नदिया,
ना नाव का ठिकाना,
ना पास है खिवैया,
कोई नहीं हमारा-2
मुझे पार जो उतारे-2
हमको तो आसरा है,
ऐ श्याम मुरलीवाले।
ऐ श्याम खाटूवाले॥



मैं तो तेरे भरोसे,
आगे को भड़ता आया,
मुझको गारज है किसकी,
मुझ पर तुम्हारा साया,
जब साथ है तुम्हारा-2
फिर कौन क्या बिगाड़े-2
हमको तो आसरा है,
ऐ श्याम मुरलीवाले।
ऐ श्याम खाटूवाले॥



अब क्या करूँ मैं बोलो,
तुम भी नजर न आते,
विश्वास है कन्हैया,
आओगे क्यूँ सताते,
"नंदू" सुनो ना मोहन-2
नैय्या तेरे हवाले-2
हमको तो आसरा है,
ऐ श्याम मुरलीवाले।
ऐ श्याम खाटूवाले॥



तर्ज- पागल बना दिया है मुरली ने तेरी मोहन
लेखनी- श्री नंदू जी
स्वर- श्री संजय मित्तल



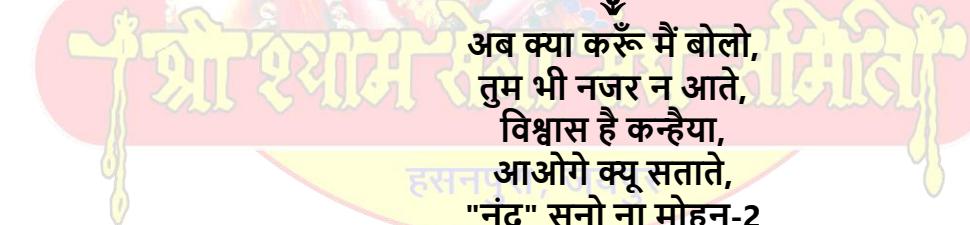
॥ श्री शशांक नमः ॥



॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 गाँवकाली वर्ष

हसनाम



॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



चतुर चोर गोपाल, पहरै गळ बैजन्ती माळ,
नैण म्हारा निरखै छै जी निरखै छै,
लीन्यो जीव निकाळ, इनै राख्यो कितणो सम्हाळ,
आँख म्हारी फरकै छै जी फरकै छै ॥



दरद दियो काई मीठो-मीठो,
ज्यूँ कोई हो मिसरी को सीटो,
हिवडो जाणै हाल, छैला प्रीत पुराणी पाळ,
काळजो सरकै छै जी सरकै छै ॥



नन्द महर को है नखराळो,
मन को गोरो रंग को काळो,
बांके बिहारीलाल, घूँधरवाळा थां का बाळ,
हियो म्हारो हरखै छै जी हरखै छै ॥



तैं बृज को रसियो मस्तानो,
दोरो थांसै नेह निभाणो, श्यामबहादुर श्याम,
करणो सेवा 'शिव' को काम,
जीव म्हारो डरपै छै जी डरपै छै ॥



दोरो = मुश्किल



स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव'
द्वारा सुप्रसिद्ध राजस्थानी गीत 'चाँद
चढ्यो गिगनार' की तर्ज पर रचित
अनुपम भजन ।



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



इन मन की मुरादों का, कोई ओड़ नहीं मिलता,
वादा करके भी तूं उस ठोड़ नहीं मिलता ॥

●

तन्नै ढूँढण मं दाता, कोई कसर नहीं छोड़ी,
मेरे भाग्य विधाता ने, कर दी कितणी मोड़ी,
उस शीश के दानी का, कोई जोड़ नहीं मिलता ॥
वादा करके भी तूं उस ठोड़.....

●

मिलणै की ललक तेरी, क्यों बढ़ती ही जाती है,
चित्त पर मेरे सांवरिया, क्यों चढ़ती ही जाती है,
जाने को जहाँ दिल है, वो मोड़ नहीं मिलता ॥
वादा करके भी तूं उस ठोड़.....

●

एक मेरी तमन्ना है, और मांग न मेरी है,
इसमें भी लगाई है, सरकार ने देरी है,
क्या तेरा इरादा है, ये निचोड़ नहीं मिलता ॥
वादा करके भी तूं उस ठोड़.....

●

'शिव' श्यामबहादुर ने, तुम्हे दिल से पुकारा है,
मेरे यार कन्हैया को, कहो किसने सिंगारा है,
तेरा तो जमाने में, कोई छोर नहीं मिलता ॥
वादा करके भी तूं उस ठोड़.....



ओड़ = अन्त (किनारा)

ठोड़ = जगह (ठीकाना)



स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा
'बचपन की मोहब्बत को' गीत की तर्ज पर
रचित अनुपम भावपूर्ण भजन ।



मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षीय वृत्ति



† श्री श्याम सेवा संघ समिति †

* ७ * ७ * ७ * ७ *

बिन हरिनाम गुजारा नहीं,
रे बावरे मन किनारा नहीं ॥

७

नाव पुरानी, चंचल धारा, मौसम तूफानों का,
खेते-खेते हिम्मत हारी, डगमग डौले नौका,
प्रीतम को जो पुकारा नहीं,
रे बावरे मन गुजारा नहीं ॥



॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

*

फँसता क्यों जाता माया में, ये है नागिन काली,
डस जायेगी बच कर रहना, चौतरफ़ा मुँह वाली,
फिर ये जन्म दुबारा नहीं,
रे बावरे मन गुजारा नहीं ॥

८

अब तो तूं इस नैया को, करदे श्याम हवाले,
बस की बात नहीं बन्दे की, वो दातार सम्हाले,
अहम का भाव गवारा नहीं,
रे बावरे मन गुजारा नहीं ॥

*

ये भी मौका चूक गया 'शिव', तो क्या आनी-जानी,
श्यामबहादुर जाग नींद से, जीवन ओस का पानी,
फूल के होना गुब्बारा नहीं,
रे बावरे मन गुजारा नहीं ॥

* ७ *

स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा
'ज्योत से ज्योत जगाते चलो' गीत की तर्ज़
पर रचित अनुपम भावपूर्ण भजन ।

* ७ * ७ * ७ * ७ *



॥ श्री गणेशाय नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षीय वृत्ति



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

* * * * *

ओ खाटू वाले श्यामा,
मुझे तेरा एक सहारा,
मेरे कष्ट हरो श्री श्यामजी,
मैं बालक हूँ दुखियारा ॥

७

मेरी जीवन नैया भव में,
डगमग हिचकोले खाये,
है तुझ बिन कौन बता श्याम,
जो मुझको पार लगाये, हो जाये दया गर तेरी,
पा जाऊँ मैं तो किनारा ॥
मेरे कष्ट हरो श्री श्यामजी

*

मैं कब से भटक रहा हूँ,
है कौन जो मुझको सम्हाले,
मुझे एक भरोसा तेरा,
श्याम तूँ ही गले लगाले,
दे दे चरणों में शरण तो,
हो जाये मेरा गुजारा ॥
मेरे कष्ट हरो श्री श्यामजी

८

आ बाँह थाम ले मेरी,
मुझको भक्ति सिखलादे,
ना जानूँ मन्त्र ना पूजा,
ओ श्यामा तूँ ही बतादे,
मुझे भूला ना देना बाबा,
बेटा हूँ मैं तो तुम्हारा ॥
मेरे कष्ट हरो श्री श्यामजी

*

'तुझे सूरज कहूँ या चन्दा' गीत की
तर्ज पर रचित सुपरिचित प्राचीन
रचना । लेखक - अज्ञात ।

* * * * *

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षीय सेवा वर्ष

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

हरभूज विजय

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

* * * * *

सरकार सांवरे एक नजर,
इस दर्दी को भी देख ज़रा,
तेरे चाहने वालों के प्यारे,
नैनों से नैना सेक ज़रा ॥

❶

मुरली के मधुर तराने में,
तूँ माहिर बैण बजाने में,
क्या मस्ती है मुस्कान में,
दे काट प्रीत का चैक ज़रा ॥
सरकार सांवरे एक नजर.....



*

जिगरी से दिल उलझाया है,
संगत का बाग़ा लगाया है,
कितनी मुश्किल से पाया है,
जलवा हो इसका हरा-भरा ॥
सरकार सांवरे एक नजर.....

❷

मन ऐसा भाव विभोर हुआ,
यादों में चकरी-डोर हुआ,
दिल की बस्ती में शोर हुआ,
मेरा यार खरा दिलदार खरा ॥
सरकार सांवरे एक नजर.....

*

'शिव' श्यामबहादुर को जलवा,
दिलदार मेरे दिखला देना,
नैनों की प्यास बुझा देना,
मीठी सी नजरां फैक ज़रा ॥
सरकार सांवरे एक नजर.....

* * *

स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा 'बजरंग बली मेरी
नाव चली' भजन की तर्ज पररचित अद्भुत भावपूर्ण भजन

* * * * *

ॐ श्री ईश्वाम सेवा संघ समिति ॥

* * * * *

सारी दुनिया जान गई मैं,
नौकर हूँ दरबार का,
हमने भी अब सोच लिया है,
जो हुकुम सरकार का ॥

६

बन्दा जिसकी करे चाकरी,
जगत सेठ कहलाता है,
जब जी चाहे उसका मुझ्याको,
अपने पास बुलाता है,
जो कुछ मेरे पास है सब कुछ,
दिया हुआ दातार का ॥
हमने भी अब सोच

७

ऐसा मालिक मिले कहाँ जो,
सारे दुखड़े दूर करे,
सेवा थोड़ी करूँ या ज्यादा,
नहीं मुझे मजबूर करे,
हाथों-हाथ मिले तनखाह यहाँ,
काम नहीं उधार का ॥
हमने भी अब सोच

८

जो भी माँगू इस मालिक से,
नहीं मुझे इनकार करे,
जितना माँ बेटे को करती,
उतना मुझ्याको प्यार करे,
'बनवारी' खुश रहता हूँ मैं,
पाकर खजाना प्यार का ॥
हमने भी अब सोच

* * *

श्री जयशंकर चौधरी 'बनवारी' द्वारा 'थाळी भरकर ल्याई खीचड़ो'
भजन की तर्ज पर रचित रचना ।

* * * * *

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

ॐ श्री ईश्वाम सेवा संघ समिति ॥

हसनपुर

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

: * * * * *

जीती हुई बाजी को, तूं हार नहीं जाना,
जिन्दादिल है गरचे, क्या भय से भय खाना ॥



॥ श्री याम शाय नमः ॥



॥ श्री योर हनुमते नमः ॥



सत मारग पर चलना, ये तेरी कसौटी है,
ये तेरे करमों की, बेदाग़ा लंगौटी है,
चर्चा चहूँ और चले, ये कैसा है दीवाना ॥
जीती हुई बाजी को, तूं हार.....



परवाह न कर अपने, कदमों को बढ़ाये जा,
लम्बी डोरी देकर, तूं पेंच लड़ाये जा,
दीवारें भी बोल उठें, मस्ताना है मस्ताना ॥
जीती हुई बाजी को, तूं हार.....



ये श्यामबहादुर का, अपना ही तजुर्बा है,
उस दाता की इच्छा, 'शिव' सर्व-सर्वा है,
पेशी जो पड़े तेरी, हो जाये ना जुर्माना ॥
जीती हुई बाजी को, तूं हार.....



स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा
'बचपन की मुहब्बत को' गीत की तर्ज़
पर रचित भावपूर्ण भजन ।



॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



नैन से नैन मिलाते रहो,
मन मोरिया को नचाते रहो ॥

७

यो दातार भाव को भूखो, भाव बिना नर फीको,
सांवळशाह सुणकै केदारो, भात भरयो नरसी को,
दिल के तार बजाते रहो ॥
मन मोरिया को नचाते



॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

८

प्रीत समन्दर से दो बूँदे, गरचे मिल जायेंगी,
तो तेरी मुरझाई बगिया, पल में खिल जायेगी,
बुराई से दामन बचाते रहो ॥
मन मोरिया को नचाते

९

ठंडे-ठंडे प्रेम के आंसू, तेरे कपोल भिगोदें,
तन्मय होकर रै प्राणीड़ा, अपनी सुध-बुध खो दे,
प्यार का दांव लगाते रहो ॥
मन मोरिया को नचाते

१०

श्यामबहादुर रै मनमौजी, खट कर खाणो चोखो,
लीलै घोड़े वालै सैं 'शिव', हेत लगाणो चोखो,
बाबाजी को बिड़दाते रहो ॥
मन मोरिया को नचाते

११

स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा
'ज्योत से ज्योत जगाते चलो' गीत की तर्ज
पर रचित अनुपम भावपूर्ण भजन ।



†श्री॑ श्यामरेणा॒ संघ॑ समिति॑†



मुझे तुम से मिला है प्यार, तूने इतना दिया दातार,
करूँ तेरा शुक्रिया,
मैं तुमसे कहूँ हर बार, तूने इतना दिया दातार,
करूँ तेरा शुक्रिया ॥



ना भाग्य प्रबल मेरा, ना कर्म किये अच्छे,
तेरी सेवा कभी ना की, ना भाव मेरे सच्चे,
फिर भी ए दीनदयाल, तूने मेरा रखा ख्याल,
करूँ तेरा शुक्रिया ॥

मैं राह का पथर था, ठोकर ही खाता है,
जिस महफिल में जाऊँ, जिल्लत ही पाता था,
दिया चरणों में स्थान, मुझे सबसे मिला सम्मान,
करूँ तेरा शुक्रिया ॥

आँखों के ये आँसू, कभी रुक नहीं पाते थे,
जिस दर पे भी जाऊँ, सब पीठ दिखाते थे,
'सोनू' पे किया उपकार, तूने खोले अपने द्वार,
करूँ तेरा शुक्रिया ॥

श्री आदित्य मोटी 'सोनू' द्वारा 'चिट्ठी ना
कोई संदेश' ग़ज़ल की तर्ज पर रचित भावपूर्ण भजन ।



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



सुख के साधन के लिये, क्यूँ खुद को छलता है,
कुछ तौल के बोल ज़रा, क्या शब्द निकलता है ॥



आती है ये जाती है, माया बीमारी है,
जीवन की नहीं किसकी, कोई ठेकेदारी है,
देने को नहीं कुछ भी, लेने को मचलता है ॥
कुछ तौल के बोल ज़रा.....



देने वाले देकर, खामोश ही रहते हैं,
चिन्तन करने वाले, सुनते हैं सहते हैं,
देता है वही खुशबु, काँटों में जो पलता है ॥
कुछ तौल के बोल ज़रा.....



'शिव' श्यामबहादुर ये, कहते हैं जमाने से,
क्या छेड़ के लेगा तूँ, मदहोश दीवाने से,
सौदाई ये ऐसा जो, गिर-गिर के सम्हलता है ॥
कुछ तौल के बोल ज़रा.....



स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा
'बचपन की मुहब्बत को' गीत की तर्ज पर
रचित भावपूर्ण भजन ।



॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



मुझे श्याम सांवरे का दरबार मिल गया है,
मुझे तूं जो मिल गया है, संसार मिल गया है ॥



इतनी सी थी कहानी, इतना सा मेरा किस्सा,
कोई जानता नहीं था, मैं भीड़ का था हिस्सा,
तेरी कृपा से शानो-सत्कार मिल गया है ।
मुझे तूं मिल गया है, संसार.....



ना साथी ना सखा थे, रूठे थे रिश्ते-नाते,
कोई ऐसा भी नहीं था, जिसे अपना हम बताते,
तेरे प्रेमी मिल गये हैं, परिवार मिल गया है ।
मुझे तूं मिल गया है, संसार.....



अब कुछ भी ना कमी है, चौतरफा रौशनी है,
दिल खुश है आज इतना, की आँखों में नमी है,
नफरत में जी रहा था, मुझे प्यार मिल गया है ।
मुझे तूं मिल गया है, संसार.....



श्री आदित्य मोदी 'सोनू' द्वारा 'आये हो मेरी
जिंदगी में तुम बहार बनके' गीत की तर्ज पर
रचित अनुपम रचना ।



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



सब कुछ बदल जाता है यहाँ पर,
लेख किस्मत का बदलता नहीं,
प्रभु का मान भले टल जाये,
भक्त का मान कभी टलता नहीं ॥

६
नरसी भगत ने किया भरोसा,
लुटा दिया धन दौलत को,
मिला दिया मिट्ठी में सब कुछ,
मर्यादा और शोहरत को,
फिर कोई ना करता भरोसा,
भात नरसी का जो भरता नहीं ॥
सब कुछ बदल जाता है

७
भरी सभा में द्रौपद सुता का,
चीर दुःशासन हरने लगा,
पांडव कुल की पटरानी के,
आँख से आँसू झारने लगा,
फिर कोई ना करता भरोसा,
चीर द्रौपदी का जो बढ़ता नहीं ॥
सब कुछ बदल जाता है

८
मीरां हो गई तेरी दीवानी,
इकतारे पर भजन किया,
तेरे भगत को चैन से मोहन,
राजा ने जीने ना दिया,
फिर कोई ना करता भरोसा,
विष अमृत जो बनता नहीं ॥
सब कुछ बदल जाता है

९
हे प्रभु तेरे भक्तों को, मेरा बारम्बार प्रणाम,
'बनवारी' मैं किस लायक हूँदेना चरणों में स्थान,
प्रभु से मिलना बड़ा सरल है, भक्त प्रभु का मिलता नहीं ॥
सब कुछ बदल जाता है

१०
श्री जयशंकर चौधरी 'बनवारी' द्वारा
'कस्में-वादे प्यार-वफ़ा बातें हैं' गीत
की तर्ज पर रचित भावपूर्ण भजन ।



॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

॥ श्री श्याम सेवा संघ "समिति" ॥

* * * * *

कुण सी घड़ी मं थांसै आँख लड़ाई,
आँख लड़ाई, थारी याद भोत आई ॥

दिल को खजानो मेरो, खोल कै दिखायो मैं,
जाण कै जुलम करयो, रोग यो लगायो मैं,
हिवड़ो मिलाकै थांसै, बड़ी चोट खाई ॥
कुण सी घड़ी मं थांसै.....



बांसरी की तान तेरी, लेय गई लूट कै,
कई टूक होय गया, काळजै का टूट कै,
बांकी लटक तेरी, मेरै मन भाई ॥
कुण सी घड़ी मं थांसै.....

मोल दरद लियो, गवाल्हियै सैं फँस कै,
मन्नै काई बेरो मन्नै, मार गयो हँस कै,
तूं ही है कन्हैया मेरै, दिल की दवाई ॥
कुण सी घड़ी मं थांसै.....

प्रीत खिड़कियाँ सै, कदै झाँक ज्याये तूं
भूल नहीं जाऊँ तेरी, याद दुवाये तूं
मतना तूं जाणै मेरी, पीड़ पराई ॥
कुण सी घड़ी मं थांसै.....

श्यामबहादुर 'शिव', दरबान दर को,
साथी है तूं ही मेरै, लंबै सफर को,
सदियां सूं दाता थारी, हाजरी बजाई ॥
कुण सी घड़ी मं थांसै.....

स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा
'सारी-सारी रात तेरी याद सताये' गीत की
तर्ज पर रचित अनुपम रचना ।

* * * * *

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

* * * * *

घनश्याम तुम्हारी चितवन मं,
जादू है मेरै, जचगी मन मं ॥

७
कद कठै कुणसै चक्कर मं फिरतो फिरै,
मेरी अरदास पर गौर क्यूँ ना करै,
धीर मेरै नहीं, रहम तेरै नहीं,
मेरा प्राण पड़या, जीवन धन मं ॥
घनश्याम तुम्हारी चितवन

८
याद तन्नै रिझाणै की रीति नहीं,
एक बाजी भी तेरै सं जीती नहीं,
काळजो डाट ले, दर्द नै बाँट ले,
तूँ कद आसी मेरै, आँगण मं ॥
घनश्याम तुम्हारी चितवन

९
तेरी बांकी अदा पर मेरा दिल फिदा,
छोड़कर हो जाइये ना कन्हैया जुदा,
नेह की धार तूँ, मेरी पतवार तूँ,
तन्नै बंद करल्यूँ, इन पलकन मं ॥
घनश्याम तुम्हारी चितवन

१०
श्यामबहादुर तेरै स्यामनै लुट गयो
याद की पीड़ सैं काळजो घुट गयो,
जी दुखावै मना, 'शिव' सतावै मना,
छवि बैठ गई, चंचल मन मं ॥
घनश्याम तुम्हारी चितवन

११
स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव'
द्वारा 'मेरी छम-छम बाजै पायलिया'
गीत की तर्ज पर रचित भजन ।

* * * * *



॥ श्री याम नमः ॥



॥ श्री योर हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 गौरवशाली वर्ष



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



ये अँधेरा है ये तन्हाई है,
तेरी फिर-फिर के याद आई है,
दिल में शोला सा क्या दहकता है,
किसने फिर आग ये लगाई है ॥



अपनी तक़दीर से शिकवा ही नहीं,
पहले ऐसा कभी हुआ ही नहीं,
तेरी यादों में बेकरार है दिल,
तेरी उल्फत क्या रंग लाई है ॥
ये अँधेरा है ये तन्हाई है



नहीं कोई भी गिला श्याम से है,
मुझे उल्फत तुम्हारे नाम से है,
खता ऐसी क्या हो गई मुझसे,
सुध मेरी साँवरा भुलाई है ॥
ये अँधेरा है ये तन्हाई है



भूल जाना तुम्हे आसान नहीं,
तूं नहीं तो मेरी मुस्कान नहीं,
बगैर तेरे ना जी सकूँगा कभी,
दर्दी दिल की तुम्हे दुहाई है ॥
ये अँधेरा है ये तन्हाई है



श्यामबहादुर की मान जाओ प्रभो,
'शिव' जले दिल को ना जलाओ प्रभो,
इस कलेजे की ज्योत बन जाओ,
नजरें दर पे तेरे बिछाई है ॥
ये अँधेरा है ये तन्हाई है



स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव'
द्वारा 'याद में तेरी जाग-जाग के हम'
गीत की तर्ज पर रचित अनमोल भजन



॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



रुस्योड़ा भगतां नै, सांवरियो मनाय रह्यो,
मनवार करै कान्हो, नरसीलो ऐंठ रह्यो ॥

६

नरसी जी कै डेरै, जद पहुँच्या श्याम धणी,
पूठो फिरग्यो नरसी, रामा-श्यामा ना करी,
बतळायो ना बोल्यो, मान्यो ना एक कह्यो ॥

रुस्योड़ा भगतां नै

७

तिरलोकी को मालिक, या लीला अजब करै,
डरतो सो बोल रह्यो, जिण सै भी काल डेरै,
म्हानै माफ़ करो भगतां, थे दुखड़ो भोत सह्यो ॥

रुस्योड़ा भगतां नै

८

म्हारा सगा सम्बध्यां मं, तूं लाज गवां आयो,
लेजा या पोट तेरी, तेरो मायरियो द्यायो,
पण इतनो बतादे रे, म्हांसै क्यूँ कपट करयो ॥

रुस्योड़ा भगतां नै

९

यूँ हँस कर हरि बोल्या, जैसी इच्छा थारी,
पोटळिया काख दबा, उठ चाल्या गिरधारी,
नरसी बोल्या पकड़ो, आयोड़ो भाग राहयोल ॥

रुस्योड़ा भगतां नै

१०

हरि कै चरणां मांही, नरसी जी लिपट पड्यो,
गदगद हो करके प्रभु, हिवडै सै लगा लियो,
'रामावतार' रचना, रचतां कै नीर बह्यो ॥

रुस्योड़ा भगतां नै



'बचपन की मुहब्बत को' की तर्ज पर
श्री 'रामावतार')अज्ञात) द्वारा रचित
भावपूर्ण रचना ।



†श्री श्याम सेवा संघ समिति†



श्याम बाबा का नजारा देखलो,
नाव का अपनी किनारा देखलो ॥



क्या भरोसा जिंदगी का दोस्तों,
जन्म-जन्मों का सहारा देखलो ॥
नाव का अपनी किनारा



इस दयालु पर टिकालो जीव को,
प्रीत का झिलमिल सितारा देखलो ॥
नाव का अपनी किनारा



इस रंगीले का यही परिवार है,
श्याम ही जिगरी हमारा देखलो ॥
नाव का अपनी किनारा



श्यामबहादुर 'शिव' यही सरकार है,
प्रीत की बेजोड़ धारा देखलो ॥
नाव का अपनी किनारा



स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव'
द्वारा 'दिल के अरमां आँसूओं में' गीत
की तर्ज पर रचित अनुपम रचना ।



॥ श्री गणेशाय नमः ॥



॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षीय वर्ष



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

* * * * *

शीश के दानी, हमने तुमको,
दिल से अपना मान लिया है,
जग है पराया, तूं ही अपना,
ये हमने पहचान लिया है ॥

६

जिन्दगी देने वाले, तुम्हे कैसे भुलाऊँ,
नजर तेरी दया की, सदा तुमसे ही चाहूँ,
आस मेरी है, मेरी अर्जी, ना ठुकराओ श्याम,
दीनों की अर्जी को सुनना,
प्रभु ने ये वरदान दिया है ॥
शीश के दानी हमने तुमको

५

तुम्हीं दुखों में साथी, तुम्हीं सुखों के दाता,
जगत के हो नियन्ता, भाग्य के हो विधाता,
मेरे साथ, सदा तुम रहना, ये वर दे दो श्याम,
अपना लेना जानके अपना,
वयों हमको हैरान किया है ॥
शीश के दानी हमने तुमको

७

नहीं गुण-दोष मेरे, कभी तुम ध्यान लाना,
मैं जैसा हूँ तुम्हारा, नहीं मुझको भुलाना,
हमारे दिल में तुम बस जाओ, खाटूवाले श्याम,
'श्यामसुन्दर' की बात पे तुमने,
दाता हरदम ध्यान दिया है ॥
शीश के दानी हमने तुमको

* * *

स्व. श्यामसुन्दर जी शर्मा पालम वालों द्वारा
'और इस दिल में क्या रखा है' गीत की तर्ज
पर रचित अनुपम रचना ।

* * * * *

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

* ● * ● * ● *

श्याम की नगरिया खाटू, उजागर जहान मं,
लुट गयो हूँ तो तेरी, मीठी मुस्कान मं ॥

●

पलकां को झालो देकर, सांवळियो स्यात मं,
काळजो ही काढ़ लियो, काई कहूँ बात मैं,
फूँक-फूँक पाँव म्हैलो, प्रीत की दुकान मं ॥
लुट गयो हूँ तो तेरी



॥ श्री गणेशाय नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की विजयी कथा

*

कितणो दरद ऐं मं, कितणो खिंचाव है,
ज्वाळा मं कूद ज्यावै, प्रीत को हियाव है,
बिना पंख उडतो डोलूँ, प्रीत के बिवाण मं ॥
लुट गयो हूँ तो तेरी

●

श्यामबहादुर 'शिव', प्रीत को पताशो है,
सांकड़ी है प्रीत गळी, फेर नहीं माशो है,
झब गयो जीव तेरी, मुरली की तान मं ॥
लुट गयो हूँ तो तेरी

हसनपुरा *

स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा
'छुप गया कोई रे' गीत की तर्ज पर रचित
अनुपम भावपूर्ण भजन ।

* ● * ● * ● *

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



माँगा है मैने श्याम से, वरदान एक ही,
तेरी कृपा बनी रहे, जब तक है जिन्दगी ॥



जिस पर प्रभु का हाथ था, वो पार हो गया,
जो भी शरण में आ गया, उद्धार हो गया,
जिसका भरोसा श्याम पर, डूबा कभी नहीं ॥
तेरी कृपा बनी रहे, जब तक



॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

कोई समझ सका नहीं, माया बड़ी अजीब,
जिसने प्रभु को पा लिया, है वो खुशनसीब,
इसकी मर्जी के बिना, पत्ता हिले नहीं ॥
तेरी कृपा बनी रहे, जब तक



ऐसे दयालु श्याम से, रिश्ता बनाइये,
मिलता रहेगा आपको, जो कुछ भी चाहिए,
ऐसा करिश्मा होगा जो, हुआ कभी नहीं ॥
तेरी कृपा बनी रहे, जब तक



कहते हैं लोग जिंदगी, किस्मत की बात है,
किस्मत बनाना भी मगर, इसके ही हाथ है
'बनवारी' कर यकीन अब, ज्यादा समय नहीं ॥
तेरी कृपा बनी रहे, जब तक



श्री जयशंकर चौधरी 'बनवारी' द्वारा 'मिलती
है जिन्दगी में, मुहब्बत कभी-कभी' गीत की
तर्ज पर रचित सुप्रसिद्ध रचना ।



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



कान्हा मेरी लाज अनमोल है,
तेरे सिवा कौन इसे रखेगा श्याम ॥



लाज गई तो कुछ भी ना रह जायेगा,
ये दुखियारा जीते जी मर जायेगा,
कान्हा अंधकार घनघोर हैं ॥
तेरे सिवा कौन इसे



॥ श्री खीर हनुमते नमः ॥



एक सहारा सबको मिल ही जाता है,
पर मुझको वो भी नजर नहीं आता है,
कान्हा मेरे हाथ कमजोर हैं ॥
तेरे सिवा कौन इसे



इसका जौहरी और कहीं नहीं पाया हूँ,
'बनवारी' मैं पास तुम्हारे लाया हूँ,
कान्हा तूं बता क्या मोल है ॥
तेरे सिवा कौन इसे



श्री जयशंकर चौधरी 'बनवारी' द्वारा
'साथी तेरा प्यार' गीत की तर्ज पर
रचित सुप्रसिद्ध रचना ।



श्री श्वामरेण संग्रहालय

मुस्कान मोहन की, धड़कन मेरै दिल की,
चरणां मं श्यामदेव कै, पलकां है बिछाई,
रसिये की याद आई ॥

कह दयूं खुलकर, मेरी तमन्ना कहती है,
चुभन याद की मीठी-मीठी सहती है,
ये दिल बड़ा नाजुक है, क्या सहेगा जुदाई ।
रसिये की याद आई ॥
मुस्कान मोहन की

पर्दे की अडवार, हटाली जावैगी,
जद क्यूँई मेरै मन मं ध्यावस आवैगी,
धीरज की भी हद है, कित्ती राखी समाई ।
रसिये की याद आई ॥
मुस्कान मोहन की

हिवड़ै मांली बात, श्याम नै कह दी है,
गुनाहगार यो जीव श्याम को कैदी है,
यादां मं सूखण की, तूं के बाण सिखाई ।
रसिये की याद आई ॥
मुस्कान मोहन की

श्यामबहादुर सेवक, श्याम पुराणो है,
बाला देकै 'शिव' नै, भरमाणो है,
जुग-जुग सैं यै आँख्यां, तेरै दर पै लगाई ।
रसिये की याद आई ॥
मुस्कान मोहन की
हस

३
अडवार = दीवार, घ्यावस = तसल्ली,
मांली = अंदर की, बाला = आश्वासन,
सुखण की = सुखने की, बाण = आदत

स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा
'जब हम जवां होंगे (फरियाद करता हूँ)
गीत की तर्ज पर रचित भावपूर्ण भजन ।

ॐ श्री श्याम रैषा संघ समिति ॥

* * * *

खाली झोली लेकर आयो,
झोली भरदे, तेरो सांचो है दरबार,
मेरो न्याय करदे ॥

◎

दुर्बल काया पास न माया, थारै दर पर आयो,
मूँजी क्यूँ बण बैठ्यो दाता,
लखदातार कुहायो,
थानै नीदडली क्यूँ आवै, नैया पार करदे ॥
पार करदे ओ बाबा पार करदे,
थारो सांचो है दरबार.....



मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

*
थारो सो मालिक पाकर के,
फिर भी क्यूँ दुःख पाऊँ,
थानै छोड़कर तूँ ही बतादे,
कुण नै हाल सुणाऊँ, थारै चरणां मं पड्यो हूँ,
सिर पर हाथ धर दे ॥
हाथ धरदे ओ बाबा हाथ धरदे,
थारो सांचो है दरबार.....

◎

के तेरै कीच जम्यो कानां मं,
देवै नहीं सुणाई,
बिलख-बिलख कर हार गयो मैं,
किरतां भी ढ़ल आई,
कद सैं फ़ाइल मं पड़ी है, अरजी पास करदे ॥
पास करदे ओ बाबा पास करदे,
थारो सांचो है दरबार.....

◎

जगतनियन्ता पालनकर्ता,
खाटू श्यामबिहारी,
कर जोड्यां थारो दास खड्यो है,
सुध लेल्यो गिरधारी, थारो टाबर हूँ मैं महर,
मुरारी करदे ॥

पार करदे ओ बाबा पार करदे,
थारो सांचो है दरबार.....

* * *

राजस्थानी तर्ज 'पगल्यां री
पायलडी भीजै' पर रचित

अति प्राचीन एवं सुप्रसिद्ध भजन । लेखक - अज्ञात ।

* * * *

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

* * * * *
 टेर मेरी, सुणल्यो श्याम धणी,
 पीर घणेरी, रैन अंधेरी, मत कर देरी,
 म्हारा मुकुटमणि ॥

७
 चाकरियो हूँ थारै दर को,
 रिणिया हूँ मैं तो गिरधर को,
 कितना की ही, बिगड़ी बणी ॥
 टेर मेरी, सुणल्यो

८
 कृष्ण मुरारी लीलाधारी,
 प्रीत पुराणी थारी म्हारी,
 लट बळ खाये, ज्यूँ नागफणी ॥
 टेर मेरी, सुणल्यो

९
 मानै नांही डारै पाणी,
 ये अँखियां तो श्याम दीवानी,
 हिवडे मं मेरै, आस घणी ॥
 टेर मेरी, सुणल्यो

१०
 साँचो है दरबार तिहारो,
 तो मन्नै भी पार उतारो,
 भटक रही, मन की हिरणी ॥
 टेर मेरी, सुणल्यो

११
 श्यामबहादुर 'शिव' दर्दी नै,
 क्यूँ तरसावै दीन-दुःखी नै,
 आँखां आय, गई दुखणी ॥
 टेर मेरी, सुणल्यो

१२
 स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव'
 द्वारा 'मैं तुलसी तेरे आँगन की' गीत
 की तर्ज पर रचित भावपूर्ण रचना ।

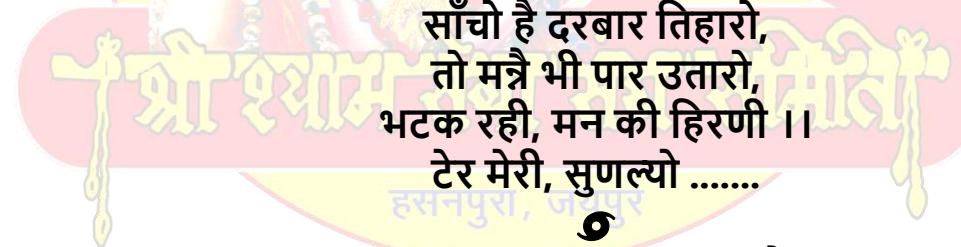


॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षावाली वर्ष



॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



लायक नहीं तेरे, फिर भी निभाते हो,
जब भी बुलाऊँ मैं, तुम दौड़े आते हो,
सांवरे तेरा करजदार हूँ,
सांवरे तेरा करजदार हूँ ॥



तेरे उपकारों को, मैं गिन नहीं पाऊँगा,
बाबा ने खूब दिया, जग को बतलाऊँगा,
बिन माँगे ही मेरी, झोली भर जाते हो ।
जब भी बुलाऊँ मैं, तुम दौड़े आते हो ॥
सांवरे तेरा करजदार हूँ.....



तेरे दरबार की, मुझे सेवा मिलती है,
तेरे दर्शन करने से, दिल की कली खिलती है,
जो तेरे प्रेमी हैं, उनसे मिलवाते हो ।
जब भी बुलाऊँ मैं, तुम दौड़े आते हो ॥
सांवरे तेरा करजदार हूँ.....



हे श्याम कृपा करके, ये वर देदो मुझको,
ये भक्त तेरा 'बिन्न', भूले नहीं तुमको,
हर पल प्रभु मेरा, जीवन सजाते हो ।
जब भी बुलाऊँ मैं, तुम दौड़े आते हो ॥
सांवरे तेरा करजदार हूँ.....



श्री बिनोद जी गाडोदिया 'बिन्न' द्वारा
'तुमसे जुदा होकर हमें दूर जाना है'
(ये प्रार्थना दिल की) गीत की तर्ज
पर रचित रचना ।



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



तूं सब जानता है, तुझे क्या बतायें,
मैं जग से छुपालूँ, मेरा हाल-ए-दिल ये,
मगर तुमसे बाबा, छिपे ना छिपाये ॥



प्रीत अपनी प्रभु, है पुरानी बड़ी,
याद तुमको किया, मैंने तो हर घड़ी,
तेरे रहते बाबा, किसे मैं पुकारूँ,
तूं ही मेरा अपना, सगळे पराये ॥
तूं सब जानता है



खेलते सब रहे, मेरे जज्बात से,
तुम तो वाकिफ हो श्याम, मेरे हालात से,
मेरे आँसूओं में, दर्द जो छुपा है,
तूं ही उसको समझे, तूं ही मिटाये ॥
तूं सब जानता है



इतना तो सांवरे, मुझको विश्वास है,
कोई हो या ना हो, तूं मेरे साथ है,
मेरी गलतियों से, अनजान हूँ मैं,
'सोनू' की उलझन, तूं ही सुलझाये ॥
तूं सब जानता है



श्री आदित्य मोदी 'सोनू' (देवली) द्वारा
'वो जब याद आये, बहुत याद आये'
गीत की तर्ज पर रचित भावपूर्ण रचना



मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की शुभावस्तुति



॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



श्याम बाबा तेरी उल्फत में मेरी,
क्या करूँ नींद उचट जाती है,
दिल-ए-नादान को दिलदार तेरी,
सांवले याद बहुत आती है ॥



॥ श्री याम नमः ॥



॥ श्री योग नमः ॥

तेरे जज्बातों ने दिल लूट लिया,
इस दीवाने को दर्द खूब दिया,
यार से प्यार बहुत गहरा है,
हिचकियाँ श्याम को बुलाती हैं ॥
श्याम बाबा तेरी उल्फत में



तूं तो मस्ती में मगन में रहता है,
कोई यादों की मार सहता है,
ये रोग तैनें ही तो लगाया है,
तेरी चित्तवन मुझे नचाती हैं ॥
श्याम बाबा तेरी उल्फत में



श्यामबहादुर तूं 'शिव' का साथी है,
फिर भी ये दूरियां सताती हैं,
तेरे दरबार का दीवाना हूँ,
यार की प्रीत गुदगुदाती हैं ॥
श्याम बाबा तेरी उल्फत में



स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव'
द्वारा 'याद में तेरी जाग-जाग के हम'
गीत की तर्ज पर रचित भजन ।



॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



सांवलिये तेरा मुझको, दीदार हो जाये,
उजड़ा चमन फिर से मेरा, गुलजार हो जाये ॥



कैसे चलेगी मोहन, तूफान में नैया,
हो जाये एक इशारा, भव पार हो जाये ॥
उजड़ा चमन फिर से मेरा



॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

ख्वाईश मेरे जीवन की, ज्यादा बड़ी नहीं,
बस तेरी किरपा मुझ पर, इक बार हो जाये ॥
उजड़ा चमन फिर से मेरा



खाली नहीं जाऊँगा, जिद पे अड़ा हूँ श्याम,
देखूँ दयालू कैसे, इनकार हो जाये ॥
उजड़ा चमन फिर से मेरा



करदे मुरादें पूरी, बस इतना सोचकर,
'बनवारी' मुझे भी तेरा, ऐतबार हो जाये ॥
उजड़ा चमन फिर से मेरा



श्री जयशंकर चौधरी 'बनवारी' द्वारा
'अफ़साना लिख रही हूँ' गीत की तर्ज़
पर रचित सुप्रचलित भजन ।



ॐ श्याम सेवा संघ समिति ॥



नैनों में श्याम बाबा की, सूरत समा गई,
कई दिन के बाद याद फिर, दाता की आ गई ॥



बागै का रंग मोतिया, फैटा गुलाब है,
यो आसमानी तन तेरो, के लाजवाब है,
छोटी सी झ़िलक मेरी, दीवाळी मना गई ॥
नैनों में श्याम बाबा की.....



॥ श्री योर हनुमते नमः ॥



रत्नों का मुकुट शीश पर, तरकश में तीर है,
सूरज है पाण्डु कुल का ये, बेजोड़ वीर है,
दानी है यही शीश का, इसकी शरण लई ॥
नैनों में श्याम बाबा की.....



शोभित है मोर की छड़ी, बाबा के हाथ में,
हो जाये महर की नज़र, दाता की स्यात में,
लीले के उस सवार की, यादें लुभा गई ॥
नैनों में श्याम बाबा की.....



श्यामबहादुर दिल में वो, भरपूर नूर है,
आँखों से तो है दूर पर, 'शिव' से ना दूर है,
आ जाओ दीनबंधु, कि यादें बुला रही ॥
नैनों में श्याम बाबा की.....



स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा 'गुजरे हैं
आज इश्क में हम उस मुकाम से' गीत की
तर्ज पर रचित अनुपम-भावपूर्ण भजन ।



॥ श्री श्याम सेवा संघ "समिति" ॥

* * * * *

श्याम तेरे चाहने वालों की क्या पहचान है,
उनसे मिलने का मेरे, दिल में बड़ा अरमान है ॥
बोलो श्याम श्याम श्याम,
बोलो श्याम श्याम....



७

सोचता रहता हूँ तेरे, भक्त से मुलाक़ात हो,
प्रार्थना इतनी है तुमसे, उनका मेरा साथ हो,
लोग कहते हैं कन्हैया, भक्त में भगवान है ।
उनसे मिलने का मेरे, दिल में बड़ा अरमान है ॥
बोलो श्याम श्याम.....

*

हो सके तो मुझको मीरां, से मिलादे सांवरे,
नरसी मेहता के भजन की, धुन सुनादे सांवरे,
पर उन्हें जानूँगा कैसे, जान ना पहचान है ।
उनसे मिलने का मेरे, दिल में बड़ा अरमान है ॥
बोलो श्याम श्याम.....

८

श्री श्याम सेवा संघ "समिति"
जो कृपा उन पर थी मोहन,
उतनी मुझ पर क्यों नहीं,
माँगता 'बनवारी' तुमसे, भक्ति मिलती क्यों नहीं,
वो भी तो इन्सान ही थे, हम भी तो इन्सान है ।
उनसे मिलने का मेरे, दिल में बड़ा अरमान है ॥
बोलो श्याम श्याम.....

* * *

श्री जयशंकर चौधरी 'बनवारी' द्वारा 'हमसफ़र
मेरे हमसफ़र' गीत की तर्ज पर रचित भजन ।

* * * * *

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

● ● ● ● ● ● ●

संसार समन्दर में, डगमग मेरी नैया है,
गिरधारी ओ मुरारी, दीखै ना खिवैया है ॥

७

खेना बड़ा मुश्किल है, दिल में बड़ी हलचल है,
पाऊँगा पहुँच कैसे, लम्बी मेरी मंज़िल है,
ओ बांकी अदा वाले, सुन कृष्ण कन्हैया है ॥
गिरधारी ओ मुरारी.....



॥ श्री योर हनुमते नमः ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्ष

●

दाता यही कहना है, व्याकुल दोऊ नैना है,
ओ मोर मुकुटधारी, मेरे साथ में रहना है,
उम्मीद यही दिल में, प्रभु पार लगईया है ॥
गिरधारी ओ मुरारी.....

८

जग के प्रतिपालु हो, प्रभु दीनदयालु हो,
दुःख-दर्द सुना अपना, अरमान निकालूँ हो,
बेजोड़ मदारी तूँ, संसार नचैया है ॥
गिरधारी ओ मुरारी.....

●

क्या श्यामबहादुर के, दिलदार नहीं तुम हो,
मुद्दत से पुराने क्या, मेरे यार नहीं तुम हो,
ठाकुर मन मंदिर का, 'शिव' ज्योत जगैया है ॥
गिरधारी ओ मुरारी.....

● ●

स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा
'एक प्यार का नगमा है' गीत की तर्ज पर
रचित भावपूर्ण भजन ।

● ● ● ● ● ● ●

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

*०*०*०*०*०*

कई जुग बीतगया, तेरै इंतजार मं,
आँख नांही खोली दाता, कांई गुनाहगार मैं ॥

७

हार मानली तेरै सैं, तेरो रूप अनूठो है,
है नाम तेरो ही सार, जगत को झागड़ो झूंठो है,
श्याम धणी न्याय करै, भरै दरबार मं ॥
आँख नांही खोली दाता.....

*

कुण-कुण है दावेदार, तेरै सैं क्यूंहि नांही छानी है,
तेरी श्याम सलूणी सूरत पर, दुनिया दीवानी है,
दिल सं पुकारूँ तन्नै, बीच बाजार मं ॥
आँख नांही खोली दाता.....

८

मस्ती मं दिलदार तेरी, मेरी भी मस्ती है,
मेरै मनमंदिर के बीच, कन्हैया तेरी बस्ती है,
कोई जीत मांही राजी, मैं तो राजी हार मं ॥
आँख नांही खोली दाता.....

*

श्यामबहादुर श्याम धणी, तूं रतन अमोला है,
'शिव' जनम-जनम का दास,
तेरै अर्पण ये चोला है,
तूं ही खिवैया मेरो, श्याम मझधार मं ॥
आँख नांही खोली दाता.....

०

स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा 'सौ
साल पहले, मुझे तुमसे प्यार था' गीत की तर्ज
पर रचित भावपूर्ण भजन ।

*०*०*०*०*०*

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



प्रीत हो गई श्याम से, सखी सुनो-सुनो,
जाने क्या बात है, चैन आता नहीं ॥



ऐसी सखी रातों को, नींद आती नहीं,
क्या बतलाऊँ दिल से, याद जाती नहीं,
कैसा जादू किया, चैन आता नहीं ॥
प्रीत हो गई श्याम से.....



दिल तड़फाने वाली, उसकी बांकी अदा है,
तन-मन-धन क्या उसपे, मेरी जान फ़िदा है,
कैसा जादू किया, होश आता नहीं ॥
प्रीत हो गई श्याम से.....



ऐसी बसी है छवि, दिल में मेरे सांवरी,
जिस दिन से देखी है, मैं तो हो गई बावरी,
बात क्या है ज़रा, तूं बता तो सही ॥
प्रीत हो गई श्याम से.....



दया के तुम हो सागर, मेरे श्याम मुरारी,
चरण कमल में रखना, मेरे बांके बिहारी,
लाज मेरी सभा में, रखेगा तूं ही ॥
प्रीत हो गई श्याम से.....



'यारी हो गई यार से' गीत की तर्ज पर
रचित सुप्रसिद्ध रचना । लेखक - अज्ञात ।



॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



रिमझिम-रिमझिम आँखां सैं आँसूड़ा बरसे,
श्यामधणी सैं मिलबा तांई, मनड़ो तरसै ॥



जल बिन मछली तड़फै बाबा,
थां बिन थारो दास,
चाँद चकोरी जैया म्हानै,
श्याम मिलन की आस ॥
रिमझिम-रिमझिम आँखां...



थारो म्हारो हेत हुयो कोई,
पूर्व जन्म का लेख,
आँखां मं बस जाओ म्हारै,
ज्यूँ काजळ की रेख ॥
रिमझिम-रिमझिम आँखां...



याद तेरी आतां ही बाबा,
देखूँ च्यारूँ ओर,
'बनवारी' मैं अइयां नाचूँ
ज्यूँ जंगल मं मोर ॥
रिमझिम-रिमझिम आँखां...



श्री जयशंकर चौधरी 'बनवारी' द्वारा सुप्रसिद्ध
राजस्थानी भजन 'झिलमिल-झिलमिल चूनड़ी
मं, तारा चमकै' की तर्ज पर रचित रचना ।



॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

* * * *

यादां आई जी भगत
थारी यादां आई जी ॥

०

थरै सैं ही अं मन मांही
कमजोरी नहीं आई जी,
नजर उठाकै देखां क्यूँही दीखै नाही जी ॥
यादां आई जी

*

श्यामकुण्ड और श्याम बगीची
सूना-सूना लागै जी,
थां बिन आने कुण सम्हालै आँख भरयाई जी ॥
यादां आई जी

०

बाबै को सिणगार सजाता
गहरो रंग जमाता अजी,
श्यामधणी नै खुल कर कहता
पीर पराई जी ॥
यादां आई जी

०

देख उणमणा पूछ्या करता
सैं कै मन की बातां जी,
थे भी कंईया बाल्कियां की सुध बिसराई जी ॥
यादां आई जी

*

'शिव' दर्दी भी मन की बातां
भगतां खोल सुणाई जी,
गुरुभाई बिन करसी दृजो कुण सुणाई जी ॥
यादां आई जी

* * *

स्व. शिवचरणजी भीमराजका
द्वारा श्रद्धेय भगतजी आलूसिंह
जी महाराज को समर्पित 'धमाल'

आप दोनों (श्रद्धेय भगतजी
एवं भीमराजका जी) परम
श्यामभक्त श्रद्धेय श्यामबहादुर
जी रेवाड़ी वालों के शिष्य होने
के कारण परस्पर गुरुभाई हुए ।

* * * *

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षीय वर्ष

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



तेरी मीठी सी मुस्कान,
रूप माधुरी को पान,
कर मनड़ो धीर गँवायो,
तूं छलिया जीव दुखायो ॥



॥ श्री याणशाल नमः ॥



॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

तेरी बांकी अदा पे, मेरा दिल फ़िदा,
श्यामसुन्दर ना होना, कभी तुम जुदा,
नित करूं गुणगान, तड़फावै मत प्राण,
मेरै साँवरियो मन भायो,
तेरो दिन-दिन हेत सवायो ॥
तेरी मीठी सी मुस्कान

तेरी मुरली की धुन, काळजै गड़ गई,
तेरी तिरछी नजर सैं, नजर लड़ गई,
निठुराई मत ठाण, ले अरज मेरी मान,
मेरो नाजुक जी भरमायो,
मैं भोत घणो ग़म खायो ॥
तेरी मीठी सी मुस्कान

श्यामबहादुर की आँख्यां, नमी हो गई,
तेरी सेवा मं 'शिव', के कमी हो गई,
करूं काई मैं बखाण, तेरी मेरी एक ज्यान,
तेरै रंग श्याम रंगायो,
कोई दूजो नाय सुहायो ॥
तेरी मीठी सी मुस्कान

स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव'
द्वारा 'भीगा-भीगा है शमा' गीत की
तर्ज पर रचित अनुपम रचना ।



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

श्यामजी रंगीला मोहे, शरण में लीजिये,
दृष्टि दया की मोपे, श्याम कर दीजिये ॥



॥ श्री याम शाय नमः ॥



॥ श्री योर हनुमते नमः ॥

सदियां सं बाबा मैं तो, चाकरियो थारो हूँ,
फेर भी दयालु देवा, कैंया दुखियारो हूँ,
सिंधु बीच न्याव बाबा, श्याम पार कीजिये ॥
दृष्टि दया की मोपे.....

जोर जैं को चालै जैं पर, बैं सं कर जोड़ कै,
दूसरो ना दीखै कोई, सांवरै नै छोड़ कै,
दास की पुकार सुण, क्यूँ ही तो पसीजिये ॥
दृष्टि दया की मोपे.....

काम है सदा सं मेरो, हाजरी बजावणो,
गुणगान गाकै खाटू, श्याम नै रिझावणो,
दर को भिखारी थारो, बेगा सा रीझिये ॥
दृष्टि दया की मोपे.....

श्यामबहादुर बाबो, श्याम दातार है,
'शिव' को तो सारो, बैं पै दारमदार है,
श्याम नाम हाला प्याला, घोळ-घोळ पीजिये ॥
दृष्टि दया की मोपे.....

स्व. शिवचरणजी भीमराजका द्वारा 'छुप
गया कोई रे' गीत की तर्ज पर रचित भजन ।

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की शुभाली वर्ष

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

श्री श्वामरेण संग्रहालय

:      पार करो मेरा बेड़ा ओ बाबा,
पार करो मेरा बेड़ा,
छाया घोर अन्धेरा ओ बाबा,
छाया घोर अन्धेरा ॥

गहरी नदिया, नाव पुराणी,
दया करो हे शीश के दानी,
हमें आसरा तेरा ओ बाबा,
सबको आसरा तेरा ।
पार करो मेरा बेड़ा

मैं निरगुणिया, गुण नहीं कोई,
बाबा जगा दो किस्मत सोई,
देखियो ना गुण मेरा ओ बाबा,
देखियो ना गुण मेरा ।
पार करो मेरा बेड़ा

खाटू के बाबा, तेरी ज्योत जगाई
दरशण की बाबा आस लगाई,
हृदय करो बसेरा ओ बाबा,
हृदय करो बसेरा ।
पार करो मेरा बेड़ा

**भक्तों को बाबा, ऐसा वर दो,
प्यार की एक नज़र बाबा करदो,**
**लूटे पाप लूटेरा ओ बाबा,
लूटे पाप लूटेरा ।**
पार करो मेरा बेड़ा

अति प्राचीन एवं सुपरिचित रचना । तर्ज़ - परम्परागत, लेखक - अज्ञात

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

: * * *

घनश्याम तुम्हारी यादों में
व्याकुलता बढ़ती जाती है,
क्या तुमसे छुपी है बात मेरी,
तेरी दूरी जीव दुखाती है ॥

*

तुम चाहने वालों को अपने,
अंदाज़-ए-नज़र क्यूँ रखते हो,
माना की ये क़ाबिल प्यार के हो,
ये तिरछी नज़र बतलाती है ॥
घनश्याम तुम्हारी यादों.....

*

पहली ही नज़र में लूट लिया,
शिकवा भी करूँ तो किससे करूँ,
बोझिल पलकें ये कहती है,
दर्दी को नींद ना आती है ॥
घनश्याम तुम्हारी यादों.....

*

टुकड़े हो ज़िगर के तुम मेरे,
पतवार तुम्ही को सौंपी है,
जलवा है तेरा फरियादों में,
यादें तो दिल तड़फाती है ॥
घनश्याम तुम्हारी यादों.....

*

'शिव' श्यामबहादुर दास तेरा,
जगजाहिर सेवक खास तेरा,
चौखट पे बिछी पगली आँखें,
क्यूँ भर-भर के झार जाती है ॥
घनश्याम तुम्हारी यादों.....

* * *

स्व. शिवचरणजी भीमराजका
'शिव' द्वारा 'बजरंगबली मेरी
चली' भजन की तर्ज पर रचित
अनुपम रचना ।

* * * *



मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

तन्नै एक सवाली,
कद सै पुकारै तेरे बारणै ॥

७

अणगिणती संदेश पठाया,
बिना तार का तार,
तेरी भी ओ कृष्ण कन्हैया,
अलबेली सरकार ॥
तन्नै एक सवाली.....

८

अं तरियां हीं फरियादी की,
होसी श्याम सम्हाल,
दरदी भी कोई क्यां नै आसी,
करसी कुण सवाल ॥
तन्नै एक सवाली.....

९

बीत गई सो गई गुवाई,
इब तो करले चेत,
बिन धणियां कै रै साँवरिया,
कुण रुखालै खेत ॥
तन्नै एक सवाली.....

१०

लीलै की तूं श्याम रंगीला,
ढीली छोड़ लगाम,
सै सूँ बेसी दातारी मं,
श्याम धणी को नाम ॥
तन्नै एक सवाली.....

११

हसनपुरा, ज.पुर
श्यामबहादुर 'शिव' सांवळिया,
सांचो है तूं ही सेठ,
डगमग नैया कृष्ण कन्हैया,
पार लगादे ठेठ ॥
तन्नै एक सवाली.....

१२

स्व. शिवचरणजी भीमराजका
'शिव' द्वारा राजस्थानी तर्ज
'म्हारी चंद्रगवरजा' पर रचित
सर्वप्रिय रचना ।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 गाँवसाली वर्ष

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

* * * * *
खाटुवाळा श्यामजी थे, बड़ा ही सुहावणा ॥

ॐ
मन भरकै थारा लाड लड़ाऊँ,
ओ जी ओ दयालु दाता, थारा गुण गाऊँ,
तो दो नैणा का मेरा, थे ही तो हो पावणा ॥
खाटुवाळा श्यामजी थे

थारै बिना श्याम मेरो जीव नहीं लागै,
सारी-सारी रात मेरी, सुरतां जागै,
तो जनम-जनम थारा, करस्यूँ मनावणा ॥
खाटुवाळा श्यामजी थे

ॐ
लीलै घोड़ै वाळा की म्है निझर उतारां,
दरशण पावां थारा, नैण सिणगारां,
म्हानै तो साँवरिया थारा, हुकम बजावणा ॥
खाटुवाळा श्यामजी थे

ॐ
थारो सो दयालु कोई देव न दूजो,
ध्वजाबंधधारी नै, कुटुम सारो पूजो,
तो बांकी सी लटक वो ही, मेरै मन भावणा ॥
खाटुवाळा श्यामजी थे

ॐ
श्यामबहादुर 'शिव' बलिहारी,
छाप लगाय, दीन्ही सरकारी,
तो अटकै ना गाडी मेरी, आगै सी पुगावणा ॥
खाटुवाळा श्यामजी थे

हसनपुरा ॐ
स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा
'तेरे बिना श्याम हमारा नहीं कोई रे' भजन
की तर्ज पर रचित अनुपम-भावपूर्ण रचना ।

* * * * *



मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षीय वर्ष

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



श्याम बाबा तेरी याद आती रहे,
मेरे भावों को ताजा बनाती रहे ॥



तेरी बांकी अदा का दीवाना,
जानता है तू मेरा फ़साना,
सुन मेरी दास्तां, माफ़ करदे खता,
मेरी फ़रियाद तुमको बुलाती रहे ॥
बाबा ओ श्याम बाबा,
बाबा ओ श्याम बाबा....



मेरे यारों का तूं यार प्यारे,
नन्द यशोदा के नैनों के तारे,
दिल्लगी का मजा, शहंशाह की रज़ा,
तार से तार दिल के मिलाती रहे ॥
बाबा ओ श्याम बाबा,
बाबा ओ श्याम बाबा....



श्यामबहादुर के 'शिव' दिल में झाँको,
कैसो सरकार सांवळियो बांको,
क्या अदा श्याम की, मेरे घनश्याम की,
तेरे मिलने की तड़फन सताती रहे ॥
बाबा ओ श्याम बाबा,
बाबा ओ श्याम बाबा....



स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव'
द्वारा 'गंगा मैया में जब तक पानी रहे'
गीत की तर्ज पर रचित भजन ।



॥ श्री गणेशाय नमः ॥



॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षाली वर्ष

श्री श्याम

हरभिनुरा, गुरुगढ़

श्री श्वामरेण संग्रहालय

● ● ● ● ● ● ●
लीलै घोडै वाळो मेहरबान चाहिये,
साथ मांही वीर हनुमान चाहिये ॥

७
केशरिया बागै मांही लागै मनभावणो,
नैणा मं बसाल्यू रंग-रूप हो सुहावणो,
बालाजी कै हाथ मं निशान चाहिये ॥
साथ मांही वीर हनुमान

सांवळी सूरत सोहै मोरछड़ी हाथ मं,
मळ-मळ न्हाऊँ दया की बरसात मं,
अधरां पै मीठी मुस्कान चाहिये ॥
साथ मांही वीर हनुमान

७
तीन बाण धारी सोहै कमर-कटारी,
तिरछी लटक पर जाऊँ बलिहारी,
मुखड़ै पै राच्यों जां कै पान चाहिये ॥
साथ मांही वीर हनुमान

नैणा मं दयालु कै छलक रह्यो प्यार हो,
श्यामबहादुर 'शिव' लीलै पै सवार हो,
ऐसो आलिशान जजमान चाहिये ॥
साथ मांही वीर हनुमान

स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा 'एक परदेशी मेरा दिल ले गया' गीत की तर्ज पर रचित रचना ।

ॐ श्री श्याम रसेवा संघ "समिति"

* * * *

नैनों से कर इशारा
पागल बना दिया,
तीरे-नज़र से मारा
खंजर चला दिया ॥

◦

जलवा दिखाया दूर से
कुछ भी कसर नहीं,
आहों का मेरी श्याम पे कोई असर नहीं,
तुमको मिला क्या सांवरे
ये दिल जला दिया ॥
तीरे-नज़र से मारा.....

◆

ना मिलना भी तुम्हारा
छोटी सजा नहीं,
कह देता दिल का राज भी
पर कुछ मजा नहीं,
उल्फ़त का जाम कैसा तूने पिला दिया ॥
तीरे-नज़र से मारा.....

◦

यादों के सहारे ही
है अब ये ज़िन्दगी,
नासूर बन के रह गई
मीठी सी दिल्लगी, मैंने भी दर पे तेरे
कम्बल बिछा दिया ॥
तीरे-नज़र से मारा.....

◆

मिल करके दी जुदाई
'शिव' हाल क्या हुआ,
देता है श्याम बहादुर
फिर भी तुम्हे दुआ,
मरते हुए को श्याम क्यों
तूने जिला दिया ॥
तीरे-नज़र से मारा.....

◆◆◆

स्व. शिवचरण जी भीमराजका
'शिव' द्वारा 'मतलाब निकल गया
है तो' गीत की तऱज़ पर रचित
अनूठी रचना ।

◆◆◆◆◆



॥ श्री श्याम रसेवा के 30 वर्षों की उम्मीद ॥



॥ श्री श्याम रसेवा के 30 वर्षों की उम्मीद ॥



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

००००

तुम्हारे दर पे आये हैं
प्रभु कुछ बात करनी है,
ज़रा सा पास तो बैठो
प्रभु कुछ बात करनी है ॥

७

तरसता आ रहा हूँ मैं
मुझे ना और तरसाओ,
हमारा हाथ पकड़ो ना
दया करके तरस खाओ,
बड़े मज़बूर हैं देखो
प्रभु कुछ बात करनी है ॥
तुम्हारे दर पे आये.....

*

तुम्हारी बेरूखी से दिल मेरा
चुपचाप रोता है,
हमारे हाल पे थोड़ा सा
दुःख तुमको ना होता है,
नहीं मुमकिन है यूँ जीना
प्रभु कुछ बात करनी है ॥
तुम्हारे दर पे आये.....

८

तुम्हारे सामने बैठे हैं
मेरा फैसला कर दो,
शिकायत है अगर कोई तो
हमको बेड़िश्क कह दो,
झुकाये सर को बैठे हैं
प्रभु कुछ बात करनी है ॥
तुम्हारे दर पे आये.....

००००

'खिलौना जान कर तुम तो'
गीतकी तर्ज पर रचित भावपूर्ण
भजन । लेखक - अज्ञात ।

००००



ॐ श्री गणेशाय नमः



ॐ श्री वीर हनुमते नमः

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की शुभ वर्षीय

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

हसनुमते

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



॥ श्री याणशाली नमः ॥



॥ श्री योर हनुमते नमः ॥

माखनचोर कन्हैया तेरो, काँई श्याम इरादो है,
तूं वज़ीर सारै आलम को, यो छोटो सो प्यादो है ॥

७
देख रह्यो है चोड़े-धाड़े, चुप क्यूँ बैठ्यो फेरूँ भी,
स्यालै की मांझळ रातां मं, बेदर्दी नै हेरूँ भी,
तूं ही धीर बंधैया मेरो,
आजा भोत तकादो है ॥
माखनचोर कन्हैया तेरो.....

८
हूँ तो नित की याद दुवाऊँ, तूं ही चेत करै कोनी,
साँची बोलूँ रै निर्मोही, तेरे बिना सरै कोनी,
छलियां को सिरमौर खिवैया,
झूठो तेरो वादो है ॥
माखनचोर कन्हैया तेरो.....

९
के जाणै कोई जादू-टोणो, इतनी लापरवाही क्यूँ
तूं ही मेरै चैन हियै को, दिल की श्याम दवाई तूं
साथी तूं ही जनम-जनम को,
तूं मेरो शहजादो है ॥
माखनचोर कन्हैया तेरो.....

१०
श्यामबहादुर 'शिव' सैलाणी, बेसी क्यूँ तरसावै तूं
जै हो जावै दृष्टि दया की, मीठी बैण सुणावै तूं
तूं बांको तेरी चितवन बांकी,
यो मन सीधो-साधो है ॥
माखनचोर कन्हैया तेरो.....

११
स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा
'फूल तुम्हे भेजा है खत में' गीत की तर्ज
पर रचित भावपूर्ण रचना ।



ॐ श्री श्याम रैषा संघ समिति



हे बांकेबिहारी लाल,
मन्नै थारी याद सतावै है,
हिचक्यां ना रुकै गोपाल,
काळजो भर-भर आवै है ॥



बांकी सी लटक, गई मन मं अटक,
थे कद सी दरस दिखाओगा,
लागी चटक, गई आँखां भटक,
मन्नै थे ही धीर बँधाओगा,
मेरी बिनती सुणो जी नन्दलाल ।
मन्नै थारी याद सतावै है.....



जीवन धन, मिलणे की लगन,
थे मतना जीव दुखाओ जी,
नील गगन सो, थारो बदन,
मन्नै दरशन श्याम कराओ जी,
थानै न्यूत जिमास्यूं थाल ।
मन्नै थारी याद सतावै है.....



हरयै बांस की बांसुरिया गूँजी,
जीव मेरो भरमायो,
धेनू चरैया रास रचैया,
दिन-दिन दरद सवायो,
थारै गळ वैजयंती माल ।
मन्नै थारी याद सतावै है.....



श्यामबहादुर दर को भिखारी,
'शिव' थारो चाकरियो,
एक झलक दिखलाकै दयालु,
बेगा मनस्या भरियो,
मेरो पूरो करो जी सवाल ।
मन्नै थारी याद सतावै है.....



स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव'
द्वारा 'आ लौट के आजा मेरे' गीत
की तर्ज पर रचित सुप्रसिद्ध भजन



॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षाली वर्ष

ॐ श्री श्याम रैषा संघ समिति

हसनपुरा, जैसलमेर

ॐ श्री श्याम रसेवा संघ समिति



श्री श्याम रंगीला,
थां पर टिकायो दाता जीव नै ॥



म्हारी अर्जी थारी मर्जी,
थे हो दीनदयाल,
अं दर्दी की पीड़ा नै भी,
मेटो मदन गोपाल ॥
श्री श्याम रंगीला



चौखट पर थारी आ पूँछ्यो,
बिंगड़ी देओ संवार,
दुनिया रुसै तो चाहै रुसो,
मन्त्रै तेरी दरकार ॥
श्री श्याम रंगीला



हारयोड़ा का हो थे ही साथी,
दूजो ना कोई और,
थे म्हारे नैणा की ज्योति,
थे म्हारा चित्तचोर ॥
श्री श्याम रंगीला



श्यामबहादुर 'शिव' नन्दनंदन,
मेटो भव की त्रास,
थारै सं मेरो चलै गुजारो,
चरण कमल को दास ॥
श्री श्याम रंगीला



स्व. शिवचरणजी भीमराजका
'शिव' द्वारा राजस्थानी तर्ज 'म्हारी
चंद्रगवरजा' पर रचित भजन ।



॥ श्री गणेशाय नमः ॥



॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षाली वर्ष



॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

◆◆◆◆◆◆◆

बेदर्द ये ज़माना,
ऐ बांसुरीवाले तूं
मुझको नहीं भुलाना ॥

◆◆◆

सम्बल तेरा कन्हैया, दी सौंप तुझको नैया,
गोपाल सा जहाँ में, कोई नहीं खिवैया,
हक्रदार जान करके, सुनले मेरा फ़साना ॥
बेदर्द ये ज़माना

◆◆◆

खामोश देख करके, दाता को दिल दुःखी है,
चरणों में सांकरे के, पलकें झुकी-झुकी है,
मंदिर तेरा मुरारी, मेरा तो आशियाना ॥
बेदर्द ये ज़माना

◆◆◆

'शिव' श्यामबहादुर की, घनश्याम से करीबी,
पुतली(न) में बस गए हो, ये मेरी खुशनसीबी,
औकात मेरी क्या है, सरकार तुम निभाना ॥
बेदर्द ये ज़माना

◆◆◆

स्व. शिवचरण जी भीमराजका
द्वारा 'मौसम है आशिक़ाना' गीत
की तर्ज पर रचित भावभरी रचना ।

◆◆◆◆◆◆◆



॥ श्री शशांक नमः ॥



॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



अगर उसकी दया तूं,

चाहता है बावले मन,

सिर हथेली पर रखले,

थामकर दिल की धड़कन ॥



कठिन है रास्ता ये, धार तलवार की है,
बढ़ा दे कारवाँ मंज़िल, जहाँ पर यार की है,
लगाले आशियाना, फिर कहीं होगा समागम ॥
सिर हथेली पे रखले



अगर दीदार उसका, हो गया किस्मत बड़ी है,
तेरी दर्दी कोई बेदर्द ही, जीवन जड़ी है,
जो हो जाये नजारा, तो दिल में हो झनाझन ॥
सिर हथेली पे रखले



ये उल्फ़त का तकाजा, ये मरहम है ज़िगर की,
लगन सच्ची अगर है, नहीं कुछ बात डर की,
मुसाफिर इस डगर का, तेरा है दीवानापन ॥
सिर हथेली पे रखले



ये श्याम बहादुर का दावा, ये 'शिव' की आरजू है,
वास्ता गैर से क्या, तेरी ये जुस्तजु है,
लगाकर दिल निभाना, अलख तुम हो निरंजन ॥
सिर हथेली पे रखले



स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा
'चाँद आहें भरेगा' गीत की तर्ज पर रचित
भावपूर्ण रचना ।



॥ श्री श्याम नमः ॥



॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा



† श्री श्याम सेवा संघ समिति †

आयो सांवक्षियो सरकार,
लीलै पै चढ़के ॥

मुछाँ की मरोड़ कैसो रौब है निराळो,
धूंधरवाला बाल मेरो सांवरो रूखाळो,
तो लीलै की टाप, टप-टप खड़कै ॥
आयो सांवक्षियो सरकार....

केशरिया है बागो ज्यांपे फैंटो पचरंगो,
मोरपंख जैपुरी रुमाल है सुरंगों,
तो मुळक निहारूं, तन्नै जीव भरकै ॥
आयो सांवक्षियो सरकार....

बांकी सी लटक पर बावलो दीवानो,
मन मं मगन मेरो जीव मस्तानो,
तो नहीं कोई दूसरो, तेरै सं बढ़कै ॥
आयो सांवक्षियो सरकार....

वीर हनुमान कै निशान एक हाथ मं,
पवन कुमार सोहै सांवरै कै साथ मं,
तो देख कै सवारी, अंग-अंग फड़कै ॥
आयो सांवक्षियो सरकार....

श्यामबहादुर 'शिव' आरती उतारै,
अरज्ज गुजारै बाबा तन-मन वारै,
तो आ गयो दयालु, दाता दया करकै ॥
आयो सांवक्षियो सरकार....

स्व. शिवचरणजी भीमराजका द्वारा 'वारी
जाऊँ जी महाराज बिड़द बंका' भजन
तर्ज पर रचित भावपूर्ण रचना ।



॥ श्री गणेशाय नमः ॥



॥ श्री व्याहृती हनुमते नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षाली वर्ष



ॐ श्री ईश्वाम सेवा संघ समिति ॥

००७००७

ओ जी ओ मिजाजी म्हारा सांवरिया,
थारी बाबा ओळ्यूं आवै,
बेगा आओ जी सांवरा ॥

●

थानै तो मनावां घणा चाव सै,
थे हँस-हँस कंठ लगाओ,
ना तरसाओ जी सांवरा ॥

◆

ई दुनिया सैं न्यारो थारो देवरो,
थे रतन सिंधासन बैठ्या,
हुकुम सुणाओ जी सांवरा ॥

●

नैणा मांही छळकै थारो नेहड़ो,
थारा टाबरियां रा अटक्या,
काम बणाओ जी सांवरा ॥

◆

भूल्यां थारा टाबरियां नै नाय सैरै,
थारी जादूगरी मुरली,
आज बजाओ जी सांवरा ॥

●

भूल्योड़ा-भटक्यां नै थारो आसरो,
म्हारी मैया नाथ पुराणी,
पार लगाओ जी सांवरा ॥

◆

जागरणो ग्यारस की चांदण रात को,
कोई बारस नै थे,
खीर-चूरमो खाओ जी सांवरा ॥

हसनपुरा, ज.पुर

जिम्यां पाछै थारा हाथ धुवावस्यां,
ल्यो दो बीड़ा थे,
मगहीं पान चबाओ जी सांवरा ॥

◆

शर्मा 'काशीराम' थारो बाळकियो,
थारा कह्या-कह्या हुकुम उठावां,
क्यूँ फ़रमाओ जी सांवरा ॥

◆ ◆ ◆

सुप्रसिद्ध राजस्थानी तर्ज 'ओळ्यूं'
पर श्रद्धेय स्व. काशीरामजी शर्मा
द्वारा रचित अनुपम भजन ।



॥ श्री गणेशाय नमः ॥



॥ श्री वैष्णव हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

ॐ श्री ईश्वाम सेवा संघ समिति ॥

हसनपुरा, ज.पुर

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

◆◆◆◆◆◆◆◆

बरसां सं यो दिन आयो,
हिवडै मं हेत सवायो,
ठाकुर पधारया म्हारै आंगणै ।
ओ देखो ठाकुर पधारया.....

७

मोर-मुकुट मं थारै, सोवै किलंगी जी,
घेर-घुमेर बागो, आभा सतरंगी जी,
सेवकिया चंवर ढळावै,
सगळा मिल महिमा गावै,
साज सुरीला बाजै बाजणा ।
ओ देखो ठाकुर पधारया.....

८

थारै गळै मं सोवै, हार हज़ारी जी,
फूलां का गजरा जांकी, शोभा है न्यारी जी,
अन्तर की बरखा होवै,
झांकी सैं को मन मोहै,
नर-नारी आया म्हारै बारणा ।
ओ देखो ठाकुर पधारया.....

९

ऊंचै आसन पर बाबा, श्याम बिराजै जी,
कानां मं सोणा-सोणा, कुंडलिया साजै जी,
भगतां सं प्रीत निभाई,
अरजी की करी सुणाई,
'हर्ष' पधारया म्हारै पावणा ।
ओ देखो ठाकुर पधारया.....

◆◆◆◆◆

सुप्रसिद्ध भजन 'ग्यारस चानण की आई'
की तर्ज पर रचित श्री विनोद अग्रवाल
'हर्ष' की अनुपम रचना ।
◆◆◆◆◆◆◆◆



॥ श्री याम नमः ॥



॥ श्री योर हनुमते नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा



श्री श्याम सेवा संघ समिति

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

◆◆◆◆◆

खाटू के बाबा श्याम,
मुझे अपनी शरण में ले लेना ॥

७

देख लियो दुनिया को मेळो,
देख ली दुनियादारी,
स्वार्थ के सब रिश्ते-नाते,
स्वार्थ की ही यारी ॥
खाटू के बाबा श्याम.....

◆

माया के चक्कर मं पड़कर,
प्राणी होश गवायो,
ऊँच-नीच को भेद ना जाणयो,
अपणो भयो परायो ॥
खाटू के बाबा श्याम.....

८

दूट गई आशा की लड़ियां,
बिखर गये जग सारे,
कैसे मन को धीर बंधाऊँ,
तूं ही श्याम बतादे ॥
खाटू के बाबा श्याम.....

◆

हार गयो जीवन की बाजी,
मनङ्गो चैन गंवायो,
झूठे हो गये सपने अपने,
रास जगत ना आयो ॥
खाटू के बाबा श्याम.....

९

श्यामबहादुर 'शिव' ने अपनी,
मन की पीड़ सुनाई,
तेरे से क्या छिपा है मोहन,
तूं ही करे सहाई ॥
खाटू के बाबा श्याम.....

◆◆◆

स्व. शिवचरणजी भीमराजका
'शिव' द्वारा 'छोड़ गए बालम'
गीत की तर्ज पर रचित रचना ।

◆◆◆◆◆

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

† श्री श्याम सेवा संघ समिति †



डारो नहीं डारो, रंग रसिया श्याम ।
रंग रसिया श्याम, मन बसिया श्याम ॥

❶

देखो म्हारा उजळा चीर,
यांपै छिड़को नाही नीर,
चाहे डारो खूब अबीर,
झाड्यां आराम ॥
डारो नहीं डारो....

❷

रहली फीकी झळक रसीली,
फागण पाछै तलक नशीली,
जो गर करदयो रंग-रसीली,
दयूं लतां नै बिसराय ॥
डारो नहीं डारो....

❸

आछी कोन्या हंसी मखौल,
पड़सी सासूजी नै तोल,
मारै दुल्कारा दे बोल,
बै उडादे चाम ॥
डारो नहीं डारो....

❹

मानी-मानी आई होरी,
ओ 'नारायण' खोटी जोरी,
छोडो गैल बिनती मोरी,
जास्यां निज धाम ॥
डारो नहीं डारो....



हसनपुरा, ४७
स्व. नारायणलाल शर्मा (जयपुर)
द्वारा रचित सुप्रसिद्ध रचना ।



॥ श्री गणेशाय नमः ॥



॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षाली वर्ष

† श्री श्याम सेवा संघ समिति †

† श्री श्याम सेवा संघ समिति †



होळी रे होळी, देखो खाटू की होळी,
खाटुवाळो खैले अपणा टाबरां सं होळी ॥



॥ श्री गणेशाय नमः ॥



॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

५
पौ-माह के महीने सं ही, हो रही तैयारी है,
खाटू नगरिया चालां, मन मं चाव भारी है,
बूढ़ा-जवान सारा कर रह्या त्यारी ॥
होळी रे होळी देखो.....



चंग-मजीरा बाजै, बांसुरी भी बाजै है,
मोर-पपीहा बोलै, कच्छी घोड़ी नाचै है,
गींदङ्ग मं खाटुवाळो घूमर घाली ॥
होळी रे होळी देखो.....



कोई के गुलाल श्याम, हाथ सं लगावै है,
सगळा भक्त श्यामजी नै, रंग सैं नुहावै है,
श्याम के रंग मं सारो रंगयो 'बिहारी' ॥
होळी रे होळी देखो.....



श्री बिहारी लाल शर्मा (गुवाहाटी) द्वारा
'छड़ी रे छड़ी' गीत की तर्ज पर रचित रचना ।



॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

* * * * *

मंदिर मं बड़गयो,
होली खेलण सैं डरतो सांवरो ॥

७

बणकै बीनणी भीतर घुसगयो,
ललकारै नर-नारी,
हिम्मत है तो बाहर आज्या,
लेकर रंग-पिचकारी ॥
मंदिर मं बड़गयो, होली.....



मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

*
नैन चुराकर भीतर घुसगयो,
करले तूं मनमानी,
हिम्मत है तो बाहर आज्या,
याद करादयां नानी ॥
मंदिर मं बड़गयो, होली.....

८

ओ रंग-रसिया सुण मन बसिया,
यो के नाम कमाया,
आज्या अब तो छैल शरम कर,
हाँसे खड़ी लुगायां ॥
मंदिर मं बड़गयो, होली.....

९

म्है तो निर्भय तेरै नाम को,
ओढ़ाया फिरां दुपट्ठो,
ऐसो काम करणै सैं लगज्या,
सरकारी मं बट्ठो ॥
मंदिर मं बड़गयो, होली.....

१०

मै तेरो तूं मेरो 'बिहारी',
तं राजी मैं राजी,
चलतीं आई सदा चलेगी,
या अपणी रंगबाजी ॥
मंदिर मं बड़गयो, होली.....

११

श्री कुंजबिहारी सोनी 'बिहारी'
राजस्थानी तर्ज 'म्हारी
चंद्रगवरजा' पर रचित रचना ।

* * * * *

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



चालो खाटूधाम फागणियो आयो है ।
चालो खाटूधाम, बुलावै श्याम,
फागणियो आयो है ॥

७

रंग-रंगीला निशान बणाल्यो,
ऊपर श्याम को नाम लिखाल्यो,
चालो चालां खाटू,
बाबै को हेलो आयो है,
बारह महीना बाटां डीकी,
जद यो फागण आयो है,
छोडो सारा काम, बुलावै श्याम,
फागणियो आयो है ॥
चालो खाटू धाम, फागणियो.....



॥ श्री श्यामशाय नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षाली वर्ष

खाटू की गळियां मं धूम मचास्यां,
चंग-मजीरा खड़ताळ बजास्यां,
घूमर-रसिया और लावणी,
सगळा मिलकर गावांगां,
मन्दरिये सैं काढ बारणै,
श्याम नै नाचावांगां,
अन्तर की बौछार, रंग भरमार,
फागणियो आयो है ॥
चालो खाटू धाम, फागणियो.....

८

खाटुवाळा श्याम की तो महिमा निराली है,
'अनिल' मन बगिया को सांवरो ही माळी है,
मेहंदी जैया रच गयो हिंडै मांही सांवरो,
सुरगां सैं भी प्यारो लागै खाटू को निजारो,
कहदे मन की बात, तूं अबकी स्यात,
फागणियो आयो है ॥

चालो खाटू धाम, फागणियो.....



ଶ୍ରୀ ସ୍ଥାମରକେଳା ସଂଘ ସମୀତି

• 10 •

आ खाटू के श्याम,
बुलाते भक्त तुझे धनश्याम,
जगामग ज्योत जले ॥

ये श्रृंगार गुलाबी कीन्हा
आओ श्याम बिहारी,
दूर देश से चल कर आया
बाबा शरण तिहारी,
निराला बना है खाटू धाम,
चाओ लाज मेरी घनश्याम ।
जगामग ज्योत जले ॥
आ खाटू के श्याम

मोर मुकुट छवि देख तुम्हारी,
दिल मेरा भर आया,
दिन नहीं चैन रात नहीं निन्दिया,
फिर क्यों आप भुलाया,
झूबती नैया लेना थाम,
याद करता हूँ सुबह शाम ।
जगामग ज्योत जले ॥
आ खाट के श्याम

६

मात पिता प्रभु आप हमारे
शरण में किसकी जाऊँ,
मन मंदिर में मूर्ति बसी है
दर्शन बिन चैन न पाऊँ,
बनादो बिगड़े सारे काम,
ना भूलूँ जीवन भर तेरा नाम ।
जगामग ज्योत जले ॥
आ खाट के श्याम

‘चुत्री विप्र’ ये शरण पड़ा
 आओ श्याम बिहारी,
 साँवली सूरत देख आपकी,
 ओम शर्मा बलिहारी,
 कहे यूं पंडित गंगाराम,
 ना भूल जीवन भर तेरा नाम,
 जगामग ज्योत जले ॥
 आ खाट के श्याम

★

परम श्यामभक्त एवं चुनी गुरु
के नाम से सुविख्यात स्व. श्री
चुनीलाल जी शर्मा, कानपुर
वालों द्वारा 'सिर पर टोपी लाल,
हाथ में रेशम का रूमाल' गीत
की तर्ज पर लगभग 65 वर्ष
पूर्व रचित भावपूर्ण भजन

‘चुनी विप्र’ ये शरण पड़ा
आओ श्याम बिहारी,
साँवली सूरत देख आपकी,
ओम शर्मा बलिहारी,
कहे यूं पंडित गंगाराम,

ॐ श्री श्याम रसेषा संघ समिति ॥

००००००

ठाठ हैं निराले,
खाटू के दरबार में ॥

●

चांदी का सिंहासन सुन्दर,
श्याम हमारे बैठे जिस पर,
रंग-बिरंगे बागे तन पर,
जंचते हैं दातार के ॥
ठाठ हैं निराले, खाटू



पाँच आरती नित की होती,
जगमग करती अखण्ड ज्योति,
चमक रहे हैं हीरे-मोती,
बाबा के सिणगार में ॥
ठाठ हैं निराले, खाटू

●

गोपीनाथ की मुरली बाजै,
भोले सपरिवार बाजै,
दुनिया करती है दरवाजे,
दर्शन पवनकुमार के ॥
ठाठ हैं निराले, खाटू

●

दूर-दूर से यात्री आवें,
चरणों में अरदास लगावें,
खाली झोली भर-भर जावें,
कमी नहीं भण्डार में ॥
ठाठ हैं निराले, खाटू

●

जिनका है दरबार से नाता,
जीवन भर वो मौज उड़ाता,
'बिन्दू' जिसपे खुश है दाता,
सुखी वही संसार में ॥
ठाठ हैं निराले, खाटू

●

श्री बिनोदकुमार गाडोदिया 'बिन्दू'
द्वारा 'आज हरी आये, विदुर घर'
भजन की तर्ज पर रचित रचना ।

००००००

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

ॐ श्री श्याम रसेषा संघ समिति ॥

हसनपुरा, ज. कर

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



आयो फागण मेलो, बाबो मारै हैलो,
खाटूधाम चालो, भगतां नै संग लेल्यो ॥



फागणियो रंगीलो महीनो, भोत लागै प्यारो,
मंदरियै मं होली खेलां, सागै खाटुवाळो,
केसर रंग पिचकारी, लाल-गुलाल उंडेलो ।
खाटूधाम चालो, भगतां नै संग लेल्यो ॥



जमघट माचै आंगणियै मं, नाचै-कूदै जोर सं,
टोळियां की टोळी आवै, जैकारा बोलै जोर सं,
ठोलक-ढप और झांझा बाजै, साथ मं नगाडो ।
खाटूधाम चालो, भगतां नै संग लेल्यो ॥



लागै है दरबार ऐसो, बाबा की सरकारी मं,
फरियादी है रकम-रकम का, आंकी ताबेदारी मं,
होवै है सुणवाई, थे भी अरजी गेरो ।
खाटूधाम चालो, भगतां नै संग लेल्यो ॥



शरणागत का संकट, बाबै सैं ना देख्या जावै,
दुनिया का संताप बाबो, पल मं मिटावै,
ऐसो है दयालु, श्याम खाटुवाळो ।
खाटूधाम चालो, भगतां नै संग लेल्यो ॥



के सोचै है बावला तुं, करले खाटू की त्यारी,
श्याम धणी का दर्शन करस्यां,
दुविधा मिटज्या सारी,
भोत ही बेगो रीझै, मोहन मुरलीवालो ।
खाटूधाम चालो, भगतां नै संग लेल्यो ॥



ओड बडै संसार मांही, थारो एक आधार है,
बाबा म्हारो ध्यान राखिये, टाबर की पुकार है,
श्याम मण्डल फरमावै, सबनै गळै लगाल्यो ।
खाटूधाम चालो, भगतां नै संग लेल्यो ॥



'लल्ला-लल्ला लोरी' की तर्ज पर रचित
सुपरिचित एवं सर्वप्रिय रचना । लेखक - अज्ञात ।

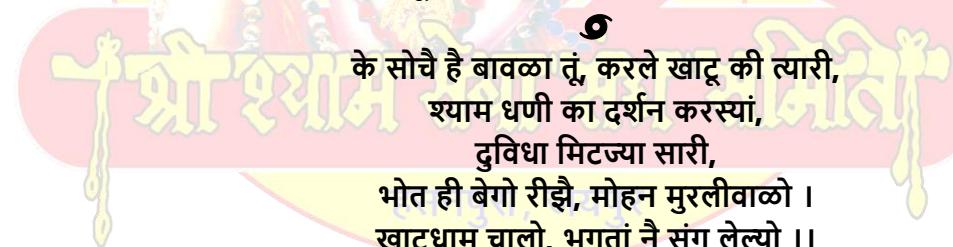


॥ श्री गणेशाय नमः ॥



॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



गाजे-बाजे सं बुलाले बाबा श्याम,
आयो महीनो फागण को ॥

७

कई दिनां सं मन मं लागी,
जावां खाटू धाम,
एक-एक दिन गिण-गिण कर काटां,
कैंयां दीखै श्याम,
म्हानै बेगो सो बुलाले बाबा श्याम,
आयो महीनो फागण को ॥

८

फागण मास रंगीलो थारो,
भगतां कै मन भावै,
फागण कै मेळे कै मांही,
नाच-कूदता आवै,
म्हानै हिवडै सं लगाले बाबा श्याम,
आयो महीनो फागण को ॥

९

श्याम धणी सं आस घणी,
ओ भगतां को प्रतिपाल,
महर करो सेवक कै ऊपर,
दरशन दयो हर साल,
म्हानै चरणां सं लिपटाले बाबा श्याम,
आयो महीनो फागण को ॥

१०

आलूसिंह पर किरपा थारी,
रोज करै सिणगार,
केसर-तिलक लगावै थारै,
अन्तर की भरमार,
देवै चोखा-चोखा सबनै वरदान,
आयो महीनो फागण को ॥

११

सुप्रसिद्ध भजन 'बैठ्यो खाटू मं
लगाकै दरबार' की तर्ज पर
रचित सुपरिचित प्राचीन रचना,
लेखक - अज्ञात ।



॥ श्री शंशान नमः ॥



॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति

हसनपुर अमृतपुर

ॐ श्री श्याम रसेषा संघ समिति ॥



नैण मिलाले खाटवाले दीनबंधु भगवान्,

दया कर थोड़ी सी,

दुखियाजन को गले लगाले, व्याकुल हो गये प्राण,

दया कर थोड़ी सी ॥



॥ श्री गणेशाय नमः ॥



॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

५

संकटहारी नाम तेरा, दुनिया में सरनाम तेरा,

सुणै नहीं के तन्त्रै भी, बहरा हो गया कान तेरा,

कृपासिन्धु क्यूँ देर लगाई, झट करदे फरमान ।

दया कर थोड़ी सी ॥

६

दवा दरद की मेरै तूं, दर्दी नै नहीं हेरै तूं,

बात बणै जद श्यामधणी, सीधो पासो गैरे तूं,

मेरी लाज बृजराज बचाले, पलक उठा पहचान ।

दया कर थोड़ी सी ॥

७

बेदम है फ़रियाद मेरी, के ई सूं कीनी देरी,

हिवड़ो चीर दिखा ना सकूँ, बाण मना भूलै तेरी,

शरणागत की बांके बिहारी, राखै तूं ही स्यान ।

दया कर थोड़ी सी ॥

८

श्यामबहादुर चेत करो, 'शिव' सैं भी थे हेत करो,

श्यामदेव मेरी रक्षा, दाता कुटुम्ब समेत करो,

निर्बल को बल निर्धन को धन, विनती ले तूं मान ।

दया कर थोड़ी सी ॥

९

स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' ह्वारा 'गाडी
वाले मन्त्रै बिठाले' भजन की तर्ज पर रचित रचना



॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

◆◆◆◆◆◆◆

हो बाबा श्यामजी को चाकरियो पुराणो,
जमानो चाहे क्यूँ ही समझै ॥

७

श्याम बाबाजी सैं मेरो जूणो खातो,
कोई पूछै तो बताऊँ, काँई नातो,
हो लागै नीको-नीको, श्यामजी सुहाणो ॥
जमाने चाहे क्यूँ ही



मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

◆

लीलै घोडै वाळो बड़ो ही रंगीलो,
याद आवै तो यो, घणो दरदीलो,
हो मेरै दिल की, लगी को यो ठीकाणो ॥
जमाने चाहे क्यूँ ही

८

अं की मीठी सी नज़र को निशानों,
बण गयो चाहे, मानो मत मानो,
हो मेरै काळजै की, पीड़ नै पिछाणो ॥
जमाने चाहे क्यूँ ही

◆

श्यामबहादुर दयालु बड़ो भारी,
'शिव' जुड़ गई, बैं सैं मेरी यारी,
हो आवै थोड़ो-थोड़ो, श्याम नै पटाणो ॥
जमाने चाहे क्यूँ ही

◆◆◆

स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा
'दिल तोड़ के हँसती हो मेरा' गीत की तर्ज
पर रचित भावपूर्ण भजन ।

◆◆◆◆◆◆◆

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

सूरत की रूप की प्रभु, तारीफ़ क्या करूँ,
देखा नहीं है आपको, कैसे बयां करूँ ॥



॥ श्री याम नमः ॥



॥ श्री योग नमः ॥

कहते हैं लोग आपके, घुँघराले केश हैं,
सूरत सलोनी आपकी, केशरिया भेष है,
मुझको दिखादो इक झलक, तब ही यकीं करूँ ॥
देखा नहीं है आपको, कैसे....

मैंने सुना है आपकी, महिमा विशाल हैं,
कलियुग में श्याम नाम की, जलती मशाल है,
देखूँ नहीं मैं जब तलक, विश्वास क्या करूँ ॥
देखा नहीं है आपको, कैसे....

मुझको दरश दिखाइये, सूरत दिखाइये,
दर्शन दिखाके साँवरा, संशय मिटाइये,
कहता 'रवि' है फिर प्रभु, खुलकर बयां करूँ ॥
देखा नहीं है आपको, कैसे....

श्री रविन्द्र के जरीवाल 'रवि' द्वारा 'मिलती है जिन्दगी में,
मुहब्बत कभी-कभी' गीत की
तर्ज पर रचित अनुपम रचना ।

ॐ श्री श्याम सरेषा संघ समिति ॥



दीनबंधु दीनानाथ, मेरी सुध लीजिये,
आया है तूफान, नैया पार कर दीजिये ॥



दास हूँ पुराणो तेरो, श्याम सरकार मैं,
तेरे ही भरोसै छोड़ी, नाव मझधार मं,
धजाबंद धारी घणी, देर मत कीजिये ॥
आया है तूफान नैया.....



मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा



बांकी सी लटक मं, अटक गया प्राण है,
तूं ही मेरो सेठ, तूं ही मोटो जजमान है,
प्रीत की पुकार या ही, प्रेम रस दीजिये ॥
आया है तूफान नैया.....



बांसुरी नै तेरी चित्त, चोर लियो मेरो है,
चरणं कै मांही तेरै, दास को बसेरो है,
मेरी या पुकार, दिलदार सुन लीजिये ॥
आया है तूफान नैया.....



श्यामबहादुर 'शिव', श्याम को गुलाम है,
हाज़री बजाणो और, मनाणो मेरो काम है,
भीख दे दया की मेरी, झोली भर दीजिये ॥
आया है तूफान नैया.....



स्व. शिवचरण जी भीमराजका द्वारा
'दीनानाथ मेरी बात' भजन की
तर्ज पर रचित अनुपम रचना



ॐ श्याम सेवा संघ समिति



॥ श्री गणेशाय नमः ॥



॥ श्री वैष्णवत्मके नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 गोरक्षाली वर्ष

श्री श्याम

तेरे से क्या छुपा है, मेरा सवाल क्या है,
ये दिल ही जानता है, इस दिल का हाल क्या है ॥

मीठी से चोट खाकर, तुमसे नज़र लड़ाकर,
आबाद हो गया हूँ, हस्ती मेरी मिटाकर,
दिलदार यार प्यारे, मुझको मलाल क्या है ॥
तेरे से क्या छुपा है

चौखट पे ये तुम्हारे, बैठा नज़र पसारे,
जीवन के दिन गुजारे, बन्दा तेरे सहारे,
चित्तवन से चित्त चुराया, तेरा कमाल क्या है ॥
तेरे से क्या छुपा है

बेशक तेरी अदा का, दीवाना दिल मेरा है,
जाना हुआ तुम्हारा, पहचाना दिल मेरा है,
नैणा कृपाण तेरे, धीरज की ढाल क्या है ॥
तेरे से क्या छुपा है

तेरी यादों के सहारे, कटते हैं दिन हमारे,
जिंदा हूँ श्यामसुन्दर, ये दिल तुम्हे पुकारे,
झूठा है तेरा वादा, वादे में माल क्या है ॥
तेरे से क्या छुपा है

'शिव' श्यामबहादुर के, नैनों के नूर तुम हो,
सच मानलो कन्हैया, मेरे गुरुन् तुम हो,
हर कोई कुछ भी कहले, तेरी सम्हाल क्या है ॥
तेरे से क्या छुपा है

स्व. शिवचरण जी भीमराजका द्वारा
'चूड़ी मजा ना देगी' गीत की तर्ज पर रचित भजन....

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



मुझे दीन बंधु निभाना पडेगा,
चरण चाकरी में लगाना पडेगा ॥



ये मस्तानी मुस्कान, तेरी मदहोश बनाती है,
मुरली मधुर की तान, मेरे दिल को तड़फाती है,
मुझे अपना जलवा दिखाना पडेगा ॥
चरण चाकरी में



॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥



इस दिल के कहने ही से, मैंने प्रीत लगाई है,
चाहे करले कितनी देर, मुझे भरपूर समाई है,
दरद मेरा तुमको, बंटाना पडेगा ॥
चरण चाकरी में



तूं नैनों की पुतली में, सुन्दर श्याम समाया है,
साँवरिया रंगरेज़, प्रीत का रंग चढ़ाया है,
मेरी जिंदगी को सजाना पडेगा ॥

चरण चाकरी में



श्यामबहादुर ये, 'शिव' तो तेरा दीवाना है,
सर आँखों पर दिलदार, मेरे तेरा फरमाना है,
तुम्हें सांवरे रहम, खाना पडेगा ॥

चरण चाकरी में.....



स्व. शिवचरण जी भीमराजका 'शिव' द्वारा
'सौ साल पहले, मुझे तुमसे' गीत की तर्ज पर रचित भजन



॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



लीलै घोड़े रा असवार, करां थारी मनुहार,
ओ बाबा, म्हारै घरां आओ जी ॥



॥ श्री गणेशाय नमः ॥



॥ श्री खीर हनुमते नमः ॥

कान मं थारै कुण्डल सोहै, गळ वैजयंती माळा,
शीश पै थारै मुकुट बिराजे, नैण लगे मतवाळा,
शोभा वरणी ना जाय, देख्यां मन हरषाय ।
बाबा म्हारै घरां आओ जी ॥



दिनां का थे नाथ कहाओ, पाण्डवकुल अवतारी,
महिमा थारी बरणी ना जाये, पूजे दुनिया सारी,
म्है भी धरां थारो ध्यान, गावां थारो ही गुणगान ।
बाबा म्हारै घरां आओ जी ॥



आंध्यां नै थे आँख्यां देओ, पांगळिया नै पांव,
कोढियां नै निरमल काया, जाणै सकल जहान,
अरजी करै है 'रमेश', हरो कष्ट कलेश ।
बाबा म्हारै घरां आओ जी ॥



राजस्थानी तर्ज 'म्हारो गोरबंद नखराळो' पर
श्री रमेश गोयनका द्वारा रचित सुपरिचित भजन ।



ॐ श्री ईश्वर सेवा संघ समिति ॥



कन्हैया तुमको देखकर दिल झूम जाता है,
झूम जाता है मेरा दिल, झूम जाता है ॥



बांकी अदायें, चैन चुरायें,
तेरी प्यारी बतियां, मन को लुभायें,
मेरे हमदम तूं हरदम याद आता है ॥
कन्हैया तुमको देखकर दिल....



कैसा ये रिश्ता, हमारा तुम्हारा,
अपना समझकर, जब भी पुकारा,
चेहरा आँखों के आगे घूम जाता है ॥

कन्हैया तुमको देखकर दिल....
दीवाना बनाने की, कला जानते हो,
दीवाना बनाकर, ही मानते हो,
'बनवारी' दिल तेरे ही, गीत गाता है ॥
कन्हैया तुमको देखकर दिल....



राजस्थानी तर्जा 'कान्हूडा लाल घड़लो
म्हारो' पर श्री जयशंकर चौधरी 'बनवारी'
द्वारा रचित सुप्रसिद्ध भजन ।



ॐ श्यामरसेवा संघ समिति ॥



यादां आई है, बैं सांवरियै सरकार की ॥

७

धूँधरवाला बाल सलोणा, जैसे नागण काळी,
कुण्डल के नीचै नखराळी, नाचै-कूदै बाली,
गळपटियो गुलजार गळै मं, सोहै मोहन माळा,
मस्तानी मुद्रा दाता की, लीलै घोडै वाळा,
आँख्यां भर आई रै, यादां मं बैं दिलदार की ॥
यादां आई है, बैं सांवरियै

८

तिरछै चरण अधर पर मुरली, गूँजे कामणगारी,
झूम-झूमके वो सुर साधे, माखन चोर मुरारी,
नैण बाण की चोट करारी, ये दिल भरमा डाला,
भूल गया तन की सुध सारी,
पी गया प्रीत का प्याला,
सुरतां शरमाई रे, हृद होय गई सिणगार की ॥
यादां आई है, बैं सांवरियै

९

'श्यामबहादुर' बो सांवरियो, है ऐसो अलबेलो,
वो तेरी मंजिल को साथी, 'शिव' तूं नहीं अकेलो,
बैंकी तेरी प्रीत पुराणी, वो तेरो दिलजानी,
श्याम धणी की रै पंछीड़ा, है तेरी जजमानी,
तूं खूब लगाई रे, रगड़क बैं दातार की ॥
यादां आई है, बैं सांवरियै

१०

स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा
'झूमका गिरा रे, बरेली के' गीत की तर्ज़

पर रचित अनुपम रचना ।



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

* * * * *

ज्यूँ-ज्यूँ कार्तिक बीत्यो जावै,
त्यूँ-त्यूँ फागण नीडे आवै,
बाबा मन म्हारो हषवै,
जास्यां बाबा कै, जास्यां बाबा कै ॥

७

बाबो खाटू मांही बिराजै,
आं कै ढोल-नगाड़ा बाजै,
भगतां मगन होयकर नाचै,
जास्यां बाबा कै ॥

*

सेवक दूर-दूर सैं आवै,
आकर श्याम का दरशन पावै,
बाबो बैठ्यो हुकुम सुणावै,
जास्यां बाबा कै ॥

८

बाबा म्है भी करां तैयारी,
पूरो मन की आशा म्हारी,
दिखादे खाटू नगरी थारी,
जास्यां बाबा कै ॥

*

बाबा म्है भी पैदल आस्यां,
केशरिया ध्वजा चढास्यां,
थारा 'बनवारी' गुण गास्यां,
जास्यां बाबा कै ॥

* * *

राजस्थानी तर्ज 'धरती धोरां री'
पर श्री जयशंकर चौधरी 'बनवारी'
द्वारा रचित लोकप्रिय भजन ।

* * * * *

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



॥ श्री गणेशाय नमः ॥



॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

ये दिल बड़ा दीवाना, कहना मानता नहीं,
अपने पराये को भी ये पहचानता नहीं ॥

७
सुध लेने वाले सांवले सरकार को भूला,
ऐसे दयालु देव को भी जानता नहीं ॥
अपने पराये को भी

८
मेरे जिगर का टुकड़ा है वो शीश का दानी,
उस मस्त नज़र वाले से मस्ती छानता नहीं ॥
अपने पराये को भी

९
इंसान का चोला मिला है उसकी हो दया से,
उस दीनबंधु से मिलन की ठानता नहीं ॥
अपने पराये को भी

१०
'शिव' श्यामबहादुर का इशारा है दोस्तों,
लीले घोड़े वाले का गुण बखानता नहीं ॥
अपने पराये को भी

११
स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा
'अफ़साना लिख रही हूँ' गीत की तर्ज पर
रचित अनुपम रचना ।



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

* * * * *

दिल दांव पै लगायो,
नादान के करयो तूं,
कैसो गज़ब तूं ढायो ।



ल्यावै टके की हांडी, बा भी बजा कै देखै,
पण तूं तो बावल्लो है, पागल नै कोई के कह,
गम नै गळे लगायो ॥
नादान के करयो तूं.....



॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

७
तेरी परख कै आगे, दूजी परख नहीं है,
बैशक क्यूँ ले मरेगो, ऐ मं फरक नहीं है,
हिवडै मं ल्या बिठायो ॥
नादान के करयो तूं.....



इब जे मुकर गयो तूं, मझधार मं बह्यो तूं,
तो फिर कठे ठिकाणो, आशिक़ नयो-नयो तूं,
के रोग लगा ल्यायो ॥
नादान के करयो तूं.....



दरदां के दर्द की तो, चिंतन ही है दवाई,
मंज़िल है दूर तेरी, सबसै बड़ी समाई,
दिल खोलकर दिखायो ॥
नादान के करयो तूं.....



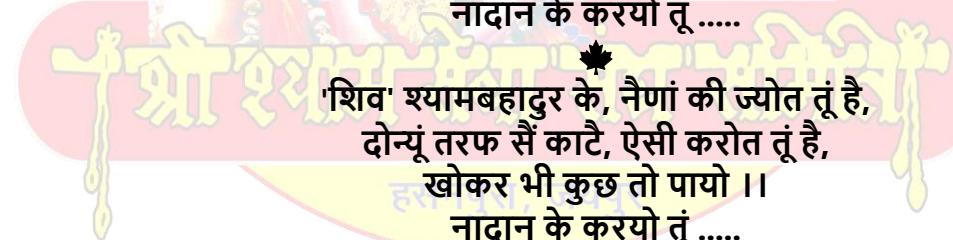
'शिव' श्यामबहादुर के, नैणां की ज्योत तूं है,
दोन्यूं तरफ सैं काटै, ऐसी करोत तूं है,
खोकर भी कुछ तो पायो ॥
नादान के करयो तूं.....



स्व. शिवचरण जी भीमराजका द्वारा
'मौसम है आशिक़ाना' गीत की तर्ज
पर रचित अनुपम रचना

* * * * *

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षाली वर्ष



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

ऐजी म्हारै श्यामधणी खाटूवाळै को,
जलवो न्यारो है ।
जलवो न्यारो है, बली को तेज सितारो है ॥

स्वर्ण मुकुट कानां मं कुण्डल,
नैन बने प्रभु के नभमण्डल,
दर्शन करलै रे मनवा चल,
नख बेसर मुख पान रच्यो, दिलदार हमारो है ॥

हीरां जड़ियो हार गळै मं,
गळपटियो गुलझार गळै मं,
कैरूं को भण्डार गळै मं,
जै मेरी ले मान, दूध को भरयो दुहारो है ॥

पाण्डव वंश उजागर किन्यो,
शीश दान हरि कूँ दे दिन्यो,
दीन जाण मोहै अपना लीन्हो,
अटकी कर दे पार, विपत्त मं श्याम सहारो है ॥

श्यामबहादुर वो बिगड़ी नै,
बणा देवै तेरी एक घड़ी मं,
आडो आवै भीड़ पड़ी मं,
मनडै की तेरी बात, वो ही 'शिव' जानणहारो है ॥

श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव'
द्वारा 'रसिया' (हो रह्यो बाबा की नगरी मं)
तर्ज पर रचित भावभरी रचना ।

॥ श्री श्याम सेवा संघ "समिति" ॥



मुझे श्यामसुन्दर रिझाना है तुमको,
दिले-हाल अपना सुनाना है तुमको ॥



कहाँ तक गम-ए-दिल, दबाता रहूँगा,
मैं जान-ए-जिगर को, सताता रहूँगा,
कलेजे से दिलवर, लगाना है तुमको ॥
मुझे श्यामसुन्दर रिझाना है



॥ श्री खीर हनुमते नमः ॥

तुम्ही मेरी नैया, खिवैया तुम्ही हो,
मेरे यार बंशी, बजैया तुम्ही हो,
नजर से नजर फिर, मिलाना है तुमको ॥
मुझे श्यामसुन्दर रिझाना है



भुलाने का सरकार, इरादा ना करना,
यूँ मजबूर मुझको, ज्यादा ना करना,
ये अरमान दिल के, सजाना है तुमको ॥
मुझे श्यामसुन्दर रिझाना है



तुम्ही चैन हो मेरे, जख्मे जिगर के,
मेरे दिल की दुनिया को, आबाद करके,
चिराग-ए-मुहब्बत, जलाना है तुमको ॥
मुझे श्यामसुन्दर रिझाना है



सुनो श्यामबहादुर, 'शिव' की कहानी,
मुझे तो तेरी श्याम, खिदमत बजानी,
दुई का ये परदा, हटाना है तुमको ॥
मुझे श्यामसुन्दर रिझाना है

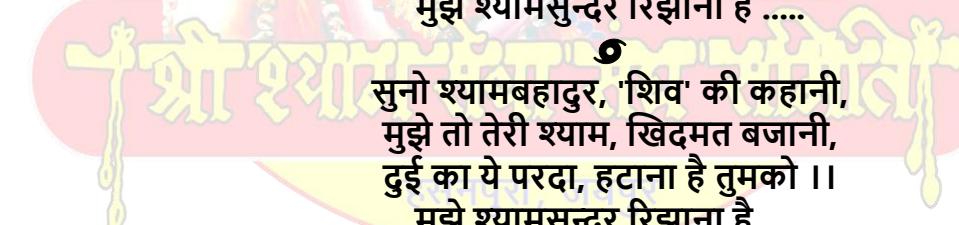


स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा
'बहुत प्यार करते हैं तुमको सनम' गीत की
तर्ज पर रचित अनूठी रचना ।



॥ श्री गणेशाय नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



एहसान तेरा, एहसान तेरा,
मैं भूल ना जाऊँ, इतनी कृपा कर,
ओ सांवलिये तूँ, दिल में रहा कर ॥



॥ श्री याणशाय नमः ॥



॥ श्री योर हनुमते नमः ॥

भटक रहा था दर-दर मैं, तूने थाम लिया,
सूने दिल के साजों को, अपना नाम दिया,
अब तो साँसों की सरगम पे,
बाबा गूंजे है नाम तेरा ॥
एहसास तेरा, एहसान तेरा

तूने ही संवारी है, ये जीवन बगिया,
मांझी बनकर थामी है, झूबती नैया,
जाने कैसा है ये रिश्ता,
बाबा तेरा और मेरा ॥
एहसास तेरा, एहसान तेरा

तेरे नाम की मस्ती में, सच हो हर सपना,
बाबा तुमको ना भूलूँ छूटे ये रंग ना,
अपने चरणों मैं रहने दो,
'अनिल' का बसेरा ॥
एहसास तेरा, एहसान तेरा

तर्ज - महबूब मेरे, महबूब मेरे...
श्याम कृपा स्वरूप लगभग 26 वर्ष पूर्व

श्री अनिल जी अग्रवाल (हसनपुरा) को यह रचना लिखने का
सौभाग्य प्राप्त हुआ ।



ॐ श्री श्याम सरेषा संघ समिति ॥

श्याम का नाम मुझे मस्त बना देता है,
श्याम सागर में डूब जाता हूँ मैं,
दर्दो-गम दिल के भूल जाता हूँ मैं ॥



॥ श्री यामशाय नमः ॥



॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

जब भी पुकारूँ मैं, मेरे बंशी बजैया को,
हर बार देखा है, मेरे हमदम कन्हैया को.
आके चुपके से वो, मेरे सपने में वो,
तान मुरली से गजब की, सुना देता है ॥
श्याम का नाम मुझे.....

कई बार तो ये दिल, बड़ा गमगीन होता है,
उस वक्त साँवरिया, मेरे नजदीक होता है,
होश रहता नहीं, कुछ भी कहता नहीं,
मीठी मुस्कान से दिल को, लुभा लेता है ॥
श्याम का नाम मुझे.....

मैं याद में उसकी, सभी कुछ भूल जाता हूँ,
मैं लेके उसका नाम, खुशी के गीत गाता हूँ,
श्याम सरकार है, बड़ा दिलदार है,
आज 'बनवारी' तुझे दिल से, नमन करता है ॥
श्याम का नाम मुझे.....

श्री जयशंकर चौधरी 'बनवारी' द्वारा 'जाने क्यूँ लोग
मुहब्बत किया करते हैं'
गीत की तर्ज पर रचित अनुपम रचना ।

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



मेरा श्याम रंगीला,
पलकां उधाड़ो फागण आ गयो ॥



७
फागणियो रंगीलो महीनो, चंग सुरीला बाजै,
रेशमी दुपट्टा बांध्यां, भगतां छम-छम नाचै ॥
मेरा श्याम रंगीला, पलकां....

८
रंग-बिरंगी सुन्दर-सुन्दर, श्याम ध्वजा बणवाई,
लाज राखिये खाटुवाळा, या ही अरज़ लगाई ॥
मेरा श्याम रंगीला, पलकां....

९
श्याम मण्डल यो हैलो मारै, भगतां कान लगाल्यो,
भीड़ मोकळी होसी इबकै, बेगा नाम लिखाल्यो ॥
मेरा श्याम रंगीला, पलकां....

१०
मेळा पाछै होळी खेलां, केशर रंग उड़ावां,
'बनवारी' भगतां कै सागै, श्याम कुण्ड मं न्हावां ॥
मेरा श्याम रंगीला, पलकां....

११
श्री जयशंकर चौधरी 'बनवारी' द्वारा राजस्थानी
तर्ज़ 'म्हारी चंद्रगवरजा' पर रचित रचना ।



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

* * * * *

चलो ना सांवरे के दर,
वहीं दिन बीत जायेंगे,
सुना है भजनों से रीझे,
नये हम गीत गायेंगे ॥

६

सुना है हार कर जो भी,
शरण में इनकी आता है,
कि देखे ना कभी फिर हार,
सहारा जब वो पाता है,
अभी तक हारते आये,
कि हम भी जीत जायेंगे ॥
चलो ना सांवरे के दर.....

७

गुनाह करते हैं जो पापी,
सुना वो भी यहां तरते,
है मिलती माझी उनको भी,
गले से वो भी हैं लगते,
गुनाह होंगे हमारे माफ़,
हमें भी मीत बनायेंगे ॥
चलो ना सांवरे के दर.....

८

सुना है प्रेमी का प्रेमी,
इसे बस प्रेम भाता है,
तभी तो दानी है ये श्याम,
ये करुणा ही बहाता है,
कहे 'निर्मल' की दर से,
श्याम के हम प्रीत पायेंगे ॥
चलो ना सांवरे के दर.....

* * *

श्री निर्मल झुंझुनवाला 'निर्मल'
द्वारा 'खिलौना जानकर तुम तो'
गीत की तर्ज पर रचित भजन ।

* * * * *

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षीय
सेवा का अद्वितीय वर्ष

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

हस्ताक्षी

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



मंदिर मस्जिद ढूँढे,
ढूँढे गुरुद्वारे में।
क्यूँ ढूँढे ना मुझको,
मन के चौबारे में॥



पल पल तेरे साथ मैं रहता हूँ,
डरने की क्या बात जब मैं बैठा।
पल पल तेरे साथ मैं रहता हूँ॥



तूफान के आगे तेरा दिल घबराता है,
मैं साथ हूँ तेरे तू भूल जाता है,
जब आँख तेरी भरती दिल मेरा रोता है,
मेरे आंसू का कतरा तेरी आँख में होता है,
जब दुःख में हो बेटा तो बाप भी रोता है।
पल पल तेरे साथ मैं रहता हूँ॥



संघर्ष है जीवन संघर्ष किये जा तू,
सुख दुःख दो पहलु हे मस्ती में जिए जा तू,
क्यूँ हारता तू ऐसे हालातो के आगे,
तेरा होसला बनके जब मैं चलता सागे,
मैं भी हूँ नहीं सोता जो तू रतिया जागे।
पल पल तेरे साथ मैं रहता हूँ॥



ये दौर बीतेगा नया दौर आएगा,
काँटों की राहो पर चलना आ जायेगा,
हे रात काली तो दिन भी उग जायेगा,
विश्वास रख मुझपे रस्ता मिल जायेगा
जीवन की पहली को तू खुद सुलझाएगा।
पल पल तेरे साथ मैं रहता हूँ॥



नैया जो लहरो में तेरी झब जायेगी,
तेरी लाज जायेगी तो मेरी लाज जायेगी,
मैं आत्मा तेरी अहसास हूँ तेरा,
क्यूँ घबराता जब मैं विश्वास हूँ तेरा,
बोलू न अकेला तू संग श्याम है तेरा।
पल पल तेरे साथ मैं रहता हूँ॥



ॐ श्री श्याम सरेषा संघ समिति ॥



मुझ पर मेरे बाबा, इतना सा उपकार हो जाये,
मेरे जीवन की सत्ता पे, तेरी सरकार हो जाये ॥



भक्तों की भीड़ है भारी, कैसे पाऊँ तेरा दर्शन,
मुझे अपना समझ कर बाबा, दे देना तुम आरक्षण,
तेरी सेवा का मुझको पहला, अधिकार हो जाये ॥
मेरे जीवन की सत्ता पे.....



हर दिन हर पल मैं बाबा, तेरा परचार करूँगा,
मिल जाये तेरा समर्थन, तो मैं भी राज़ करूँगा,
तेरे गठबंधन से मेरा भी, उद्धार हो जाये ॥
मेरे जीवन की सत्ता पे.....



मेरी मांगे पूरी करदो, करता हूँ श्याम निवेदन,
कही ऐसा ना हो बाबा, मुझे करना पड़े आंदोलन,
'सोनू' का ये प्रस्ताव पत्र, स्वीकार हो जाये ॥
मेरे जीवन की सत्ता पे.....



श्री आदित्य मोदी 'सोनू' द्वारा 'दिल दीवाने का
डोला' गीत की तर्ज पर रचित रचना ।



॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



मेरे भोले दानी, शरण तेरी आया,
कैसे बताऊँ तुमको दयालु,
जमाने ने कितना मुझको सताया ॥



७
देख दिल पर लगे मेरे कितने जखम,
बाबा मैंने सहे हैं सितम पे सितम,
बेटे पे बाबा करुणा दिखादे,
मेरे घाव तुमको, दिखाने मैं आया ॥
मेरे भोले दानी, शरण तेरी आया

८
मैं भरोसा जमाने पे करता रहा,
ये जहाँ हर घड़ी मुझको छलता रहा,
निभाने के लायक नहीं थे जो रिश्ते,
उन्हें भी यहाँ पर, मैंने निभाया ॥
मेरे भोले दानी, शरण तेरी आया

९
मेरी नज़रों के आगे हुआ सब यहाँ,
ये मेरी भूल थी चुप रहा मैं सदा,
तेरा 'हर्ष' तेरे सन्मुख विधाता,
पिछली वो भूलें, भुलाने मैं आया ॥
मेरे भोले दानी, शरण तेरी आया

१०
श्री विनोद अग्रवाल 'हर्ष' द्वारा 'वो जब
याद आये, बहुत याद आये' गीत की
तर्ज पर रचित शिव-वन्दना ।



॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

* * * * *

प्यासे की प्यास बुझा देना,
मोहे सत मारग दरसा देना ॥

७
तेरे दीदार की है, तमन्ना बड़ी,
महर करदो मुरारी, ज़रा इस घड़ी,
ये ही फ़रियाद है, दिल करूँ साध है,
पगले मन को समझा देना ॥
प्यासे की प्यास बुझा देना

८
रह गई दर पे पलकें, झुकी की झुकी,
हिचकियों की झड़ी, लग गई ना रुकी,
नैन सरसा गये, श्याम मन भा गये,
मोहे एक झलक दिखला देना ॥
प्यासे की प्यास बुझा देना

९
सिन्धु के तीर आकर भी, प्यासा हूँ मैं,
श्याम के सामने, मूक भाषा हूँ मैं,
सत्य है जानलो, खुद ही पहचान लो,
ज़रा स्नेह सुधा बरसा देना ॥
प्यासे की प्यास बुझा देना

१०
श्यामबहादुर का जग में, अमर नाम है,
सामने उनकी सेवा का, अंजाम है,
'शिव' जहाँ जानता, श्याम खुद मानता,
मोहे जीवन मुक्त बना देना ॥
प्यासे की प्यास बुझा देना

११
स्व. शिवचरण जी भीमराजका 'शिव'
द्वारा 'मोरी छम-छम बाजे पायलिया'
गीत की तर्ज पर रचित भजन ।

* * * * *



मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा



ॐ श्वामसेणा संग्रहाति

थारी दुनिया सैं हार, खाई मैं तो सरकार,
मेरी करल्यो श्याम सुणाई,
हण्डी करदयो भरपाई ॥

ये ही जख्मों की मेरै दवा साँवरा,
थारी मूरति दिल में रवां साँवरा,
करूँ थारै सैं पुकार, बोलो-बोलो दिलदार,
नाराजी है ऐसी काँई, हुण्डी करदयो भरपाई ॥
थारी दुनिया सैं हार, खाई मैं तो.....

मेरो थारै पे दारोमदार रसिया,
थानै सँप ढई पतवार रसिया.

क्यूंही पलक उधाड़, नैना जोवै थारी बाट,
धीरज देवै छै दुहाई, हुण्डी करदयो भरपाई ॥
थारी दुनिया सैं हार, खाई मैं तो.....

मदभरी बांसुरी सुण मजो आ गयो,
श्यामसुन्दर मेरै नैण मं छा गयो,
मारी कैसी मीठी मार, गई काळजै कै पार,
दरदी की पीड़ सवाई, हुण्डी करदयो भरपाई ॥
थारी दुनिया सैं हार, खाई मैं तो.....

श्यामबहादुर तो थारो बड़ो दास है,
 'शिव' सदा सैं अमर श्याम कै पास है,
 नित गाऊँ गुणगान, भगतां सागै भगवान,
 करै कदे-कदे प्रीत की लड़ाई,
 हुण्डी करदयो भरपाई ॥
 थारी दनिया सैं हार, खाई मैं तो.....

स्व. शिवचरण जी भीमराजका 'शिव' द्वारा
 'भीगा-भीगा है शमा, ऐसे में तूं कहाँ' गीत
 की तर्ज पर रचित भावपूर्ण रचना ।

॥ श्री ईश्वर सेवा संघ समिति ॥



बाबा मतना लोग हंसावै रे,
हाथ जोड़कर करूँ विनती, क्यूँ नहीं आवै रे ॥



५
मतना आँख्यां मीच साँवरा, देख टाबरां कानी,
अंतर को दुखड़ो तूं जाणै, तेरै सैं के छानी,
फिर क्यूँ टाबर नै तड़फावै रे ।
हाथ जोड़कर करूँ विनती, क्यूँ नहीं आवै रे ॥

६
कहणै मं कोई सार नहीं, तूं जाणै सबकै मन की,
तेरै नाम की देवै दुहाई, बात करै मतलब की,
बोलै ज़रा शरम नहीं आवै रे ।
हाथ जोड़कर करूँ विनती, क्यूँ नहीं आवै रे ॥

७
कुण-कुण कितणै पाणी मांही, तूं जाणै सांवरिया,
झूठी-सांची कहता डोलै, पल मं डुबोवै नैया,
मन मं खौफ़ ज़रा नहीं खावै रे ।
हाथ जोड़कर करूँ विनती, क्यूँ नहीं आवै रे ॥

८
आणो हो तो आव साँवरा, मतना देर लगावै,
'श्रीकृष्ण' चरणं मं बैठ्यो, थानै आज बुलावै,
लज्जा राख नहीं तो जावै रे ।
हाथ जोड़कर करूँ विनती, क्यूँ नहीं आवै रे ॥

९
स्व. किशनलालजी माटोलिया 'श्रीकृष्ण' द्वारा
राजस्थानी तर्ज 'ढोला ढोल मजीरा बाजै रे' पर
रचित सुप्रसिद्ध प्राचीन रचना ।



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

: * * * * *

खाटू को श्याम बिहारी रे,
मेरे मन को नगीनो,
चाकरियो मैं सरकारी रै,
मेरे मन को नगीनो ॥

❶

सिर-माथे पर हुकुम धणी को,
श्याम बिना सारो जग फीको,
गोवेधन-गिरधारी रे, मेरे मन को नगीनो ॥
खाटू को श्याम बिहारी रै



*

मोर-मुकुट नख बेसर सोहे,
अधरन की मुरली मन मोहे,
माखनचोर मुरारी रे, मेरे मन को नगीनो ॥
खाटू को श्याम बिहारी रै

❷

एक पल भी बैनै भूल ना पाऊँ,
यादां सैं मनड़ो बिलमाऊँ,
नैणा नेह-कटारी रे, मेरे मन को नगीनो ॥
खाटू को श्याम बिहारी रै

*

मीठो-मीठो दरद चुभीलो,
अति-प्रिय लागै श्याम रंगीलो,
बृजभूषण बनवारी रे, मेरे मन को नगीनो ॥
खाटू को श्याम बिहारी रै

❸

श्यामबहादुर 'शिव' मन भायो,
श्याम धणी सैं हेत लगायो,
चरण-कमल बलिहारी रे, मेरे मन को नगीनो ॥
खाटू को श्याम बिहारी रै

* * *

स्व. शिवचरण जी भीमराजका 'शिव' द्वारा
'चलत मुसाफिर मोह गयो रे' गीत की तर्ज
पर रचित भावपूर्ण रचना ।

* * * * *

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षाली वर्ष

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



तूं तो सब जाणे रे, तेरै सैं के छानी रे,
शरण पड़यो हूँ बाबा, देख मेरे कानी रे ॥



●
मांड के खड्यो हूँ झोळी, खाली कौन्या जाऊँ रे,
टाबरां नै जाकै कुणसो, मुखड़ो दिखाऊँ रे,
धीर तो बन्धाऊँ जाके, देदे क्यूँ निशानी रे ॥
शरण पड़यो हूँ थारी.....



म्है तो सुणी हां दोन्यू हाथां से लुटावै रे ,
दुनियां में बाबो लख, दातार तूं कुहावै रे,
काई मैं बिगाड्यो तेरो, या के बेईमानी रे ॥
शरण पड़यो हूँ थारी.....



दौन्यू टैम रोज तेरी, चाकरी बजास्यूं रे,
मेरे घरां आवोगा तो, जोत भी जगास्यूं रे,
'लहरी' बोलूं सांची, झूंठी, प्रीत के निभाणी रे ॥
शरण पड़यो हूँ थारी.....



श्री चन्द्रशेखर शर्मा 'लहरी' द्वारा 'छुप गया कोई
रे' गीत की तर्ज पर रचित भावपूर्ण रचना ।



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

* * * * *

तेरी दृष्टि मैं दया की बाबा चाहूँ,
तुझे भूलूँ ना तेरा ही गुण गाऊँ,
यही अरजी हमारी, साँवरिया, साँवरिया ॥

६

तेरे जग का बंधन ऐसा,
मोह-माया ने इसमें फंसाया,
सुख-चैन गया मेरे मन का, ऐसा चक्कर समय ने चलाया,
अब तो करदे ऐसा ढांग, हरदम रहना मेरे संग,
कट जाये बीमारी, साँवरिया, साँवरिया ॥
तेरी दृष्टि मैं दया की बाबा चाहूँ.....

७

मेरे गुण-अवगुण मत देखो,
हमको विश्वास है तुम्हारा,
लगी मन में लगन है तुम्हारी,
एक तेरा ही हमको सहारा,
मेरा कोई नहीं और, थामो मेरी जीवन डोर,
कब आयेगी बारी, साँवरिया, साँवरिया ॥
तेरी दृष्टि मैं दया की बाबा चाहूँ.....

८

चन्दा जैसी शीतलता,
प्रभु हमको यदि मिल जाये, मन क्रोध की ज्वाला भड़की,
वो भी शीतल पड़ जाये,
अब तो करले सोच-विचार, मेरी जिंदगी सुधार,
आगे मर्जी तुम्हारी, साँवरिया, साँवरिया ॥
तेरी दृष्टि मैं दया की बाबा चाहूँ.....

९

इतना हमको प्रभु देना,
कभी अभिमान दिल में ना आये,
तेरे नाम की मस्ती हरदम,
मेरे जीवन में रस बरसाये,
मेरा देना स्वामी साथ, करूँ सेवा दिन-रात,
'श्याम' तेरा पुजारी, साँवरिया, साँवरिया ॥
तेरी दृष्टि मैं दया की बाबा चाहूँ.....

१०

स्व. श्यामसुन्दर जी शर्मा पालम वालों द्वारा
'तेरे होठों के दो फूल प्यारे-प्यारे' गीत की
तर्ज पर रचित लोकप्रिय प्राचीन रचना ।

* * * * *

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



दर्शन को तेरे, आया बड़ी दूर से,
महर की नजर भोला, कर दो ज़रा सी ।
ज़रा झाँक कर मेरे दिल में भी देखो,
झलक दीद की अपनी, भर दो ज़रा सी ॥

७

हे बाबा बासुकीनाथ, टाबरां की ये अर्जी है,
ये सुणो ज़रादे ध्यान, अलख की हो जाये मर्जी है,
लगन है हमारी, विनती हुजूर से,
भिक्षा दया की गर, दे दो ज़रा सी ॥
दर्शन को तेरे, आया बड़ी

८

तुम अपने भक्तों के, रुके सब काम बनाते हो,
फिर मेरी नैया क्यूँ नहीं, उस पार लगाते हो,
तेरा दास हूँ भोला, इसी दस्तूर से,
कदरदान हो तुम, कदर दो ज़रा सी ॥
दर्शन को तेरे, आया बड़ी

९

इस बार तो लखदातार, फैसला करके जायेंगे,
ये नैना भये अधीर, चरण में झर के जायेंगे,
श्यामबहादुर, 'शिव' मजबूर से,
नहीं धीर दिल में, सबर दो ज़रा सी ॥
दर्शन को तेरे, आया बड़ी

१०

स्व. शिवचरण जी भीमराजका 'शिव' द्वारा 'सौ साल
पहले, मुझे तुमसे प्यार था' गीत की तर्ज
पर रचित शिव वन्दना ।



॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



सांवरिया तुझसे रिश्ता, इतना खास हो जाये,
मैं कहीं रहूँ मेरा श्याम, मेरे पास हो जाये ॥



ग्यारस को खाटू आऊँ, चौखट पर धोक लगाऊँ,
मैं बैठ सामने तेरे, तुझे मीठे भजन सुनाऊँ,
हर सांस में नाम तेरा हो, ऐसी सांस हो जाये ॥
मैं कहीं रहूँ, मेरा श्याम मेरे



मैं भूल के रिश्ते सारे, तुझसे ही नाता जोड़ूँ,
जो बंधे प्रेम का धागा, वो कभी नहीं मैं तोड़ूँ,
मैं दीवाना तेरा सबको, विश्वास हो जाये ॥
मैं कहीं रहूँ, मेरा श्याम मेरे



मैं रहूँ मगन तुझमे ही, और सेवा की मस्ती हो,
कहलाऊँ श्याम का प्रेमी, ऐसी मेरी हस्ती हो,
हो 'चौखानी' को दर्द तुझे, एहसास हो जाये ॥
मैं कहीं रहूँ, मेरा श्याम मेरे



श्री प्रमोद चौखानी द्वारा 'दिल दीवाने का डोला'
गीत की तर्ज पर रचित भावपूर्ण रचना ।



॥ श्री श्याम रसेषा संग्रह समिति ॥



ग्यारस की है रात, आज्या लीलै चढ़के,
पाछो चल्यो जाईये श्याम, मुलाकात करके ॥

६

हाथ जोड़कर अरज़ करां म्है, आज्या खाटुवाळा,
देर करण मं सार नहीं है, लीलै घोड़ेवाळा,
भूल्यो कैंया श्याम आज, वादो करके ॥
पाछो चल्यो जाईये श्याम

७

दीनबंधु भगवान कहावै, मतना देर लगावै,
मायत है तूं टाबरिया नै, क्यूँ ना हिवड़े लगावै,
ॐ्खियां भर-भर आवै, तेरी याद करकै ॥
पाछो चल्यो जाईये श्याम

८

जनहित खातिर शीश दान दे, कहलायो तूं दानी,
गौर करो ना टाबरियां पर, सुणल्यो करुण कहानी,
कसल्यो लीलै की लगाम, म्हारी टेर सुणकै ॥
पाछो चल्यो जाईये श्याम

९

श्याम मंडल की आ ही अरजी, आगे मर्जी थारी,
लीलै चढ़कर आप पधारो, खाटू श्यामबिहारी,
म्हारै सिर पर धरदे हाथ, बाबा आय करके ॥
पाछो चल्यो जाईये श्याम



पारम्परिक राजस्थानी तर्ज पर आधारित
अति प्राचीन लोकप्रिय रचना, लेखक - अज्ञात ।



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

★००००००★

श्यामसुन्दर महर की नजर,
दीन-दुखियों पे थोड़ी सी कर,
(तुम सुनों ना सुनों दास्तां)
होके दर का भिखारी तेरा,
खाऊँ क्यों ठोकरें दर-बदर ॥



॥ श्री याम शाल नमः ॥



॥ श्री योर हनुमते नमः ॥

६
हो खुशी चाहे हो कोई गम,
तेरी राहों में हो हर कदम,
सौंप तुझको दिया कारवाँ,
दिल हुआ मोम से भी नरम,
तूं सम्हालो तो फिर क्या फिकर ॥
दीन-दुखियों वे थोड़ी सी

७
लड़खड़ा भी जो जाऊँ कहीं,
तुम सम्हालोगे विश्वास है
ये सहारा बहुत है प्रभो,
तेरी यादें मेरे पास है,
गैर से अब ना कोई जिकर ॥
दीन-दुखियों वे थोड़ी सी

८
मेरी मजबूरियाँ जो भी हैं,
क्या छुपी हैं वो दिलदार से,
श्यामबहादुर कहूँगा तुम्हे,
प्यार से चाहे तक़रार से,
साथ में हो तेरे 'शिव' सफर ॥
दीन-दुखियों वे थोड़ी सी

९
स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव'
द्वारा 'जिन्दगी की ना टूटे लड़ी' गीत
की तर्ज पर रचित लोकप्रिय रचना ।

★००००००★

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

: * * * * *

साँवरिया रे एक झलक तो दिखादे,
अरमां मेरे प्यासे, मस्ती के दरिया से,
दो-चार बूँद पिलादे ॥

७

तेरे मेरे, रिश्ते जूने,
मुझसे तेरी आँख मिचौली,
दिल को भाई, रे हरजाई,
सूरत तेरी श्याम सलोनी,
नैन-नुकीले है, भाव लरजीले है,
मस्ती को कायम बनादे,
एक झलक दिखादे ॥

*

घायल करके, मन पंछी को,
तेरा पर्दे में छुप जाना,
मेरी दिवाली, ओ बनमाली,
करते हो क्यूँ व्यर्थ बहाना,
आश लगाई है, नजरें बिछाई है,
दर्दी नै कुछ तो दवा दे,
एक झलक दिखादे ॥

८

छेड़के मेरे, अरमानों को,
तड़फाना कोई खेल नहीं है,
मनमंदिर के, ठाकुर से क्या, मेरा अपना मेल नहीं है,
जीवडो दुखावै क्यूँ नैणा नचावै क्यूँ
किश्ती किनारे लगादे,
एक झलक दिखादे ॥

हसनपुरा, ज़िला

नीलवरण धारी, नटनागरिया,
सागर है तू नाथ दया का, श्यामबहादुर, लूट लिया है,
सब कुछ मेरा डाल के डाका,
'शिव' दास तेरा है, तू मीत मेरा है,
सोया नसीबा जगादे,
एक झलक दिखादे ॥

* * *

स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव'
द्वारा 'ओ साथी रे, तेरे बिना भी क्या
जीना' गीत की तर्ज पर रचित भजन

* * * * *



॥ श्री याम समिति ॥



॥ श्री याम हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



ये जो मेरे दिल की बातें, तूं कहे तो मैं बतादूँ,
तेरा नाम गुनगुना के, तेरी ज्योत को जगादूँ ॥



मेरे दिल में तूं बसा है, मेरे नैनों में समाया,
जो तूं बांसुरी बजादे, तो मैं नाच के दिखादूँ ॥
ये जो मेरे दिल की बातें.....

★
तूं कहाँ-कहाँ ना भागे, थक जाता तूं भी होगा,
तेरे पैर मैं दबाऊँ, तुझे लोरियां सुनादूँ ॥
ये जो मेरे दिल की बातें.....

●
'लहरी' तूं है तो मैं हूँ, जब तक ये प्रेम धागा,
कहीं टूट ये ना जाये, अरजी तुम्हें लगादूँ ॥
ये जो मेरे दिल की बातें.....

◆◆
श्री चन्द्रशेखर शर्मा 'लहरी' द्वारा 'मेरे दिल
में आज क्या है' गीत की तर्ज पर रचित
नूतन एवं भावपूर्ण रचना ।



॥ श्री श्याम सरेहा संघ समिति ॥



श्याम सरकार है, मेरो दिलदार है,
सांवलियो सेठ मेरै, बागां की बहार है ॥



७
ऐंको मेरो साथ कई सदियां पुराणो है,
खाटौवाळो श्याम बाबा बडो मस्तानो है,
मोटो दरबार है, लीलै को सवार है,
प्रेम सैं पुकारूँ जद, मेरै ताँई त्यार है ॥

८
दूजो काँई जाणै मेरो कितनो लगाव है,
एनै बिड़दाऊँ मेरो सदा सूँ ही चाव है,
जिंदगी को सार है, मेरी पतवार है,
गायां को गुवाल कान्हो, बडो मजेदार है ॥

९
भोत मनमोहनी यो लटक दिखावै है,
मन को मिजाजी काँई बांसरी बजावै है,
फैंटो गुलनार है, नीको सिणगार है,
मेरो चित्तचोर, मेरै दिल को करार है ॥

१०
श्यामबहादुर यो रंगीलै मिजाज को,
'शिव' तो दीवानो ऐकै बांकै अंदाज को,
प्रीत की पुकार है, मीठी तक़रार है,
मारी मेरै काळजै मं, नेह की कटार है ॥

स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा
'लल्ला-लल्ला लोरी (आयो फागण मेलो)'
गीत की तर्ज पर रचित भजन ।



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

* * * * *

गुरु बिन ज्ञान, ज्ञान बिन भक्ति,
मिलणी है खाण्डे की धार ॥



जिनके गुरु संतोषी त्यागी,
जग में शिष्य वही बड़भागी,
जिनकी लगन श्याम सैं लागी,
जिनका नारायण आधार ।
मिलणी है खाण्डे की धार ॥



जिनके मुरली मनोहर संगी,
जिनकी महिमा रंगी-चंगी,
ऐसे गुरु महान सत्संगी,
जिनकी यादां सदाबहार ।
मिलणी है खाण्डे की धार ॥



गुरु 'शिव' श्यामबहादुर पाया,
ज्यानै छोड़ी ममता माया,
जिनका श्याम ने लाड़ लड़ाया,
पहुँचे सुणकर करुण पुकार ।
मिलणी है खाण्डे की धार ॥



स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा
राजस्थानी तर्ज 'बाड़ तळै, बाई रै तम्बाखु' पर रचित गुरु वन्दना ।



ॐ श्री श्याम रसेवा संघ समिति ॥

: * * * * *

श्री श्याम भरोसै,
छोड़ी है नैया भव के बीच मं ॥

७

तूं जाणै तेरो काम सांवरा,
हुँ तो भयो नचीतो,
मेरी चिन्ता दूर हो गई,
कोई हारो कोई जीतो ॥
श्री श्याम भरोसै.....



प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्ष

*
एक दाव के सिवा दूसरो,
काम ना मेरै बस को,
यादां करल्यूँ श्यामधनी की,
मन्त्रै ना दूजो चसको ॥
श्री श्याम भरोसै.....

८

दुनिया की कोई खबर ना राखूँ,
हो कितनो हरजाणो,
चाकरियो हुँ श्याम चरण को,
वो ही मेरो ठिकाणो ॥
श्री श्याम भरोसै.....

९

श्यामबहादुर 'शिव' सांवरियो,
ही दुःख-सुख को संगी,
लगी ठेस हिवड़ो भर आयो,
आ दुनिया बेढ़ंगी ॥
श्री श्याम भरोसै.....

* * *

स्व. शिवचरणजी भीमराजका
'शिव' द्वारा राजस्थानी तर्ज 'म्हारी
चंद्रगवरजा' पर रचित रचना ।

* * * * *

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



हे श्याम मुरलीवाले, मुझको गले लगाले,
मैं तेरा दास साँवले, नजरें ज़रा मिलाले ॥



॥ श्री गणेशाय नमः ॥



॥ श्री खीर हनुमते नमः ॥



नैनों में नूर तेरा, ये भी कुसूर मेरा,
तेरे बिना मुरारी, च्यारूं तरफ अँधेरा,
रंगीं तेरा नजारा, कितने भी जुल्म ढाले ॥
हे श्याम मुरलीवाले, मुझको गले



दातार जग बतावै, फिर भी तूं जी दुखावै,
दर का गुलाम तेरा, तूं नाच क्यूँ नचावै,
उल्फत की ये पुकार है, इसको तूं ही सम्हालै ॥
हे श्याम मुरलीवाले, मुझको गले



फ़रियाद सुन हमारी, लीलै की कर सवारी,
नैना लड़ा के तूने, अब नीत क्यूँ बिगाड़ी,
'शिव' श्यामबहादुर से, पर्दा ज़रा हटाले ॥
हे श्याम मुरलीवाले, मुझको गले



स्व. शिवचरण जी भीमराजका 'शिव' द्वारा
'चूड़ी मजा ना देगी' गीत की तर्ज पर आधारित रचना ।



॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

◆◆◆◆◆◆◆
 चौखट पे तेरी आँख्यां नमी है,
 दिले-हाल कैसे, सुनाऊँ कन्हैया ।
 दरबार में तेरे, नहीं कुछ कमी है,
 पलक तो उघाड़ो, रिझाऊँ कन्हैया ॥

●

आँखें मूँदे मुस्कान मधुर, जैसे कोई जगते हो,
 तुम जान-बूझकर दाता क्यूँ बंदों को ठगते हो,
 अदाओं पे तेरी, ये नजरें थमी हैं,
 ख्यालों में ही, गुनगुनाऊँ कन्हैया ॥
 चौखट पे तेरी आँख्यां नमी हैं....

◆

मस्तानी मुद्रा तेरी, हर दिल को मोहती है,
 तूं बृजभूषण गोपाल, मेरे नैनों की ज्योति है,
 कलेजे में सूरत, तुम्हारी रमी है,
 पलक पालने में, झुलाऊँ कन्हैया ॥
 चौखट पे तेरी आँख्यां नमी हैं....

●

'शिव' श्यामबहादुर के, तुम बचपन के साथी हो,
 दरदी को कहाँ धीर, तेरी जब याद सताती हो,
 बेशक मुझे, श्याम से दिलजमी है,
 चले आओ कब से, बुलाऊँ कन्हैया ॥
 चौखट पे तेरी आँख्यां नमी हैं....

◆◆

स्व. शिवचरण जी भीमराजका 'शिव' द्वारा 'सौ
 साल पहले, मुझे तुमसे प्यार था' गीत की तर्ज
 पर आधारित भावपूर्ण रचना ।

◆◆◆◆◆◆◆

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



इस दिल के आइने में, तस्वीर यार की,
तारीफ़ कर सकूँ ना मैं, तेरे शृंगार की ॥



॥ श्री यामशाय नमः ॥



॥ श्री योर हनुमते नमः ॥

७
दिल की लगी अजीब है, कैसे बयां करूँ,
बस की ना बात है मेरे, इसकी दवा करूँ,
घड़ियाँ हैं कठिन ये तेरे, इंतज़ार की ।
तारीफ़ कर सकूँ ना मैं, तेरे शृंगार की ॥
इस दिल के आइने में.....

८
आँखों के अश्क सूखकर, बन गई लकीर,
दर का गुलाम है तेरा, राजा हो या फ़कीर,
सबसे बड़ी खुशी है मुझे, मेरी हार की ।
तारीफ़ कर सकूँ ना मैं, तेरे शृंगार की ॥
इस दिल के आइने में.....

९
कुछ भी ना श्यामबहादुर, शिक्षवा मेरा कोई,
'शिव' दिलरुबा ना तेरे सिवा, मेरा गवाह कोई,
घड़ियाँ हैं कठिन ये तेरे, इंतज़ार की ।
हो गई हद फिर भी मेरे, ऐतबार की ॥
इस दिल के आइने में.....

१०
स्व. शिवचरण जी भीमराजका 'शिव' द्वारा
'मिलती है जिंदगी में, मुहब्बत कभी-कभी'
(मांगा है मैंने श्याम से) गीत की तर्ज पर
आधारित भावपूर्ण रचना ।



॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



सांवरे की महफिल को, साँवरा सजाता है,
किस्मत वालों के घर में, श्याम आता है ॥



गहरा हो नाता, बाबा का जिनसे,
मिलने को बाबा, आता है उनसे,
उनका ये साथी, बन जाता है ॥
सांवरे की महफिल को



किरपा बरसती है, जिसपे इसकी,
तक़दीर लिखता, हाथों से उसकी,
गम का अन्धेरा, छँट जाता है ॥
सांवरे की महफिल को



भजन सुनाते, जो इसको प्यारे,
उनके तो परिवार, के वारे-न्यारे,
मंदिर सा घर, बन जाता है ॥
सांवरे की महफिल को



कुछ भी असंभव, होता नहीं है,
महफिल में इनकी, होता यही है,
'सुनील' सब यहाँ, मिल जाता है ॥
सांवरे की महफिल को



श्री सुनील शर्मा (जयपुर) द्वारा 'आदमी
मुसाफिर है' गीत की तर्ज पर रचित भजन ।



॥ श्री गणेशाय नमः ॥



॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा



ॐ श्री ईश्वामर्सेवा संघ समिति ॥

: * * * *

सारी दुनिया रही छै बुलाय,
मेघा बरसो क्यूँ ना जी ॥

७

ताल-तलैया ताकता जी,
तक-तक-तक रह जाय,
धरती माता दीप संजोयो,
मोत्यां चौक पुराय ।
मेघा बरसो क्यूँ ना जी ॥
सारी दुनिया रही छै.....

*

उमड़-उमड़ या बादली जी,
घुमड़-घुमड़ रह जाय,
फुंदी देता मोर-पपैया,
अगवानी मं आय ।
मेघा बरसो क्यूँ ना जी ॥
सारी दुनिया रही छै.....

८

धुप तपै गरमी पड़ै जी,
सरवर शगुन मनाय,
पल-पल जोवै बाट जमानो,
दीज्यो कष्ट मिटाय ।
मेघा बरसो क्यूँ ना जी ॥
सारी दुनिया रही छै.....

*

कई एक ठोरां रामधुनी ज्यामै,
'नारायण' गुण गाय,
बरसो मूसल्धार पधारो,
दीज्यो प्यास बुझाय ।
मेघा बरसो क्यूँ ना जी ॥
सारी दुनिया रही छै.....

* ९ *

स्व. नारायणलाल जी शर्मा
(जयपुर) द्वारा राजस्थानी
तर्ज 'मांड' पर आधारित
मेघ-अर्चना ।

* * * *

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

ॐ श्री ईश्वामर्सेवा संघ समिति ॥

हसनगर बैठक

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

* * * * *

संसार समंदर के माझी,
ज़रा थाम लेओ पतवार, श्यामसुन्दर ।
क्यूँही अपने चाहने वालों पर भी,
गौर करो सरकार, श्यामसुन्दर ॥



॥ श्री गणेशाय नमः ॥



॥ श्री वैष्णवत्मके नमः ॥

ॐ
तीन लोक के स्वामी नै, टेरूँ अन्तर्यामी नै,
साँचो धन सांवरियो कर्दियां, छोड़ुँ अं आसामी नै,
बाँकी झाँकी मनमोहनी की,
इण नैणा को सिणगार, श्यामसुन्दर ॥
क्यूँही अपने चाहने वालों पर भी....

*

मन मं आस घणेरी है, आज्या इब काँई देरी है,
बादल गरजै बिज़की चिमकै, रसिया रात अंधेरी है
पितु-मात तूँ ही भाई-बंधु,
तूँ ही जीवन को आधार, श्यामसुन्दर ॥
क्यूँही अपने चाहने वालों पर भी....

*

साधन कुछ नांही सेवा को, एक नजर मन्नै झांको,
पटज्या काम दया हो तेरी, झटके सी पीज्या नाको
चित्तचोर कन्हैया सांवळिया,
तूँ सुणले करुण पुकार, श्यामसुन्दर ॥
क्यूँही अपने चाहने वालों पर भी....

*

श्यामबहादुर 'शिव' नै भी, तेरो भरोसो भारी है,
तूँ ढूठे तो बृजभूषण, के विपदा करै बिचारी है,
तेरी महर नजर हो ज्यावै तो,
पल मं पूँचै बैं पार, श्यामसुन्दर ॥
क्यूँही अपने चाहने वालों पर भी....

ॐ

स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा 'तेरी
प्यारी-प्यारी सूरत को, किसी की नजर ना लगे'
गीत की तर्ज पर रचित अनुपम भावपूर्ण रचना

* * * * *

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

: * * * * *

मुस्कान मोहन की, धड़कन मेरे मन की,
चरणां मं श्यामदेव कै, पलकां है बिछाई,
रसियै की याद आई ॥

७

कहदूँ खुलकर मेरी तमन्ना कहती है,
चुभन याद की मीठी-मीठी सहती है,
ये दिल बड़ा नाजुक है, क्या सहेगा जुदाई ।
रसियै की याद आई ॥
मुस्कान मोहन की, धड़कन
*



परदे की अडवार हटाली जावैगी,
जद क्यूँही मेरे मन मं थ्यावस आवैगी,
धीरज की भी हद है, कितणी राखी समाई ।
रसियै की याद आई ॥
मुस्कान मोहन की, धड़कन
*

८

हिवड़े म्हांली बात श्याम नै कह दी है,
गुनाहगार यो जीव श्याम को कैदी है,
यादां मं सूखण की, तूं के बाण सिखाई ।
रसियै की याद आई ॥
मुस्कान मोहन की, धड़कन
*

९

श्यामबहादुर सेवक श्याम पुराणो है,
बाला देकै 'शिव' नै भी भरमाणो है,
जुग-जुग सै ये आँखां, तेरै दर पै लगाई ।
रसियै की याद आई ॥
मुस्कान मोहन की, धड़कन
*

१०

अडवार = दीवार, ओट = क्यूँही = कुछ, थोड़ी
थ्यावस = सब्र, चैन = म्हांली = अंदर की
बाला = झांसा = भरमाना = भ्रमित करना

११

स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा
'जब हम जवाँ होंगे, जाने कहाँ होंगे' गीत
की तर्ज पर रचित अनुपम भावपूर्ण रचना

* * * * *

ॐ श्री श्याम रंगीला संघ समिति ॥

* ० ० ० ० ० *

श्री श्याम रंगीला,
थां पर टिकायो, दाता जीव नै ॥

७

म्हारी अर्जी थारी मर्जी, थे हो दीनदयाल.
अं दर्दी की पीड़ा नै भी, मेटो मदनगोपाल जी ॥
श्री श्याम रंगीला, थां पर



॥ श्री श्याम रंगीला संघ समिति ॥

*

चौखट पर थारी आ पूँछ्यो, बिगड़ी देओ सँवार,
दुनिया रूसै तो चाहे रूसो, मन्नै तेरी दरकार जी ॥
श्री श्याम रंगीला, थां पर

८

हारयोडा का थे ही साथी, दूजो ना कोई और,
थे म्हारै नैणा की ज्योति, थे म्हारा चित्तचोर जी ॥
श्री श्याम रंगीला, थां पर

*

श्यामबहादुर 'शिव' नंदननंदन, मेटो भव की त्रास,
थारै सैं मेरो चलै गुजारो,
चरणकमल को दास जी ।।
श्री श्याम रंगीला, थां पर

९

स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा
राजस्थानी तर्ज 'चौमासो' (पलकां उधाड़ो,
फागण आय गयो) पर रचित अनुपम रचना ।

* ० ० ० ० ० *

ॐ श्वामसेणा संग्रहाति

१०९०९०९
बैं श्यामबिहारी सैं,
मेरो जनम-जनम को नातो है ॥

६

बन्दो तो भूलां को पातर,
पण गोपाल सम्हालै,
सेवकियो मानै चरणां को,
प्रीत पुराणी पालै ॥
बैं श्यामबिहारी सै.....

आळस कै बस, कई बर मैं तो,
टाला भी ले जाऊँ,
कान पकड़ बावलियो ईंठै,
जद क्यूँही रस्तै आऊँ ॥
बै श्यामबिहारी सै.....

कोई दिन मनस्या करूँ मिलण की,
देर न ज़रा लगावै,
नेह डोर मं बंध्यो मेरो,
सांवरियो झट आ ज्यावै ॥
बैं श्यामबिहारी से.....

श्यामबहादुर रसिक मिजाजी,
बाँसुरिया जद बाजी,
'शिव' गंगा-जमना भई आँख्यां,
यादां हो गई ताजी ॥
बैं श्यामबिहारी से.....

स्व. शिवचरणजी भीमराजका
'शिव' द्वारा 'छोड़ गए बालम'
(भूल गये श्यामा) गीत की तर्ज़
पर रचित भावपूर्ण रचना ।

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

००००

लीलै घोड़े का हाँकणिया,
ठहर ज़रा ग़ाम खाले तुं,
घणा दिनां सैं बाटां जोऊँ,
रुक भी जा बतळाले तूं ॥

७

दोरो सो मौको लाग्यो है,
जाणे नहीं इब देस्यूं मैं,
चरणां को चाकरियो बाबा,
चरणां मं ही रहस्यूं मैं,
अं दरदी को श्याम रंगीला,
क्यूं तो दरद बँटाले तूं ॥
घणा दिनां सैं बाटां जोऊँ.....

*

यादां करतां-करतां मेरी,
आँख्यां बण गई बरसाती,
निर्मोही मत बणै साँवरा,
तूं ही एक मेरो नाती,
नैन मिलाकर कै मुस्काले,
हिवडै सैं लिपटाले तूं ॥
घणा दिनां सैं बाटां जोऊँ.....

८

श्यामबहादुर 'शिव' साँवरिया,
तूं ही तौ चित्तचोर मेरा,
तेरै तक ही दौड़ मेरी है,
दातारां सैं काम पड़यो है,
दातारी दरशा दे तूं ॥
घणा दिनां सैं बाटां जोऊँ.....

०००

स्व. शिवचरणजी भीमराजका
'शिव' द्वारा 'क्या मिलिए ऐसे
लोगों से' गीत की तर्ज पर रचित
अनुपम भावपूर्ण रचना ।

००००



॥ श्री गणेशाय नमः ॥



॥ श्री वैष्णवत्मके नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

हसनगर

†श्री॑ श्यामरसेवा संघ समिति†

०००००००००

ओ मोहन आओ तो सही, गिरधर आओ तो सही,
माधव रै मंदिर मं मीरां एकली खड़ी,
एकली खड़ी रै मीरां बाई एकली खड़ी ॥



थे कहो तो साँवरा मैं मोरमुकुट बण जाऊँ,
पहरण लागे साँवरो रे, मस्तक पर रम जाऊँ ॥
मोहन आओ तो सही.....



थे कहो तो साँवरा मैं काज़लियो बण जाऊँ,
नैणा लगावै साँवरो रे, नैणा मं रम जाऊँ ॥
मोहन आओ तो सही.....



थे कहो तो साँवरा मैं जळ जमना बण जाऊँ,
नहावण लागे साँवरो रे, अंग-अंग मं रम जाऊँ ॥
मोहन आओ तो सही.....



थे कहो तो साँवरा मैं पुष्पहार बण जाऊँ,
कण्ठ मं पहरै साँवरो रे, हिवड़े पर रम जाऊँ ॥
मोहन आओ तो सही.....



परम्परागत तर्ज पर भक्त शिरोमणि
मीरां बाई द्वारा रचित अमर पद ।

०००००००००

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

: *००००००

मेरे यार बाँसुरीवाले,
तेरी यादां करके हार गयो,
चाकरिये सैं बतळाले,
तेरो मस्त नजारो मार गयो ॥

७

नटनागर नन्दकिशोर सुणो,
ज़रा मीरां के चित्तचोर सुणो,
नैणां सैं नैण मिलाले,
तूं हँसके जुलम गुजार गयो ॥
मेरै यार बाँसुरीवाले

*

खाटू मंदिर मं वास तेरो,
मैं भी सेवकियो खास तेरो,
मन्त्रै चरणां सैं लिपटाले,
तूं कई बर दाता टाळ गयो ॥
मेरै यार बाँसुरीवाले

८

विपदा मं आडो आवै तूं,
बिगड़ी नै मेरी बणावै तूं
हिवड़ै सैं श्याम लगाले,
तेरो तीर काळजै पार गयो ॥
मेरै यार बाँसुरीवाले

*

'शिव' श्यामबाहादुर आ ज्यावो,
दर्दी को दर्द मिटा ज्यावो,
हिलमिल कै रंग जमा ले,
मेरा बिगड़ा काज सँवार गयो ॥
मेरै यार बाँसुरीवाले

*०

स्व. शिवचरणजी भीमराजका
'शिव' द्वारा 'मेरी छतरी के नीचे
आजा' गीत की तर्ज पर रचित
अनुपम रचना ।

*०००००००

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री यार हनुमते नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षीय वर्ष

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



हर घड़ी श्याम दिल में रहा कीजिये
चरणों में प्रभुजी, जगह दीजिये ॥



जो भी शरण में, आया तुम्हारी,
उसको प्रभुजी निभाया,
मुझको भी निभाना, वचन दीजिये ॥
हर घड़ी श्याम दिल में.....



॥ श्री श्याम हनुमते नमः ॥

मुझे क्या पता है, हे मेरे मालिक,
कैसे भला हो हमारा,
जो भी आप चाहें, वही कीजिये ॥
हर घड़ी श्याम दिल में.....



जो भी किया है, कैसे बताऊँ,
बताने के लायक नहीं है,
बालक हूँ तुम्हारा, क्षमा कीजिये ॥
हर घड़ी श्याम दिल में.....



'बनवारी' मेरी, कोशिश यही है,
तुमको मैं अपना बनालूँ,
कोशिश ये हमारी, सफल कीजिये ॥
हर घड़ी श्याम दिल में.....



श्री जयशंकर चौधरी 'बनवारी' द्वारा
'साथिया नहीं जाना, कि जी ना लगे'
गीत की तर्ज पर रचित भजन ।



॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



गाड़ीवाले मन्नै बिठाले, इक बर गाड़ी थाम,
भाई मैं हार गयो ॥

७

नरसी भगत यूँ कहण लगे, गाड़ी मेरी पुराणी है,
गाड़ी तेरी ठीक करूँ, ना मेरे सैं छानी है,
खाती मेरी जात भगतजी, कृष्णा मेरो नाम ।
भाई मैं हार गयो ॥ गाड़ी वाले....



प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षीय वर्ष

८

गाड़ी लगे सुधारण को, लई हाथ में अारी थी,
दूटी गाड़ी नरसी की, प्रभु ने तुरन्त सँगारी थी,
नरसी बोल्या भजन सुणादयूँ, ना मेरै कन्नै दाम ।
भाई मैं हार गयो ॥ गाड़ी वाले....

९

सोलह बैठे बाबाजी, गाड़ी में फेरें माळा,
गाड़ी पवन समान चली, आप बने प्रभु गडवाला,
मैं भी थारै संग चलूँगा, थोड़ी दूर मेरो गाँव ।
भाई मैं हार गयो ॥ गाड़ी वाले....

१०

बाँधे छान बणे गडवालो, और कभी रथवान बने,
'बद्री' जैसा भक्त बणावै, वैसा ही भगवान बने,
किसना खाती चाल पड़या, कर भक्तां नै प्रणाम ।
भाई मैं हार गयो ॥ गाड़ी वाले....



परम्परागत तर्ज पर आधारित अति प्राचीन
सर्वप्रिय भजन । लेखक - श्री 'बद्री' (अज्ञात) ।



॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

००००००००००

श्याम-श्याम रटे जाओ, यही एक सार है,
सच्चा मुक्तिद्वार है ये, सच्चा मुक्तिद्वार है ।
जो ना भजो तो सच्ची समझले,
मिट्टी तेरी ख्वार है जी, मिट्टी तेरी ख्वार है ॥



हरी सुमिरण कर मीरां बाई तर गई,
गौतम की नारी अहिल्या भी तर गई,
सुआ पढ़ावत गणिका भी तर गई,
यही सच्चा सार है जी, यही सच्चा सार है ॥

*

वाल्मीकि तर गये, तुलसी भी तर गये,
भक्ति के कारण, नरसी भी तर गये,
धन्ना भगत और नन्दा नाई तर गये,
यही सच्चा सार है जी, यही सच्चा सार है ॥

*

भजो हरी को गिरधर गोविन्द को,
केशव-कन्हैया नटनागर को,
'मातृदत्त' तुम भजो श्याम को,
यही सच्चा सार है जी, यही सच्चा सार है ॥

००

स्व. वैद्य मातृदत्तजी शर्मा (भिवानी वालों) द्वारा 'छुप-छुप
खड़े हो, जरूर कोई बात है' गीत की तर्ज पर
रचित अति प्राचीन सर्वप्रिय भजन ।

००००००००००

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

: * * * *

एक तो अभिमान से,
दूजे झूठी शान से,
मोहन मेरा, बस दूर है,
बस दूर है, बस दूर है ॥

●

धन-दौलत से ये नहीं मिलता,
इसका तो प्रेमी से रिश्ता,
बात सुनलो तुम ध्यान से ॥
एक तो अभिमान से.....

*

भक्त पुकारे तब ये आता,
आकर अपना फर्ज निभाता,
भक्त प्यारा है प्राण से ॥
एक तो अभिमान से.....

●

त्याग-तपस्या इसको भाये,
दानी को भी ना बिसराये,
दूर घमण्डी इंसान से ॥
एक तो अभिमान से.....

*

घर-घर प्रेम की ज्योत जगाओ,
दीन-दुखी को मत बिसराओ,
सीख ले सुन्दर 'श्याम' से ॥
एक तो अभिमान से.....

* * *

स्व. श्यामसुन्दरजी शर्मा (पालम
वालों) द्वारा 'फैसला दरबार का,
सांवले सरकार का' भजन की
तर्ज पर रचित रचना ।

* * * *

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

: * ० ० ० ० ० ० *

बेदर्द ये ज़माना,
ऐ बाँसुरीवाले तूँ मुझको नहीं भुलाना ॥

७

सम्बल तेरा कन्हैया, दी सौंप तुझको नैया,
गोपाल सा जहाँ में, कोई नहीं खिवैया,
हङ्कदार जान करके, सुनले मेरा फ़साना ॥
बेदर्द है ज़माना, ऐ बाँसुरीवाले

*

खामोश देख करके, दाता को दिल दुखी है,
चरणों में सांवरे के, पलकें झुकी-झुकी हैं,
मंदिर तेरा मुरारी, मेरा तो आशियाना ॥
बेदर्द है ज़माना, ऐ बाँसुरीवाले

८

'शिव' श्यामबहादुर की, घनश्याम से करीबी,
पुतलिन में बस गये हो, ये मेरी खुशनसीबी,
औकात मेरी क्या है, सरकार तुम निभाना ॥
बेदर्द है ज़माना, ऐ बाँसुरीवाले

हसनपुरा *

स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा
'मौसम है आशिकाना' (पागल बना दिया
है) गीत की तर्ज पर रचित भावपूर्ण रचना ।

* ० ० ० ० ० ० *



॥ श्री याम नमः ॥



॥ श्री योर हनुमते नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षाली वर्षा



ॐ श्याम सेवा संघ समिति

: * * * * *

श्याम की नगरिया खाटू, उजागर जहान मं,
लुट गयो हूँ तो तेरी, मीठी मुस्कान मं ॥

७

पलकां को झालो देकर, सांवक्षियो स्यात मं,
काळजो ही काढ़ लियो, काई कहूँ बात मैं,
फूँक-फूँक पाँव म्हैलो, प्रीत की दूकान मं ।
लुट गयो हूँ तो तेरी, मीठी मुस्कान मं ॥

*

कितणो दरद ऐं मं, कितणो खिंचाव है,
ज्वाला में कूद ज्यावै, प्रीत को हियाव है,
बिना पँख उड़तो डोलूँ, प्रीत कै बिवाण मं ।
लुट गयो हूँ तो तेरी, मीठी मुस्कान मं ॥

८

श्यामबहादुर 'शिव' प्रीत को पताशो है,
सांकड़ी है प्रेम गँड़ी, फेर नहीं माशो है,
झूब गयो जीव तेरी, मुरली की तान मं ।
लुट गयो हूँ तो तेरी, मीठी मुस्कान मं ॥

* * *

स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा
'छुप गया कोई रे' गीत की तर्ज पर रचित
अनुपम भावपूर्ण श्याम-वन्दना ।

* * * * *



मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों का



ॐ श्री श्यामरसेवा संघ समिति ॥

: * * * * *

चौखट पे तेरी आँखां नमी है,
दिल-ए-हाल कैसे, सुनाऊँ कन्हैया,
दरबार में तेरे नहीं कुछ कमी है,
पलक तो उधाड़ो, रिझाऊँ कन्हैया ॥



॥ श्री यामशाय नमः ॥



॥ श्री योर हनुमते नमः ॥

आँखें मूँदे मुस्कान मधुर, जैसे कोई जगते हो,
तुम जानबूझ कर दाता क्यूँ बन्दों को ठगते हो,
अदाओं पे तेरी, ये नजरें थमी हैं,
खालों में ही, गुनगुनाऊँ कन्हैया ॥
चौखट पे तेरी, आँखां.....

*

मस्तानी मुद्रा तेरी, हर दिल को मोहती है,
तूं बृजभूषण गोपाल, मेरे नैनों की ज्योति है,
कलेजे में सूरत, तुम्हारी रमी है,
पलक-पालने में, झुलाऊँ कन्हैया ॥
चौखट पे तेरी, आँखां.....

*

'शिव' श्यामबहादुर के, तुम बचपन के साथी हो,
दर्दी को कहाँ धीर तेरी, जब याद सताती हो,
बेशक मुझे श्याम, से दिलजमी है,
चले आओ कब से, बुलाऊँ कन्हैया ॥
चौखट पे तेरी, आँखां.....

* *

स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा
'सौ साल पहले, मुझे तुमसे प्यार था' गीत
की तर्ज पर रचित अनुपम रचना ।

* * * * *

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



तूं ही साँवले मेरा सरकार है,
मुझे श्याम तेरी दरकार है ॥



तेरी याद में मैंने हस्ती मिटाई,
तुम्ही पे तो अपनी दुनिया लुटाई,
तूं ही मेरी नैया की, पतवार है ।
तूं ही साँवले मेरा सरकार है.....



पुरानी बहुत है कन्हैया से यारी,
मुझे भूलकर ना भुलाना मुरारी,
तूं ही मेरे नैनों का, सिणगार है ।
तूं ही साँवले मेरा सरकार है.....



तुम्हे श्यामबहादुर ने दिल से मनाया,
मजा तेरी यारी का 'शिव' को भी आया,
रंगीला तुम्हारा, ये दरबार है ।
तूं ही साँवले मेरा सरकार है.....



स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव'
द्वारा 'बहुत प्यार करते हैं, तुमको
सनम' गीत की तर्ज पर रचित रचना



॥ श्री गणेशाय नमः ॥



॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षीय
श्री श्याम सेवा समिति



॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

* * * * *
थोड़ी सी देर डटज्या मेरो,
जीव ना भरयो ॥

६
इतनी उतावल थारै, क्यांकि कन्हैया,
क्यूं तो दयाकर, बैण बजैया,
सावल निरखा ही होसी, काल्जो हरयो ॥
थोड़ी सी देर डटज्या मेरो

७
नै आतो तो मेरो, जी क्यूं तरसतो,
मन पंछी क्यूं तेरै सैं फंसतो,
चल्यो मतना जाये, थां सैं जीव है लङ्घो ॥
थोड़ी सी देर डटज्या मेरो

८
तूं या छेड़, कठै सैं सीखी,
ज्योत जगाऊं तेरी, देशी धी की,
मत ना तूं साँवरा, दिखावै नखरो ॥
थोड़ी सी देर डटज्या मेरो

९
श्यामबहादुर तूं तो, 'शिव' है मिजाजी,
कराकै मनावणा भी, तूं होज्या राजी,
कई दिनां पीछै फेरूँ, काम है पड्यो ॥
थोड़ी सी देर डटज्या मेरो

१०
डटज्या = रूक्जा, उतावल = जल्दी,
क्यूं तो = कुछ तो, सावल = भलीभांति,
मनावणा = मनुहार

११
स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा
राजस्थानी भजन 'कान्हूङा लाल घड़लो
झारो भरदे रे' की तर्ज पर रचित रचना ।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

१२
श्री श्याम सेवा संघ समिति

हसनपुरा

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

००००००

यो कुण सिणगारयो,
यो कुण सिणगारयो,
साँवरिया नै बनडो बणा दियो,
यो कुण सिणगारयो ॥

७

कोड़ा सै फुलड़ा ल्याया,
ये कुण थारा हार बणाया,
कुण जचा-जचा पहराया जी,
यां पै लूण-राई वारो ॥

*

आलूसिंह जी बाग लगाया,
ज्यामै फुलड़ा धणा लगाया,
बै ही जचा-जचा पहराया जी,
सिणगार किन्यो सारो ॥

८

थारै शीश मुकुट कुण ल्याया,
ये कुण थारै छत्तर चढ़ाया,
ज्यानै देख काम शरमाया जी,
जैसे चाँद को उजियारो ॥

*

थारा सेवक मुकुट लगाया,
थारा भगतां छत्तर चढ़ाया,
म्हारी परसन हो गई काया जी,
मन मांही आनंद छायो ॥

९

सिणगार सजीलो प्यारो,
कहे 'सोहनलाल' यो थारो,
म्हानै दर्शन देता रहिज्यो जी,
थे सबका संकट टारो ॥

००००००

स्व. सोहनलाल जी लोहाकार द्वारा
राजस्थानी तर्ज 'कठै सै आई सूंठ,
कठै सै आयो जीरो' पर रचित
सुप्रसिद्ध प्राचीन भजन ।

००००००००००

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की शुभ वर्षीय

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

हरा लाल

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

०००००००००

खाटूवाले तूं मुझको बुलाले, चरण की छाँव में,
मैं भी बस जाऊँ, श्यामा तेरे गाँव में ॥

❶ साँवली सूरत मेरे मन में बसी है,

नित उठ दर्शन पाऊँगा,
मोहनी मूरत पे मैं बलि-बलि जाऊँ,

मन के फूल चढ़ाऊँगा,
श्याम बिहारी, छवि थारी, लागै म्हानै प्यारी,
कैसे भूलूँ भुलाई नहीं जाती, कटे ना दिन-राती,
पड़ूँ मैं तेरे पाँव रे ।
मैं बस जाऊँ श्यामा तेरे गाँव में ॥

* दुःख भी सहूँगा, चाहे सुख भी सहूँगा,

देखा तो रोज करूँगा,
कभी ना कभी तेरा होगा इशारा,

तेरा ही ध्यान धरूँगा,
ओ मतवाली सूरत वाले, काहे को दिन घाले,
तेरी मेरी ये प्रीत पुरानी, सुनी है ये कहानी,
शक्ति है तेरे नाम में ।
मैं बस जाऊँ श्यामा तेरे गाँव में ॥

❷ पूजा करूँगा तो मैं ऐसी करूँगा,

चरणों में शीश धरूँगा,
नैनों के जल से तेरे चरण पखारूँगा,

तन-मन भेट करूँगा,
'सोहनलाल' जाये बलिहारी, लज्जा राखो म्हारी,
म्हारी नैया कन्हैया डूबी जावे, किनारे नहीं आवे,
बिठाले तेरी नाव में ।
मैं बस जाऊँ श्यामा तेरे गाँव में ॥

०

स्व. सोहनलाल जी लोहाकार द्वारा 'फिरकी वाली, तूं कल
फिर आना' गीत की तर्ज पर रचित अति प्राचीन रचना ।

००००००००००००



॥ श्री याम इन्द्रिय नमः ॥



॥ श्री योर हनुमते नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

श्री श्याम

हसनलाल

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

★ * * * *

बाबा श्याम, मेरो काम, थानै ही पटाणो है,
भीतर नै क्यूँ बड़कै बैठ्यो, पड़दो हटाणो है ॥

●
मूँडो भी लखोवैगो तो, थानै नहीं छोड़स्यां,
दोरो मौको लाग्यो, नैणा बाबाजी सैं जोड़स्याँ,
आ तो जग जाणै, तुं सदा सैं शरमाणो है ॥
भीतर नै क्यूँ बड़कै बैठ्यो.....

●
बेगा सा आज्याओ थानै, प्यार सैं बुलावां हां,
कद सूँ रंगीला थानै, अरज्ज सुणावां हां,
देरी जे लगावैगो तो, घणो हरजानो है ॥
भीतर नै क्यूँ बड़कै बैठ्यो.....

●
अंईयां नहीं चाये, बालकां नै तरसावणा,
म्हारै चित्तचोर का म्है, करां हां मनावणा,
थारै पर भी साँवरिया, होसी जुरमानो है ॥
भीतर नै क्यूँ बड़कै बैठ्यो.....

●
श्यामबहादुर 'शिव', होसी तकरार है,
सांवलै सरकार पर ही, सारो दारमदार है,
बाबा को मिजाज नहीं, टाबरां सैं छानो है ॥
भीतर नै क्यूँ बड़कै बैठ्यो.....

●
लखोवैगो - छिपायेगा, दोरो - मुश्किल (से),
चाये - चाहिये, छानो - छिपा हुआ

●
स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा
सुप्रसिद्ध भजन 'दीनानाथ मेरी बात' की
तर्ज पर रचित अनुपम रचना ।

★ * * * *

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

† श्री श्याम रंगीला संघ समिति †



श्री श्याम रंगीला,
लीलो यो घोड़ो थारो नाचणो ॥

छमक-छमक जैं की बजे पैंजणी,
ज्यां पर थे असवार,

तीन बाण तरकश मं सोहे, सोरठड़ी तलवार ॥
श्री श्याम रंगीला, लीलो



॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

पांडवकुल भूषण बनवारी, थे म्हारी जीवन डोर,
संकटहारी कृष्णमुरारी, भक्तां का चित्तचोर ॥
श्री श्याम रंगीला, लीलो

केशरिया बागै पर थारै, बूँटी बणी फिरोज़ी,
मेरी भी सुध लेता रहिज्यो, थे रसिया मनमौजी ॥
श्री श्याम रंगीला, लीलो

श्यामबहादुर याद करूँ 'शिव', हो ज्याओ साकार,
पायल निरखूँ थां चरणां की, टूठो कृष्ण-मुरार ॥
श्री श्याम रंगीला, लीलो

स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा
सुप्रसिद्ध राजस्थानी तर्ज चौमासो (म्हारी
चंद्रगवरजा) पर रचित भावपूर्ण भजन ।



\

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



आयो हूँ शरण मं तेरी, मन्त्रै अपनाय ले,
दुखड़ां को मारयो हूँ मैं, छाती कै लगाय ले ॥



मनडै की बातां मेरी, कीनै सुणाऊँ मैं,
हियो भर आवै कीनै, खोलकर दिखाऊँ मैं,
थोड़ी-भोत तूं ही मेरी, पीड़ा नै बँटाय ले ॥
दुखड़ां को मारयो हूँ मैं.....



दुनिया की ठोकर खाकै, तेरै दर आयो हूँ,
सगळा जग का दरवाजा, मैं तो बंद पायो हूँ,
घणा नै निभावै है तूं, मन्त्रै भी निभाय ले ॥
दुखड़ां को मारयो हूँ मैं.....



बोल मेरा श्याम तेरै, क्यांको है घाटो,
थोड़ो सो मेरै भी दे दे, ठण्डो सो छांटो,
राजी-राजी मेरै सैं भी तूं, हँस बतळाय ले ॥
दुखड़ां को मारयो हूँ मैं.....



तेरो गुण गाऊँगा मैं, सैं नै बताऊँगो,
तेरो उपकार कदे, भूल नहीं पाऊँगो,
चाहे जद 'बिन्न' नै तूं श्याम आजमाय ले ॥
दुखड़ां को मारयो हूँ मैं.....



श्री बिनोद कुमार जी गाडोदिया 'बिन्न' द्वारा
'छुप गया कोई रे' गीत की तर्ज पर रचित
अनुपम रचना ।



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

: * * * * *

श्री श्यामबहादुर जैसा,
अब कोई भगत ना दीखता,
श्री अलूसिंहजी जैसा,
अब कोई भाव ना दीखता ॥

●

कहाँ गया वो मोरछड़ी से,
बाबा का पट खोलना,
कहाँ रहा वो भर-भर इत्तर,
श्याम चरण पर ढोलना,
अब लगते नहीं अखाड़े,
खाली मैदान ही दीखता ॥
श्री श्यामबहादुर जैसा

●

अरजी जब मिलकर लागै थी,
भगतां के दुःख काटे थी,
ऐसी थाप पौठ पर लगती,
जो सबको सुख बांटे थी,
कुछ खर्चा अपना होता,
हारा हुआ चौड़े जीतता ॥
श्री श्यामबहादुर जैसा

●

श्याम बगीची बदल गई है,
श्याम कुण्ड भी बड़ा बना,
बिन भावों के भजनों का,
अम्बार लगा देखो कितना,
दिखलावा ज्यादा होगया,
अंदर का प्यार ना दीखता ॥
श्री श्यामबहादुर जैसा

●

अब तो खाटू आना-जाना,
हरदम लगता रहता है,
कहे 'रवि' अब बारहों महीने,
श्याम का मेला लगता है,
हसनपुर ये चमत्कार करता है,
ना देव द्वसरा दीखता ॥
श्री श्यामबहादुर जैसा

●

श्री रविन्द्र जी के जड़ीबाल 'रवि'
द्वारा 'सासूजी खाटू चालो' भजन
की तर्ज पर रचित अनुपम रचना ।

* * * * *

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

हसनपुर

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



नैया हमारी, सम्हालो मुरारी,
किस्मत पे हमको, भरोसा नहीं है ॥



इस नैया की पतवार, छूट गई मेरे हाथों से,
है चारों तरफ अन्धकार, लाज है तेरे हाथों में,
बहती है धीरे-धीरे, हवा के सहारे,
कोई भी इसका खिलौया नहीं है ॥
नैया हमारी सम्हालो मुरारी



॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

हे जग के खेवनहार, चले आना ज़रा इक बार,
मेरी ये करुण पुकार, नाव अपने हाथों से उबार,
मुसीबत में मोहन, किसको पुकारें,
जग में हमारा कोई नहीं है ॥
नैया हमारी सम्हालो मुरारी



हम झूबेंगे मझधार, अगर देरी से आओगे,
या करदो फिर इंकार, नहीं तुम पार लगाओगे,
आकर के देखो, हालत हमारी,
'बनवारी' आने का मौका यही है ॥
नैया हमारी सम्हालो मुरारी



श्री जयशंकर चौधरी 'बनवारी' द्वारा 'सौ साल पहले
, मुझे तुमसे प्यार था'
गीत की तर्ज पर रचित अनुपम रचना ।



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति

★०★०★०★०★०★०★०★

ॐ श्री श्याम देवाय नमः,
ॐ श्री श्याम देवाय नमः,
महामंत्र का जाप करो,
अपने मन को साफ़ करो ॥



॥ श्री याणशाय नमः ॥



॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

●
महामंत्र की कर भक्ति, तुझको मिल जाये भक्ति,
आत्मबल बढ़ जायेगा, इससे सरल नहीं युक्ति,
सबको बताओ आप करो,
महामंत्र का जाप करो ॥

●
जो आत्मबल बढ़ जाये, सुख-दुःख की चिंता छूटे,
मोह माया सब मिट जाये, सच्चा सुख फिर तूं लुटे,
प्रभु से तभी मिलाप करो,
महामंत्र का जाप करो ॥

●
जीवन नैया गर भटके, काम यदि तेरा अटके,
इसी मंत्र की कर रटना, मिट जाये सारे खटके,
प्रभु सबके संताप हरो,
महामंत्र का जाप करो ॥

●
ऋषि-मुनि भी गाते हैं, इससे सबकुछ पाते हैं,
जो गायेगा सो पायेगा, अनबोले रह जाते हैं,
मौका है जी धाप करो,
महामंत्र का जाप करो ॥

●
महामंत्र कल्प्याणी है, वर देता वरदानी है,
सर्वशक्ति का पुंज है ये, सबने बात ये मानी है,
स्वर में यही अलाप करो,
'श्यामसुन्दर' संग जाप करो ॥

●
स्व. श्यामसुन्दर जी शर्मा (पालम वालों) द्वारा रचित
सुप्रसिद्ध भजन । तर्ज - स्वरचित ।

★०★०★०★०★०★०★०★

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

* * * * *

खाटूवाला-खाटूवाला, ओ लीले घोड़े वाला,
रोम-रोम में रमा हुआ है, तेरी ज्योत का आला ॥

७

भीमसेन के पौत्र लाडले, अहिलवती के लाला,
पांडवकुल अवतार श्यामजी, जपै तिहारी माला ॥
खाटूवाला-खाटूवाला, ओ लीले.....



*

तीन बाण ले महाभारत का, युद्ध देखने आया,
छोटे से बालक को देखकर, श्रीकृष्ण बतलाया ॥
खाटूवाला-खाटूवाला, ओ लीले.....

८

रे बालक तूं क्या करने को, युद्ध भूमि में आया,
ये बच्चों का खेल नहीं है, छोटी सी तेरी काया ॥
खाटूवाला-खाटूवाला, ओ लीले.....

*

सुनकर के आवाज प्रभु की, बालक यूँ फरमाया,
हारेगा उस ओर लड़ूँगा, अहिलवती का जाया ॥
खाटूवाला-खाटूवाला, ओ लीले.....

९

वीर पराक्रम कोई दिखाओ, गर्व तुम्हारा माने,
एक बाण से वृक्ष के पत्ते, सब छेदो तो जाने ॥
खाटूवाला-खाटूवाला, ओ लीले.....

*

महाशक्ति का सुमिरण करके,
उसने बाण निकाला,
पत्ते छेदे उस तरुवर के, अपना प्रण ना टाला ॥
खाटूवाला-खाटूवाला, ओ लीले.....

१०

श्रीकृष्ण से वचनबद्ध होय, शीश दान दे डाला,
तेरी महिमा कोई ना जाने, तूं है देव निराला ॥
खाटूवाला-खाटूवाला, ओ लीले.....

*

तेरी शरण में आये रे बाबा, हम सबको अपनाले,
श्याम मंडल की यही विनती, रंग में रंग मिलाले ॥
खाटूवाला-खाटूवाला, ओ लीले.....

*

परम्परागत तर्ज (रखवाला प्रतिपाला) पर आधारित अति प्राचीन लोकप्रिय भजन ।
लेखक - अज्ञात ।

* * * * *

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



बीच भंवर में है, मेरी नैया कन्हैया पार करो ॥

५

है भारी तूफान डगर में, और किनारा दूर,
काले-काले बादल सिर पे, छाये हैं मजबूर ॥
बीच भंवर में है, मेरी नैया



*

तुम्ही प्रभु दुखियों के साथी, आओ तुम्हे पुकारूँ,
दीनो के हितकारी माधव, तन-मन तुमपे वारूँ ॥
बीच भंवर में है, मेरी नैया

६

तुमने मुखड़ा मोड़ लिया क्यूँ हे घनश्याम बतादो,
नदी किनारे चातक प्यासा, बैठा प्यास बुझा दो ॥
बीच भंवर में है, मेरी नैया

*

डगमग डोलै जीवन नैया, हो गई नाव पुराणी,
'शिव' चरणों में आन सुनाई,
अपनी करुण कहानी ॥

बीच भंवर में है, मेरी नैया

७*

स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा
'छोड़ गए बालम' (भूल गए श्यामा) गीत की
तर्ज पर रचित अद्भुत भाव भरी रचना ।



श्री श्वामरेण संग्रहालय

**करता हूँ नमन स्वीकार करो,
ऐ श्याम तुम्हारे चरणों में ॥**

क्या पाया इस झूठे जग से,
मिली नफरत और ज़िल्लत सबसे,
सच्ची चाहत बस तुमसे मिली,
मिला मान तुम्हारे चरणों में ॥
करता हूँ नमन स्वीकार

**मेरी सांस-सांस पे हङ्क तेरा,
मेरा रोम-रोम बेशक तेरा,
मैंने जीवन का हर इक पल,
किया नाम तुम्हारे चरणों में ॥
करता हूँ नमन स्वीकार**

हर सुख है फिर क्यों नैन बहें,
दिल को एक पल ना चैन रहे,
बोझिल दिल को मिलता केवल,
आराम तुम्हारे चरणों में ॥
क्ररता है नमन स्वीकार

मैं पापी हूँ अज्ञानी हूँ,
बिन गुण कारण अभिमानी हूँ,
जीवन भर जो ना मिल पाया,
मिला ज्ञान तुम्हारे चरणों में ॥
करता हूँ नमन स्वीकार

हसनपरा, जपूर
तुमने हर रात सजाई है,
हर दिन तेरी परछाई है,
'सोनू' की भोर तुम्ही से हो,
हो शाम तुम्हारे चरणों में ।
करता है नमन स्वीकार ...

श्री आदित्य मोर्दी 'सोनू' द्वारा 'दिल
लूटने वाले जादूगर' गीत की तर्ज पर
रचित अनुपम भजन ।

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



श्याम थारी शोभा न्यारी जी,
थारै चरण कमल को दास
विनय प्रभु सुणो हमारी जी ॥



॥ श्री यामशाली नमः ॥



॥ श्री योर हनुमते नमः ॥

नेक नजर थारी हो ज्यावै, दुबदया हो सब दूर,
थारै चरण को चाकरियो, हाजर खड्यो हुजूर,
बणी आँख्यां जलझारि जी ॥
थारै चरण कमल को दास

त्रिभुवनपति जगदीश निहारो, मैं अतिदीन अनाथ,
ऐं बालक कै माथै ऊपर, धरो दया को हाथ,
साँवरा मंगळकारी जी ॥
थारै चरण कमल को दास

मोटी आस लगाई मन मं, छै मोटो विश्वास,
खाटूवाळा श्यामधणी थे, करो हृदय मं वास,
दास जद होय सुखारी जी ॥
थारै चरण कमल को दास

श्यामबहादुर भक्त उबारण, सारो अटक्या काम,
'शिव' की बेर देर क्यूँ किन्ही, हिवडै का आराम,
दरश दयो गिरवरधारी जी ॥
थारै चरण कमल को दास

स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा
राजस्थानी तर्ज जकड़ी (श्याम थारी ओल्यूं
आवै जी) की तर्ज पर रचित अनमोल रचना ।



॥ श्री श्यामरसेवा संघ "समिति" ॥



ओ मस्त नजर वाले, तेरी याद सताती है,
हिचकी पे चले हिचकी, किसे देख के आती है ॥

६

लगता है मुझे ऐसा, ज्यूँ पास में रहते हो,
हर स्वांस में रहते हो, विश्वास में रहते हो,
नैनों के झ़रोखों में, मौसम बरसाती है ॥
हिचकी पे चले हिचकी, किसे



॥ श्री योर हनुमते नमः ॥



॥ श्री गणेशाय नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

*

मनवा है गरीब बड़ा, नादान है भोला है,
माया के झ़कोलों से, संसार में डोला है,
ढलती हुई रातों में, नजरें टकराती है ॥
हिचकी पे चले हिचकी, किसे

७

फरियादी है ये दर का, इसे भूल नहीं जाना,
कानों में पड़ा होगा, इस दास का अफ़साना,
गजराज की ज्यूँ हरि को, मेरी हार बुलाती है ॥
हिचकी पे चले हिचकी, किसे

*

तुम श्यामबहादुर के, कुंजी हो खजाने की,
'शिव' साथ मेरे रहना, ये अरज दीवाने की,
बाँकी सी अदा तेरी, मदहोश बनाती है ॥
हिचकी पे चले हिचकी, किसे

८

स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा
'ऐ मेरे दिल-ए-नादान' गीत की तर्ज पर
रचित अनमोल भाव भरी रचना ।



॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

* * * * *
मन मेरा मन, रहे तुझमें मगन,
मुझको लगा दे बाबा, ऐसी लगन ॥

७
नैनो की खिड़की खुले, तो तेरी ही सूरत दिखे,
इस दिल मैं तूं जो बसे, तो सब खूबसूरत दिखे,
कोई नहीं बैरी हो, कोई न पराया हो,
सबको ही चाहूँ, जिन्हें तूने अपनाया हो,
रंजिशें रहें ना कोई, ना कोई जलन ॥
मन मेरा मन, रहे तुझमें मगन...

८
तेरे ही दिल की सुनूँ, तुमसे ही दिल की कहूँ,
मेरा ना मुझमें रहे कुछ, तेरा ही होके रहूँ,
तुमसे ही जुड़े मेरी, जिन्दगी के तार है,
तुमसे हीं बाबा मुझे, प्यार बेशुमार है,
तेरी और ही हो बाबा, मेरा हर कदम ॥
मन मेरा मन, रहे तुझमें मगन...

९
आठों प्रहर मैं प्रभु, बस तेरा ही सुमिरन करूँ,
तुझको ही सोचा करूँ, तेरा ही कीर्तन करूँ,
तुझको ही चाहूँ मैं, तुझको रिझाऊँ मैं,
जिन्दगी कन्हैया तेरी, सेवा मैं बिताऊँ मैं,
'सोनू' कहे अर्पण तुझको, मेरा हर जनम ॥
मन मेरा मन, रहे तुझमें मगन...

१०
श्री आदित्य मोदी 'सोनू' द्वारा 'सुन साहिबा सुन'
(राम तेरी गंगा मैली) गीत की तर्ज पर रचित भजन ।



मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षीय वर्ष

श्री

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

*०००००००

यूँ अपने चाहने वालों को,
तरसाना नहीं अच्छा,
मिला करके नजर फिर यूँ
मुकर जाना नहीं अच्छा ॥

६

सजा उतनी ही देनी चाहिए,
जितनी मुनासिब हो,
किसी मासूम दिल पर यूँ
जुलम ढाना नहीं अच्छा ॥
यूँ अपने चाहने

*

है मजबूरी भी ऐसी क्या,
के जो खामोश बैठे हो,
मेरे गमगीन दिल को गम से,
बहलाना नहीं अच्छा ॥
यूँ अपने चाहने

७

मैं मुजरिम आपका बेशक,
हूँ पर तुम तो रहमदिल हो,
गुनाहों को मेरे यूँ ध्यान में
लाना नहीं अच्छा ॥
यूँ अपने चाहने

*

शहंशाह हो के भी नाचीज,
पर नाराज होते हो,
या यों कहदो की दिल से दिल,
का टकराना नहीं अच्छा ॥
यूँ अपने चाहने

८

उबारे हैं करोड़ों श्यामबहादुर
पातकी तुमने,
मेरे पापों से 'शिव' गोपाल,
डर जाना नहीं अच्छा ॥
यूँ अपने चाहने

*

स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव'
द्वारा 'लगन तुमसे लगा बैठे' भजन
की तर्ज पर अनमोल रचना ।

*०००००००००



॥ श्री याम नमः ॥



॥ श्री योर हनुमते नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

हसन

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



दिलदार कन्हैया से, नाता जो पुराना है,
अंतिम स्वांसों तक, इस रिश्ते को निभाना है ॥

६

जब दांव लगाया है, क्या बात है डरने की,
मुद्दत से जो आई है, ये रात है मिलने की,
उस धेनु चरैया से, दुःख-दर्द सुनाना है ॥
अंतिम स्वांसों तक इस



॥ श्री गणेशाय नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

चूका तूं अगर मौका, धोखा रह जायेगा,
ठोकर मत खा जाना, वरना पछतायेगा,
यादें गिरधारी की, तेरा माल-खजाना है ॥
अंतिम स्वांसों तक इस

७

जो इस जीवन धन से, वादा करके आया,
क्यों माया में फँसकर, पगले तूं भरमाया,
हर कुर्बानी देकर, प्रीतम को रिझाना है ॥
अंतिम स्वांसों तक इस

८

'शिव' श्यामबहादुर का, हमदम वो कन्हैया है,
पतवार उसे सौंपी, घनश्याम खिवैया है,
मिलकर सत्संगत का, इक बाग लगाना है ॥
अंतिम स्वांसों तक इस



स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा
'बचपन की मुहब्बत को' गीत की तर्ज पर
रचित अनुपम भजन ।



ॐ श्री श्याम रसेवा संघ समिति ॥

* * * * *

तूं श्याम रिझा बंदे,
तेरी बिगड़ी संवर जाये,
कट जायें सभी फंदे,
तेरी बिगड़ी संवर जाये ॥

६

जिसने पुकारा, माँगा सहारा,
उसका ही जीवन सुधारा,
अर्जी लगादो, सबकुछ बतादो,
कहना ना पड़ता दुबारा,
थामे वो तेरे कंधे,
तेरी बिगड़ी संवर जाये ॥
कट जाये सभी फंदे

*

दर-दर क्यों भटके, माथा क्यों पटके,
खाये क्यूँ दुनिया के झटके,
आजा शरण में, श्याम चरण में,
तेरे मिट जायें सारे खटके,
चल जायें काम-धंधे,
तेरी बिगड़ी संवर जाये ॥
कट जाये सभी फंदे

७

मांगो उसी से, जो दे दे खुशी से,
बतलाये भी ना किसी से,
देना ही जाने, कहना भी माने,
लेता ना वापस किसी से,
इसे राजी कर बन्दे,
तेरी बिगड़ी संवर जाये ॥
कट जाये सभी फंदे

*

जी भरके गाले, श्याम रिझाले,
अपना इसे तूं बनाले,
बिन्नूँ यूँ बोले, फिर हौले-हौले,
जीवन में छायें उजाले,
काम होंगे कभी ना मंदे,
तेरी बिगड़ी संवर जाये ॥
कट जाये सभी फंदे

*

श्री बिनोद कुमार जी गाडोदिया
'बिन्नू' द्वारा 'आ लौट के आजा मेरे'
गीत की तर्ज पर रचित भजन ।

* * * * *

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षीय
सेवा का अद्वितीय वर्ष

ॐ श्री श्याम रसेवा संघ समिति ॥

हस्ताक्षर

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



आज भगत भगवान सैं पूछै, मीठी-मीठी बात,
बता कित जाणा सै ॥



किसना खाती नाम मेरा, नगर अंजार मं जाणा था,
काम एक अटक्या म्हारा, बहुत जरूरी आणा था,
हार गया था, दया हो गई, बिठा लिया जो साथ,
नहीं धिंगताणा सै ॥ आज भगत



सुणकै बात कन्हैया की, नरसी नै झटका खाया,
बडे काम का माणस यो, म्हारी गाडी मं आया,
बोल्या फिर नरसी हरि सैं यूं कैसी लगी जमात,
नहीं शरमाणा सै ॥ आज भगत



बता नगर अंजार में, थारी के रिश्तेदारी,
नानी बाई भाण धरम की, बेटी के ब्याह की त्यारी,
खूब उड़ेगा माल और, जी भर जीमे बरात,
जी भरकै खाणा सै ॥ आज भगत



भगतां के दरशन करके, सारी दूर थकान हुई,
आज ठिकाणे पहुँच गया, थारी दया महान हुई,
किसना खाती चाल पड्या फिर, जोड़े दोन्यू हाथ,
काम निपटाणा सै ॥ आज भगत



करकै इशारा चल्या गया, आज फेर मुरली हाला,
समझ नहीं कुछ पाया था,
नरसी भगत भोला-भाला,
जब छलियै की लीला समझया,
खतम हो गई बात,
इब पछताणा सै ॥ आज भगत



स्व. श्यामसुन्दर जी शर्मा पालम वालों द्वारा रचित नानी बाई का
मायरा से एक रचना, तर्ज - गाडी वाळे मत्रै बिठाले ।



प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षाली वर्ष



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



नेह थांसै लगायो, काँई बदलै मं पायो,
के झमेलै मं फँस गया प्राण जी ।
कुणसी गलती है म्हारी, काँई मरजी है थारी,
मेरी अरजी मिजाजीड़ा मान जी ॥



॥ श्री यामशाय नमः ॥



॥ श्री योर हनुमते नमः ॥

भूल थारी कोई ना बतासी,
आँखां डीकै है दर्शन की प्यासी,
चैन हिये को गँवायो, दर्द बदलै मं पायो,
छेड़ी मुरली की मीठी सी तान जी ॥
नेह थांसै लगायो, काँई बदलै

बावळो मैं हूँ तू तो है ज्ञानी,
क्यूँ मुलाकात भूल्यो पुराणी,
मोहनी कैसी डारी, तू है पूरो मदारी,
तेरी यारी मं मनड़ो वीरान जी ॥
नेह थांसै लगायो, काँई बदलै

द्वृँढतो-द्वृँढतो लङ्घङ्घाग्यो,
तूं ही निजरां मं मेरी समाग्यो,
बेसी मतना सतावै, काळजो क्यूँ जळावै,
रंग ल्याई है तेरी पिछान जी ॥
नेह थांसै लगायो, काँई बदलै

श्यामबहादुर कहे मान जाओ,
ठेस 'शिव' ना जिगर पे लगाओ,
मार भीतरली मारै, मतना जुलम गुजारै,
है अनूठी तेरी मुस्कान जी ॥
नेह थांसै लगायो, काँई बदलै

स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा
'तेरी शहनाई बोले' गीत की तर्ज पर रचित
अनूठी भावपूर्ण रचना ।



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



मेरी कोई नेक कमाई, दर पे तेरे ले आई,
तूने भी किरपा करके, पकड़ी है मेरी कलाई,
तूने मुझको अपनाया, भूलों को मेरी भुलाया,
खुशियों से झोली भर दी, वाह रे कन्हाई ॥



॥ श्री गणेशाय नमः ॥



॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

जीवन की दुश्वार राहों में,
मेरा हाथ है पकड़ा तूने, बन गया तूं हमराही,
जब-जब भटका जीवन पथ पे,
तूने मुझे सम्हाला बाबा, मैंने मंजिल पाई,
शुक्रिया-शुक्रिया, है तेरा शुक्रिया,
तूने सांवरिया हमपे, किरपा बरसाई ॥
मेरी कोई नेक कमाई.....

बन गये तेरी आँख के तारे,
छोड़ के दुनिया सारी बाबा, ये दिल तुझपे वारा,
तूं मेरा मैं तेरा सांवरे,
मैं हूँ तेरा प्रेमी कान्हा, कहता है जग सारा,
शुक्रिया-शुक्रिया, है तेरा शुक्रिया,
प्रेमी को तूने अपने, इज्ज़त दिलाई ॥
मेरी कोई नेक कमाई.....

अब तो ये ही अर्जी तुमसे,
द्वार तेरा ना छूटे श्याम, चाहे दुनिया रूठे,
टूट जाये दुनिया के बंधन,
झूठे रिश्ते छूटे दाता, तुझ संग डोर ना टूटे,
शुक्रिया-शुक्रिया, है तेरा शुक्रिया,
'रोमी' बस ये ही कहता, वाह रे कन्हाई ॥
मेरी कोई नेक कमाई.....

श्री हरमहेन्द्रपाल सिंह 'रोमी' द्वारा 'जा रे जा
ओ हरजाई' गीत की तर्ज पर रचित भजन ।



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



लीलै घोड़े वाला तेरी, के गज़ब सवारी है,
यादास्ति कुछ भी नहीं, क्या उल्फत हमारी है ॥



॥ श्री याम नमः ॥



॥ श्री योग नमः ॥

कभी-कभी इस दिल में, गुदगुदी सी तो होती है,
सोते में भी आँखें मेरी, मेरे बाजू भिगोती है,
मेरी जैसी नाचीज को, तूने दिल से सँवारी है ॥
यादास्ति कुछ भी नहीं, क्या.....



इस दिल पर मेरे तुमको, कुछ रहम नहीं आया,
कोई दीवाना तेरा भी है, ये वहम नहीं आया,
हरफन का मौला है तू, मेरी तुमसे ही यारी है ॥
यादास्ति कुछ भी नहीं, क्या.....



विश्वास पक्का मेरा, कभी मुझ्को सम्हालोगे,
सुनकर मेरी दास्तां, सीने से लगा लोगे,
शीश का दानी कहूँ, या बांके बिहारी है ॥
यादास्ति कुछ भी नहीं, क्या.....



'शिव' श्यामबहादुर का, इकरार कन्हैया से,
आबाद दुनिया मेरी, सरकार कन्हैया से,
आवाज़ कमजोर है, तेरी ऊँची अटारी है ॥
यादास्ति कुछ भी नहीं, क्या.....



स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा
'बाबुल का ये घर बहना' गीत की तर्ज पर
रचित अनुपम भावपूर्ण भजन ।



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

*०*०*०*०*०*

शीश के दानी, महा बलवानी,
खाटूवाले श्याम, तेरा जयकारा है ॥

७

त्रेता युग में राम बना, द्वापर में घनश्याम बना,
अपने भक्तों की खातिर, आज तूं बाबा श्याम बना,
कोई नहीं है इस कलियुग में, तुझसा देव महान ।

तेरा जयकारा है ॥

शीश के दानी, महाबलवानी

८

नाम की महिमा भारी है, लीले की असवारी है,
इसमें कोई शक ही नहीं, तूं कलियुग अवतारी है,
खाटू जैसा गाँव भी बाबा, बन गया तीरथ-धाम ।

तेरा जयकारा है ॥

शीश के दानी, महाबलवानी

९

घर-घर पूजा होती है, घर-घर कीर्तन होते हैं,
अहो भाग्य हम दीनों के, तेरे दर्शन होते हैं,
'बनवारी' मिल जाये हमको, चरणों में स्थान ।

तेरा जयकारा है ॥

शीश के दानी, महाबलवानी

१०

श्री जयशंकर चौधरी 'बनवारी' द्वारा 'गाड़ी वाले
मुझे बिठाले' भजन की तर्ज पर रचित सर्वप्रिय
सुप्रसिद्ध रचना ।

*०*०*०*०*०*



॥ श्री गणेशाय नमः ॥



॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षीय वृत्ति

श्री श्याम सेवा संघ समिति

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

* * * * *

मैं के बोलूँ श्यामधनी,
तन्ने सब बातां का बेरा सै,
पिछले साल घणे त्यारै,
पण इबकै नम्बर मेरा सै ॥

०

तुं चावै तो फुट्योडी,
तकदीर संवर ज्या पल भर मं,
ये लकीर बदल ज्या पल भर मं,
तुं चावै तो होवै उजाळा,
ना तो घोर अंधेरा सै ॥
पिछले साल घणे त्यारै

*

मेरै अगड़-पड़ौसी सारे,
तनै उनका काम बणाया सै,
किसी ने गाड़ ली कोठी,
किसी ने महल सजाया सै,
तनै यो के हाल बणाया सै,
मेरा दो कमरां मं डेरा सै ॥
पिछले साल घणे त्यारै

०

तूं दोन्या हाथ लुटावै,
तेरे घणे खजाने भेरे पड़े,
हम रोटी पूरी करती,
और कमा-कमा कर मेरे पड़े,
छप्पन करोड़ का बम्पर खुलज्या,
इतना माल भतेरा सै ॥
पिछले साल घणे त्यारै

*

मेरा सपना परा होगा,
ना इब तक छोड़ी आस मन्नै,
हसना तूं सुणैगा बिनती मेरी,
न्यू पक्का सै विश्वास मन्नै,
देर सही अंधेर नहीं,
'नरसी' ने इतणा बेरा सै ॥
पिछले साल घणे त्यारै

* * *

श्री नरेश शर्मा 'नरसी' द्वारा
हरियाणवी तर्ज 'मेरे पीछै-पीछै
आवण का' पर रचित भजन ।

* * * * *

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

००००००००

दर्शन देओ श्री श्याम, तुम बिन कौन हमारा,
दुःख दूर करो आपका है, एक सहारा ॥

०

तुमने महाभारत में अपना, कौशल दिखलाया,
श्रीकृष्ण को दे शीश दान में, ऐसा वर पाया,
कलिकाल में पूजा तेरी, सौभाग्य हमारा ॥
दुःख दूर करो आपका है



*

मेरे ही श्याम नाम, तुम देवों के देव हो,
जो शरण में तेरी आये, उसका पूरण काम हो,
धन-धान्य, पुत्र और पौत्र दो, वरदान तुम्हारा ॥
दुःख दूर करो आपका है

०

इसमें नहीं कुछ झूठ है, श्रीकृष्ण समझावे,
जगदीश करता ध्यान, बाबा श्याम कब आवे,
जब चूरमा कर प्रेम से, धृत ज्योत जगावे,
खुश हौं दिया वरदान हो, संसार तुम्हारा ॥
दुःख दूर करो आपका है

*

एक विनती है 'मातृदत्त' की, श्याम आपसे,
जानूँ नहीं कुछ भाव-भक्ति, अपने विचार से,
हो नाथ कैसे पापों से, छुटकारा हमारा ॥
दुःख दूर करो आपका है

०

हे श्याम बाबा आये हैं, हम शरण तुम्हारी,
मेटो हमारे संकट हे, श्री श्याम मुरारी,
ऐसा देओ वरदान हो, संसार हमारा ॥
दुःख दूर करो आपका है

००००००००००

श्रद्धेय स्व. वैद्य मातृदत्त जी शर्मा भिवानी वालों द्वारा 'आजा मेरी बर्बाद मुहब्बत के सहारे' गीत की तर्ज पर रचित सुप्रसिद्ध एवं अति प्राचीन भजन। लेखक ने इस भजन में अपने पुत्रद्वय श्री जगदीश चन्द्र जी शर्मा एवं श्री कृष्णचन्द्र जी शर्मा के नाम भी उल्लेखित किये हैं।

००००००००००

ॐ श्री श्यामरसेवा संघ समिति ॥

● ● ● ● ● ● ● ●

ये क्रम चल रहा है जहां का,
सब झूँठे रिश्ते-नाते,
ममता क्या इस जीवन की,
कुछ आते हैं कुछ जाते ॥



॥ श्री गणेशाय नमः ॥



॥ श्री वैष्णवत्मके नमः ॥

●
क्यूँ गफलत में सोता है, कर चेत अरे दीवाने,
आने वाला न्यौता है, पर तूं ये कैसे माने,
युक्ति से लगाकर चाबी, पाने वाले ही पाते ॥
ममता क्या इस जीवन की

●
छोटी सी राम कहानी, है ये दुनिया तो फानी,
सब जान रहा है फिर भी, क्यों बनता है अज्ञानी,
निश्चय देखे जायेंगे, वहाँ तेरे पुराने खाते ॥
ममता क्या इस जीवन की

●
कोई दिखा करिश्मा ऐसा, भूले ना तुम्हे ज़माना,
उसका जलवा नैनों में, भरले हो जा मस्ताना,
प्रीतम की एक झ़लक से, प्रेमी ही प्यास बुझाते ॥
ममता क्या इस जीवन की

●
दिल श्यामबहादुर का भी, उलझा उस बेदर्दी से,
तड़फन में है जिंदगी 'शिव',
खुश हूँ इस दिल लगी से,
दर्दी को मिली है कबसे, दिल बहलाने की रातें ॥
ममता क्या इस जीवन की

●
स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा 'ऐ मेरे
वतन के लोगों' गीत की तर्ज पर रचित भजन ।

● ● ● ● ● ● ● ●

†श्री श्यामरेखा संघ समिति†



बोलो तो सही, कुछ तो बोलो तो सही,
क्यूँ रुस्या हो बाबा, आँख्यां खोलो तो सही ॥



॥ श्री गणेशाय नमः ॥



॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

आसरो थारो है, भरोसो थारो है,
जो कुछ भी म्हारो है, वो सबकुछ थारो है,
टाबरिया कै कानी मुख नै, मोड़ो तो सही ॥
बोलो तो सही, बोलो तो सही

या अर्जी म्हारी है, पर मर्जी थारी है,
थारै सैं सांवरिया, पुराणी यारी है,
ज्यादा कोनी माँगूँ थोड़ो, देवो तो सही ॥
बोलो तो सही, बोलो तो सही

रूस कर साँवरिया, कठे थे जाओला,
यो म्हानै बेरो है, थे रह नहीं पाओला,
'शुभम-रूपम' को रिश्तों थांसै, जोड़ो तो सही ॥
बोलो तो सही, बोलो तो सही

श्री शुभम बाजोरिया - श्री रूपम बाजोरिया
द्वारा 'मैं ना भूलूँगा' गीत की तर्ज पर रचित
लोकप्रिय भजन ।



॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

* * * * *
म्हारी सांवरे सैं लागी प्रीत,
जुलमण ना छूटै ॥

ॐ
मिलतो-जुलतो रै पैल्यां चाव सूं,
इब कर लेई खोटी नीत ॥
जुलमण ना छूट.....

पीहू-पीहू बोलै रै मन को मोरियो,
तन्नै डीके मन रा मीत ॥
जुलमण ना छूट.....

ॐ
पीर पराई रे दूजो काँई जानै,
म्हारै हिवडै रा संगीत ॥
जुलमण ना छूट.....

ॐ
प्रेम गळी छै रे रसिया सांकड़ी,
मैं काँई जाणू इण री रीत ॥
जुलमण ना छूट.....

ॐ
नैणा माँई रै बस गयो सांवरो,
म्हानै नींद ना आवै मीत ॥
जुलमण ना छूट.....

ॐ
क्यूँ दिन घालै रे आजा तावळो,
म्हारी हार हुई तेरी जीत ॥
जुलमण ना छूट.....

ॐ
हसनपरा लंगर
चाकर थारो रै 'शिव' नै जाण कै,
तूं मत होजे विपरीत ॥
जुलमण ना छूट.....

ॐ
स्व. शिवचरणजी भीमराजका
'शिव' द्वारा राजस्थानी तर्ज (बजी
घड़ावळ बारै सं, मंदिर मं पड़ी
पुकार) पर रचित लोकप्रिय भजन ।

* * * * *



॥ श्री शशांक नमः ॥



॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की उम्मीद

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

॥१॥ ॥२॥ ॥३॥ ॥४॥ ॥५॥

तर्ज- कुण सूनैगो किन सुनावुँ

मै हूँ तुम्हारा तुम हो हमारे
तुझसा ना प्यारा कोई, है श्याम प्यारे ॥



तुम हो समुन्दर मे बूंद तेरी,
तुझसे अलग क्या है पहचान मेरी,
जो कुछ भी पाया मैंने तुझसे मिला रे ॥1॥

बड़ा ख्याल रखते हो दर पे बुलाते,
जब मे बुलावुं तुम भी, रुक नहीं पाते,
तुम ही हो साथी मेरे, तुम ही सहारे ॥2॥

मेरा तुम्हारा बन्धु, कैसा ये नाता,
प्रेम का बन्धन है ये, कसता ही जाता,
तूँ ही तो हर पल अपना, रिश्ता सँवारे ॥3॥

श्री श्याम सेवा संघ समिति 30 गोवर्धनी वर्ष
चरणों मे विनती है मुझको निभाना,
दीन दयालू मुझको, भूल ना जाना,
रात दिवस "बिन्नू" यही तो पुकारे ॥4॥

मै हूँ तुम्हारा तुम हो हमारे, तुमसा ना प्यारा कोई, है श्याम प्यारे

॥१॥ ॥२॥ ॥३॥ ॥४॥ ॥५॥

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

००००

हो रह्यो बाबा की नगरी मं,
केशर चन्दन को छिड़काव ॥

●

वाह रे वाह फागण अलबेला,
श्यामधनी का भरता मेला,
वायुमण्डल भया सुनहला,
चाकरियो हूँ श्याम चरण को,
मन मं मोटो चाव ॥
हो रह्यो बाबा की नगरी मं....

*

मन्दरिये मं डम्बर फुट्यो,
रूह-गुलाब को झरणो छुट्यो,
प्रीत करी सोई जस लुट्यो,
बड़भागी नै हुयो अनूठो,
दाता को दरसाव ॥
हो रह्यो बाबा की नगरी मं....

●

महकण लाग्यो देश ढुंढारो,
खोल दियो बाबो भण्डारों,
सुफल हो गयो मिनख जमारो,
बैं नै यो दिल सं सिणगारयो,
जैं सैं भयो लगाव ॥
हो रह्यो बाबा की नगरी मं....

*

श्यामबहादुर 'शिव' फरियादी,
श्याम नाम की नींव लगादी,
मन मंदिर मं ज्योत जगादी,
एक झलक अपणी दरशा दी,
मिल्या हदय का भाव ॥
हो रह्यो बाबा की नगरी मं....

००००

स्व. शिवचरणजी भीमराजका
'शिव' द्वारा 'रसिया' तर्ज पर
रचित अद्भुत रचना ।

००००



मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षीय वर्ष

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

हराम

ॐ श्याम सेवा संघ समिति



चरणों का पुजारी हूँ, तेरे दर का भिखारी हूँ,
जिंदगी दाँव पे रख दी, प्रभु ऐसा जुवारी हूँ ॥



ये मेरी हकीकत है, चहुँ और मुसीबत है,
हारा हुवा प्राणी हूँ, सुनले यदि फुर्सत है,
गुमराह तेरी यादो मे, प्रभु क्या ना गुजारी हूँ ॥1॥

रुक नेक मिलावो तो, दिल दिल से लगावो तो,
मुद्धत से जो प्यासा हूँ, दो घूँट पिलावो तो,
तस्वीर अदा तेरी, इस दिल मे उतारी हूँ ॥2॥

हर बात समझते हो, अनजाने भी बनते हो,
नाराजी है क्या ऐसी, दिलदार न मनते हूँ,
दीवाना हूँ जिस दिन से, छवि एक निहारी हूँ ॥3॥

"शिव" श्याम बहादुर के, दो नैनों की ज्योति हो,
करुणा ही तेरी प्यारे, बदनाम जो होती हो,
कहने भी नहीं पाता, नौकर सरकारी हूँ ॥4॥

जिंदगी दाँव पे रख दी, प्रभु ऐसा जुवारी हूँ ॥



॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

॥१॥ ॥२॥ ॥३॥ ॥४॥ ॥५॥ ॥६॥

दुनिया बदल दी मेरी, दुनिया बदल दी मेरी,
जलवा दिखा के तूने, दुनिया बदल दी मेरी ॥



मे कौन था, कहा था, कोई जानता नहीं था,
कोई मुसीबतों मे, पहचानता नहीं था,
अपना बना के तूने, दुनिया बदल दी मेरी ॥1॥

सुनते अरज हो मेरी, महसूस कर रहा हूँ,
हम पे निगाह है तेरी, महसूस कर रहा हूँ,
रहमत लुटा के तूने, दुनिया बदल दी मेरी ॥2॥

ये सावरे का जादू, सर चढ़ के बोलता है,
ये श्याम नाम मन मे, अमृत सा घोलता है,
जादू चला के तूने, दुनिया बदल दी मेरी ॥3॥

"गंभीर" महिमा तेरी, ऐसे ही नहीं गाता
जब जब भी नाँव अटकी, भव पार तूँ लगाता,
किस्मत जगा के तूने, दुनिया बदल दी मेरी ॥4॥

जलवा दिखा के तूने, दुनिया बदल दी मेरी...
दुनिया बदल दी मेरी, दुनिया बदल दी मेरी ॥

॥१॥ ॥२॥ ॥३॥ ॥४॥ ॥५॥ ॥६॥

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

:

खाटू के बाबा श्याम,
मुझे अपनी शरण में ले लेना ॥

देख लियो दुनिया को मेळो, देख ली दुनियादारी,
स्वारथ के सब रिश्ते-नाते, स्वारथ की ही यारी ॥
खाटू के बाबा श्याम, मुझे.....



माया कै चक्कर मं पड़कर, प्राणी होश गंवायो,
ऊँच-नीच को भेद न जाणयो, अपणो भयो परायो
खाटू के बाबा श्याम, मुझे.....

टूट गई आशा की लड़ियां, बिखर गये जग सारे,
कैसे मन को धीर बंधाऊँ, तूं ही श्याम बतादे ॥
खाटू के बाबा श्याम, मुझे.....

हार गयो जीवन की बाजी, मनड़ो चैन गंवायो,
झूठे हो गये सपने अपने, रास जगत ना आयो ॥
खाटू के बाबा श्याम, मुझे.....

श्यामबहादुर 'शिव' ने अपनी, मन की पीड़ सुणाई,
तेरे से क्या छिपा है मोहन, तूं ही करे सहाई ॥
खाटू के बाबा श्याम, मुझे.....

श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा 'छोड़ गये
बालम, मुझे हाय अकेला छोड़ गये' गीत की तर्ज पर
रचित अनुपम रचना ।

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

ऐसा कौन गुनाह कर डाला, बृजभूषण गोपाल,
 सलूणै साँवरिया,
 चर्चा में तेरी वक्त निकाला, जबसे होश सम्हाला,
 सलूणै साँवरिया ॥



॥ श्री यामश्याम नमः ॥



॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

ओ मुरलीवाले तेरे, दिल में दया का नहीं नाम है,
 कहता ज़माना तुम्हें, छलिया मुरारी सरेआम है,
 दुनिया की नज़रों में काला,
 जीवन का उजियाला, सलूणै साँवरिया ॥
 चर्चा में तेरी वक्त

तुम्हीं से शिकायत तेरी,
 करता हूँ ये भी कोई बात है,
 कौन तक़सीर तेरी, होती नहीं जो मुलाक़ात है,
 तूं ही तो है खुद का हवाला,
 गौर करो नन्दलाला, सलूणै साँवरिया ॥
 चर्चा में तेरी वक्त

हँस के या रो के तेरे, आगे फ़साना सुना देता हूँ,
 मर्ज़ी जो तेरी दाता, देता खुशी से वही लेता हूँ,
 श्यामबहादुर भर-भर प्याला,
 प्यादे 'शिव' मतवाला, सलूणै साँवरिया ॥
 चर्चा में तेरी वक्त

श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा 'मिलो ना तुम तो हम घबरायें' गीत (एक दिन वो भोला भण्डारी, बनकर के बृजनारी) की तर्ज पर रचित अनुपम रचना ।

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



तर्ज-घर आया मेरा परदेशी



अरज सुनो मेरे सावरिया,
हमने सहारा तेरा लिया ॥

क्या यूँ ही हमें तरसा ओगे,
बाबा कब हमें दरश दिखाओगे,
नैना हो गए बावरिया....(1)

जब गज ने तुमको पुकारा था,
तूने जल मे ग्राह को मारा था,
गज ने तेरा नाम लिया...(2)

जब द्रोपदी तुमको तेरी थी,
तूने इक पल की ना देरी की,
चीर मे आकर समा गया...(3)

ये दास कन्हैया तेरा है,
मेरा तेरे भरोसे डेरा है,
तूने सबका पूरण काम किया...(4)

हमने सहारा तेरा लिया...



ॐ श्याम सेवा संघ समिति



तर्ज- मिलती है जिन्दगी मे



सच्चे हृदय से श्याम का सुमिरन किया करो,
जी भर के श्याम नाम का, प्याला पिया करो ॥

जिसकी दया से चल रही, तेरी ये जिन्दगी,
करता नहीं क्यों बावरे, उसकी तुं बन्दगी,
थोड़ा सा वक्त श्याम को, अर्पण किया करो ॥(1)

जिसका भरोसा श्याम का, उसको फिकर नहीं,
रहता है साथ साँवरा, कोई भी डर नहीं,
घुट घुट के मर रहे हो क्यों, हँस कर जिया करो ॥(2)

जीवन का भार सौंप दे, हाथो मे श्याम के,
गोदी के लाल की तरह, रखेंगे थाम के,
कैसे लडाये लाड़ वो, अनुभव किया करो ॥(3)

जय जय करे जो श्याम की, उसकी विजय सदा,
उसका सितारा भाग्य का, रहता उदय सदा,
"बिन्दू" मग्न हो श्याम की, जय जय किया करो ॥(4)

जी भर के श्याम नाम का, प्याला पिया करो



॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



कपटी को तेरे दर पे, इन्साफ नहीं मिलता,
प्रभु की इच्छाओं का, आभाष नहीं मिलता ॥

७

सुत-दारा और लक्ष्मी, आसानी से पा लोगे,
छल-प्रपंच रच करके, मन को बहला लोगे,
हरि क्या ऐसों को कभी, हरिदास नहीं मिलता ॥
कपटी को तेरे दर पे, इन्साफ



*

शह देते हैं ऐसों को, क्या उनका ठिकाना है,
बच पायेंगे वो कैसे, अंदाज लगाना है,
जीवन में कभी उनको, विश्वास नहीं मिलता ॥
कपटी को तेरे दर पे, इन्साफ

८

सम्मान न दे पाये, सम्मान गँवा बैठे,
सत्संग की महफ़िल में, जो शान गँवा बैठे,
मिथ्या की कमाई को, उल्लास नहीं मिलता ॥
कपटी को तेरे दर पे, इन्साफ

*

'शिव' श्यामबहादुर का, अनुभव ये पुराना है,
दूरी ही भली उनसे, बेदर्द ज़माना है,
पाखंडी को प्रभु का, एहसास नहीं मिलता ॥
कपटी को तेरे दर पे, इन्साफ

९

स्व. शिवचरण जी भीमराजका 'शिव' द्वारा 'होठों से छूलो
तुम' गीत की तर्ज पर रचित रचना ।



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

००००००००००

माखनचोर कन्हैया तेरो, काँई श्याम इरादो है,
तूं वज़ीर सारै आलम को, यो छोटो सो प्यादो है ॥

६

देख रह्यो है चौड़े-धाड़े, चुप क्यूँ बैठ्यो फेरूँ भी,
स्याले की मांझळ रातां मं, बेदर्दी नै हेरूँ भी,
तूं ही धीर बंधैया मेरो, आजा भोत तकादो है ॥
माखनचोर कन्हैया तेरो.....



हूँ तो नितकी याद दिलाऊँ, तूं ही चेत करै कोनी,
साँची बोलूँ रै निर्मोही, तेरै बिना तो सरै कोनी,
छलियां का सिरमौर कन्हैया, झूठो तेरो वादो है ॥
माखनचोर कन्हैया तेरो.....

७

अं जीवन की बांकेबिहारी, साँची मेरी कमाई तूं,
तूं ही मेरै चैन हिये को, दिल की श्याम दवाई तूं,
साथी तूं ही जन्म-जन्म को, तूं मेरो शहजादो है ॥
माखनचोर कन्हैया तेरो.....

८

श्यामबहादुर 'शिव' फरियादी,
बेसी भी तरसावै क्यूँ
जै हो जावै दृष्टि दया की, मीठी बैण बजावै तूं,
तूं बाँको तेरी चित्तवन बाँकी,
यो मन सीधो-साधो है ॥
माखनचोर कन्हैया तेरो.....

००

स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा
'फूल तुम्हे भेजा है खत में' गीत की तर्ज पर
रचित अनमोल रचना ।

०००००००००००००

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

सारी दुनिया में गूँजे थारो नाम,
खाटू का बाबा श्याम,
माया तो थारी थे ही जाणो ॥

निरबल का बल, निरधन का धन,

थारो रुतबो न्यारो,

हारयोड़ा की जीत करावै, बाबा श्याम हमारो,

बाबा दरदी नै देओ थे आराम,

खाटू का बाबा श्याम,

माया तो थारी थे ही जाणो ॥



॥ श्री याम शशांक नमः ॥



॥ श्री योग हनुमते नमः ॥

जो कोई लेवै थारो आसरो, बैठ्यो मौज उडावै,
खूँटी ताण कै सोवै बैनै, चिंता नहीं सतावै,
बैका थे ही बणाओ सारा काम,
खाटू का बाबा श्याम,
माया तो थारी थे ही जाणो ॥

बिन पाणी कै नाव चलाओ, ऐसी है सकळाई,
आँखां पढकै 'हर्ष' भगत की, थे ही करो सुणाई,
थारे देरी को कोनी कोई काम,
खाटू का बाबा श्याम,
माया तो थारी थे ही जाणो ॥

प्रसिद्ध राजस्थानी तर्ज 'म्हारै सिर पर है बाबाजी
रो हाथ' की तर्ज पर श्री विनोद अग्रवाल 'हर्ष'
द्वारा रचित भजन ।

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

जिद है कन्हैया बिगड़ी बनादो,
मार के ठोकर या फिर, हस्ती मिटादो ॥

zz

बरसे जो तूं तो, कुटिया टपकती,
ना बरसे तो, खेती तरसती,
बरबस ही, आँखें बरसती,
माँगूँ क्या तुमसे, तुम ही बतादो ॥
मार के ठोकर या फिर.....



॥ श्री याम शशांव नमः ॥



॥ श्री याम हनुमते नमः ॥

रोता हूँ जब मैं, हँसती है दुनिया,
सेवक पे ताने, कसती है दुनिया,
गरीबी पे मेरी, बरसती है दुनिया,
पौछ के आँसू, अब तो हँसा दो ॥
मार के ठोकर या फिर.....

तेरे सिवा कोई, हमारा नहीं हैं,
बिन तेरे अपना, गुजारा नहीं है,
हाथों को दर-दर, पसारा नहीं है,
जाऊँ कहाँ मैं, तुम ही बतादो ॥
मार के ठोकर या फिर.....

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षीय वर्ष

होश सम्हाला जबसे, तुमको निहारा,
सुख हो या दुःख बाबा, तुमको पुकारा,
आज तेरा सेवक क्यूँ भटके मारा-मारा,
अपना वो जलवा, फिर से दिखादो ॥
मार के ठोकर या फिर.....

'रोमी' ये तुमसे, अर्जी लगाये,
दर-दर सिर मेरा, झुकने ना पाये,
तेरी ही मर्जी दाता, जैसे नचाये,
दरबार में मुझको, अपने नचादो ॥
मार के ठोकर या फिर.....

श्री हरमहेन्द्र पाल सिंह 'रोमी' द्वारा
'सागर किनारे, दिल ये पुकारे' गीत
की तर्ज पर रचित अनुपम रचना ।

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

सुन्दर श्याम सलूणा तेरी,
मुरली कामणगारी है,
यो मनड़ो धायल कर दीन्यो,
सुरतिया मतवारी है ॥

●
तूं मालिक तेरी मस्ती को,
पण मैं तेरो दीवानो,
तेरै सैं मेरो हेतं पुराणो,
तूं मेरै सैं काँई छानो,
चोट तेरा चंचल नैणा की,
लागी मोय गिरधारी है ॥

◆

मेरी दीन दशा कानी भी,
देख जरासो बेदर्दी,
हरयै बाँस की पौरी मांही,
कितणी तूं मस्ती भरदी,
यो मनड़ो तत्रै भूल ना पायो,
कैसी मोहिनी डारी है ॥

●

नख बेसर कुण्डल कानां मं,
चित्तवन तेरी बांकी है,
कुञ्ज बिहारी नटनागरिया,
कैसी सुन्दर झांकी है,
ई नाजुकड़े दिल पर तेरी,
छाप लगी सरकारी है ॥

◆

श्यामबहादूर 'शिव' कानी भी,
मीठी नजरां फैंक ज़रा,
आँख्यां सेती आँख मिलाले,
क्यूँ तरसावै देख ज़रा,
नाच नचावै बैण बजावै,
तूं बेजोड़ मदारी है ॥

◆◆◆◆◆

श्रद्धेय शिवचरणजी भीमराजका 'शिव'
द्वारा 'फूल तुम्हें भेजा है खत में' गीत
की तर्ज पर रचित अनुपम रचना ।

◆◆◆◆◆



॥ श्री याम सेवा संघ समिति ॥



॥ श्री योग इन्द्रिय नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षीय वर्ष

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



मोहन कैया मीट लगाई, थारी दासी मीरां बाई,
ठाड़ी दूध कटोरो ल्याई, पीलै कान्हूड़ा ॥

७

कुरला दातण सैं कर लिन्या,
मळ-मळ नुहा आप नै दीन्या,
म्हांसै देरी जाय सही ना, पीलै कान्हूड़ा ॥



८

थारा नित की लाड लडाऊँ,
रुस्योड़ा गोपाल मनाऊँ,
ऊबी आँसूड़ा ढळकाऊँ, पीलै कान्हूड़ा ॥

९

मिसरी सिट्टेदार मिलाई,
पत्ती केशर की दे ल्याई,
ऊपर लच्छेदार मळाई, पीलै कान्हूड़ा ॥

१०

बेगो पीले तो मैं जाऊँ,
जाकर मोहन भोग बणाऊँ,
थानै पंखो ढोक जिमाऊँ, पीलै कान्हूड़ा ॥

११

करुणा सुण करकै गिरधारी,
गटगट पीग्या दूध मुरारी,
'शिव' मीरां हर की प्यारी, पीलै कान्हूड़ा ॥

१२

श्रद्धेय स्व. शिवचरण जी भीमराजका 'शिव'
द्वारा राजस्थानी गीत 'धरती धोरां री' की तर्ज
पर रचित अनुपम रचना ।



मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षीय वर्ष



†श्री श्याम सेवा संघ समिति†



एक बार हमसे साँवरे, नजरें मिलाइये,
नजरें मिलाके श्याम, ज़रा मुस्कुराइये ॥



नजरें हमारी आपकी चौखट पे हैं लगी,
कबसे निहारें राह बिचारी खड़ी-खड़ी,
नज़रों पे कर रहम इन्हें, ना सताइये ॥

एक बार हमसे साँवरे.....



ये जानकर भी आप यहीं आस-पास हैं,
फिर भी समझ ना आये ये दिल क्यूँ उदास है,
जज्बात दिल के जान ज़रा, पास आइये ॥

एक बार हमसे साँवरे.....



दिल को तो हमने आपके चरणों में रख दिया,
दुनिया हमारी आप हैं इतना समझ लिया,
अब आप अपने हाथ से, इसको सजाइये ॥

एक बार हमसे साँवरे.....



प्रहलाद सा बनूँ प्रभु हनुमत सी भक्ति हो,
गाऊँ भजन मैं झूम के मीरां सी मस्ती हो,
'नन्द' गले से अपने, गले तो लगाइये ॥

एक बार हमसे साँवरे.....



श्री नन्दकिशोर जी शर्मा 'नन्द' द्वारा 'जब
हम सिमटके आपकी' गीत की तर्ज पर
रचित भावपूर्ण रचना ।



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



है मुरलीमनोहर मेरा, मैं हूँ मुरलीमनोहर का,
दिलदार कन्हैया मेरा, मैं हूँ याचक इसी दर का ॥



वो जान-ए-जिगर है मेरा, मेरा यार पुराना है,
हूँ दर्द का मारा मैं, दिले हाल सुनाना है,
मेरा तो ठिकाना यही,
हूँ भिखारी इसी दर का ॥ है मुरलीमनोहर



॥ श्री योर हनुमते नमः ॥

नहीं रिश्ता है उससे नया, कई जन्मों का नाता है,
अटकी हुई गाड़ी को, मेरी वो ही चलाता है,
क्या हाले बयां मैं करूँ,
ये तन-मन है दिलवर का ॥ है मुरलीमनोहर



मुस्कान मधुर का ही, दिल मेरा दीवाना है,
मेरा हमदम मेरी आरजू, ये मेरा आशियाना है,
अपनी मस्ती का मस्ताना,
ये पहचान है गिरधर का ॥ है मुरलीमनोहर



'शिव' श्यामबहादुर का, अंदाज अनूठा है,
हँस के उस रंगीले ने, इस दिल को लूटा है,
जायेगा कहाँ उड़कर,
पंछी है ये बिना पर का ॥ है मुरलीमनोहर



श्रद्धेय स्व. शिवचरण जी भीमराजका 'शिव'
द्वारा 'बहना तेरी डोली को' गीत की तर्ज पर
रचित अनुपम रचना ।



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



साँवरा तेरा जलवा निराला,
मैं तड़फता रहा,
मुस्कुरा के कलेजा निकाला ॥

मेरी फरियाद बाँसुरिया वाला,
चाँद ढलता रहा,
तूने फिर भी इसे ना सम्हाला ॥
साँवरा तेरा जलवा निराला.....

साथ मेरा वो तेरा गोपाला,
यूँ ही छलता रहा,
क्युँ ना आया तूं मेरा रुखाला ॥
साँवरा तेरा जलवा निराला.....

तेरे रुख ने मुझे मार डाला,
मैं दीवाना बना,
पी के मस्ती की दो बूँद हाला ॥
साँवरा तेरा जलवा निराला.....

मार ली श्यामबहादुर ने बाजी,
नाचने 'शिव' लगा,
खिलखिलाके हँसा खाटूवाला ॥
साँवरा तेरा जलवा निराला.....

हसनपुरा, ०९
श्रद्धेय शिवचरणजी भीमराजका
'शिव' द्वारा 'हम तुम्हें चाहते हैं ऐसे'
गीत की तर्ज पर रचित सुप्रसिद्ध
भावपूर्ण रचना ।



॥ श्री गणेशाय नमः ॥



॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा



श्री श्वामरेण संग्रहालय

तेरा नाम हमने, जब भी लिया है,
कसम खाके कहता हूँ, सबकुछ मिला है ॥

जब भी मैं भटका, तुमने सम्हाला,
अंधेरों से बाबा, तुमने निकाला,
साथ हो मेरे हरदम, भरोसा दिया है ॥
तेरा नाम हमने, जब.....

किरपा हुई तो, रूठा ज़माना,
परवाह करे क्यों, तेरा दीवाना,
जा करता जो कुछ, तुमने किया है ॥
तेरा नाम हमने, जब.....

1

तुमसे है बाबा, पहचान मेरी,
तुझमें बसी है अब तो, ये जान मेरी,
कृपा जो तुमने मुझको, अपना लिया है ॥
तेरा नाम हमने, जब.....

A decorative graphic at the bottom right corner featuring two dark silhouettes of maple leaves flanking a central circular element.

श्री पंकज अग्रवाल द्वारा राजस्थानी भजन
'कुण सुणैलो, कीनै सुणाऊँ' की तर्ज पर
रचित अनपम रचना ।

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

फेरूँ तेरी याद आई रे, मतवाला साँवरिया,
इण की नाही दवाई रे, मतवाला साँवरिया ॥

च्यारूं तरफ तेरी चरचा घणेरी,
मिलणै की मनस्यां बड़ी श्याम मेरी,
सोई प्रीत जगाई रे, मतवाला साँवरिया ।
इण की नाही दवाई रे, मतवाला साँवरिया ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

मोहन निराली तुम्हारी छटा है,
इस दिल से पूछो तुम्हे क्या पता है,
कैसी तूं आग लगाई रे, मतवाला साँवरिया ।
इण की नाही दवाई रे, मतवाला साँवरिया ॥

परदा तुम्हे अब हटाना पड़ेगा,
वादा किया वो निभाना पड़ेगा,
राखि भोत समाई रे, मतवाला साँवरिया ।
इण की नाही दवाई रे, मतवाला साँवरिया ॥

रोता हूँ मैं तूं हँसे जा रहा है,
सीने को मेरे डसे जा रहा है,
होसी आज लड़ाई रे, मतवाला साँवरिया ।
इण की नाही दवाई रे, मतवाला साँवरिया ॥

दीवानी अँखियां मनाऊँ ना मानें,
घायल जी गति तो घायल ही जाने,
'काशी' खूब निभाई रे, मतवाला साँवरिया ।
इण की नाही दवाई रे, मतवाला साँवरिया ॥

श्रद्धेय स्व. काशीरामजी शर्मा द्वारा सुप्रसिद्ध भजन 'खाटू के बाबा श्यामजी, मेरी रखोगे
लाज' की तर्ज पर रचित अतिप्राचीन रचना ।

ॐ श्याम सेवा संघ समिति

तेरे दर पे आ गये हैं, हे श्याम अब सम्हालो,
कर जोड़ प्रार्थना है, चरणों से अब लगालो ॥

तुम से बड़ा दयालु, जग में ना कोई दूजा,
तुमसे मिला ये जीवन, करते हैं तेरी पूजा,
सौंपी है तुमको नैया, पतवार तुम उठालो ॥
तेरे दर पे आ गये हैं

चर्चे तेरी दया के, हमने सुने हैं दाता,
तेरे सिवा दयालु, और कुछ हमें ना भाता,
रहमत को अपनी बाबा, हम पर ज़रा लुटालो ॥
तेरे दर पे आ गये हैं

चौखट पे तेरी हमने, रखदी है अपनी अर्जी,
मानो ना मानो बाबा, आगे तुम्हारी मर्जी,
विश्वास है ये 'शिव' का, हमसे भी अब निभालो ॥
तेरे दर पे आ गये हैं

**श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा 'मौसम
है आशिकाना' गीत (पागल बना दिया है, मुरली ने तेरी मोहन) की
हतर्ज पर रचित रचना ।**

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

म्हानै बाबा आस थारी,
छोटी सी अरदास म्हारी,
म्हारा बापजी, सिर पे रखीजे हाथ,
म्हारा श्यामजी, सिर पे रखीजे हाथ ॥



॥ श्री यामशाल नमः ॥



॥ श्री योर हनुमते नमः ॥

ये ही बाबुल ये ही मायड़,
म्है बाबाजी थारा टाबर,
दौड्यो-दौड्यो जद मैं आऊँ,
थोड़ो सो मैं लाड चाहूँ,
म्हारा बापजी, सिर पे रखीजे हाथ,
म्हारा श्यामजी, सिर पे रखीजे हाथ ॥

सोणी सी लगे थारी हवेली,
थारा प्रेमी संगी सहेली,
खेलूं-कूदूं मैं तो डोलूं
थांसै बाबा इतनो बोलूं
म्हारा बापजी, सिर पे रखीजे हाथ,
म्हारा श्यामजी, सिर पे रखीजे हाथ ॥

नगरी में थारी मौज घणेरी,
चौखी सी लागे गलियां तेरी,
थारो अंगणों छोड़ कैया,
थांसै मैं मुख मोड़ूँ कैया,
म्हारा बापजी, सिर पे रखीजे हाथ,
म्हारा श्यामजी, सिर पे रखीजे हाथ ॥

ग्यारस की ग्यारस मिलबा नै आऊँ,
'रोमी' कहै जद लौट के जाऊँ,
छूटे जद भी नगरी थारी,
आंख्या भर-भर आवै म्हारी,
म्हारा बापजी, सिर पे रखीजे हाथ,
म्हारा श्यामजी, सिर पे रखीजे हाथ ॥

श्री हरमहेन्द्रपाल सिंह 'रोमी' द्वारा रचित
भावपूर्ण रचना । तर्ज - स्वरचित (ओळ्यू)

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की शुभ वर्षी

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

जो भी फर्माओगे, मुझे बतलाओगे,
वो ही करूँगा मैं काम, सेवक हूँ आपका ॥

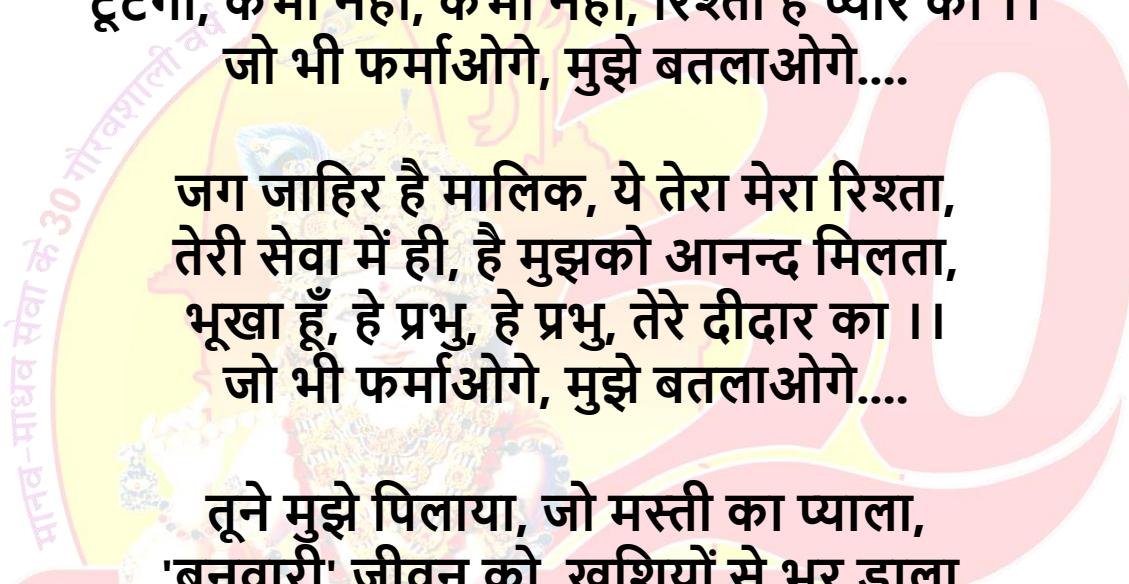


॥ श्री याम नमः ॥



॥ श्री योग नमः ॥

तूं है मेरा मालिक, और मैं हूँ सेवक तेरा,
इसीलिए तो तुम पर, बनता गई हक्क मेरा,
दृटेगा, कभी नहीं, कभी नहीं, रिश्ता है प्यार का ॥
जो भी फर्माओगे, मुझे बतलाओगे....



जग जाहिर है मालिक, ये तेरा मेरा रिश्ता,
तेरी सेवा में ही, है मुझको आनन्द मिलता,
भूखा हूँ, हे प्रभु, हे प्रभु, तेरे दीदार का ॥
जो भी फर्माओगे, मुझे बतलाओगे....

तूने मुझे पिलाया, जो मस्ती का प्याला,
'बनवारी' जीवन को, खुशियों से भर डाला,
मिलता है, इसीलिए, प्यार इस, सारे जहान का ॥
जो भी फर्माओगे, मुझे बतलाओगे....

हसनपुरा, जयपुर

श्री जयशंकर चौधरी 'बनवारी' द्वारा 'जे हम तुम
चोरी से' गीत की तर्ज पर रचित लोकप्रिय भजन ।

ॐ श्याम सेवा संघ समिति ॥

खाटूवाले मुझे बुलाले, ये मेरी अरदास,
श्याम मंजूर करो ॥

खाटू है प्रभु धाम तेरा, रटता हूँ मैं नाम तेरा,
भक्तों के मन को मोहे, ऐसा रूप है श्याम तेरा,
हम सेवक विनती करते हैं, करो हृदय में वास ।
श्याम मंजूर करो ॥ खाटूवाले मुझे



जिसने तेरा नाम जपा, उसका आवागमन मिटा,
प्रेम भाव से नाम लिया, जन्म-जन्म का पाप कटा,
जगदाधार तुम्ही हो भगवन, करो भक्ति प्रकाश ।
श्याम मंजूर करो ॥ खाटूवाले मुझे

भवभंजन दुखहार तूँही, कलयुग का अवतार तूँही,
सबका है करतार तूँही, निराकार-साकार तूँही,
बाबा श्याम करूँ मैं विनती, रहूँ चरण का दास ।
श्याम मंजूर करो ॥ खाटूवाले मुझे

आया हूँ मैं शरण तेरी, रखो लाज अब श्याम मेरी,
'मातृदत्त' यह अरज़ करी, सदा करो प्रतिपाल हरी,
चरण कमल का लिया आसरा,
मन की मिटादो त्रास ।
श्याम मंजूर करो ॥ खाटूवाले मुझे

श्रद्धेय स्व. (वैद्य) मातृदत्त जी शर्मा भिवानी वालों द्वारा
सुप्रसिद्ध भजन 'गाड़ीवाले मन्त्र बिठाले' की
तर्ज पर रचित अतिप्राचीन रचना ।

ॐ श्याम सेवा संघ समिति

लीलो तो घोड़ो श्यामजी, लेकर कै चाल्या जी,
कोई भगतां देख सरायो बाबा श्यामजी,
मनड़ो हरसायो जी ॥



॥ श्री गणेशाय नमः ॥



॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

खाटू सैं चलकर बाबो, भगतां कै आयो जी,
कोई ग्यारस रात जगाई, बाबा श्यामजी,
ज्योत सवाई जी ॥ लीलो तो घोड़ो श्यामजी

ठुमक-ठुमक बाबो, घुड़लो नचावै जी,
कोई भगतां रो मान बढ़ायो, बाबा श्यामजी,
चाव घणेरो जी ॥ लीलो तो घोड़ो श्यामजी

नित उठ दर्शन बाबा, श्याम का करस्यां जी,
कोई थारो नाम सुमरस्यां, बाबा श्यामजी,
छवि दिखाओ जी ॥ लीलो तो घोड़ो श्यामजी

करकै तैयारी बाबो, भगतां कै आओ जी,
कोई रिद्ध-सिद्ध साथ मं ल्याओ, बाबा श्यामजी,
कष्ट मिटाओ जी ॥ लीलो तो घोड़ो श्यामजी

राजस्थानी गीत 'पीछो तो ओढ़ सुहागण'
(आँख्यां को काजळ थारै, होठां की लाली जी)
की तर्ज पर रचित अतिप्राचीन भावपूर्ण रचना ।
लेखक - अज्ञात ।

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

बाबा जब भी जिसने, तेरा नाम पुकारा है,
तूने उस जीवन को, हाथों से सँवारा है ॥

□

सूरज को निगल करके, अभिमान को दूर किया,
सोने की लंका जला, पल में यूँ खाक किया,
सुध सीता की लाके, इस जग को उबारा है ॥
तूने उस जीवन को, हाथों से....



लगी शक्ति लक्ष्मण को, मूर्छित होकर वो पड़े,
दुविधाओं के बस में, रघुवर श्रीराम खड़े
तब संजीवन के लिए, तेरा नाम पुकारा है ॥
तूने उस जीवन को, हाथों से....

□

कृष्ण ओ अर्जुन संग में, कुरुक्षेत्र सजाया था,
अपने बल पौरुष से, उस रथ को बचाया था,
तब भगवन ने तुमको, माना रखवाला है ॥
तूने उस जीवन को, हाथों से....

मानव-माधव सेवा के 30 गोरक्षाली वर्ष

श्री श्याम सेवा संघ समिति
यश-वैभव भी चाहें, तुमसे ओ बजरंगी,
तुम में ही रंग जाये, चंचल मन बहुरंगी,
हम निर्बल भक्तों को, तेरा ही सहारा है ॥
तूने उस जीवन को, हाथों से....

□ □ □

'टूटे हुये ख्वाबों ने, हमको ये सिखाया है' गीत
की तर्ज पर रचित अतिप्राचीन भावपूर्ण रचना ।

लेखक - अज्ञात ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

कन्हैया से रिश्ता, पुराना बहुत है,
ये उल्फत बुरी है, रिझाना बहुत है ॥

□

ना कुछ बोल पाऊँ, ना दिल खोल पाऊँ,
तेरी रुख पे कुर्बान, दिलो-जां लुटाऊँ,
सुनायें तुम्हें क्या, फसाना बहुत है ॥
कन्हैया से रिश्ता पुराना.....



प्रानव-माधव सेवा के 30 गोरक्षाली वर्ष

निभाना जरूरी है, कैसे निभेगी,
तेरी याद मुझको क्या, जीने ना देगी,
ये बेदर्दे तेरा, ज़माना बहुत है ॥
कन्हैया से रिश्ता पुराना.....

□

तेरा दूर रहना, नहीं रास आता,
ये कह भी रहा हूँ, और कह भी ना पाता,
पता तूं तेरा, मेरा ठिकाना बहुत है ॥
कन्हैया से रिश्ता पुराना.....

ज़रा श्याम बहादुर, झलक 'शिव' दिखाओ,
मिलाकर नजर, साँवले मुस्कुराओ,
खुशी का तूं मेरा, खजाना बहुत है ॥
कन्हैया से रिश्ता पुराना.....

□ □ □

श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी भीमराजका
'शिव' द्वारा 'मुहब्बत की झूठी कहानी
पे रोये' गीत की तर्ज पर रचित रचना

□ □ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

मैं हूँ शरण में तेरी, संसार के रचैया,
किश्ती मेरी लगादो, उस पार ओ कन्हैया ॥

□

मेरी अरदास सुन लीजै, प्रभु सुध आन कर लीजै,
दरश एक बार तो दीजै, मैं समझूँगा श्याम रीझै,
पतवार थाम लो तुम, मझधार में है नैया ॥
मैं हूँ शरण में तेरी, संसार के



भगत बेचैन है तुम बिन, तरसते नैन हैं तुम बिन,
अँधेरी रैन है तुम बिन, कहीं ना चैन है तुम बिन,
है उदास देखो तुम बिन, गोपी-ग्वाल-गैया ॥
मैं हूँ शरण में तेरी, संसार के

□

दयानिधि नाम है तेरा, कहाते हो अन्तर्यामी,
समाये हो चराचर में, सकल संसार के स्वामी,
नमामि-नमामि हरदम, बृजधाम के बसैया ॥
मैं हूँ शरण में तेरी, संसार के

□

तेरी यादों का मनमोहन,
ये दिल में उमड़ा है सावन,
बुझेगी प्यास इस दिल की,
सुनुँगा जब तेरा आवन,
पांवां पतित को करना, जगदीश ओ कन्हैया ॥
मैं हूँ शरण में तेरी, संसार के

□ □ □

'मैं ढूँढता हूँ जिनको, ख्वाबों में ख्यालों में गीत की
तर्ज पर रचित अतिप्राचीन भावपूर्ण रचना ।

लेखक - अज्ञात ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

कन्हैया रुलाते हो, जी भर रुलाना,
मगर आँसूओं में, नजर तुम ही आना ॥

□

तुम्हारे हैं ये चाँद, तारे हँसाओ,
तुम्हारे ही हैं ये, नज़ारे हँसाओ,
दशा पर मेरी चाहे जग को हँसाना,
मगर उस हँसी में, नजर तुम ही आना ॥
कन्हैया रुलाते हो, जी भर....



प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षीय व्रत

ये रो-रो के कहते हैं, तुमसे पुजारी,
क्यों फरियाद सुनते, नहीं तुम हमारी,
दया के समन्दर दया तुम दिखाना,
मगर उस दया में, नजर तुम ही आना ॥
कन्हैया रुलाते हो, जी भर....

□

हो कितनी ही विपदा, ना विश्वास टूटे,
लगन श्याम चरणों की, मन से ना छूटे,
भले ही अनेकों पड़ें जन्म पाना,
मगर हर जन्म में, नजर तुम ही आना ॥
कन्हैया रुलाते हो, जी भर....

□ □ □

'तुम्ही मेरे मंदिर, तुम्ही मेरी पूजा' गीत की
तर्ज़ पर रचित अतिप्राचीन भावपूर्ण रचना ।

लेखक - अज्ञात ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

फागण मास सुहाणो आयो,
खाटूवालै के मन भायो,
भगतां खाटू मांही आयो,
थानै न्यूतो छै, थानै न्यूतो छै ॥

□

देखो खूब सजै सिणगार,
लागै बाबै को दरबार,
होवै अन्तर की बौछार, थानै न्यूतो छै ।
बाबो सिंघासन पर साजै,
ढोलक-झाङ्गा-मजीरा बाजै,
सेवक मगन होय कर नाचै, थानै न्यूतो छै ॥

□

दुखिया दर्द मुणावै आके,
रोगी तन की भिक्षा मांगै,
निर्धन धन की कामना राखै, म्हरै बाबा सैं ।
थे भी थारा कट्ट मिटाल्यो,
ऐं सैं मन चाया वार पाल्यो,
इक बर बाबा सैं बतळाल्यो, थानै न्यूतो छै ॥

□

बाबो ऐसो है दातारी,
यांकी लीला अदभुत न्यारी,
यांको ध्यान धरै संसारी, थानै न्यूतो छै ।
मनवा दो पल श्याम सुमिरले,
अपणी बुद्धि निर्मल करले,
बैतरणी सैं पार उतरले, थानै न्यूतो छै ॥

□ □ □

राजस्थानी गीत 'धरती धोरां री' की
तर्ज पर आधारित अति प्राचीन रचना ।

लेखक - अज्ञात ।

□ □ □ □ □ □ □ □



॥ श्री गणेशाय नमः ॥



॥ श्री वैष्णवत्मके नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 गोवकशाली वर्ष

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

करके श्यामधणी को ध्यान,
मिलके करल्यो खड़या निशान ॥

□

यो फागण मेळो अलबेलो, ऐंकी रंगत न्यारी रे,
मोटो है दरबार श्याम को, खाटू के दरम्यान ॥
करके श्यामधणी को ध्यान.....



रंग-बिरंगी ध्वजा श्याम की, आसमान नै चूमै रे,
मकराणे को मंदिर जैंको, सोहवै आलीशान ॥
करके श्यामधणी को ध्यान.....

□

एक स्वर मं बोलो जैकारो, दसों दिशा मं गूंजै रे,
जिणनै सुणके बाबाजी का, ऊबा होज्या कान ॥
करके श्यामधणी को ध्यान.....

□

ढोलक-ढपली-झाँझा-मजीरा, बाजौ चंग बिलाला रे,
नाचा-कूदी करो प्रेम सें, बाबा को गुणगान ॥
करके श्यामधणी को ध्यान.....

□

'शिव' सैलाणी श्यामदेव कै, लाम्बी धोक लगावै रे,
पीड़ा मेटै दर्द समेटै, सर्व गुणां की खान ॥
करके श्यामधणी को ध्यान.....

□ □ □

श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव'
द्वारा रचित धमाल ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □



मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वृत्ति



ॐ श्री श्याम रसेवा संघ "समिति"

□ □ □ □ □ □ □ □

बाबा के मेले चालो जी, खाटू मं,
टिकट कटाल्यो थे तो बेगा-बेगा चालो,
देखो बाबो दे रहयो झालो जी, खाटू मं ॥

□

खाटू मांही मस्ती बरसै,
ई मस्ती नै देव भी तरसै,
सब मिलकर घूमर घालो जी, खाटू मं ॥
बाबा के मेले चालो जी.....



प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

थारा दुःख-संताप मिटावै,
सगळा संकट दूर भगावै,
यो शं भगतां को रखवालो जी, खाटू मं ॥
बाबा के मेले चालो जी.....

□

श्यामधणी नै जाय रिझाल्यो,
थारा सोया आग्य जगाल्यो,
भाया खुलै करम को ताळो जी, खाटू मं ॥
बाबा के मेले चालो जी.....

□

भर-भर मुट्ठी श्याम लुटावै,
माँगण सें पहल्यां मिल जावै,
ऐं को है दरबार निरालो जी, खाटू मं ॥
बाबा के मेले चालो जी.....

□

'बिन्नू' तूं जल्दी सें हाँ कर,
पड़ज्या श्याम चरण मं जाकर,
तेरो घर को मिटै कसालो जी, खाटू मं ॥
बाबा के मेले चालो जी.....

□ □ □

श्री बिनोद जी गाडोदिया 'बिन्नू' द्वारा
'खाटू' को श्याम रंगीलो रे' भजन की
तर्ज पर रचित रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □

महीनो फागण को साँवरिया,
इकबर नैण मिलालै रे,
नैण मिलालै रे मनगरिया,
नैण मिलालै रे ॥



॥ श्री याणशाय नमः ॥



॥ श्री योर हनुमते नमः ॥

थोड़ो सो हिमलास देवै तं
जद क्यूँ ही रंगत आवै रे,
पीड़ न जाणै प्रीत पुराणी,
श्याम निभाले रे ॥

मन मं चाव लगन मिलणै की,
तूँ बनड़ो बण बैठ्यो रे,
घडी स्यात तो ऐं दरदी सैं,
भी बतळाले रे ॥

तूँ तो ढील सदा सैं देवै,
मेरै सबर नहीं आवै रे,
ईं बाल्किये सैं भी तो क्यूँ
हेत दिखालै रे ॥

हसनपुरा, जयपुर
श्यामबहादुर दास श्याम को,
सारी दुनिया जाणै रे,
'शिव' रोक्लै-बैदे मं बेगो,
काम पटाले रे ॥

□ □ □

श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी भीमराजका
'शिव' द्वारा रचित धमाल ।

□ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्यामरसेवा संघ "समिति"

□ □ □ □ □ □ □ □ □

आई भगतां की टोळी की टोळी,
खाटू के दरबार ॥

□

नाच-नाच कर भजन सुणावै,
बाबा का जयकारा जी,
ई रंग मांही रंग ज्यावै तो,
फीको सब संसार ॥
आई भगतां की टोळी.....



प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

केसरिया कुरता और धोती,
फैटा रंग गुलाबी जी,
रंग बिरंगा झांडा फहरै,
मन मं हरष अपार ॥
आई भगतां की टोळी.....

□

कई जणा देवै दंडौती,
नाक रगड़ता आवै जी,
श्यामधनी की लगी कचेड़ी,
सबकी सुणे पुकार ॥
आई भगतां की टोळी.....

□

मोटो नाम श्यामसुन्दर को,
मोटो सेठ कहावै जी,
सांचै मन सें याद करै तो,
त्याम ना लागै बार ॥

आई भगतां की टोळी.....

□

श्यामबहादुर श्यामदेव को,
दास बड़ो अलबेलो जी,
'शिव' चरणां को दास सदा सें,
श्याम नाम आधार ॥
आई भगतां की टोळी.....

□ □ □

श्रद्धेय स्व. शिवचरण जी श्रीमराजका
'शिव' द्वारा रचित 'धमाल' ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □

बाबा श्याम को म्है प्रेम सें,
निशान ल्याया रे ॥

□

बालक बूढ़ा वीर गाबरु,
सबकै चाव घणेरो रे,
पहन बसंती चोला सेवक,
बोल्या आया रे ॥

□

लहर-लहर लहराता आवै,
ये निशान अलबेला जी,
खाटुवाळा श्यामधणी की,
मोटी माया जी ॥

□

बाजै चंग-नगड़ा मिलकै,
गावै राग सुरंगी जी,
रंग रंगीला फैटा केसर,
तिलक लगाया जी ॥

□

अपनी धुन मं मगन होयकर,
भगतां घालै फेरी जी,
देख निशान धणी का सबका,
मन हर्षाया जी ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

श्यामबहादुर खाटुवाळो,
श्याम बड़ो सैलाणी जी,
हस श्याम मंडल का टाबरिया,
'शिव' हर जस गाया जी ॥

□ □ □

श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी भीमराजका
'शिव' द्वारा रचित धमाल ।

□ □ □ □ □ □ □ □

॥ श्री श्याम सेवा संघ "समिति" ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

पाछां जातां साँवरा, म्हारो जी दुःख पावै रे,
मुङ-मुङ के देखूं रे, मुङ-मुङ के देखूं रे,
मुङ-मुङ के देखूं रे, दिलदार साँवरा ॥

□

नैना निगोड़ा थांसै, जद सैं मिलाया जी,
साँची-साँची बोलूं म्है, सुध बिसराया जी,
ओळ्यूं थारी आवै रे, ओळ्यूं थारी आवै रे,
ओळ्यूं थारी आवै रे, दिलदार साँवरा ॥



पाछां जातां साँवरा, म्हारो.....

□

मिलबा नै थांसै बाबा, आँ घणै चाव सै,
मंदिर मं धोक लगाऊँ, मैं तो बड़े भाव सैं,
देख म्हानै मुळकै तूं देख म्हानै मुळकै रे,
देख म्हानै मुळकै तूं दिलदार साँवरा ॥

पाछां जातां साँवरा, म्हारो.....

□

जी म्हारो चाहवै थानै, साथीड़ो बणाऊँ जी,
बाँह पकड़के सागै, मैं तो ले जाऊँ जी,
थानै रिझाऊँ जी, भजन सुणाऊँ मैं,
थानै रिझाऊँ जी, दिलदार साँवरा ॥

पाछां जातां साँवरा, म्हारो.....

□

प्रेम डोरी कदे ना, तोड़ियो साँवरिया,
हाथ म्हारो कदे ना, छोड़ियो साँवरिया,
रुस मत ज्याजो रे, भूल मत ज्याजो जी,
रुस मत ज्याजो रे, दिलदार साँवरा ॥

पाछां जातां साँवरा, म्हारो.....

□

'रोमी-चोखानी' री, आँख भर आई रे,
'रजनी' री लाज राखज्यो, लेवां म्है बिदाई रे,
ओज्यूं बुलाज्यो रे, फेर थे बुलाज्यो,
ओज्यूं बुलाज्यो रे, दिलदार साँवरा ॥

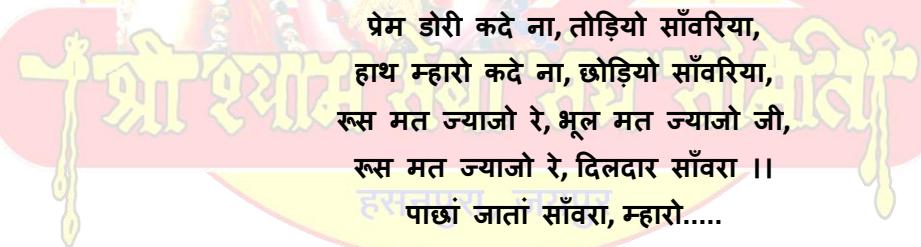
पाछां जातां साँवरा, म्हारो.....

□ □ □

श्री प्रमोद चौखानी, श्री हरमहेन्द्रपाल सिंह 'रोमी' एवं श्रीमती रजनी राजस्थानी
द्वारा 'झीणी-झीणी चांदणी मं, ओळ्यूं आवै रे' गीत की तर्ज पर रचित अनुपम रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की उम्मीद



॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

साँवरिया आपां होळी खेलां जी,
फागणियो आय गयो, साँवरिया गिरधारी ॥

□

साँवरिया थानै, रंग मं रंग देस्यां जी,
थारे भर-भर कर मारां, म्है रंग की पिचकारी ॥
साँवरिया आपां होळी खेलां जी.....

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

□

ढपली पर थानै, नाच नचास्यां जी,
पग बाँध देवां घुंघरू, साँवरिया गिरधारी ॥
साँवरिया आपां होळी खेलां जी.....

□

थारी बंशी बाजै, राधिका नाचै जी,
थारा भगतां भी नाचै, दे-दे करके ताळी ॥
साँवरिया आपां होळी खेलां जी.....

□

बंशी पर थानै, भजन सुणास्यां जी,
'बनवारी' चरणां पर, मैं जाऊँ बलिहारी ॥
साँवरिया आपां होळी खेलां जी.....

श्री जयशंकर चौधरी 'बनवारी' द्वारा राजस्थानी गीत 'बाई सा रा बीरा,
जैपुरियै जाज्यो जी' की तर्ज पर रचित सुप्रसिद्ध रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



॥ श्री यामशाल्य नमः ॥



॥ श्री योग हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 गाँवसाली वर्ष

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □
तेरे दिल से अपने दिल को जोड़ लिया है,
बाकी सबकुछ बाबा तुझपे, छोड़ दिया है ।

क्या देना है, क्या ना देना, तूं जाने,
मैंने इसकी चिंता से मुँह मोड़ लिया है ॥

तुझपे भरोसा है किया, तेरा ही सहारा है,
आँधी समय की लाख चले, आधार तुम्हारा है ।
मैंने सुना तूं साँवरे, हारे का सहारा है,
तेरी शरण में जो रहे, वो कभी ना हारा है ।
हार-जीत का फन्दा मैंने, तोड़ दिया है,
बाकी सबकुछ बाबा तुझपे छोड़ दिया है ॥

तेरी दया की दौलत ही है, हीरे और मोती,
देखूँ तुझे देदी है तूने, आँखों को ज्योति ।
मुझको नहीं ये ज्ञान, मुझमे क्या तूने देखा,
प्रेमी बनूँ तेरा मैं तूने, खींची वो रेखा ।
लालच की हाँड़ी को मैंने, फोड़ दिया है,
बाकी सबकुछ बाबा तुझपे छोड़ दिया है ॥

होता वही जो मर्जी तेरी, सारे हैं कहते,
फिर भी ना जाने क्यूँ सभी, किस खवाब में रहते,
इतना ही माँगूँ आपसे, छूटे ना चाकरी,
चौखट पे तेरी निकले मेरी, सांस आखिरी ।
'चौखानी' ने चंचल मन को, झिंझोड़ दिया है,
बाकी सबकुछ बाबा तुझपे छोड़ दिया है ॥

ॐ
श्री प्रमोद चौखानी द्वारा 'दूल्हे का सेहरा सुहाना लगता है' गीत की
तर्ज पर रचित अनुपम रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



॥ श्री यामशाय नमः ॥



॥ श्री योर हनुमते नमः ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

तुम झोली भरलो भक्तों, रंग और गुलाल से,
होली खेलांगा आपां, गिरधर गोपाल से ॥

कोरे-कोरे कलश मंगाकर, उनमे रंग घुलवाना,
लाल-गुलाबी नीला-पीला, केसर रंग घुलवाना,
बच-बचके रहना उनकी, टेढ़ी-मेढ़ी चाल से ॥
होली खेलांगा आपां.....

लायेंगे वो संग में अपने, ग्वाल-बाल की टोली,
मैं भी रंग-अबीर मलूँगा, और माथे पे रोली,
गायेंगे फाग मिलके, झींका-खड़ताल से ॥
होली खेलांगा आपां.....

श्याम पिया की बजे बाँसुरिया, ग्वालों के मंजीरे,
चंग बजावै ललता नाचे, राधा धीरे-धीरे,
गाँऊँगा भजन सुहाने, मैं भी सुर-ताल से ॥
होली खेलांगा आपां.....

□ □ □

'ये गोटेदार लहंगा, निकलूँ जब डाल के' गीत की तर्ज पर रचित
अति प्राचीन, सुप्रसिद्ध रचना । लेखक - अजात ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

हसनपुरा, जयपुर

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

घूँघरवाला बाल, शीश पर साफो करै कमाल,
ध्वजाबंध धारी कै ।
केसर कुमकुम भाल, द्वार पर दर्दी करै सवाल,
ध्वजाबंध धारी कै ॥



॥ श्री यामशाय नमः ॥



॥ श्री योर हनुमते नमः ॥

हो केशरिया बागे मांही, बालाजी कै सागे मांही,
लागे तूं सुहावणो,
कमर कटारी सोहै, बाल ब्रह्मचारी मोहै,
मेरे मन भावणो,
अहिलवती को लाल, नहीं कोई ऐसो दीनदयाल,
शरण गिरधारी कै ॥ घूँघरवाला बाल

सुघड़ शरीर ऐसो, बाँको है वीर ऐसो,
बड़ो मजेदार है,
तीन लोक जाणे ऐनै, नाम सैं पिछाणे ऐनै,
श्याम सरकार है,
भगतां को प्रतिपाल, बिराजै गळ वैजयन्ती माल,
कृष्ण अवतारी कै ॥ घूँघरवाला बाल

श्यामबहादुर मन को, उजलो है कारो तन को,
लीलै को सवार है,
यादां करतां ही आवै, 'शिव' नै गळै लगावै,
करै ना ऊवार है,
दरशन सैं करै निहाल, दास नै करदे मालामाल,
हूँ बस तेरी यारी कै ॥ घूँघरवाला बाल

श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा 'सिर पर टोपी लाल, हाथ में रेशम का रुमाल, हो तेरा
क्या कहना' गीत की तर्ज पर रचित अनुपम रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □

माता अंजनि के ओ लाडले,
हाजरी तूं मेरी माँड ले,
दीन-दुखियों का साथी तूं ही,
मेरी पीड़ा नै तूं बाँट ले ॥

□

जाण के मेरै मन की व्यथा,
माफ़ करदे हुई जो खता,
हूँ चरण धू़ल बाला तेरी,
तेरे चरणों में मेरा पता,
गिर रहा हूँ मुझे डाट ले ।
हाजरी तूं मेरी माँड ले ॥

□

क्या रंगीला तेरा ठाठ है,
खा गया दिल मेरा मात है,
देना है तो दे दिल खोलकर,
बहुत लम्बे तेरे हाथ हैं,
दास की आस नित की फले ।
हाजरी तूं मेरी माँड ले ॥

□

तेरे दरबार में पहुँचकर,
मेरे दिल को जो राहत मिली,
मान लो सच ये बजरंग बली,
खिल गई मेरे मन की कली,
खेती हिवड़े की तूं लाट ले ।
हाजरी तूं मेरी माँड ले ॥

□ □ □

श्यामबहादुर की फरियाद है,
तेरा जलवा मुझे याद है,
तेरे चरणों में दुनिया मेरी,
राम के दास आबाद है,
'शिव' लगा आगड़ा ठाठ दें ।
हाजरी तूं मेरी माँड ले ॥

□ □ □

श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी श्रीमराजका
'शिव' द्वारा 'जिन्दगी की ना टूटे लड़ी'
गीत की तर्ज पर रचित हनुमत वन्दना

□ □ □ □ □ □ □



॥ श्री गणेशाय नमः ॥



॥ श्री वैष्णव हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

हसनप्पा जायर

ॐ श्री श्याम रसेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □

श्यामा श्याम सलोनी सूरत पर,
शृंगर बसन्ती है ॥

□

मोरमुकुट की लटक बसन्ती,
चन्द्र कला की चटक बसन्ती,
मुख मुरली की मटक बसन्ती,
सिर पर पेच श्रवण कुण्डल,
छविदार बसन्ती है ॥



प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

माथे चन्दन लगयो बसन्ती,
कटि पीताम्बर कस्यो बसन्ती,
मनमोहन मन बस्यो बसन्ती,
गल सोहे वनमाल फूलन को,
हार बसन्ती है ॥

□

कनक कडुला हस्त बसन्ती,
चले चाल अलमस्त बसन्ती,
पहन रहे सब वस्त्र बसन्ती,
रुणक-झुणक पग नूपुर की,
झान्कार बसन्ती है ॥

□

संग ग्वालन की टोल बसन्ती,
बाजे चंग-ढप-ढोल बसन्ती,
बोल रहे सब बोल बसन्ती,
सब ग्वालिन में राधेजू
सरकार बसन्ती है ॥

□

परम प्रेम परसाद बसन्ती,
लागै रसीलो स्वाद बसन्ती,
हो रही सब मर्याद बसन्ती,
काशीराम कहे श्याम,
श्याम को नाम बसन्ती है ॥

□ □ □

श्रद्धेय स्व. काशीरामजी शर्मा
द्वारा 'रसिया' तर्ज पर रचित
अद्भुत-अनुपम रचना ।

□ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री ईश्वामरसेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □

बाबा के सेवक बन बैठे,
अब डरने की कोई बात नहीं,
जो इनकी शरण में रहते हैं,
किस्मत में उनके रात नहीं ॥

□

हमें ऐसी बाती बना दो प्रभु,
जो तेरी कृपा से जलती रहे,
फिर उसको बुझादे आंधी कोई,
इतनी उसकी औकात नहीं ॥
बाबा के सेवक बन बैठे....

□

दुनिया चाहे कुछ भी करले,
जैसे जी चाहे खेले,
सच्चे प्रेमी जो बाबा के,
उन बंदो को कहीं मात नहीं ॥
बाबा के सेवक बन बैठे....

□

कलियुग का राजा है बाबा,
ये दुनिया है इनके दम से,
इनकी सेवा गर मिल जाये,
उससे बढ़कर सौगात नहीं ॥
बाबा के सेवक बन बैठे....

□ □ □

श्री पंकज अग्रवाल द्वारा सुप्रसिद्ध
भजन 'बजरंगबली मेरी नाव चली'
की तर्ज पर रचित अनुपम रचना
हसनपुर जयपुर

□ □ □ □ □ □ □ □



॥ श्री गणेशाय नमः ॥



॥ श्री वैष्णव हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

ॐ श्री ईश्वामरसेवा संघ समिति ॥

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

मैं ना बोलूँगा, मुँह ना खोलूँगा,
समझे तू अंसुवन की भाषा, मैं तो रो लूँगा ॥

□

बड़ी मनुहार करी, मगर तू ना आया,
हार कर नजराना, मैं आँसू का लाया,
आँसू की ये भेंट मेरी, स्वीकार करो बाबा,
चरण तुम्हारे इस धारा से, आज मैं धो दूँगा ॥
मैं ना बोलूँगा, मुँह ना खोलूँगा

□

भगत के आँसू क्या, तू श्याम सह पायेगा,
गले से लगाये बिन, क्या तू रह पायेगा,
समझ सके तो समझले मेरी, मन पीड़ा बाबा,
मैं तो बस रो करके अपना, दर्द दिखाऊँगा ॥
मैं ना बोलूँगा, मुँह ना खोलूँगा

□

समझना जो चाहो, तो आँखें पढ़ लेना,
अगर तुम जो चाहो, तो किरपा कर देना,
आँखों में सैलाब लिये ये, 'हर्ष' खड़ा बाबा,
चौखट से इंकार मिला तो, वो भी सह लूँगा ॥
मैं ना बोलूँगा, मुँह ना खोलूँगा

□ □ □

श्री विनोद अग्रवाल 'हर्ष' द्वारा 'मैं ना भूलूँगा - मैं ना भूलूँगी' गीत की तर्ज़ पर रचित सर्वप्रिय भावपूर्ण रचना ।

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

हसनपुरा, जयपुर

श्री श्वामरेण संग्रहालय

कन्हैया मुरली बजाई कैसी राचणी,
जेंमै उळइयो-उळइयो, सारो यो संसार कन्हैया ॥

1

कन्हैया लचको निरालो थारै पाँव को,
थारा जादूगारा, कारा-कारा नैण कन्हैया ।
मरली बजाई कैसी राचणी ॥

कन्हैया होठां नै चूमै थारी बांसरी,
बाळी कानां मांही चूमै छै कपोल कन्हैया ।
सुखली बजाई कैमी गचणी ॥

कन्हैया बाँकोपण थारो मन्नै मारग्यो,
नीको-नीको लागै, थारो यो सिणगार कन्हैया ।
मरली बजाई कैसी राचणी ॥

कन्हैया नूपुर पगां की थारै बोलणी,
ज्यांसै निकळै छै, रागनी छत्तीस कन्हैया ।
मरली बजाई कैसी राचणी ॥

कन्हैया श्यामबहादुर थारे चैले को,
सारे 'शिव' का समूचा, तूं ही काज कन्हैया ।
मरली बजाई कैसी राचणी ॥

三

प्रदैध्य स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा राजस्थानी
गीत 'मोरिया आछो बोल्यो रे ढळती
रात म' की तर्ज पर रचित अनुपम रचना ।

ॐ श्री श्याम रसेवा संघ समिति ॥

००००००००००

मन बागं को मोरियो,
तड़फ रहयो मन मांही,
याद कन्हैया की आवै,
पीहू-पीहू बोलै पुकार ॥

□

घायल की गत, घायल जाणै,
बेदर्दी के दरद पिछाणै,
आँख लड़ाई, कुबद कमाई,
मैं तड़फूं सांझ-सकालै ।
पीहू-पीहू बोलै पुकार ॥

□

दिन बीत्या कई रैन बिताई,
बैरण बण गई श्याम जुदाई,
अब तो आज्या, धीर बंधाज्या,
क्यूँ प्रेमी सैं प्रेम बिगाई ।
पीहू-पीहू बोलै पुकार ॥

□

तेरी जुदाई की तड़फ सही म्है,
सुणसी मोहन सबर करी म्है,
इबकै आसी, सुख बरसासी,
क्यूँ प्रेम की बेल उजाई ।
पीहू-पीहू बोलै पुकार ॥

□

झूंठी एड़ी प्रेम की पोथी,
निकळी सारी, बातां झूंठी,
तूं तो धणी है, प्रेम गुणी है,
क्यूँ प्रेम को दरद ना जाणै ।
पीहू-पीहू बोलै पुकार ॥

□

म्है तो सुणी हां प्रेम मं गिरधर,
ना कोई मालिक ना कोई चाकर,
प्रेम सरोवर, सगळा बरोबर,
क्यूँ 'नन्द' इतणो ख्यारै ।
पीहू-पीहू बोलै पुकार ॥

०००

श्री नन्दकिशोर जी शर्मा 'नन्द' द्वारा
'क्या करते थे साजना, तुम हमसे दूर
रहकर' गीत की तर्ज पर आधारित भावपूर्ण रचना ।

००००००००००



॥ श्री याम नमः ॥



॥ श्री योर हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

ॐ श्री श्याम रसेवा संघ समिति ॥

हसनपुर, जैनपुर

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति

॥ ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ॥

ओ गिरधारी ओ गोपाला,
वो नटखट वो दीनदयाला,
जय हो श्याम बिहारी की ॥

□

मोरमुकुट सिरधारी की, चर्चा है दातारी की,
बैं गोवर्धन गिरधारी की, मधुसूदन बनवारी की,
पीले तूं मस्ती का प्याला,
भीड़ बंटासी वो नन्दलाला ।
जै दीनन हितकारी की ॥



मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षीय वृत्ति

श्यामधणी ने टेरो जी, कण-कण मांही हेरो जी,
बाबो श्याम सहाय करै, फिर जावै दिन तेरो जी,
गळ सोहै वैजयन्तीमाला,
वो तेरी सुध लेने वाला ।
माखनचोर मुरारी की ॥

□

श्यामबहादुर जोवो जी, होसी नाय बिछोवोजी,
मैल मनां का धोवो जी, दीप सें दीप संजोवो जी,
नैणों का मेरे उजियाला,
वो 'शिव' मेरा देखा-भाला ।
जै-जै कृष्ण मुरारी की ॥

□ □ □

श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा सुप्रसिद्ध भजन
'धन धड़ी धन भाग्य हमारा' की तर्ज पर रचित भावभरी रचना ।

॥ ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ॥

हसनपुरा, जयपुर

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

वो लीलै घोड़े वाला, बाबा श्याम है कहाँ,
मैं ढूँढ़ू मेरे हिवड़े का, आराम है कहाँ ॥

□

ये दिल उसका दीवाना, वो यार मेरा मस्ताना,
आया हूँ तेरे दर पे, इस दिल को ना भरमाना,
वो बाबा का अलबेला, खाटूधाम है कहाँ ॥
वो लीलै घोड़े वाला बाबा श्याम

□

आँख्यां मेरी दूखण लागी, तूं मिलज्या रे बड़भागी,
कब होगा एक नजारा, मन मं मेरै या लागी,
वो मेरा अलमस्ती से, भरा जाम है कहाँ ॥
वो लीलै घोड़े वाला बाबा श्याम

□

'शिव' श्यामबहादुर दिल की,
पीड़ा नैनों से छलकी,
तूं देर ना करना दाता, है खबर नहीं एक पल की,
मेरे नाम उस छली का, पैगाम है कहाँ ॥
वो लीलै घोड़े वाला बाबा श्याम

□ □ □

श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा 'दिल दीवाने का डोला,
दिलदार के लिए' गीत की तर्ज पर रचित भावपूर्ण रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षीय वर्ष



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

हसनपुरा, जयपुर

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

: □□□□□□□□□□

श्यामधणी के हाथों, में भगतों की डोर,
किसी को खींचे धीरे, और किसी को खींचे जोर ॥

□

मर्जी है इसकी हमको, जैसे नचाये,
जितनी जरूरत उतना, जोर लगाये,
ये चाहे जितनी खींचे, हम काहे मचायें शोर ।
किसी को खींचे धीरे, और किसी को खींचे जोर ॥

□

श्यामधणी के जब से, हम हो गये हैं,
गम जिन्दगानी के, कम हो गये हैं,
हम बँधे श्याम की डोरी, और नाचें जैसे मोर ।
किसी को खींचे धीरे, और किसी को खींचे जोर ॥

□

खींच-खींच डोरी इसने, सम्हाला ना होता,
हमको मुसीबत से, निकाला ना होता,
ये चाहे जितना खींचे, ना खिंचते इसकी ओर ।
किसी को खींचे धीरे, और किसी को खींचे जोर ॥

□

'बनवारी' टूटे कैसे, भगतों से नाता,
डोर में लगा है इसकी, मुहब्बत का धागा,
तूं रख बाबा पे भरोसा, ये डोर नहीं कमजोर ।
किसी को खींचे धीरे, और किसी को खींचे जोर ॥

□□□

श्री जयशंकर चौधरी 'बनवारी' द्वारा 'सावन का महीना, पवन करे
शोर' गीत की तर्ज पर रचित भावपूर्ण रचना ।

□□□□□□□□□□

हसनपुरा, जयपुर

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 गोवकशाली वर्ष

श्री श्याम सेवा संघ समिति

ॐ श्री श्याम रैषा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

यों अपने चाहने वालों को,
तरसाना नहीं अच्छा,
मिलाकर के नजर फिर यूं
मुकर जाना नहीं अच्छा ॥

□

सजा उतनी ही देनी चाहिए,
जितनी मुनासिब हो,
किसी मासूम दिल पर यों,
जुल्म ढाना नहीं अच्छा ॥
यों अपने चाहने वालों को.....

□

है मजबूरी भी ऐसी क्या,
के जो खामोश बैठे हो,
मेरे ग़मगीन दिल को,
ग़म से बहलाना नहीं अच्छा ॥
यों अपने चाहने वालों को.....

□

मैं मुज़रिम आपका बेशक हूँ,
पर तुम तो रहम दिल हो,
गुनाहों को मेरे यों ध्यान में,
लाना नहीं अच्छा ॥
यों अपने चाहने वालों को.....

□

शहंशाह होके भी,
नाचीज पे नाराज होते हो,
या यों कह दो कि दिल से,
दिल का टकराना नहीं अच्छा ॥
यों अपने चाहने वालों को.....

□

उबारे हैं करोड़ों श्यामबहादुर,
पातकी तुमने,
मेरे पापों से 'शिव' गोपाल,
डर जाना नहीं अच्छा ॥
यों अपने चाहने वालों को.....

□ □ □

श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव'
द्वारा 'लग्न तुमसे लगा बैठे, जो होगा देखा
जायेगा' भजन की तर्ज पर रचित रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □



प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षाली वर्ष

ॐ श्री श्याम रैषा संघ समिति ॥

हसनुरा, जम्मू

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

फागणियो नीड़े आय गयो जी, फागणियो ॥

□

फागणियो रंगीलो भरै श्यामजी को मेलो,
कोई भगतां के मन भा गयो जी, फागणियो ॥
फागणियो नीड़े आय गयो.....

□

फागणियो रंगीलो मेरो श्याम भी रंगीलो,
लीलै चढ़कर आय गयो जी, फागणियो ॥
फागणियो नीड़े आय गयो.....



□

देव रंगीलो बड़ो छैल-छबीलो,
भगतां नै दरश कराय गयो जी, फागणियो ॥
फागणियो नीड़े आय गयो.....

□

फागणिये मं भगतां सागै श्यामधणी नाचै,
'बनवारी' रंग जमाय गयो जी, फागणियो ॥
फागणियो नीड़े आय गयो.....

□ □ □

श्री जयशंकर चौधरी 'बनवारी' द्वारा सुप्रसिद्ध भजन 'खाटू को श्याम
रंगीलो रे' की तर्ज पर रचित रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षाली वर्ष

हसनपुरा, जयपुर

श्री श्वामरेण संग्रहालय

सजने का है शौकीन, कोई कसर ना रह जाये,
ऐसा करदो श्रंगार, सब देखते रह जायें ॥

1

जब साँवरा सजता है, सारी दुनिया सजती है,
उसे इत्तर छिड़कते हैं, सारी दुनिया महकती है,
बागों का हर इक फूल, गजरे में लग जाये ।
ऐसा करदो श्रंगार, सब देखते रह जायें ॥

1

जब कान्हा मुस्काये, शीशा भी चटक जाये,
चन्दा भी दर्शन को, धरती पे उत्तर आये,
सूरज की किरणों से, दरबार चमक जाये ।
ऐसा करदो श्रंगार, सब देखते रह जायें ॥

1

क्या उसको सजाओगे, जो सबको सजाता है,
क्या उसको खिलाओगे, जो सबको खिलाता है,
बस भाव के सागर में, मेरा श्याम समा जाये ।
ऐसा करदो श्रंगार, सब देखते रह जायें ॥

1

बस इतना ध्यान रखना, इतना ना सज जाये,
इस सारी सृष्टि की, उसे नजर ना लग जाये,
ये 'शुभम-रूपम' तेरे, भावों के भजन गायें।
ऐसा करदो श्रंगार, सब देखते रह जायें ॥

三

श्री रूपम् एवं शुभम् बाजोरिया द्वारा 'बचपन की मुहब्बत को, दिल से ना जदा करना' गीत की तर्ज पर रचित भावपूर्ण रचना ।

ॐ श्री श्याम सरेषा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

लीलै घोड़ै वाळा नै तूं प्यार सैं पुकार ले,
यो ही दिलदार तेरो, नैण सिणगार ले ॥

□

ऐसो यो रंगीलो तेरो, श्याम चित्तचोर है,
ध्वजाबंध धारी आंकी, बांकी सी मरोड़ है,
श्याम सरकार की तूं नजर उतार ले ।
यो ही दिलदार तेरो, नैण सिणगार ले ॥

□

बड़ो ही दयालु तेरो, सांवरो हुजूर है,
हाजरी बजावै यो तो, तेरै सैं ना दूर है,
बेड़ो तेरो पार है, या मन मांही धार ले ।
यो ही दिलदार तेरो, नैण सिणगार ले ॥

□

मेरो तो यो खाटूवाळो, काळजै की कौर है,
दीन दुखहारी आं को, दुनिया मं शोर है,
काम यो ही आसी तेरै, सोचले विचार ले ।
यो ही दिलदार तेरो, नैण सिणगार ले ॥

□

श्यामबहादुर, दिलदार नहीं दूसरो,
दुनिया मं 'शिव' तेरो, यार नहीं दूसरो,
श्यामजी बनै पे तेरै, लूण-राई वार ले ।
यो ही दिलदार तेरो, नैण सिणगार ले ॥

□ □ □

श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव'
द्वारा 'छुप-छुप खड़े हो, जरूर कोई बात है'
गीत की तर्ज पर रचित भजन ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सर्वा के 30 गाँवशाली वर्ष

ॐ श्री श्याम सरेषा संघ समिति ॥

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □

बींटा कसल्यो भगतों,
फागण मेलो नीड़े आग्यो रे ॥

□

रंग-अबीर गुलाल उड़ाओ,

नाचो दे दे ताळी रे,

सूत्या हो तो देर करो मत,

बेगा जागो रे ॥ नीड़े आग्यो रे.....

□

टोळ का टोळ मिलै भक्तां का,

हिवड़े सें लिपटाल्यो रे,

बाबो राजो हो जावैगो,

करल्यो सागो रे ॥ नीड़े आग्यो रे.....

□

जय-जयकार मनाओ मन,

समझाओ मौज उड़ाओ रे,

छोड़ो जग की माया,

इबतो धन्धै लागो रे ॥ नीड़े आग्यो रे.....

□

श्यामबहादुर शरण श्याम की,

सेवकियो 'शिव' साँचो रे,

खाटुवालो श्याम नैण कै,

मांही छाग्यो रे ॥ नीड़े आग्यो रे.....

□ □ □

बींटा = बिस्तरबंद, नीड़े = नजदीक

टोळ = टोली, समूह, छाग्यो = छा जाना

हसनपुरा, ज़ोहर

श्रद्धेय स्व. शिवचरण जी

भीमराजका द्वारा रचित धमाल ।

□ □ □ □ □ □ □



प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

प्यारो लागै ओ श्री श्याम,
थारो केशरिया निशान ॥

□

फागण के महीने मं बाबा,
भोत चाव सें उठावां जी,
भगतां थारा पैदल चालै, सागै-सागै जी ॥
प्यारो लागै ओ श्री श्याम.....



मानव-माधव सेवा के 30 गोरक्षाली वर्ष

एक हाथ मं लाठी पकडां,
एक हाथ मं डोरी जी,

आपस मांही भगतां थारा, घूमर घालै जी ॥
प्यारो लागै ओ श्री श्याम.....

□

गोळ चकरियो बणा कै बाबा,
थानै भजन सुणावां जी,

'बनवारी' जद जोर सें नाचां, धरती हालै जी ॥
प्यारो लागै ओ श्री श्याम.....

□ □ □ □ □ □ □ □ □

श्री जयशंकर चौधरी 'बनवारी' द्वारा
रचित सर्वप्रिय अनुपम 'धमाल' ।

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □

दर्शन मिल जाये सरकार का,
भूखा हूँ बाबा तेरे प्यार का ॥

□

तेरा और मेरा ऐसा प्यार हो,
दुनिया के सारे सुख बेकार हों,
पतझड़ क्या और फिर बाहर क्या ।
भुखा हूँ बाबा तेरे प्यार का ॥

□

दिल में बिठाया सरकार को,
मालूम है सारे संसार को,
हमको किसी की दरकार क्या ।
भुखा हूँ बाबा तेरे प्यार का ॥

□

बाबा मुसीबत हो मुसीबत है,
हमको एक साथी की जरूरत है,
'बनवारी' अपनों को इंकार क्या ।
भुखा हूँ बाबा तेरे प्यार का ॥

□ □ □

श्री जयशंकर चौधरी 'बनवारी' द्वारा
'साजन मेरा उस पार है' गीत की तर्ज
पर रचित सर्वप्रिय रचना ।

□ □ □ □ □ □ □

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

हसनपुरा, जयपुर

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

बाबा श्याम, मेरो काम, थानै ही पटाणो है,
भीतरनै क्यूँ बड़कै बैठ्यो, परदो हटाणो है ॥

□

मूँडो भी लखोवैगो तो, थानै नहीं छोड़स्यां,
दोरो मौको लाग्यो नैणा, बाबाजी सैं जोड़स्यां,
आ तो जग जाए तंू सदा सैं शरमाणो है ॥
भीतरनै क्यूँ बड़कै बैठ्यो.....

□

बेगा सा आ जाओ थानै, प्यार सैं बुलावां हां,
कद सैं रंगीला थानै, अरज़ सुणावां हां,
देरी जे लगावैगो तो, घणो हरजाणो है ॥
भीतरनै क्यूँ बड़कै बैठ्यो.....

□

अईंया नहीं चाये, बालकां नै तरसावणा,
म्हारै चित्तचोर का म्है, करां हां मनावणा,
थारै पर भी साँवरिया, होसी जुरमानो है ॥
भीतरनै क्यूँ बड़कै बैठ्यो.....

□

श्यामबहादुर 'शिव', होसी तकरार है,
सांवळै सरकार पर ही, सारो दारमदार है,
बाबा को मिजाज नहीं, टाबरां सैं छानो है ॥
भीतरनै क्यूँ बड़कै बैठ्यो.....

□

मूँडो = चेहरा, दोरो = मुश्किल से,
चाये = चाहिये, छानो = छिपा हुआ

हसनपुरा, ज़िल्हा

श्रद्धेय स्व. शिवचरण जी भीमराजका द्वारा सुप्रसिद्ध भजन 'दीनानाथ मेरी बात, छानी
कोनी तैरै सैं' की तर्ज पर रचित भावपूर्ण रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □

लेकर मोरछड़ी हाथां मं,
तेरा सेवक नाचै रे,
श्यामधणी तेरे कीर्तन मं,
ढोलक-ढफली बाजै रे ॥

□

कार्तिक महिने सें भगतां को,
चोखो जमघट लागै रे,
श्याम तेरै मेलै तक सगळा,
रात्यूँ जागै रे ॥ लेकर मोरछड़ी....

□

ज्यूं-ज्यूं फागण नीड़े आवै,
रंग तेरो परवान चढ़े,
श्याम नाम का चंग-मजीरा,
घर-घर बाजै रे ॥ लेकर मोरछड़ी....

□

'हर्ष' कहवै फूलां सें तेरो,
सोणो सो सिणगार सजै,
श्याम तेरो दरबार बडो ही,
प्यारो लागै रे ॥ लेकर मोरछड़ी....

□ □ □

श्री विनोद अग्रवाल 'हर्ष' द्वारा
रचित अनुपम धमाल ।

□ □ □ □ □ □ □ □

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षाली वर्ष



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

हसनपुरा, जयपुर

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

: □□□□□□□□□□

हैलो आयो रे साथीड़ो, बाबा श्याम बुलायो रे ॥



खाट् की नगरी मं बाबा, श्यामधणी को ठीड़ो रे,
ज्यां सैं मिलणै के खातिर, यो जी ललचायो रे ॥

हैलो आयो रे साथीड़ो...



॥ श्री याणशाय नमः ॥



॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

फागणियै मं भोत जोर को, मेळो एंको लागै रे,
श्याम ध्वजा ले रींगस सैं थे, पैदल चालो रे ॥

हैलो आयो रे साथीड़ो...



बाजै चंग अनोखा ज्यांकी, तान पे सेवक नाचै रे,
घूमर ज्यांकी देख-देख म्हारो, मन हर्षायो रे ॥

हैलो आयो रे साथीड़ो...



आंकै जैसो सेठ कोई भी, ई जग मं ना दिख्यो रे,
दो मीठी-मीठी बातां सैं, काम बणाओ रे ॥

हैलो आयो रे साथीड़ो...



ज्यूँ-ज्यूँ मेळो नीड़े आवै, मनड़ो धीर गँवावै रे,
बाबा सैं मिलणै की खातिर, जी भरमायो रे ॥

हैलो आयो रे साथीड़ो...



लागैगो दरबार श्याम को, खुलकर माल लुटावैगो,
श्याम मंडल कै जचगी, यो ही माल कमाल्यो रे ॥

हैलो आयो रे साथीड़ो...

हसनपुरा, ज.पुरा

अति प्राचीन एवं सर्वप्रिय धमाल,

लेखक - अजात ।

□□□□□□□□□□

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

चंग बाजण दयो साथीडो, आपां घूमर घालां रे ॥

□

ज्यूँ-ज्यूँ चंग बाजै त्यूँ-त्यूँ, चाव घणेरो जागै रे,
अलगोजा री तान हिया मं, हूक जगावै रे ॥

चंग बाजण दयो साथीडो.....

□

घूमर मांही दे-दे ताळी, भगतां सागै नाचां रे,
बाँध घूघरा सांवरियै नै, संग नचावां रे ॥

चंग बाजण दयो साथीडो.....

□

कान्हूडो रसीलो म्हानै, भोत ही प्यारो लागै है,
रंग लगावां सगळा मिलकर, भजन सुणावां रे ॥

चंग बाजण दयो साथीडो.....

□

फागण महीनो बडो सुहानो, भगतां सागै होल्यो रे,
'नन्दू' चालो खाटू नगरी, द्वजा चढावां रे ॥

चंग बाजण दयो साथीडो.....

□ □ □

श्री नन्दकिशोर जी शर्मा 'नन्दू' द्वारा रचित धमाल

□ □ □ □ □ □ □ □ □

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षाली वर्ष



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

हसनपुरा, जयपुर

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □

बेगो चाल रे, बाबा को खजानों,
लुटणे वालो है ॥

□

भगतां की तो भीड़ लाग रही,
मोटो सेठ लुटावै रे,
लूट सकै तो लूटले सबकुछ,
मिलणे वालो है ॥



प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

चाहे जितणो लूटले बन्दे,
यो खाली नहीं होणै को,
धीरे-धीरे सबको नम्बर,
आणै वालो है ॥

□

श्यामधणी सजधज कर बैठ्या,
मंद-मंद मुस्कावै जी,
भगतां की किस्मत को ताळो,
खुलणे वालो है ॥

□

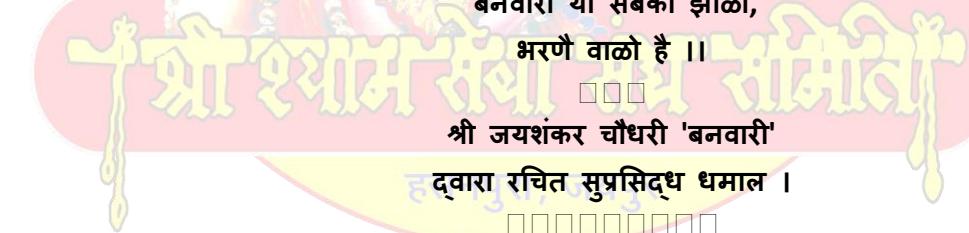
खाटू नगरी को राजा है,
जगत सेठ कहलावै रे,
'बनवारी' यो सबकी झोळी,
भरणे वालो है ॥

□ □ □

श्री जयशंकर चौधरी 'बनवारी'

द्वारा रचित सुप्रसिद्ध धमाल ।

□ □ □ □ □ □ □



॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

लीलै पे बैठ्यो सरकार, लागै बनड़ो सो,
कुण यो सजायो सिणगार, लागै बनड़ो सो ॥

□

किसने साँवरिया थारै मेहंदी लगाई,
मेहंदी पर जाऊ बलिहार, लागै बनड़ो सो ॥
लीलै पे बैठ्यो सरकार.....

□

किसने साँवरिया थारौ बागौ बणायो,
कुण ल्यायो फूलां रा हार, लागै बनड़ो सो ॥
लीलै पे बैठ्यो सरकार.....

□

किसने साँवरिया थारै तिलक लगायो,
निरखाँ म्है बारम्बार, लागै बनड़ो सो ॥
लीलै पे बैठ्यो सरकार.....

□

नजर किसी की बाबा लागै ना थारै,
लेवां म्है नजर उतार, लागै बनड़ो सो ॥
लीलै पे बैठ्यो सरकार.....

□

बणकै बाराती आई 'नरसी' की टोळी,
चालो जी सांवरियै के द्वार, लागै बनड़ो सो ॥
लीलै पे बैठ्यो सरकार.....

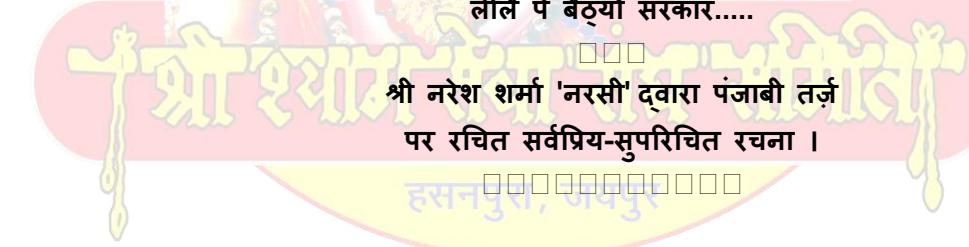
□

श्री नरेश शर्मा 'नरसी' द्वारा पंजाबी तर्ज
पर रचित सर्वप्रिय-सुपरिचित रचना ।

हसनुरा, जपुर



मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

चालो खाटूधाम, फागणियो आयो है ।
चालो खाटूधाम, बुलावै श्याम,
फागणियो आयो है ॥

□

रंग-रंगीला निशान बणाल्यो,
ऊपर श्याम को नाम लिखाल्यो,
चालो-चालां खाटू, बाबा को हैलो आयो है,
भेज्यो है संदेशो बाबो, खाटू धाम बुलायो है,
छोडो सारा काम, बुलावै श्याम,
फागणियो आयो है ॥
चालो खाटू धाम, फागणियो.....



॥ श्री श्याम शाय नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्ष की उम्मीद वर्ष

खाटू की गळीयां मं, धूम मचास्यां,
चंग-मजीरा-खड़ताल बजास्यां,
धूमर-रसिया और लावणी,
चिरमी मिलकर गावांगा,
मंदरिये सें काढ बारणे, श्याम नै नचावांगा,
पैंजनिया झँकार, रंग बौछार,
फागणियो आयो है ॥
चालो खाटू धाम, फागणियो.....

□

सिंघासन पर बैठ्यो मुळकै, खजानो लुटावै है,
फागणिये मं खाटूवालो, निजारा दिखावै है,
मौको 'अनिल' ऐसो, रोज नहीं आवै है,
बेगो चाल खाटूवालो, सगळा कष्ट मिटावै है,
कट ज्यासी जंजाल, तूं खाटू चाल,
फागणियो आयो है ॥
चालो खाटू धाम, फागणियो.....

□ □ □

'ना ना करते प्यार तुम्हीं से कर बैठे' गीत की तर्ज पर लगभग 27 वर्ष पूर्व मेरी कलम को यह भजन
लिखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री ईश्वामरसेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

खाट मं दरबार, लगाकर जग को पालणहार,
साँवरो बैठयो हैं जी बैठयो हैं ॥

□

सें के घट-घट की यो जाणै,
साँचो प्रेम प्रभु पहचाणै,
करलै इण सें प्यार, बंदा यो यारां को यार,
साँवरो बैठयो हैं जी बैठयो हैं ॥



□

एं की दया को पार नहीं है,
खुशियां को दातार यो ही है,
तन-मन इण पे वार, बणज्या इणको ताबेदार,
साँवरो बैठयो हैं जी बैठयो हैं ॥

□

इण की दया सें तो अणजानो,
शरणागत बण कर ही जाणयो,
है साँचो दिलदार, 'नन्दू' जीवन देवै सँवार,
साँवरो बैठयो हैं जी बैठयो हैं ॥

□ □ □

श्री नन्दकिशोर जी शर्मा 'नन्दू' द्वारा
राजस्थानी गीत 'चाँद चढ़यो गिगनार'
की तर्ज पर रचित भजन ।

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षाली वर्ष

ॐ श्री ईश्वामरसेवा संघ समिति ॥

हसनपुरा, जयपुर

ॐ श्री ईश्वामरसेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □

शिव भोले तेरे चरणों में,
जबसे सर को झुकाया है,
दर तेरा इंसाफ का है,
हमने तो इतना पाया है ॥



॥ श्री याणशाली नमः ॥



॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 गोवशाली वर्ष

तेरी शक्ति अदभुत भोले,
जिसका कोई छोर नहीं,
सब देवों में महादेव तूं
तुझसा कोई और नहीं,
बेबस होकर जिसने पुकारा,
तुमने उसे निभाया है ।
दर तेरा इंसाफ का है....

शरणागत को भोले तुमने,
नहीं कभी इंकार किया,
दे दिया अमृत देवों को,
खुद विष को स्वीकार किया,
दीन-दुखी को दया का खजाना,
दोनों हाथ लुटाया है ।
दर तेरा इंसाफ का है....

मंजिल तक पहुंचा दे मुझको,
थामले आकर हाथ मेरा,
जीवन डोर भले ही ढूटे,
पर ना छूटे साथ तेरा,
तुझको अपना जान 'अनिल' ने,
दिल का हाल सुनाया है ।
दर तेरा इंसाफ का है....

□ □ □

सुप्रसिद्ध भजन 'थाली भरकर ल्याइ
खीचड़ो' की तर्ज पर मेरी कलम द्वारा
रचित आशुतोष वन्दना ।

□ □ □ □ □ □ □ □

श्री श्वामरेण संग्रहालय

पैदल आस्यां ओ साँवरिया थारी खाटू नगरी ॥

1

घणा दिनां सैं आस लाग रही,

श्याम का दर्शन करस्यां हो,

श्याम धणी थे महर करो, सालूणा आस्यां हो ॥

पैदल आस्थ्यां ओ साँवरिया.....

1

खाट वाळा खारडै का,

टेढ़ा-मेढ़ा गेला हो,

फिर भी मनडो मानै कोनी, दर्शन करस्यां हो ॥

पैदल आस्थ्यां ओ साँवरिया.....

1

श्याम मंडल के सागे बाबा.

नाच-कदता आस्यां हो.

टाबरियां की लाज रखिये. भजन सुणास्यां हो ॥

पैदल आस्थ्यां ओ साँवरिया.....

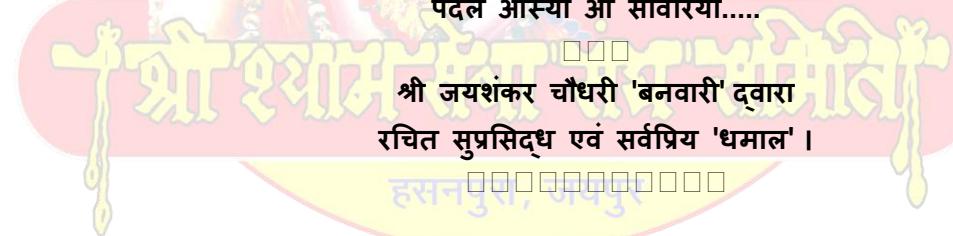
1

भगतां नै भी ल्यास्यां सागै.

घरकां हैं भी ह्यास्यां हो

कहे 'बनवारी' उंग-बिंगी द्वजा चदास्यां हो ॥

पैदल आर्यां ओ माँतिरा



॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

डोले मत श्याम ज्यादा सज धज कर,
मान जा कान्हडा, लाग ज्यावैगी नजर ॥

□

रात्युं नाचै गोप्यां सागै नित रास रचतो,
नई-नई गोपियां सें रिज्यै थोड़ो बचतो,
गोपी बणके आया आज भोला शंकर ॥
मान जा कान्हडा, लाग ज्यावैगी.....

□

कोई भी भरोसो कोनी ओपरी नजर को,
दे ज्यावैगी रोग कोई जिन्दगानी भर को,
दाढ़ी मूँछ्यां वाली गोपी बड़ी है जबर ॥
मान जा कान्हडा, लाग ज्यावैगी.....

□

मार देगी टूणो कोई घूंघट की ओट सें,
लाग्या पीछै बचै कोनी निजरयां वाली चोट सें,
लाग ज्या नजर तो फाटज्या पत्थर ॥
मान जा कान्हडा, लाग ज्यावैगी.....

□

मेरे कन्नै आज्या थोड़ो लूण-राई वार दयूं
काज़लियै को चाँद-तारो माथै पे सँवार दयूं
घूमजै 'बिहारी' होके जग मं निडर ॥
मान जा कान्हडा, लाग ज्यावैगी.....

□ □ □

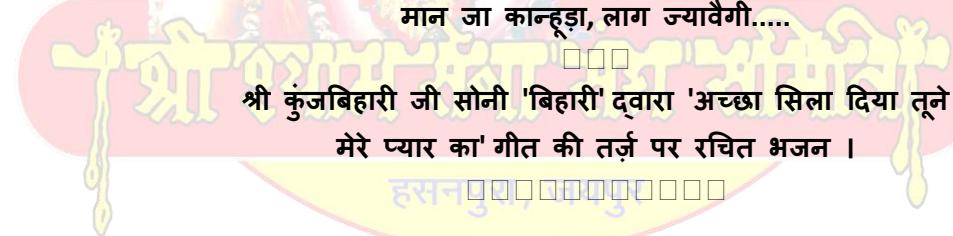
श्री कुंजबिहारी जी सोनी 'बिहारी' द्वारा 'अच्छा सिला दिया तूने
मेरे प्यार का' गीत की तर्ज पर रचित भजन ।

हसन □ □ □ □ □ □ □ □ □

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षाली वर्ष



श्री श्वामरेण संग्रहालय

म्हारा श्याम रंगीला,
पलकां उघाड़ो फागण आ गयो ॥

फागणियो रंगीलो महीनो, चंग सुरीला बाजै,
रशमी दुपट्टा बांध्यां, भगतां छम-छम नाचै ॥
मेरा श्याम रंगीला, पलकां उघाडो

रंग-बिरंगी सुन्दर-सुन्दर ३याम ध्वजा बणवाई,
लाज राखियो खाटुवाळा, या ही अरज़ लगाई ॥

मेरा ३याम रंगीला, पलकां उघाडो

१४ श्याम मंडल यो हैलो मारै, भगतां कान लगाल्यो,
भीड़ मोकळी होसी इबकै, बेगा नाम लिखाल्यो ॥
सेगा श्याम रंगीला पलकां उधाडो

मेला पाई होली खेलां, केशर रंग उडावां,
 'बनवारी' भगतां कै सागै, श्यामकुण्ड मं न्हावां ॥
 सेग १यास रंगीला पबकां उधाडो

श्री जयशंकर चौधरी 'बनवारी' द्वारा राजस्थानी गीत 'म्हारी चन्द्र गवरजा' की तर्ज पर रचित सप्रसिद्ध रचना ।

ॐ श्री श्याम रसेखा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □

बाबा कै मेलै चालो जी, खाटू मं,
टिकट कटाल्यो थे तो बेगा-बेगा चालो,
देखो बाबो दे रह्यो झालो जी, खाटू मं ॥

□

खाटू मांही मस्ती बरसै,
ई मस्ती नै देव भी तरसै,
सब मिलकर घूमर घालो जी, खाटू मं ॥
बाबा कै मेलै चालो जी.....



थारा दुःख-संताप मिटावै,
सगळा संकट दूर भगावै,
यो भगतां को रखवालो जी, खाटू मं ॥
बाबा कै मेलै चालो जी.....

□

श्यामधणी नै जाय रिझाल्यो,
थारा सोया भाग्य जगाल्यो,
भाया खुलै करम को ताळो जी, खाटू मं ॥
बाबा कै मेलै चालो जी.....

□

भर-भर मुट्ठी श्याम लुटावै,
माँगण सैं पहल्यां मिल जावै,
ऐं को हैं दरबार निरालो जी, खाटू मं ॥
बाबा कै मेलै चालो जी.....

□ □

'बिन्नू' तूं जल्दी सैं हाँ कर,
पड़ज्या श्याम चरण मं जाकर,
तेरो घर को मिटै कसालो जी, खाटू मं ॥
बाबा कै मेलै चालो जी.....

□ □ □

श्री बिनोद जी गाडोदिया 'बिन्नू' द्वारा
'खाटू' को श्याम रंगीलो रे' भजन की
तर्ज पर रचित रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की शुभ वर्षीय उपस्थिति

ॐ श्री श्याम रसेखा संघ समिति ॥

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

ग़ज़ब ढा रही है, नज़ाकत तुम्हारी,
फना कर दिया तूने, बांके बिहारी ॥

□

बाँकेपन की किसने, तेरी कीमत आंकी है,
तुमसे टकराकर भी, क्या मुझमे बाकी है,
कलेजे में नज़रों की, लगी है कटारी ।
फना कर दिया तूने, बांके बिहारी ॥



प्रानव-माधव सेवा के 30 गाँवशाली वर्ष

बाँसुरिया में श्याम तेरे, कोई जादू-टोना है,
है मौठी सी मुस्कान तेरी, तूं यार सलोना है,
तेरी याद में, जिन्दगी है गुजारी ।
फना कर दिया तूने, बांके बिहारी ॥

□

छूट जायें चाहे प्राण, मगर ये प्रीत ना टूटेगी,
नैनों से रसधार, प्रेम की यूँ ही छूटेगी,
मैं हूँ नेह नगरी का, पुराना जुआरी ।
फना कर दिया तूने, बांके बिहारी ॥

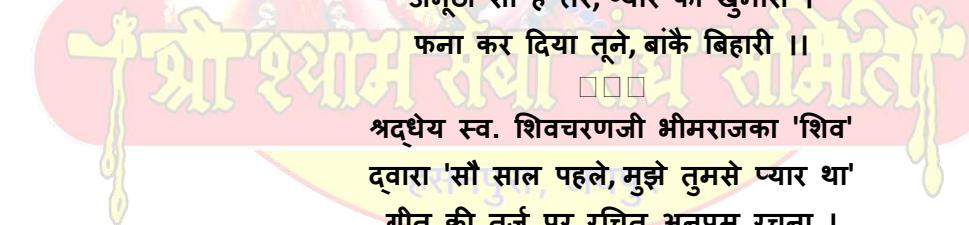
□

श्यामबहादुर तुमसे श्याम, मेरा जूना खाता है,
श्यामधणी के दर पे, ये 'शिव' खैर मनाता है,
अनूठी सी है तेरे, प्यार की खुमारी ।
फना कर दिया तूने, बांके बिहारी ॥

□ □ □

श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव'
द्वारा 'सौ साल पहले, मुझे तुमसे प्यार था'
गीत की तर्ज पर रचित अनुपम रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

काली कोसां सेती आयो, लिज्यो मुजरो,
मेरी मन इच्छा खाटू के बाबा पूरी थे करो ॥

लाखाँ ही नर-नारी आवै, सैं नै थे सलटाओ,
आई-अणआई मं मेरै, थे ही आडा आओ,
थानै बिना बात नहीं ख्यासँगा, थे मतना डरो ॥
काली कोसां सेती आयो

सैं नै राजी राखो पूछो, सैं कै मन की बात,
कोई ज़इला तारै, कोई दे गंठजोड़ा की जात,
देख्यो फागण कै मेलै मं, थारो न्यारो नखरो ॥
काली कोसां सेती आयो

कोई तो धन-दौलत का भूखा, कोई गीगला मांगै,
फागड़ा खा-पी कै सोवै, दर्दी रात्यूं जागै,
मेरै सैं भी क्यूँ बत़लाल्यो, बेगा मेटो रगड़ो ॥
काली कोसां सेती आयो

श्यामबहादुर नैण मिलाओ, देखो मेरै कानी,
'शिव' कै मन की बात दयालु, थारै सैं के छानी,
थारै चरणं को चाकरियो, बाबा तूं मनगरो ॥
काली कोसां सेती आयो

काली कोसां सेती = बहुत दूर से,
सलटाना = निस्तारण / फैसला करना
आई-अणआई = विपदा, आफत
आडा आना = रक्षा / सहायता करना
ख्यारना = परेशान करना
फागड़ा = शैतान, बदमाश, निष्फिक्र

श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा राजस्थानी गीत 'पल्लो
लटकै गौरी को पल्लो लटकै' की तर्ज पर रचित अद्भुत रचना ।



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

माधव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

हसनपुर गोदावरी

आसरा है फकत आपका,
आपसे जिंदगानी मेरी,
चंद पन्नों में सिमटी हुई,
सांवरे है कहानी मेरी,
नाम 'माधव' ने तेरा लिया,
सांवरे आपका शुक्रिया ॥
पेचीदा ज़िन्दगी में मेरी.....

□ □ □

श्री अभिषेक शर्मा 'माधव' द्वारा 'जिंदगी
की ना टूटे लड़ी गीत की तर्ज पर रचित

अनुपम रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □

००००००००००
श्याम तूने है इतना किया,
सांवरे आपका शुक्रिया,
पेचीदा ज़िन्दगी में मेरी,
तूने बदलाव ऐसा किया ॥

□
बीती बातें मेरी भूल कर,
तूने सीने लगाया मुझे,
ढाल बन के मेरी सांवरे,
हर कहर से बचाया मुझे,
छंट गई सारी मायूसियां,
सांवरे आपका शुक्रिया ॥
पेचीदा ज़िन्दगी में मेरी.....

□
ना थी उम्मीद ना था यकीं,
ऐसे दिन भी मेरे आयेंगे,
मैंने सोचा कभी भी ना था,
आप हम ऐसे मिल जाएँगे,
तूने अपनी शरण में लिया,
सांवरे आपका शुक्रिया ॥
पेचीदा ज़िन्दगी में मेरी.....

□
मेरी तो दौड़ है आप तक,
आपसे आगे जाऊँ कहाँ,
तूं मसीहा है दातार है,
तुझसा दूजा मैं पाऊँ कहाँ,
तेरी चरणों में लगता जिया,
सांवरे आपका शुक्रिया ॥
पेचीदा ज़िन्दगी में मेरी.....

□
आसरा है फकत आपका,
आपसे जिंदगानी मेरी,
चंद पन्नों में सिमटी हुई,
सांवरे है कहानी मेरी,
नाम 'माधव' ने तेरा लिया,
सांवरे आपका शुक्रिया ॥
पेचीदा ज़िन्दगी में मेरी.....

ॐ श्री श्याम रसेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

श्यामसुन्दर को जो देखा, खिल गई मन की कली,
भूल बैठे हम कहाँ हैं, कौनसी अपनी गली ॥

□

आपसे दिल लड़ गया, काँटा कलेजे गड़ गया,
साँवला वो रूप तेरा, मेरे चित पर चढ़ गया,
बढ़ गया जिस रास्ते पे, तेरी चित्तवन ले चली ॥
श्यामसुन्दर को जो देखा.....

११ श्री वीर हनुमते नमः ॥

११ श्री गणेशाय नमः ॥

□

देख करुणाई मेरी क्या, रंग रुखा लाई तेरी,
तेरी चौखट पर कन्हैया, हो ना रुसवाई मेरी,
मैं ना कुछ भी कह रहा हूँ, लोग कहते हैं छली ॥
श्यामसुन्दर को जो देखा.....

□

देखलो जो एक नजर, मुरलीमनोहर दास को,
दर्श देकर के बुझादो, मेरे मन की प्यास को,
प्रीत मेरी जानते हो, श्याम परदे में पली ॥
श्यामसुन्दर को जो देखा.....

□

श्यामबहादुर आपके, चरणों की रज मेरे हुजूर,
प्यार से 'शिव' मैं पुकारूँ,
फिर भी क्यूँ मुझसे हो दूर,
भा गई छवि श्याम की, झांकी मुझे लगती भली ॥
श्यामसुन्दर को जो देखा.....

□ □ □

श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी श्रीमराजका 'शिव' द्वारा 'देखलो आवाज
देकर, पास अपने पाओगे' गीत की तर्ज पर रचित भावभरी रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

ଶ୍ରୀ ସ୍ଥାମରକେଳା ସଂଘ ସମୀତି

ऐ जी घनश्याम थारी मुरली कामणगारी,
म्हारा राज ॥

सूरत अति मनमोहनी, मीठी सी मुस्कान,
एक झालक दिखलायके, पागल कर गयो प्राण,
ऐ जी घनश्याम थागी चितवन पर बिहारी।

महाराज ॥

हरयै बाँस की बांसुरी, मो मन गई समाय,
ढ़लती रात जगाय के, गजबण गई तरसाय,
ऐ जी घनश्याम कैसी, मारी नेह कटारी ।

महारा राज ॥

लटक निराली श्याम की, मेरै मन को चैन,
दर्शन बिन गोपाल के, व्याकुल हैं दो नैन,
ऐ जी घनश्याम थारी, सूरत लागे प्यारी ।

म्हारा राज ॥

१४ यामबहादुर साँवरा, थारे सें अरदास,
सुध 'शिव' की लेता रियो, प्रतिपल बारूं मास,
ऐ जी धनश्याम लागी, थांसै प्रीत मरारी ।

महारा राज ॥

म्हारा राज ॥

श्री शिवराज का भीमराजका 'शिव' द्वारा राजस्थानी तर्जनी 'उमराव' पर रचित अनुपम रचना

॥ श्री श्याम सरोवर संग्रह समिति ॥

□ █ □ □ □ □ □ □ □ □

श्री श्याम सरोवर का जलवा ही निराला है,
श्री श्यामधणी खुद ही, इसका रखवाला है ॥



॥ श्री याणशाय नमः ॥



॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

आता है कोई मौका, तो बोल के कहता है,
अपने भक्तों के वो, खुद बस में रहता है,
घनश्याम मुरारी ही, आँखों का उजाला है ॥

दिल से कोई याद करे, साथी वो उसी का है,
जो उसके भरोसै हो, नाती वो उसी का है,
सच पूछो तो भावों के, मणियों की ये माला है ॥

कोई तन्मय होकर के, डुबकी जो लगायेगा,
गहरा गोता भरने, वाला कुछ पायेगा,
ये श्यामबहादुर का, 'शिव' देखा-भाला है ॥

□ □ □

श्रद्धेय शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा
'बहना तेरी डोली को' गीत की तर्ज पर रचित भजन ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□□□□□□□□□

छोड़े गे ना हम तेरा द्वार ओ बाबा,
मरते दम तक,
मरते दम नहीं, अगले जन्म तक,
अगले जन्म नहीं सात जन्म तक,
सात जन्म नहीं, जन्म-जन्म तक ॥



॥ श्री याणशाय नमः ॥



॥ श्री योर हनुमते नमः ॥

■ निर्धन को धनवान बनादे,

ऐसी है तेरी माया,

खेल तेरी शक्ति का जग में,

कोई समझ ना पाया,

दुःख के अंधेरे दूर भगाये,

आस का दीपक मन में जगाये,

नाम जपें तेरा सांस है जब तक ॥

छोड़े गे ना हम तेरा द्वार

■ खाटू में प्रभु श्याम बिराजे,

सब पर हुकुम चलावै,

भक्तों की लाज बचाने बाबा,

पल भर में आ जाये,

निर्बल को तुम देते सहारा,

सबसे है प्यारा श्याम हमारा,

इस धरती से उस अम्बर तक ॥

छोड़े गे ना हम तेरा द्वार

■ महाभारत में आपने कृष्ण को,

हसनुशीश का दान दिया है,

खुश होकर के आपको कृष्ण ने,

ये वरदान दिया है,

नील गगन के चाँद और तारे,

'रवि' की किरणें आरती उतारें,

पूजा हो तेरी दुनिया है जब तक ॥

छोड़े गे ना हम तेरा द्वार

■■■

श्री रविन्द्र के जरीवाल 'रवि' द्वारा 'छोड़े गे

ना हम तेरा साथ ओ साथी' गीत की पर

रचित अति प्राचीन रचना ।

■■■■■■■■■

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षीय वर्ष

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

हसनुशीश

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □

खासो लाग्यो हैं दरबार,
राच्यो नैणां मं सिणगार,
श्याम बिहारी को ॥

□

हल्की-हल्की मीठी-मीठी,
खुशबु अति मन भाई जी,
बेगो दर्शन करले तूं भी,
आपो तेरो सँवार ॥



प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

गेंदा रजनी पी संग सजनी,
निरख-निरख हरषावै जी,
चन्द्रमुखी मुरगई गुलाब सैं,
महक्यो लखदातार ॥

□

गळ सोहवै तुलसी की माला,
मंद-मंद मुस्कावै जी,
आज लुटासी श्याम खजानों,
खोलैगो भण्डार ॥

□

हीनो बेलो जूही केतकी,
कैसो डम्बर फूट्यो जी,
खसखस और केसर कस्तूरी,
महकी सदाबहार ॥

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥
श्यामबहादुर रंगो चंगो,
रसियो श्याम सुरंगो जी,
हस 'शिव' सैलानी दरश दीवानी,
नैणा नेह कटार ॥

□ □ □

श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी भीमराजका
'शिव' द्वारा रचित अनुपम धमाल ।

□ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री ईश्वामरसेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

थां बिन म्हारी आँखयां हो गई बावळी,
ई टाबर कै मन मं बस गई, सूरत थारी साँवळी ॥

□

मनङ्गो म्हारो सूनो डोलै, डगमग झोला खावै है,
आँखडल्या बिरहा की मारी, आँसूङा टपकावै है,
कैंया चलसी थां बिन म्हारी गाडली ॥

ई टाबर कै मन मं बस गई.....

□

मीरां पर किरपा किन्ही थी,
सुणबा आया बातडली,
दास थारो यो आस लगायां,
खड्यो उडीकै बाटडली,
प्रेम जाम सें भर दयो म्हारी बाटली ॥

ई टाबर कै मन मं बस गई.....

□

पैल्यां प्रीत लगाय के तं, क्यूँ छोड़ै मङ्गधार जी,
प्रेमभाव को पाठ पढ़ाकर, मत बिसरै दिलदार जी,
मन मं रम गई सूरत थारी साँवळी ॥

ई टाबर कै मन मं बस गई.....

□

थे छोडो पण में ना छोड़ूँ, में तो थारो दास जी,
खाटू का घनश्याम मुरारी, में तो थारो खास जी,
आलूसिंह की थां बिन आँखयां बावळी ॥

ई टाबर कै मन मं बस गई.....

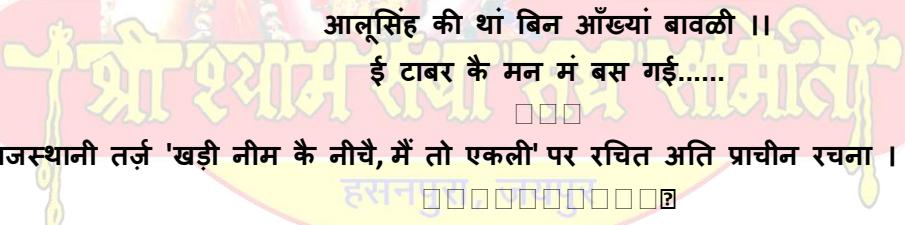
□ □

राजस्थानी तर्ज 'खड़ी नीम कै नीचै, में तो एकली' पर रचित अति प्राचीन रचना । लेखक - अजात ।

हसनगुरुवाली



मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

गुजरी है जो इस दिल पे, वो तुमको सुनाई है,
महावीर के बंगले पे, आवाज लगाई है ॥

□

इंसान का चौला तो, अवगुण का खजाना है,
तुम देव दयालु हो, तुमको ही निभाना है,
बिगड़ी को मेरी तुमने, हर बार बनाई है ॥

गुजरी है जो इस दिल पे.....

□

सियाराम के पायक हो, निर्बल के तुम्हीं बल हो,
धड़कन हो कलेजे की, क्यों आँखों से ओझल हो,
अनहोनी को भी होनी, प्रभु करके दिखाई है ॥

गुजरी है जो इस दिल पे.....

□

अंजनि सुत बलकारी, सबसे अलबेला है,
रावण की लंका में, जो आग से खेला है,
इस दीन-दुःखी ने भी, तेरी ज्योत जगाई है ॥

गुजरी है जो इस दिल पे.....

□

तुम श्यामबहादुर के, मेहमान पुराने हो,
'शिव' के भी तो सदियों से, जाने-पहचाने हो,
देरी भी लगाओगे, मुझे बहुत समाई है ॥

गुजरी है जो इस दिल पे.....

□ □ □

शद्धय स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा
'होठों से छूलो तुम, मेरा गीत अमर कर दो' गीत
की तर्ज पर रचित अनुपम हनुमत वन्दना ।

हसन □ □ □ □ □ □ □ □ □

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षीय वर्ष



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □

हम श्यामबिहारी के चेले हैं,
बीत गये जुग दास पुराने,
दाता के दर पे ही खेले हैं ॥

□

कितणा भादो जेठ भतेरा,
कितणा कातिक फागण घणेरा,
छोटे से जीवन में ही देखे,
हमने कितने मेले हैं ॥
हम श्यामबिहारी के चेले हैं....



देखी कितणी ही मोड़ी-निवाई,
श्यामधणी ही सारी निभाई,
तूफां भरे जीवन से पूछो,
कितने संकट झेले हैं ॥
हम श्यामबिहारी के चेले हैं....

□

टेढ़ी नज़रों से कितने निहारे,
भगत बड़ेरा ही काज सँवारे,
श्यामबहादुर जी साथ हमारे,
सोच न लेना अकेले हैं ॥
हम श्यामबिहारी के चेले हैं....

□

टेढ़ी-मेढ़ी बातां मं बो ही,
समझै चतुर खिलाड़ी हो सो ही,
श्यामधणी भगतां को भीड़ी,
देखो जद ही नवेले हैं ॥
हम श्यामबिहारी के चेले हैं....

□ □ □

श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी भीमराजका
'शिव' द्वारा 'जब प्यार किया तो डरना
क्या' गीत की तर्ज पर रचित रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षाली वर्ष



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □

खाटूवाले बाबा निराली तेरी शान,
कदै तो मुरारी, मेरै कानी कर ध्यान ॥

□

दर्शन नै आँ थारी हाजरी बजाँ,
थारै ही भरोसे मैं तो थारा गुण गाँ,
कद को उदीकूँ, मेरी पीड़ा नै पिछाण ॥
कदे तो मुरारी मेरै कानी....

□

मंदरियो दाता थारो रंग-रंगीलो,
लीलै की सवारी थारो रूप सजीलो,
मेरै तो तूं हीरा-पन्ना-मोतियां की खान ॥
कदे तो मुरारी मेरै कानी....

□

दूजै नै बोलूँ कोनी आपनै सुणाँ,
आँसूडा सें काळजै की आग नै बुझाँ,
तूं ही पुचकारै, जाए टाबरां की बाण ॥
कदे तो मुरारी मेरै कानी....

□

विपदा निवारो सारी कारज सारो,
चरण शरण 'शिव' तेरो ही सहारो,
तेज है सवायो, काशी पूजै सारी जहान ॥
कदे तो मुरारी मेरै कानी....

□ □ □

श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी भीमराजका
'शिव' द्वारा 'सावन का महीना, पवन
करे शोर' गीत की तर्ज पर रचित रचना ।

हसनपु डडडडडडडड

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की शुभावस्तुति



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □

मेरे घनश्याम, सहारा बण जाओ जी,
भीड़ पड़ी है, बिनजारा बण जाओ जी ॥

□

गैरी-गैरी नादिया, नाव पुराणी,
कारी-कारी रात, बरस रहयो पाणी,
तो खेवणहार, किनारा बण जाओ जी ॥
मेरे घनश्याम, सहारा.....

□

सनन-सनन चालै पुरवैया,
डगमग डोलै, जीवन नैया,
तो दीनदयाल, गुजारा बण जाओ जी ॥
मेरे घनश्याम, सहारा.....

□

एक भरोसो, मनमोहन को,
चाकरियो थारै चरणन को,
तो सुध लेल्यो, रखवारा बण जाओ जी ॥
मेरे घनश्याम, सहारा.....

□

श्यामबहादुर 'शिव' नटवरिया,
झलक नई, दिखला मनगरिया,
तो केवट आज, दुबारा बण जाओ जी ॥
मेरे घनश्याम, सहारा.....

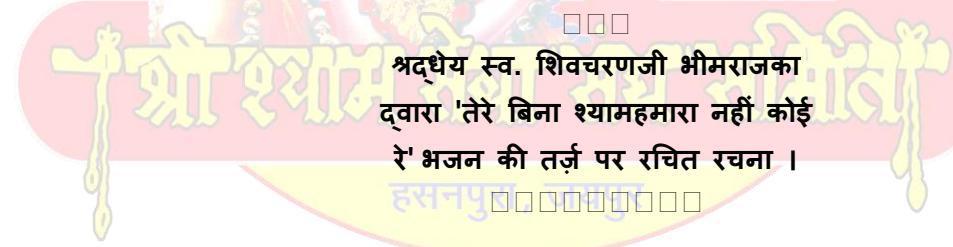
□ □ □

श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी भीमराजका
द्वारा 'तेरे बिना श्यामहमारा नहीं कोई
रे' भजन की तर्ज पर रचित रचना ।
हसनपु डडडडडडडडडड

११ श्री गणेशाय नमः ॥

११ श्री वीर हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की शुभावस्तु



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

हे गिरधारी, कृष्ण मुरारी, नैया करदयो पार,
खिवैया बण जाओ,
संकटहारी, अरज़ गुजारी, लीलै का असवार,
खिवैया बण जाओ ॥

□

कंईया रुस्या बैठ्या हो, बोलो जी कुछ बोलो जी,
रीस करो क्यूँ टाबर पै, आँख्यां तो प्रभु खोलो जी,
झुर-झुर रोवै मनडै रो पंछी, हिवडै रा आधार ।
खिवैया बण जाओ ॥



मानव-माधव सेवा के 30 गोवशाली वर्ष

थे रुस्यां ना पार पड़ै, थांसै प्रीत पुराणी है,
मुळकयां सरसी साँवरिया, निठुराई क्यूँ ठाणी है,
दीनानाथ अनाथ पुकारै, दुखिया थारै द्वार ।
खिवैया बण जाओ ॥

□

कुंजबिहारी बनवारी, मनडो म्हारो काचो है,
रूप तिहारो कान्हडा, नैणा मांही राच्यो है,
फोड़ा घालो क्यूँ ना बोलो, बोलो लखदातार ।
खिवैया बण जाओ ॥

□

श्यामबहादुर सेवकियो, चाकर है सिरदारां को,
जनम-जनम को साथीडो, केवटियो मङ्गधारां को,
कृष्ण कन्हैया डगमग नैया, दीज्यो पार उतार ।
खिवैया बण जाओ ॥

□ □ □

श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी भीमराजका द्वारा सुप्रसिद्ध भजन 'गाड़ी वाले मन्नै बिठाले' की
तर्ज पर रचित अद्भुत भावपूर्ण रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सरेषा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

टाबरियां रो मान राखज्यो, खाटुवाला श्याम जी,
कंईया सरसी थारै बिना म्है,
भोळा अर नादान जी, भोळा अर नादान जी ॥

□

थारी मरजी होयां बाबा, काया म्हारी हालै जी,
थारे भरोसे ओ सांवरिया, गाडी म्हारी चालै जी,
थे ही गाडी का हाँकणिया,
पकड़ो म्हारी कमान जी ॥ कंईया सरसी थारै

११ श्री वीर हनुमते नमः ॥

ओ रे मिजाजी तूं राजी तो, क्यांको म्हानै टोटो जी,
जगत सेठ री पदवी थानै, सेठ घणो तूं मोटो जी,
थारे होतां-सोतां ही तो,
सोवां खूंटी ताण जी ॥ कंईया सरसी थारै

□

जीवन डोरी थारै हाथां, जेंया चाहवो नचाल्यो जी,
छोटी सी विनती है थांसै, सेवा मांही लगाल्यो जी,
थारे प्रेम की चढ़ी खुमारी,
थे ही म्हारा प्राण जी ॥ कंईया सरसी थारै

□

थांसै मिलबां आवां म्है तो, जाणै री सुध बिसरावां,
खाट् मांही घूम-घूम कै, भजनां रो इमरत पांवां,
'चौखानी' कहवै जनम-जनम री,
थांसै जाण-पिछाण जी ॥ कंईया सरसी थारै

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षाली वर्ष

श्री प्रमोद चौखानी द्वारा सुप्रसिद्ध भजन
'थाळी भरकर ल्याई खीचडो' की तर्ज पर
रचित भावपूर्ण रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री ईश्वामर्सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □

एक यही मेरे दिल में, तमन्ना प्रभु,
मैं तेरे ही गुणगान गाया करूँ,
तुम सुनो सामने आकर जो मेरे,
तेरी महिमा को गाकर सुनाया करूँ ॥

□

चाहे दुनिया दीवाना बताये मुझे,
चाहे कहकर के पागल बुलाये मुझे,
मैं रहूँ मस्त तेरी भक्ति में सदा,
चाहे कितना भी कोई सताये मुझे,
पर रहे नाम होठों पे हरदम तेरा,
कभी तुमको ना दिल से भुलाया करूँ ॥

□

ना माँगूँ धन-दौलत ना माँगूँ महल,
चाहे कुटिया मैं ही मैं गुजारा करूँ,
रहे लागी लागां एक तेरे नाम की,
और तुमको ही हरदम पुकारा करूँ,
बस रहे सामने प्रभु मूरत तेरी,
तुम्हें देखूँ और मन को लुभाया करूँ ॥

□

तुम दयालु और दीनानाथ हो तुम,
अपने भक्तों के तो एक सहारे हो तुम,
फिर कैसे भुलाये 'ताराचन्द' तुम्हें,
क्योंकि हम हैं तुम्हारे और हमारे हो तुम,
पर मजा तो इसी बात में है प्रभु,
कि तुम आ जाओ जब मैं बुलाया करूँ ॥

□ □ □

स्व. ताराचन्द जी शर्मा द्वारा 'तुम अगर
साथ देने का वादा करो' गीत की तर्ज
पर रचित प्राचीन रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षाली वर्ष

ॐ श्री ईश्वामर्सेवा संघ समिति ॥

ॐ श्री श्याम रसेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □

आयेगा, आयेगा, आयेगा,
लीलै चढ़ साँवरा आयेगा,
मेरा श्याम दयालु है, वो बड़ा कृपालु है,
लायेगा, लायेगा, लायेगा,
खुशियाँ हजारों संग लायेगा ॥



॥ श्री याणशाय नमः ॥



॥ श्री खीर हनुमते नमः ॥

हारे का वो ही सहारा है,
वो सच्चा साथी हमारा है,
जो बन जाये माझी मेरा,
फिर दूर कहाँ किनारा है ।
आयेगा, आयेगा, आयेगा,
लीलै चढ़ साँवरा आयेगा.....

□

इस बेदर्दी दुनिया में वो,
मेरा अपना बनकर आयेगा,
मेरी सूनी बगियां में एकदिन,
माली बन फूल खिलायेगा ।
आयेगा, आयेगा, आयेगा,
लीलै चढ़ साँवरा आयेगा.....

□

इस अँधियारे जीवन में तो,
मेरा श्याम उजाला लायेगा,
हरा 'निर्मल' जगवालों से,
वो श्याम सहारा पायेगा ।
आयेगा, आयेगा, आयेगा,
लीलै चढ़ साँवरा आयेगा.....

□ □ □

श्री निर्मल झुङ्गुनवाला 'निर्मल' द्वारा
'आयेगी-आयेगी-आयेगी', किसी को
हमारी याद' गीत की तर्ज पर रचित
भजन ।

□ □ □ □ □ □ □ □

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की शुभ वर्षीया

ॐ श्री श्याम रसेवा संघ समिति ॥

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □

चरणों में तेरे, मिला जो ठिकाना,
प्यासे को मानो, सावन मिला है ॥

□

मैंने जो चाहा, जीवन में पाया,
संग मेरे रहता, सांवरे का साया,
शिकवा किसी से है ना, कोई गिला है ॥
प्यासे को मानो, सावन.....

□

मंजिल का मेरी, पता कुछ नहीं था,
अंधेरों में यूँ ही, भटका किया था,
तेरे प्यार का दिल में, दीपक जला है ॥
प्यासे को मानो, सावन.....

□

नींदों में अब तूँ, सपनों में तूँ है,
साँसों की लय में, धड़कन में तूँ है,
तेरी बन्दगी का ऐसा, जादू चला है ॥
प्यासे को मानो, सावन.....

□

इतना किया है तो, इतना भी कर दे,
सेवा का मुझको, मेरे श्याम वर दे,
मन का ये मोती 'हर्ष', तुम्हीं से खिला है ॥
प्यासे को मानो, सावन.....

□ □ □

श्री विनोद अग्रवाल 'हर्ष' द्वारा 'सागर'

किनारे, दिल ये पुकारे' गीत की तर्ज
पर रचित अद्भुत भावपूर्ण रचना ।

हसनपु डे डे डे डे डे

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की शुभाली वर्ष

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

तुमको हमारी सौगन्ध, तुमको मेरी दुहाई,
रखना तुम्हारी कैद में, देना नहीं रिहाई ॥

□

तुम हो ऐ बंशीवाले, टुकड़े मेरे जिगर के,
तुम हो ऐ खाटूवाले, तारे मेरी नजर के,
तस्वीर तेरी दिल में, अरमान से सजाई ॥



तुमको हमारी सौगन्ध, तुमको.....

□

तेरे बगैर मोहन, कुछ भी नहीं सुहाता,
जब तक ना देखूँ तुमको, दिल को ना चैन आता,
सह ना सकूँगा मोहन, पल भर तेरी जुदाई ॥

तुमको हमारी सौगन्ध, तुमको.....

□

एक दिन हमारे घर में, मेहमान बनके आना,
मैं हूँ तेरा पुजारी, भगवान बनके आना,
'बनवारी' हमने दिल की, बातें तुम्हे बताई ॥

तुमको हमारी सौगन्ध, तुमको.....

□ □ □

श्री जयशंकर चौधरी 'बनवारी' द्वारा 'चूड़ी मजा
ना देगी' गीत की तर्ज पर रचित अनुपम रचना।

□ □ □ □ □ □ □ □ □



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

: □□□□□□□□□□

बुला बुलाकर हार गया म्है, क्यूँ नहीं आवै रे,
क्यूँ नहीं आवै रे साँवरा, क्यूँ नहीं आवै रे ॥

□

भोला-भाला टाबारियां सैं, क्यांकी है नाराजी,
रो-रोकर फरियाद करां हां, आजा श्याम मिजाजी,
दूजो कुण आकर के म्हानै, धीर बंधावै रे ।
क्यूँ नहीं आवै रे साँवरा, क्यूँ नहीं आवै रे ॥

□

काम पड्यो जद समझ मं आई,

दुनिया की चतुराई,

दुनिया की देखा-देखी तूं कैया नजर घुमाई,
तूं तो है दिलदार बता क्यूँ आँख चुरावै रे ।
क्यूँ नहीं आवै रे साँवरा, क्यूँ नहीं आवै रे ॥

□

म्है तो सुणी आपातकाल मं, कदे ना देर लगायो,
दरदी की आवाज सुणी जद, भाग्यो-भाग्यो आयो,
करुणानिधि घनश्याम आज क्यूँ नाम डुबावै रे ।
क्यूँ नहीं आवै रे साँवरा, क्यूँ नहीं आवै रे ॥

□

एक आसरो तेरो म्हानै, मतना तूं छिकावै,
ज्यूं-ज्यूं देर करै तूं दाता, मन मेरो घबरावै,
संकट की घड़ियां मं 'बिन्नू', आज बुलावै रे ।
क्यूँ नहीं आवै रे साँवरा, क्यूँ नहीं आवै रे ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 गोवशाली वर्ष

॥ श्री योर हनुमते नमः ॥

श्री श्याम सेवा संघ समिति
सुप्रसिद्ध भजन 'शरणागत मं आवणियां की थे' की तर्ज पर
श्री बिनोद कुमार जी गाडोदिया 'बिन्नू'
द्वारा रचित अनुपम रचना ।

□□□□□□□□□□

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



मेरा श्याम बाबा, बड़ा लाजवाब है ॥



ऐसा दयालु नजर में नहीं है,
जो सोच लेता करता वही है,
इसका ना कोई, जहाँ में जवाब है ॥

मेरा श्याम बाबा बड़ा



एक बात से मैं बड़ा हैरान हूँ,
आदत से इसकी बड़ा परेशान हूँ,
सताने की आदत, बड़ी ही खराब है ॥

मेरा श्याम बाबा बड़ा



बरसों से इसके पीछे पड़ा हूँ,
'बनवारी' अपनी जिद पे अड़ा हूँ,
अपना बनाने का, मेरा ख्वाब है ॥

मेरा श्याम बाबा बड़ा



श्री जयशंकर चौधरी 'बनवारी' द्वारा
'उठेगी तुम्हारी नजर धीरे-धीरे' गीत
की तर्ज पर रचित सुप्रसिद्ध रचना ।



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

थारी बांकी अदा पर वारूँ प्राण,
ओ जी श्याम रंगीला, मिलता रहिज्यो जी ।
थारी मारै छै मीठी मुस्कान,
थारा नैण रसीला, खिलता रहिज्यो जी ॥



॥ श्री याणशाय नमः ॥



॥ श्री योर हनुमते नमः ॥

मन का थे मनमौजी कान्हा, मनगरा जी राज,
कोई दिन तो आओ थे, म्हारै घरां जी राज,
मेरी छोटी सी अरजी नै ल्यो मान,
म्हारा छैल-छबीला, मिलता रहिज्यो जी ॥
थारी बांकी अदा पर वारूँ प्राण....

पड़दो थारै सूँ काई राखणो जी राज,
थारै सूँ ही तो साँची भाखणो जी राज,
थारो रसना सैं करां के बखाण,
थारा नैण रसीला, मिलता रहिज्यो जी ॥
थारी बांकी अदा पर वारूँ प्राण....

आंधे की थे ही कान्हा, लाकड़ी जी राज,
म्हांपै साँवरिया थारी ठाकरी जी राज,
थारो नित की करां छां गुणगान,
म्हारा श्याम सजीला, मिलता रहिज्यो जी ॥
थारी बांकी अदा पर वारूँ प्राण....

श्यामबहादुर साँचा साँवरा जी राज,
नैणा सुरंगा म्हारै राव रा जी राज,
थे ही 'शिव' का तो साँचा जजमान,
गोपाल हठीला, मिलता रहिज्यो जी ॥
थारी बांकी अदा पर वारूँ प्राण....

श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी श्रीमराजका 'शिव'
द्वारा राजस्थानी तर्ज 'म्हारै हंजा मारू' पर
रचित अनुपम रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

: □□□□□□□□□□

लटक निराली, हे वनमाली, कैसे करूँ बखान,
अनोखी झांकी है ।
श्याम वरण रतनारे नैणा, मस्तानी मुस्कान,
अनोखी झांकी है ॥



॥ श्री याणशाय नमः ॥



॥ श्री योर हनुमते नमः ॥

मोरपंख सिर पर सोहै, झूमर की छवि न्यारी है,
रजत जड़ित गळहार पड़यो, वैजयन्ती मतवारी है,
पागल हंसा बेगो करले, प्रीतम सें पहचाण ॥
अनोखी झांकी है.....

तकमां झब्बेदार बण्या, चोटी धूधरवाली है,
फेंटे की फहरण मांही, लहरां नवरंग हाली है,
ता-ता थैया नाचै मोहन, छेड़ बीन की तान ॥
अनोखी झांकी है.....

नागराज के मस्तक पे, झूम रहे बृजराज खड़े,
पड़ी तागड़ी मोत्यां की, भाँति-भाँति के रतन जड़े,
नागसुता आरती उतारें, गांवे मंगलगान ॥
अनोखी झांकी है.....

सावलशाह गिरधारी का,
देख लिया जिसने जलवा,
गरमा-गरम उड़ा 'काशी', श्याम नाम का तूं हलवा,
सुण-सुणकर मोहन की महिमा, तड़फन लागै प्राण ॥
अनोखी झांकी है.....

हसनपुरा, जामार

श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी श्रीमराजका 'शिव'
द्वारा सुप्रसिद्ध भजन 'गाड़ीवाले मन्नै बिठाले'
की तर्ज पर रचित अनूठी रचना ।

□□□□□□□□□□

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

मोटो थारो दरबार, सेवक आयो थारै द्वार,
बाबा ध्यान रखना ॥

□

धूम्यो सारी दुनिया, मिल्यो ना कोई साथी,
जो कहवै अपना,
भक्तों से सुनी है, साँचा है एक साथी,
श्री श्याम अपना,
श्री श्याम अपना, जग झूठा सपना ॥
थारो मोटो दरबार, सेवक.....



बाबा थारो टाबर, बड़ो ही दुखियारो,
सतावै है जहाँ,
थे ही म्हारा मालिक, पिता और माता,
मैं जाऊँगा कहाँ,
मैं जाऊँगा कहाँ, बस रहँगा यहाँ ॥
थारो मोटो दरबार, सेवक.....

□

लाखों का बणाया हो, मेरा भी संवारोगा,
कारज जरूर,
मेरी छोटी नैया, खावै है हिचकौला,
ओ मेरे हुजूर,
ओ मेरे हुजूर, माफ़ करना कुसर ॥
थारो मोटो दरबार, सेवक.....

□

फूलों सें सजावां, थारी या फुलवारी,
पथारो घनश्याम,
भक्तां बीच बैठो, सुणो थे सैंकी अरजी,
जो लेवै नाम,

जो लेवै थारो नाम, श्री श्याम श्याम श्याम ॥
थारो मोटो दरबार, सेवक.....

□ □ □

'तेरी दुनिया से दूर, होके चले मजबूर' गीत
की तर्ज पीकर रचित अनूठी रचना ।
लेखक - अज्ञात ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □



प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की उम्मीद

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □

जो भरके तुम्हें देखा ही नहीं,
जाने का अभी से सवाल नहीं,
मुद्दत की मेरी प्यासी आँखें,
क्या निहारेंगी मैदान गोपाल नहीं ॥



जग बीत गये तेरी यादों में,
क्या मेरी तुम्हें यादाई कभी,
अपने में ही मस्त बने फिरते,
इस ओर भी नजरें मिलाई कभी,
करने की ना सूझी सुनाई मेरी,
थोड़ा सा भी मेरा ख्याल नहीं ॥

क्यों आगमभाग मचाई है,
मेरे जर्खमों की तू ही दवाई है,
तेरे कदमों में नजरें बिछाई हैं,
ये प्रीत की बेल सवाई हैं,
रुख तेरी ओर लगाई हैं,
तुमसे तो छुपा मेरा हाल नहीं ॥

प्राणों में प्यास जगा करके,
सरकार सलोने साँवरिया,
ये जीव तुम्हीं पे टिकाया है,
दिलदार रंगीले साँवरिया,
'शिव' श्यामबहादुर महर करो,
कोई तेरा सा दीनदयाल नहीं ॥

□ □ □

श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी भीमराजका
'शिव' द्वारा 'छू लेने दो नाजुक होठों को'
गीत की तर्ज पर रचित अनूठी रचना ।

□ □ □ □ □ □ □

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षाली वर्ष

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति
हसनपुरा, जयपुर

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति

: □□□□□□□□□□

सारी दुनिया मं गूँजे थारो नाम,
खाटू का बाबा श्याम,
माया तो थारी थे ही जाणो ॥

□

निर्बल का बल, निर्धन का धन, थारो रुतबो न्यारो,
हारयोडां की जीत करावै, बाबो श्याम हमारो,
बाबा दरदी नै देवो थे आराम,
खाटू का बाबा श्याम,
माया तो थारी थे ही जाणो ॥



जो कोई लेवै थारो आसरो, बैठ्यो मौज उडावै,
खूँटी ताण के सोवै बीनै, चिंता नहीं सतावै,
बैंका थे ही बणाओ सारा काम,
खाटू का बाबा श्याम,
माया तो थारी थे ही जाणो ॥

□

बिन पाणी के नाव चलाओ, ऐसी है सकळाई,
आँख्यां पढकै 'हर्ष' भगत की, आप ही करो सुणाई,
थारे देरी को कोन्या कोई काम,
खाटू का बाबा श्याम,
माया तो थारी थे ही जाणो ॥

□□□

श्री विनोद अग्रवाल 'हर्ष' द्वारा सुप्रसिद्ध भजन 'संतों सुरगं
सें आगो सन्देश' की तर्ज पर रचित भावपूर्ण रचना ।

□□□□□□□□□□

हसनपुरा, जयपुर

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षीय वृत्ति

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

श्री श्याम रंगीला, थारी भी लीला अपरम्पार है ॥

□

अन्न-धन-लिछमी बेटा-पोता, बांटो थे दातार,
मोटा सेठ आपको लागयो, खाट मं दरबार ॥

श्री श्याम रंगीला, थारी भी



॥ श्री याणशाय नमः ॥



॥ श्री योर हनुमते नमः ॥

कळजुग मं थारो सो कोई, देव ना दूजो और,
दीनबन्धु संतन हितकारी, भगतां का सिरमौर ॥

श्री श्याम रंगीला, थारी भी

□

जी भरकै गुणगान श्याम का, गाँड़ प्रेम विभोर,
थे मेरा आराध्य श्यामजी, थे मेरा चित्तचोर ॥

श्री श्याम रंगीला, थारी भी

□

जितणी बेगी करो सुणाई, है उतणी ही सूल,
क्षमा करो हे श्यामबिहारी, हो गई हो कोई भूल ॥

श्री श्याम रंगीला, थारी भी

□

श्यामबहादुर 'शिव' साँवरिया, कुल का पालणहार,
म्हांकी अरजी थांकी मरजी, खोल देओ भण्डार ॥

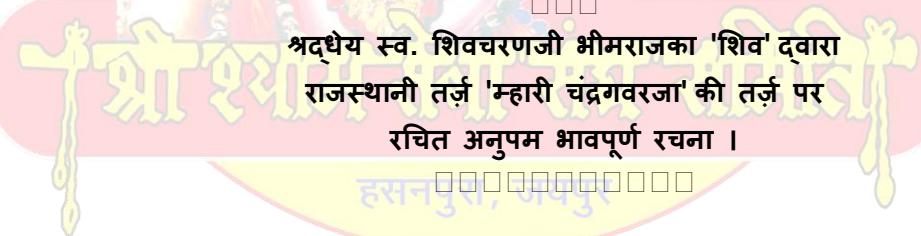
श्री श्याम रंगीला, थारी भी

□ □ □

श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा
राजस्थानी तर्ज 'म्हारी चंद्रगवरजा' की तर्ज पर
रचित अनुपम भावपूर्ण रचना ।

हसनुरा, जपुर

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षीय वर्ष



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

श्यामसुन्दर को जो देखा, खिल गई मन की कली,
भूल बैठे हम कहाँ हैं, कौन सी अपनी गली ॥

□

आपसे दिल लड़ गया, काँटा कलेजे गड़ गया,
सांवला वो रूप तेरा, मेरे चित पर चढ़ गया,
बढ़ गया जिस रास्ते पे, तेरी चित्तवन ले चली ॥

श्यामसुन्दर को जो देखा, खिल.....

□

देख करुणाई मेरी, क्या रंग रुख लाई तेरी,
तेरी चौखट पर कन्हैया, हो ना रुसवाई मेरी,
मैं न कुछ भी कह रहा हूँ, लोग कहते हैं छली ॥

श्यामसुन्दर को जो देखा, खिल.....

□

देखलो जो एक नजर, मुरलीमनोहर दास को,
दरश देकर के बुझादो, मेरे मन की प्यास को,
प्रीत मेरी जानते हो, श्याम पर्दे में पली ॥

श्यामसुन्दर को जो देखा, खिल.....

□

श्यामबहादुर आपके, चरणों की रज मेरे हुजूर,
प्यार से 'शिव' में पुकारूँ,
फिर भी क्यूँ मुझसे हो दूर,

भा गई छवि श्याम की, झाँकी मुझे लगती भली ॥

श्यामसुन्दर को जो देखा, खिल.....

□ □ □

श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी श्रीमराजका 'शिव' द्वारा 'आपकी नज़रों ने
समझा, प्यार के काबिल मुझे' गीत की तर्ज पर रचित अनुपम रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 गाँवकाली वर्ष

ॐ श्री श्याम सेवा संघ रामात्

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

इस कृष्ण कन्हैया की, चौखट का दिल दीवाना है,
मुरली मनोहर की, चित्तवन का दिल दीवाना है ॥

□

नैण बाण से घायल करके, सुन्दर श्याम रंगीलो,
कुण जाणे कद राजी होज्या,
एक पल छोड़ ना ढीलो ॥
श्री कृष्ण कन्हैया की, चौखट.....

॥ श्री खीर हनुमते नमः ॥

गोवर्धन गिरधारी को है, के सिणगार अनूठे,
रूप माधुरी मनमोहन की,
लूटी जाय तो लूटो ॥
श्री कृष्ण कन्हैया की, चौखट.....

□

देवकीनन्दन कंस निकंदन, दीनों के हितकारी,
वासुदेव दामोदर केशव,
करो हुकुम सरकारी ॥
श्री कृष्ण कन्हैया की, चौखट.....

□

श्यामबहादुर रंग रंगीलो, साँवळ शाह बनवारी,
अरी सभा मं लाज बचाई,
'शिव' की बांके बिहारी ॥
श्री कृष्ण कन्हैया की, चौखट.....

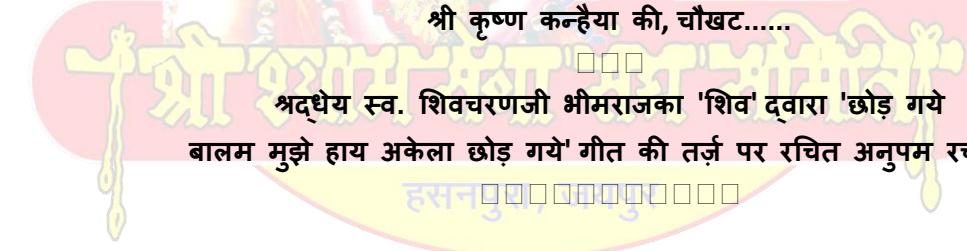
□ □ □

श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा 'छोड़ गये
बालम मुझे हाय अकेला छोड़ गये' गीत की तर्ज पर रचित अनुपम रचना ।

हसन तुम्हारा तुम्हारा तुम्हारा

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 गोरक्षाली वर्ष



॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

॥ ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ॥

नैया पार लगादे बाबा, चरणां मं पड़ी,
अब तो हो घोड़ै असवार घुमादे, मोर की छड़ी ॥

□

दीन-दुखी के दाता तुम हो, दीन दयालु नाम,
कद सैं करूँ अर्चना थारी, पूरण करदे काम,
अबतो सुणले म्हारा श्याम, नैया अटक्योड़ी पड़ी ।

अब तो हो घोड़ै असवार.....

□

एक बाण की शक्ति सैं थे, बिंध्या पीपळ पान,
रणभूमि मं आप पथारया, दियो शीश को दान,
मैया जोवै है बाटडली, थारी खड़ी रे खड़ी ॥

अब तो हो घोड़ै असवार.....

□

श्यामकुण्ड मं प्रगट भया थे, खाटू रहया बिराज,
इयोड़ी पर बजरंगी बैठ्यो, सारै सबका काज,
सोहवै पचरंगी ध्वजा थारै, शिखर पर खड़ी ॥

अब तो हो घोड़ै असवार.....

□

सभी जणा मिलकर कै चालो, बाबाजी कै धाम,
सांचै मन सैं ध्यान लगाल्यो, कहता 'पालीराम',
या तो टाबारियां की मंडली थारै, हाजिर खड़ी ॥

अब तो हो घोड़ै असवार.....

प्रानव-माधव सेवा के 30 गौरवशाली वर्ष

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

राजस्थानी भजन 'पगल्यां री पायलड़ी भीजै' की तर्ज पर रचित अति
प्राचीन भावपूर्ण रचना । लेखक - श्री पालीराम (अज्ञात) ।

हसन ॥ ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ॥

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

म्हारै द्वारे एक दिन मोहन, आओ जी साँवरिया,
थारी म्हारी, आपस मं, लागी जी निजरिया ॥

□

मोरमुकुट सिर धरकर आओ, बंशी लाओ साथ मं,
थारै खातिर घर-घर डोलूँ, सारी-सारी रात मैं,
पल-पल अँखियां बरसे जैसे, सावन की बदरिया ।

म्हारै द्वारे एक दिन मोहन....



॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥



॥ श्री गणेशाय नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 गाँवशाली वर्ष

उथल-पुथल सी हो गई मैं तो, बाबा थारै प्यार मं,
आओ तो जडवा ल्यूँ थानै, हिवडै वाळै हार मं,
श्यामा-श्यामा रटती मैं तो, हो गई रे बावरिया ॥

म्हारै द्वारे एक दिन मोहन....

□

नैन बावरे भर-भर आँवै, थोड़ी-थोड़ी देर मैं,
जित देखूँ उत तूँ ही दिखै, घर और बाहर मं,
पागल मनवा बोले चालो, श्याम की नगरिया ॥

म्हारै द्वारे एक दिन मोहन....

□

सावन की रुत आई प्यारी, चालो श्याम बाग मं,
आओ मोहन झूलो झूलां, आपां दोन्यू साथ मं,
आलूसिंह नै देख ले बाबा, बीती रे उमरिया ॥

म्हारै द्वारे एक दिन मोहन....

□ □ □

'नगरी-नगरी द्वारे-द्वारे ढूँढू रे साँवरिया' गीत की तर्ज पर रचित अति
प्राचीन भावपूर्ण रचना । लेखक - अज्ञात ।

हसन □ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□□□□□□□□

बनके जोगनिया, महलों की रानी,
नाचे मीरां दीवानी, नाचे मीरां दीवानी ॥
साँचा नाम श्याम प्रभु का है,
है घनश्याम का.....

□

रिश्टे-नाते और घर छोड़ा,
झूठी दुनिया से मुँह मोड़ा,
श्याम बसे मन के मन्दिर में,
दुःख और सुख का बंधन तोड़ा,
हाथ कमण्डल और गल माला,
मोह-माया को भी तज डाला,
मीरां कन्हैया की प्रीती पुरानी ।
नाचे मीरां दीवानी, नाचे मीरां दीवानी ॥

□

मन में मोहन, कर इकतारा,
नाम जपे गिरधर का प्यारा,
मैं गिरधर की गिरधर मेरे,
ढूँढ़ा साँवरिया का द्वारा,
सन्त समागम हरिकथा भावै,
नहीं दुनिया के रंग सुहावै,
दुनिया की बातों में क्या आनी-जानी ।
नाचे मीरां दीवानी, नाचे मीरां दीवानी ॥

□

श्याम की खातिर सब दुःख झेले,
जहर पिया सर्पों से खेले,
सहन किये दुनिया के ताने,
श्याम बिना सब सूने मेले,
जिसके संग कन्हैया सोहवै,
बाल ना बांका उसका होवै, मोहन के संग बीते जिन्दगानी ।
नाचे मीरां दीवानी, नाचे मीरां दीवानी ॥

हसनपुरा जपुर

'श्यामसुन्दर' के रंग में रंगकर,
मीरां ओढ़ी श्याम चुनरिया,
गिरधर-गिरधर रटते-रटते,
यूँ ही बिताई सारी उमरिया,
मातृदत्त जो श्याम मनावै, वो दुनिया में नाम कमावै,
हो गई अमर जग में ये कहानी ।
नाचे मीरां दीवानी, नाचे मीरां दीवानी ॥

□□□

स्व. श्यामसुन्दरजी शर्मा पालम वालों
द्वारा 'मैं तेरी दुश्मन, दुश्मन तूं मेरा'
(नगीना) गीत की तर्ज पर रचित रचना ।

□□□□□□□□



॥ श्री याम समिति ॥



॥ श्री याम हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

धीरे से बोले बर्बरीक, माता के कान में,
मैया तूं भेज दे मुझे, युद्ध के मैदान में ॥

□

कुरुवंशियों ने युद्ध का, डंका बजा दिया,
चुन-चुन के सारे वीरों को, उसमे बुला लिया,
मुझको बुला रही धरा, जग के कल्याण में ॥
मैया तूं भेज दे मुझे.....

□

हँस कर विदा करो मुझे, कहता तेरा ललन,
हारे का साथ दौ सदा, देता हूँ ये वचन,
आये कभी भी आँच ना, मैया की शान में ॥
मैया तूं भेज दे मुझे.....

□

आजा मिले जो माँ तेरी, जाये ये तेरा लाल,
मौका मिला है आग्य से, मैया मुझे ना टाल,
युद्ध का करूँ मैं फैसला, बस एक बाण में ॥
मैया तूं भेज दे मुझे.....

□

माथे पे वीर पुत्र के, टीका लगा दिया,
सारा खजाना प्यार का, उसपे लुटा दिया,
'बिन्नू' किसे ना गर्व हो, ऐसी संतान पे ॥
मैया तूं भेज दे मुझे.....

□ □ □

श्री बिनोदकुमार जी गाडोदिया 'बिन्नू' द्वारा 'मिलती है जिन्दगी में, मुहब्बत कभी-कभी'
गीत की तर्ज पर रचित रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

हसनपुरा, जयपुर



प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षीय वर्ष



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

तेरे नाम का पुजारी आया,
तेरे दर का भिखारी आया,
ओ श्याम दे दो दर्शन, काटो सारे मेरे गम ॥

□

बिन देखे तुझे, नींद आती नहीं, श्याम नहीं,
धोक खाये बिना, याद जाती नहीं, श्याम नहीं,
होठों पे है तेरा नाम, रटता सुबह और शाम,
मेरे सिर पर हथ फिरा जा ॥
ओ श्याम दे दो दर्शन



प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

दर छोड़ तेरा, मैं कहाँ जाऊँ, मैं कहाँ,
दुःख-दर्द मेरा, मैं सुनाऊँ कहाँ, मैं कहाँ,
मेरा तूं ही तो आधार, तेरी महिमा अपार,
होक लीले पे सवार, बाबा आ जा ॥
ओ श्याम दे दो दर्शन

□

तेरे चरणों से कैसे लिपट जाऊँ श्याम, ये बता,
तुम कहाँ हो छिपे, किस दर जाऊँ श्याम, ये बता,
क्यों हो गए खफा, मुझे इतना बता,
मेरे नयनों में आके समा जा ॥
ओ श्याम दे दो दर्शन

□ □ □

'मेरा दिल ये पुकारे आजा' गीत की तर्ज पर
रचित अनुपम रचना । लेखक - अजात ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

हसनपुरा, जयपुर

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

ओ मुहब्बत के मसीहा, दास को कुछ प्यार दे,
खाक हूँ चरणों का तेरे, कुछ मुझे आधार दे ॥

□

मिल गई आँखों से आँखें, दिल दीवाना हो गया,
द्वार वे दस्तक लगाता, हूँ जमाना हो गया,
जिन्दगी जीता रहूँ, ऐतबार मुझे सरकार दे ॥
ओ मुहब्बत के मसीहा.....

□

छानता हूँ मस्तियां, यादें तेरी आबाद हैं,
तूं सुने या ना सुने, मेरी तो ये फ़रियाद हैं,
बाँसुरी वाले कर दया, आज तूं दीदार दे ॥
ओ मुहब्बत के मसीहा.....

□

श्यामबहादुर 'शिव' क्या, उल्फत का ये अंजाम है,
साँवले बांकेबिहारी, का जहां में नाम है,
शक्ति का संचार कर, चोला ये शीघ्र संवार दे ॥
ओ मुहब्बत के मसीहा.....

□ □ □

श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा 'आपकी नज़रों ने समझा,
प्यार के काबिल मुझे' गीत की तर्ज़ पर रचित अनूठी रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षीय वर्ष



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

हसनपुरा, जयपुर

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □

धन्य दुँडारो देश है,
कोई धन-धन खाटूधाम,
बिराजे बाबो श्याम जी ॥

□

ऊँचे शिखर थारी धवजा फरखै,
कोई चमकै तेज निशान,
झोड़याँ पर हनुमान जी ॥

□

फागण सुदी ग्यारस को मेलो,
कोई उमड़यो आवै सारो गाँव,
सुणकर थारो नाम जी ॥

□

घर-घर थारी ज्योत जगै है,
कोई पूजा होवै सुबह-शाम,
साँचो बाबो श्याम जी ॥

□

श्यामकुण्ड मं जो कोई न्हावै,
बैंका कट ज्या रोग तमाम,
लागै छै ना दाम जी ॥

□

'ताराचन्द' की विनती थे,
सुणज्यो बाबा श्याम,
सुधारो सब काम जी ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

स्व. ताराचन्द जी शर्मा द्वारा
राजस्थानी तर्ज 'चिरमी' पर

हसनगुरु अनुपम रचना ।

□ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

सबकी जुबां पर एक ही नाम,
तुम से बड़ा ना दानी श्याम ।
सबकी अरजी सुनते हो श्याम,
तुम से बड़ा ना दानी श्याम ॥

□

रण में तुम आये थे, हारे को जितवाने,
कृष्ण की माया थी, कौन ये पहचाने,
बर्बरीक ने कृष्ण को अपना, शीश दे दिया दान,
ले लिया कृष्ण ने छल से काम,
तुम से बड़ा ना दानी श्याम ॥



रण के परिणामों को, कृष्ण ने जांचा था,
शीश के दानी का, न्याय भी साँचा था,
कलियुग में तेरी पूजा होगी, घर-घर सुबह-शाम,
दे दिया कृष्ण ने अपना ही नाम,
तुम से बड़ा ना दानी श्याम ॥

□

जो खाटू जाता है, बड़ा सुख पाता है,
मुरादें अपनी ओ, सभी पा जाता है,
'शिब्बू' 'रवि' ये कहते बनते, सबके बिगड़े काम,
बन गया खाटू पावन धाम,
तुम से बड़ा ना दानी श्याम ॥

□ □ □

श्री रविन्द्र के जरीवाल 'रवि' एवं श्री शिवकुमार जालान
'शिब्बू' द्वारा 'और इस दिल में क्या रखा है' गीत की तर्ज पर रचित लोकप्रिय रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □
हसनपुरा, जयपुर

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

नजरें मिलाके मुझसे, हे श्याम मुस्कुरा दो,
गलती अगर हुई तो, दिल से उसे भुला दो ॥

□

किस बात पे खफा हो, नाराज लग रहे हो,
लगते हो जैसे हरदम, ना आज लग रहे हो,
खोये-खोये से मेरे, सरताज लग रहे हो,
तुझको रिझाऊँ कैसे, इतना मुझे बता दो ॥
नजरें मिलाके मुझसे, हे श्याम

□

पुतला हूँ गलतियों का, इंसान हूँ कन्हैया,
तुमसे छिपा नहीं है, परेशान हूँ कन्हैया,
करदो क्षमा दयालु, नादान हूँ कन्हैया,
दीनों के नाथ मेरी, परेशनियां मिटा दो ॥
नजरें मिलाके मुझसे, हे श्याम

□

बालक में तुम पिता हो, रिश्ता ना छूट सकता,
बातों से यूँ ही दिल का, बंधन ना टूट सकता,
'बिन्न' कहे कन्हैया, मुझसे ना रुठ सकता,
गालों पे प्यार से दो, थपकी मेरे लगा दो ॥
नजरें मिलाके मुझसे, हे श्याम

□ □ □

श्री बिनोद कुमार जी गाडोदिया 'बिन्न' द्वारा
'मैं कहीं कवि न बन जाऊँ' गीत की तर्ज पर
रचित अनुपम भावपूर्ण रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की शुभाली वर्ष



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

हसनपुरा, जयपुर

ॐ श्री श्याम सरेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

जीना है अगर सुख से, हँसते-हँसते जी ले,
श्री श्याम सरोवर से, दो घूँट सुधा पी ले ॥

□

खोजा सो ही पाया है, किस मद में भुलाया है,
संसार सभी उसमें, वो सब में समाया है,
वहाँ प्यास बुझे कैसे, बालू के जहाँ टीले ॥
जीना है अगर सुख से, हँसते.....

□

जो शरण गही प्रभु की, तो क्यूँ घबराता है,
ये जीव यूँ ही जग में, आता और जाता है,
मत भूल उसे इंसां, तेरे भाव हों लचकीले ॥
जीना है अगर सुख से, हँसते.....

□

प्रीतम से किया वादा, उसे याद सदा रखना,
ये पेड़ लगाया है, फल चाहे अगर चखना,
तो दिल के तार बजा, आहों से हों दर्दीले ॥
जीना है अगर सुख से, हँसते.....

□

बीती है जो अपने पर, वो किसको सुनाता है,
'शिव' श्यामबहादुर का, श्री श्याम से नाता है,
मुश्किल है पता पाना, ये धाव हैं गहरीले ॥
जीना है अगर सुख से, हँसते.....

□ □ □

श्रद्धेय शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा
'ऐ मेरे दिल-ए-नादां' गीत की तर्ज पर रचित
भावपूर्ण रचना ।

हसना ॥ □ □ □ □ □ □ □ □ □

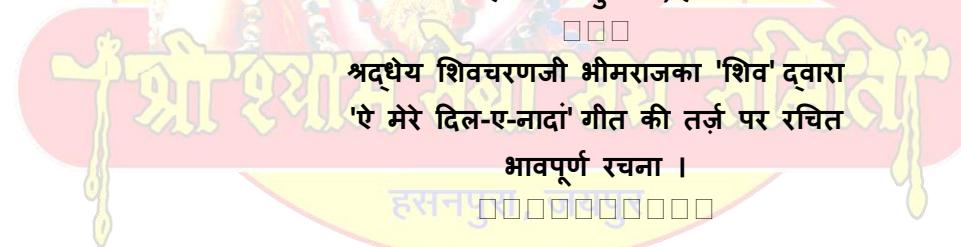


॥ श्री श्याम सरेवा संघ समिति ॥



॥ श्री श्याम सरेवा संघ समिति ॥

प्रानव-माधव सर्वा के 30 गौरवशाली वर्ष



ॐ श्री श्यामरसेवा संघ "समिति"

□ □ □ □ □ □ □ □ □

दरबार में आकर दाता के,
हम दर्द सुनाना भूल गये,
देखे जो हजारो दीन-दुखी,
हम अपना फ़साना भूल गये ॥

□

अशकों से भरी लाखों आँखें,
बैचैन सी हैं कुछ पाने को,
संसार समन्दर के माझी,
क्या नाव चलाना भूल गये ॥
दरबार में आकर दाता के...

□

जाने-पहचाने मुद्दत के,
प्रभु आशा लेकर आये हैं,
क्या चाहने वालों को अपने,
सीने से लगाना भूल गये ॥
दरबार में आकर दाता के...

□

कहीं चीर बने बड़वीर बने,
निज भक्तों की तकदीर बने,
हे दीनबन्धु क्या गीता के,
वादे को निभाना भूल गये ॥
दरबार में आकर दाता के...

□

श्री श्यामबहादुर भक्त बड़े,
दरबार के प्रेम पुजारी थे,
दाता से वही 'शिव' का नाता,
क्या नैन मिलाना भूल गये ॥
दरबार में आकर दाता के...

□ □ □

श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी भीमराजका
द्वारा रचित 'ग़ज़ल' (भजन)। इस
रचना को 'बजरंगबली मेरी नाव चली'
भजन की तर्ज पर भी गाया जाता है।

□ □ □ □ □ □ □ □ □



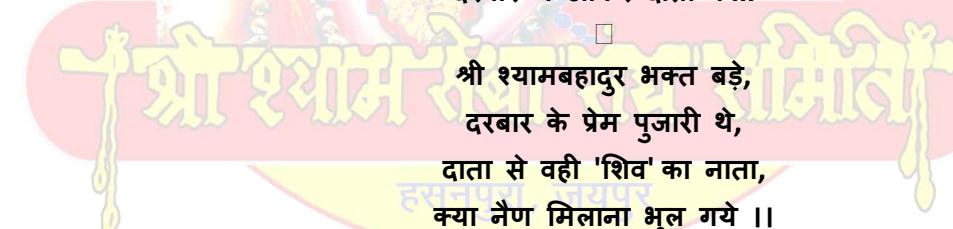
॥ श्री यामशास्य नमः ॥



॥ श्री योर हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 और वशाली वर्ष

30



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

श्यामजी रंगीला मोहे शरण में लीजिये,
दृष्टि दया की मोपे, श्याम कर दीजिये ॥

□

सदियां सैं बाबा मैं तो, चाकरियो थारो हूँ,
फेर भी दयालु देवा, कैंया दुखियारो हूँ,
सिन्धु बीच न्याव बाबा, श्याम पार कीजिये ॥
दृष्टि दया की बाबा, श्याम.....

□

जोर जैंको चालै जैं पर, बैंसू कर जोड़ के,
दूसरो ना दिखै कोई, सांवरै नै छोड़ कै,
दास की पुकार सुणकै, क्यूँइ तो पसीजिये ॥
दृष्टि दया की बाबा, श्याम.....

□

काम है सदा सैं मेरो, हाजरी बजावणो,
गुणगान गा के खाटू, श्याम नै रिझावणो,
दर को भिखारी थारो, बेगा सा रीझिये ॥
दृष्टि दया की बाबा, श्याम.....

□

श्यामबहादुर बाबो, श्याम दातार है,
'शिव' को तो सारो, बैं पे दारोमदार है,
श्याम नाम हाला प्याला, घोळ-घोळ पीजिये ॥
दृष्टि दया की बाबा, श्याम.....

□ □ □

श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा 'छुप गया
कोई रे, दूर से पुकार के' गीत की तरङ्ग पर रचित अनमोल रचना ।

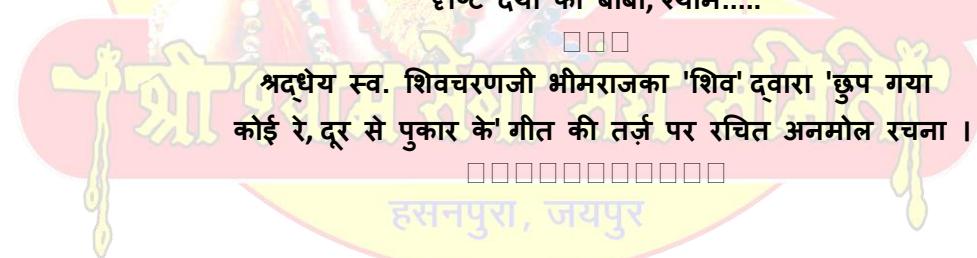
□ □ □ □ □ □ □ □ □

हसनपुरा, जयपुर

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 गोरक्षाली वर्ष



ॐ श्री श्याम रसेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □

थारी नगरी मं साँवरिया नाचूँ
दोन्यू आंख्यां भीच ॥

□

बिन दर्शन मनडो नहीं मानै,
जी भरमायो म्हारो क्यांनै,
नैण नचावे छानै-छानै,
अणसमझी सैं लई कन्हैया,
बेल प्रीत की रींच ॥



प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

थारै सैं भीतरलो मिलग्यो,
चाणचुकी चुपकै सी मिलगो,
लटक देख मेरो मन खिलग्यो,
घणी दूर सैं आयो हूँ प्रभु,
क्यांकी खींचम-खींच ॥

□

मैं नाचूँ मेरो मनडो नाचै,
संसारी सब थानै जांचै,
रेख नसीबां की कुण बांचै,
सुरत सुहागण नाचै थारै,
मंदरियै के बीच ॥

□

श्यामबहादुर थे मनगरिया,
'शिव' के तो थारा ही जरिया,
यादों मं दोङ्ग नैण झारिया,
मोड़ घणा बैकुंठ सांकड़ी,
माची भींचम-भींच ॥

□ □ □

स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव'
द्वारा सुप्रसिद्ध तर्ज रसिया (हो रहयो
बाबा की नगरी मं) पर रचित अनुपम
भावपूर्ण रचना ।

□ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम रैवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □

हे गिरधर गोपाल मेरी सुध,
बेगा लिज्यो जी,
धावो दीनदयाल भीख,
दर्शन की दीज्यो जी ॥

□

दीनबन्धु की याद सतावै,
के करल्यूं जियो भर-भर आवै,
धीरज देकर जी बिलमावै,
प्रीत ना किज्यो जी ॥
हे गिरधर गोपाल मेरी सुध.....



समरथ को कोई दोष नहीं है,
ऐं पगलै नै होश नहीं है,
नैनन जल सें वक्ष-स्थल,
दरदी को भीज्यो जी ॥
हे गिरधर गोपाल मेरी सुध.....

□

माया को तेरी पार नहीं है,
कहणै मं कोई सार नहीं है,
दूजो कोई आधार नहीं है,
धीरज छीज्यो जी ॥
हे गिरधर गोपाल मेरी सुध.....

□

श्यामबहादुर बांकै बिहारी,
नेह लगाकै नीत बिगाड़ी,
'शिव' के श्याम सुदर्शनधारी,
बाँह धरीज्यो जी ॥
हे गिरधर गोपाल मेरी सुध.....

□ □ □

श्रद्धेय शिवचरणजी भीमराजका 'शिव'
दवारा सुप्रसिद्ध भजन 'दर्शन दो घनश्याम
नाथ' की तर्ज पर रचित अद्भुत रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

ॐ श्री श्याम रैवा संघ समिति ॥

ॐ श्री ईश्वामर्सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

चला भी आ, ओ आज्या सांवरा,
खाटूवाले आजा तेरा लाल बुलाये,
लीले चढ़कर आजा, मेरा मन घबराये ॥

□

छाया अंधियारा, मिले ना किनारा,
मझधार नैया मेरी, दे दे सहारा,
पार लगादे अब, करके इक इशारा,
मुश्किल घड़ी में मैंने, तुझको पुकारा ॥
चला भी आ, ओ आज्या



प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षीय
समाप्ति

प्रियतम तूं मेरा, प्रीत जगाले,
कब से तरसती बांहे, दिल से लगाले,
बैरी ज़माना, झूठा फ़साना,
तूं तो सावरिया ना, मुझको सजा दे ॥
चला भी आ, ओ आज्या

□

दिल घबराये, मन मेरा तरसे,
दर्शन को तेरे मेरी, अंखिया ये बरसे,
क्यूँ नहीं आये, क्यूँ आजमाये,
बनके कठोर हमें, क्यूँ तूं सताये ॥
चला भी आ, ओ आज्या

□

जल बिन मछली, पौधे बिन कली,
रह कैसे पाये बोलो, वो एक पल भी,
तुम बिन 'निर्मल', हो जैसे निर्बल,
साथ-साथ मेरे बाबा, बस एक बार चल ॥
चला भी आ, ओ आज्या

□ □ □

श्री निर्मल झुंझुनवाला द्वारा 'चला भी आ, ओ
आजा रसिया' गीत की तर्ज़ रचित भजन ।

□ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

मैया री मैया, एक खिलौना, छोटा सा दिलवा दे,
चाबी भरकर छोड़ तो वो, एक ही रटन लगा दे ।
वो बोले श्याम - श्याम - श्याम ॥

□

ना मैं चाहूँ हाथी-घोड़ा, ना कोई बाजे वाला,
मुझको तो बस आज दिलादे, मोहन मुरलीवाला,
बटन दबाते ही वो झट से, मुरली मधुर बजादे ॥
चाबी भरकर जब छोड़ तो.....

११ श्री वीर हनुमते नमः ॥

११ श्री गणेशाय नमः ॥

□

मोरमुकुट हो प्यारा-प्यारा, मेरे मन बस जाये,
जो मुरली की धुन सुनले, वो मस्ती मैं खो जाये,
पग मैं पायल छम-2 बाजे, सबको नाच नचादे ॥
चाबी भरकर जब छोड़ तो.....

□

नैनों से हो अमृत वर्षा, मंद-मंद मुस्काये,
ठुमक-2 जब चाल चले, मन मतवाला हो जाये,
एक बूँद उस अमृत रस की, मैया मुझे पिलादे ॥
चाबी भरकर जब छोड़ तो.....

□

'श्यामसुन्दर' मुरलीवाले को, अपना आज बना लूँ,
मातृदत्त यदि मिले खिलौना, सोये भाग्य जगा लूँ,
देर करो मत सुन मेरी मैया, जलदी से मिलवा दे ॥
चाबी भरकर जब छोड़ तो.....

प्रानव-माधव सेवा के 30 गाँववाली वर्ष

ॐ
श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥
स्व. श्यामसुन्दर जी शर्मा पालम वालों द्वारा
'माई नी माई, मुंडेर पे तेरी' गीत की तर्ज पर
हसनपुरा रचित भजन ।
□ □ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सरेषा संघ समिति ॥

॥ ० ० ० ० ० ॥ ० ० ० ० ० ॥

आज्या-आज्या रे सांवरिया, तेरी याद करूँ,
याद करूँ रे तेरी याद करूँ ॥

□

बांकी सी लटक तेरी, नैन मं उतार ली,
मीठी सी लगन लागी, जिन्दगी सँवार ली,
तो तेरै सें ही बैठ्यो कुचमाद करूँ ॥
आज्या-आज्या रे सांवरिया

□

तेरै तो कन्हैया प्यारा, लफड़ो घणेरो,
आंगळी टिकाव बता, कंईया होसी मेरो,
फेरू भी देख फरियाद करूँ ॥
आज्या-आज्या रे सांवरिया

□

तेरै बिना श्याम सरकार नहीं आवड़ै,
बाटां उडीकूं देखां कद ताईं बावड़ै,
तो तेरै सें ग्वालिड़ा दिल साध करूँ ॥
आज्या-आज्या रे सांवरिया

□

श्यामबहादुर 'शिव', करै मनुहार है,
साँची खूँ हूँ तूं तो, यारां को भी यार है,
तो जिगरी सें दिल आबाद करूँ ॥
आज्या-आज्या रे सांवरिया

□ □ □

कुचमाद = छेड़छाड़, शैतानी,
खूँ = कहूँ, आवड़ै = जी लगना,
बावड़ै = वापस लौटना

हसनपुरा, ००००

मानव-माथव सरेषा के 30 गाँवशाली वर्ष

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

ॐ श्री श्याम सरेषा संघ समिति ॥

श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी भीमराजका द्वारा सुप्रसिद्ध भजन 'वारी जाऊँ जी महाराज
बिड़द बंका' की तर्ज पर रचित भजन ।

॥ ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ॥

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

श्याम तेरे चाहने वालों की क्या पहचान है,
उनसे मिलने का मेरे दिल में बड़ा अरमान है ॥

□

सोचता रहता हूँ तेरे, भक्त से मुलाकात हो,
प्रार्थना इतनी है तुमसे, उनका मेरा साथ हो,
लोग कहते हैं कन्हैया, भक्त में भगवान है ॥
उनसे मिलने का मेरे दिल में

□

हो सके तो मुझको मीरां, से मिलादे साँवरे,
नरसी मेहता के भजन की, धुन सूना दे साँवरे,
पर उन्हें जानूँगा कैसे, जान ना पहचान है ॥
उनसे मिलने का मेरे दिल में

□

जो कृपा उन पर थी मोहन,
उतनी मुझ पर क्यों नहीं,
माँगता 'बनवारी' तुमसे, भक्ति मिलती क्यूँ नहीं,
वो भी तो इन्सान थे और, हम भी इन्सान हैं ॥
उनसे मिलने का मेरे दिल में

□ □ □

श्री जयशंकर चौधरी 'बनवारी' द्वारा 'हमसफ़र मेरे हमसफ़र' गीत
की तर्ज पर रचित अनुपम रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षीय वर्ष



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

हसनपुरा, जयपुर

ॐ श्री ईश्वामरसेवा संघ समिति ॥

□□□□□□□□□□

हमपे हैं तेरा उपकार,
ओ बाबा हम तो पले हैं, तेरी छाँव में ॥

□

जब से जुड़ा हूँ, दरबार से मैं बाबा,
तेरा साथ पाया,
सुख हो या दुःख हो, सदा अपने सिर पे,
मैंने तेरा हाथ पाया,
इतना दिया है तूने प्यार,
ओ बाबा हम तो पले हैं, तेरी छाँव में ॥



अहसान इतने, तुमने किये हैं हमपे,
कैसे बताऊँ,
रोम-रोम डूबा, कर्जे में कर्जा,
कैसे चुकाऊँ,
तूने सम्हाला परिवार,
ओ बाबा हम तो पले हैं, तेरी छाँव में ॥

□

दिल की तूं समझो, बिना समझाये,
मुझको अहसास होता,
जब भी पुकारूँ, लगता है तूं तो मेरे,
आस-पास होता,
ऐसे जुड़ें हैं दिल के तार,

ओ बाबा हम तो पले हैं, तेरी छाँव में ॥

□□□

'तुझको पुकारे मेरा प्यार' गीत की तर्ज
पर रचित भजन । लेखक - अज्ञात ।

हसनपुर प्रयापर

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षाली वर्ष

ॐ श्री ईश्वामरसेवा संघ समिति ॥

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

तेरो साँचो दरबार, मेरा श्याम सरकार,
मेरी लाज रखना ॥

□

करदे इतनी किरपा, मुझे भी तेरी सेवा,
मिल जाये मेरा श्याम,
आँखों में तेरी भूरत, और दिल में तेरी सूरत,
होठों पे तेरा नाम ॥
साँचो तेरो दरबार, मेरा श्याम.....



आया है शरण में, भिखारी तेरे दर का,
ना ठुकराओ श्याम,
रो-रो के पुकारे, एक अरज़ गुजारे,
अब आ भी जाओ श्याम ॥
साँचो तेरो दरबार, मेरा श्याम.....

□

ऐसी मेरी हालत, चलेगा ना गुजारा,
निभाओ मेरे श्याम,
दुनिया की निगाह से, डरता हूँ 'बनवारी',
बचाओ मेरे श्याम ॥
साँचो तेरो दरबार, मेरा श्याम.....

□ □ □

श्री जयशंकर चौधरी 'बनवारी' द्वारा
'तेरी दुनिया से दूर, चले होके मजबूर'
गीत की तर्ज़ पर रचित भजन ।

□ □ □ □ □ □ □ □

हसनपुरा, जयपुर

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की शुभाली वर्ष

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□□□□□□□□□□

डोलै मत श्याम ज्यादा सज-धज कर,
मान जा कान्हूङा, लाग ज्यावैगी नजर ॥

□

रात्यूँ नाचै गोप्यां सागै, नित रास रचतो,
नई-नई गुजरयां सैं, रीजै थोड़ो बचतो,
गोपी बणकै आया आज भोला शंकर ॥

मान जा कान्हूङा लाग

□

कोई भी भरोसो कोनी, ओपरी नजर को,
दे ज्यावैगी रोग कोई, जिन्दगी भर को,
दाढ़ी-मूँछ्यां वाली गोपी बड़ी है जबर ॥

मान जा कान्हूङा लाग

□

मार देगी टूणो कोई, घुंघटा की ओट सैं,
लाग्यां पीछै बचै कोनी, निजरयां की चोट सैं,
लगज्या नजर तो फाट ज्या पत्थर ॥

मान जा कान्हूङा लाग

□

मेरे कन्नै आज्या थोड़ो, लूण-राई वार दयूं
काज़लियै को चाँद-तारो, माथै पै सँवार दयूं
घूमजे 'बिहारी' होके जग में निडर ॥

मान जा कान्हूङा लाग

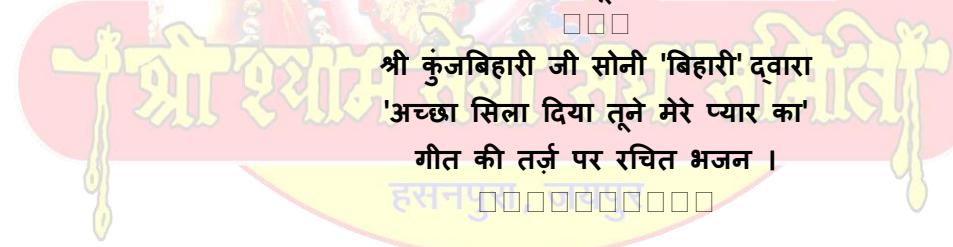
□□□

श्री कुंजबिहारी जी सोनी 'बिहारी' द्वारा
'अच्छा सिला दिया तूने मेरे प्यार का'
गीत की तर्ज पर रचित भजन ।

हसनाः □□□□□□□□□□



मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

म्हारी सांवरै सें लागी प्रीत, जुलमण छूटै ना ॥

□

मिलतो-जुलतो रे पैल्यां चाव सें,
इब कर लेई खोटी नीत, जुलमण ना छूटै ॥
म्हारी सांवरै सें लागी.....

□

पीँड-पीँड बोलै रे मन को मोरियो,
तनै डीकै मन रा मीत, जुलमण ना छूटै ॥
म्हारी सांवरै सें लागी.....



मानव-माधव सेवा के 30 गोवशाली वर्ष

□

पीर पराई रै दूजो काँई जाणौ,
म्हारै हिवडै रा संगीत, जुलमण ना छूटै ॥
म्हारी सांवरै सें लागी.....

□

प्रेम गळी छै रे रसिया सांकड़ी,
मैं काँई जाणू इण री रीत, जुलमण ना छूटै ॥
म्हारी सांवरै सें लागी.....

□

नैणा मांही रै बस गयो सांवरो,
म्हानै नीद ना आवै मीत, जुलमण ना छूटै ॥
म्हारी सांवरै सें लागी.....

□

क्यूँ दिन घालै रे आज्या तावळो,
म्हारी हार हुई थारी जीत, जुलमण ना छूटै ॥
म्हारी सांवरै सें लागी.....

□

चाकर थारो रै 'शिव' नै जाण कै,
तू मत होजे विपरीत, जुलमण ना छूटै ॥
म्हारी सांवरै सें लागी.....

□ □ □

श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी भीमराजका द्वारा राजस्थानी गीत 'म्हारी सवा लाख री लूम'
की तर्ज पर रचित भजन ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

जो भी फर्माओगे, मुझे बतलाओगे,
वो ही करूँगा मैं काम, सेवक हूँ आपका ॥

□

तूं है मेरा मालिक, और मैं हूँ सेवक तेरा,
इसीलिए तो तुम पर, बनता है हक्क मेरा,
दूटेगा कभी नहीं - कभी नहीं, रिश्ता है प्यार का ॥
जो भी फर्माओगे, मुझे



मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

जग जाहिर है मालिक, ये तेरा मेरा रिश्ता,
तेरी सेवा मैं ही, है मुझको आनंद मिलता,
भूखा हूँ हे प्रभु - हे प्रभु, तेरे दीदार का ॥
जो भी फर्माओगे, मुझे

□

तूने मुझे पिलाया, जो मस्ती का प्याला,
'बनवारी' जीवन को, खुशियों से भर डाला,
मिलता है इसीलिए - इसीलिए,
प्यार इस जहान का ॥
जो भी फर्माओगे, मुझे

□ □ □

श्री जयशंकर चौधरी 'बनवारी' द्वारा 'जे हम
तुम चोरी से' गीत की तऱी पर रचित भजन ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

हसनपुरा, जयपुर

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

मिलके खुशियां मनाओ रे, आया श्याम सलोना,
श्याम सलोना मेरा बाबा सलोना,
गीत खुशी के गाओ रे, आया श्याम सलोना ॥

□

खाटू नगरिया को दुल्हन बनाओ,
घर-घर खुशी के दीप जलाओ,
मंगल कलश सजाओ रे, आया श्याम सलोना ॥
मिलके खुशियां मनाओ रे



□

प्रगटे यहीं हैं श्याम कन्हाईं,
सुन्दर सलोनी छवि मन भाईं,
मन मंदिर में बिठाओ रे, आया श्याम सलोना ॥
मिलके खुशियां मनाओ रे

□

इनका लगा है दरबार भारी,
सज-धज के बैठे हैं श्यामबिहारी,
दिल का हाल सुनाओ रे, आया श्याम सलोना ॥
मिलके खुशियां मनाओ रे

□

मालिक 'अनिल' इन्हें मानले अपना,
कर देंगे तेरा सच हर सपना,
जीवन सफल बनाओ रे, आया श्याम सलोना ॥
मिलके खुशियां मनाओ रे

□

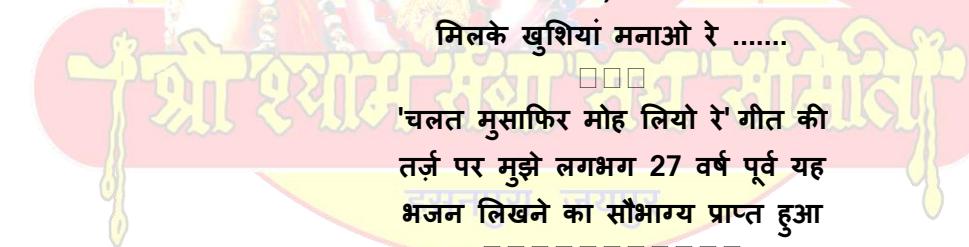
'चलत मुसाफिर मोह लियो रे' गीत की
तर्ज पर मुझे लगभग 27 वर्ष पूर्व यह
भजन लिखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ

□ □ □ □ □ □ □ □ □

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षीय
सेवा की वर्षीय वर्षीय वर्षीय



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

दिन काटां गिण-गिण, थे ही बोलो थारै बिन,
बिगड़ी कौन सुधारे,
मनमोहन मुरलीवाला, श्याम प्यारा,
कद आओला म्हारै ॥

□

म्हारै घरां आओ सद पाणी सें नुहावांगा,
चन्दन लगावांगा चँवर ढुळावांगा,
थाळ सजावांगा प्रेम सें जिमावांगा,
सेज बिछावांगा चरण दबावांगा,
आरती श्री गांवां थानै भजन सुणवां,
म्हानै तूं ही पार उतारे ॥
मनमोहन मुरलीवाला, श्याम

□

म्हारै घरां आओ थानै पालणियै झुलावांगा,
ताजा न निवायो भीठो दुधङ्गो पिलावांगा,
लाड लडावांगा गोद मं खिलावांगा,
हिवडे लगावांगा घणो सुख पावांगा,
बेगा सा आ जाओ म्हानै मत तरसाओ,
थानै ममता खड़ी पुकारै ॥
मनमोहन मुरलीवाला, श्याम

□

खाटुवाळा श्याम तूं तो लीलै को सवार है,
देर क्यूँ लगावै दाता करै क्यूँ ऊंवार है,
नाव मङ्गधार है नदिया अपार है,
तेरो ही आधार है तूं ही पतवार है,
करदे किनारे सुण थारै बिन म्हारो कुण,
इबूत जहाज उबारै ॥
मनमोहन मुरलीवाला, श्याम

□

जाणै है तूं मैं तो पक्को पापी व्याभिचारी हूँ,
कुकर्मा कुबेड़ी कुबद्धी पक्को दुराचारी हूँ,
ऐसो मैं जुआरी हूँ भलाई सारी हारी हूँ,
माया को पुजारी हूँ कुपथ पर भारी हूँ,
जाणा थारी यारी तन्ने माना रे 'बिहारी',
जद म्हांसा अधम उबारै ॥

मनमोहन मुरलीवाला, श्याम

□ □ □

श्री कुंजबिहारी जी सोनी 'बिहारी' द्वारा
परम्परागत तर्ज पर रचित सुप्रसिद्ध भजन ।

□ □ □ □ □ □ □ □



॥ श्री याम-शाय नमः ॥



॥ श्री योर हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षीय वर्ष

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

सांवलिया सरकार द्वार पर दरदी आयो है,
पण तूं लखदातार बता क्यांमे भरमायो है ॥

□

आँखियां ढूँढ-ढूँढ कर हारी,
क्यांमे अटक्यो तूं गिरधारी,
नैणां का सिणगार, द्वार पर दरदी आयो है ॥
पण तूं लखदातार बता

□

क्यूँ बण रहयो दिन-दिन काठो,
करता पै भी क्यांको घाटो,
थांके हाथ हजार, द्वार पर दरदी आयो है ॥
पण तूं लखदातार बता

□

मेरी थां बिन अटकी गाडी,
बाण थारी तरसाणौ की ठडी,
थारो ही आधार, द्वार पर दरदी आयो है ॥
पण तूं लखदातार बता

□

'शिव' श्यामबहादुर टूठो,
यो जस लुट्यो जाय तो लूटो,
सुन्दर श्याम सम्हार, द्वार पर दरदी आयो है ॥
पण तूं लखदातार बता

□ □ □

श्रद्धेय शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा राजस्थानी तर्ज 'जाड़ा बैमान' (आँखियां हो
रही लाल-गुलाल) पर आधारित अनुपम

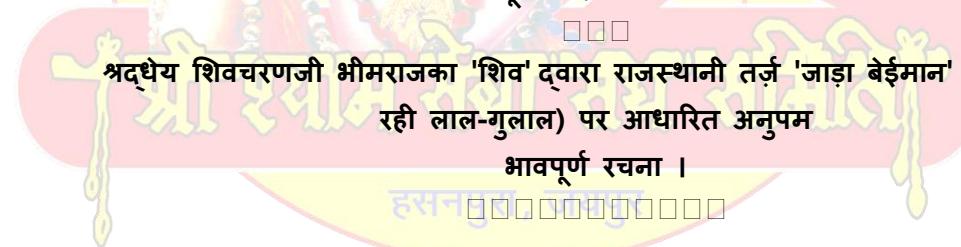
भावपूर्ण रचना ।

हसन

□ □ □ □ □ □ □ □ □



प्रानव-माधव सेवा के 30 गोरक्षाली वर्ष



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

लाखों को भव से आपने जब पार कर दिया,
फिर हमको आपने क्यूँ इंकार कर दिया ॥

□

आते हैं जब भी द्वार पर मिलते ही नहीं हैं,
कहते हैं दिल की बात पर सुनते ही नहीं हैं,
विनती को मेरी आपने बेकार कर दिया ॥

फिर हमको आपने क्यूँ इंकार

□

हम अपने दिल की बात यूँ कहते ना हर किसी से,
मजबूरी आ गई है कहते हैं बस तुम्हीं से,
मुझको तो मेरे गम ने लाचार कर दिया ॥

फिर हमको आपने क्यूँ इंकार

□

इस दिल का हम तुम्हे ही भगवान मानते हैं,
जाने क्या हम किसी को बस तुमको जानते हैं,
'बनवारी' क्यूँ नहीं मेरा उद्धार कर दिया ॥

फिर हमको आपने क्यूँ इंकार

□ □ □

श्री जयशंकर चौधरी 'बनवारी' द्वारा 'जो तुमको हो पसंद, वही बात
कहेंगे' गीत की तर्ज पर रचित अनुपम रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षीय वर्ष

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

हसनपुरा, जयपुर

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

: □□□□□□□□

ओ जी ओ गिरधारी नटवर नागरीया,
थारी नानी बाई रो भात भरण नै,
आज्यो जी साँवरा ॥

□

नरसी मेहता नै तो थारो आसरो,
म्हारी आज सगां मं लाज बचावण,
आज्यो जी साँवरा ॥

□

कद सें ऊबी जोवै थारी बाटडली,
थारी नानी बाई नै चूनड उढाबा,
आज्यो जी साँवरा ॥

□

दीनानाथ दयालु थारो नाम है,
म्हारी अटकी नैया पार लगावण,
आज्यो जी साँवरा ॥

□

थारे ही भरोसे जास्यूं साँवरिया,
भोळा भगतां री बात निभावण,
आज्यो जी साँवरा ॥

□

'ताराचन्द' भी थांसै साँवरा अरज़ करै,
थारे भगतां नै दरश दिखावण,
आज्यो जी साँवरा ॥

□

राजस्थानी तर्ज 'ओळ्यूं' पर स्व. ताराचन्द
जी शर्मा (सूरजगढ़) द्वारा 'नानी बाई' को
मायरों के अन्तर्गत रचित अमर रचना ।

□□□□□□□□

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

प्रान्तव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

इस योग्य हम कहाँ हैं, भगवन् तुम्हें मनायें,
फिर भी मना रहे हैं, शायद तूं मान जाये ॥

□

जब से जन्म लिया है, विषयों ने हमको धेरा,
ईर्ष्या-वासना ने, डाला है तन में डेरा,
सदबुद्धि को अहम ने, हरदम रखा दबाये ॥
इस योग्य हम कहाँ हैं, भगवन्

□

जग में जहाँ भी देखा, बस एक ही चलन है,
एक-दूसरे के सुख से, खुद को बड़ी जलन है,
कर्मों का लेखा-जोखा, कोई समझा ना पाये ॥
इस योग्य हम कहाँ हैं, भगवन्

□

अब कुछ ना कर सके तो, तेरी शरण में आये,
अपराध मानते हैं, झोलेंगे सब सजायें,
बस दर्श तूं दिखादे, कुछ और हम ना चाहें ॥
इस योग्य हम कहाँ हैं, भगवन्

□

निश्चय ही हम पतित हैं, लोभी हैं स्वार्थी हैं,
तेरा नाम जब पुकारें, माया पुकारती है,
सुख भोगने की इच्छा, कभी तृप्त हो ना पाये ॥
इस योग्य हम कहाँ हैं, भगवन्

□ □ □

'वो दिल कहाँ से लाऊँ, तेरी याद जो भुलादे'
गीत की तर्ज पर रचित अनमोल रचना ।

रचियता - अनात ।

हसन □ □ □ □ □ □ □ □ □

११ श्री गणेशाय नमः ॥

११ श्री वीर हनुमते नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□□□□□□□□

श्याम नै सुणादे, तेरै मन की बातां,
देर भले अंधेर नहीं है,
खबर सेंकी लेवै सदा आतां-जातां ॥

□

नानी बाई को भात भरयो सांवरो,
विष नै अमृत करयो यो भेरो सांवरो,
ऐंकी दया को छोर नहीं है,
यो ही तो है सेंको भाग्य विधाता ॥
श्याम नै सुणादे, तेरै मन की

□

जिन्दगी एक बार मोड़कर देखलै,
तार सें तार तूं जोड़कर देखलै,
मस्ती मिलैगी ऐसी कल्पना के बाहर,
प्रेमियों को कान्हा है सदा चाहता ॥
श्याम नै सुणादे, तेरै मन की

□

[श्याम ही अपना तन मन धन,
श्याम बिना नीरस जीवन,
रास का श्रोत श्याम सुमिरण,
करते रहो नाम चिन्तन]
धीरे-धीरे दूरी घटती रहेगी,
महसूस होगा ये पास आता ॥
श्याम नै सुणादे, तेरै मन की

□

[जब तक कुछ आभास ना हो,
समझो कुछ भी मिला नहीं]
अनदेखी कान्हा करता नहीं है,
सांवरे को सेवक दुखी ना सुहाता ॥
श्याम नै सुणादे, तेरै मन की

□

[आमने सामने जब बैठो,
फिर तो कोई बात बने,
सूर श्याम जैसे मिलते,
अपनी भी मुलाकात बने]
आपस में कुछ भी कहेंगे-सुनेंगे,
ना जाने कितनी बीतेंगी रातां ॥
श्याम नै सुणादे, तेरै मन की

□□□

'वो जब याद आये, बहुत याद आये'
गीत की तर्ज पर रचित अनुपम
सर्वप्रिय रचना, लेखक - अज्ञात ।

□□□□□□□□



॥ श्री याम शाली नमः ॥



॥ श्री योर हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

ॐ श्री श्याम सेवा समिति ॥

हसनपुर

ॐ श्री श्याम रसेवा संघ समिति ॥

००००००००००

सांवरिया ओ सांवरिया,
भा गई तेरी सुरतिया,
दिल में मेरे उत्तर गई,
तेरी चित्तवन धायल कर गई ॥

□

शीश मुकुट पै मोरपंख प्यारी,
लेवै हिलोरा हो रही मतवारी,
गालां नै सहलावै लट कारी,
तीर चलावै अँखियां कजरारी,
कातिल तेरी मुस्कान है,
या ले रही मेरी जान है,
छटा बड़ी मनभावणी,
ज्यूँ चन्दा बरणी चांदणी ॥
सांवरिया ओ सांवरिया.....

□

केसरिया बागो मन नै भावै,
कान मं कुण्डल हिचकौला खावै,
गळ वैजयंती माठा मन मोहवै,
कमर मं फेटो सतरंगी सोहवै,
पायल तेरी रुण-झुण बजै,
या बांसुरी कटि पर सजै,
धुँधुरु देवै ताल है,
तेरी टेढ़ी-मेढ़ी चाल है ॥
सांवरिया ओ सांवरिया.....

□

जगह-जगह सें मांगणिया आवै
भर-भर झोली श्याम सें ले ज्यावै,
आवणियै नै नहीं करै इन्कार,
खूब लुटावै टाबरियां पै प्यार,
तूं जाणले-पहचानले,
निर्मल कहवै यो मानले,
सेठ बड़ो दिलदार हैं,
अरे यो यारां को यार है ॥
सांवरिया ओ सांवरिया.....

०००

श्री निर्मल झुँझुनवाला 'निर्मल' द्वारा
'धीरे-धीरे बोल कोई सुन ना ले' गीत
की तर्ज पर रचित अनुपम रचना ।

००००००००००००



प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षाली वर्ष

ॐ श्री श्याम रसेवा संघ समिति ॥

हसनपुर निर्मल

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

बजौ घड़ावल बारे सें,
मन्दिर मं पड़ी पुकार, दर्दी हाजर है ॥

□

मनडै मांली जी, आयो कहण नै,
सुण लीज्यो लखदातार, दर्दी हाजर है ॥

□

मिनख जमारो जी, दिन-दिन सांपडै,
सुध लेल्यो पालणहार, दर्दी हाजर है ॥

□

जुल्मी जग सें जी, दाता हार कै,
थानै सूप दई पतवार, दर्दी हाजर है ॥

□

भयो नचीतो जी, थां पर साँवरिया,
देओ कारज मेरा संवार, दर्दी हाजर है ॥

□

श्यामबहादुर जी, रक्षा दास की,
'शिव' कर लई कृष्ण मुरार, दर्दी हाजर है ॥

□ □ □

मांली = मन की - अंदर की,
सांपडै = सिमटना, नचीतो = निश्चन्त

□ □ □

श्रद्धेय स्व. शिवचरण जी भीमराजका 'शिव'
द्वारा 'म्हारी सांवरै सें लागी प्रीत' भजन की
तर्जे पर रचित अनुपम भावपूर्ण रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 गोरक्षाली वर्ष

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

हसनपुरा, जयपुर

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

छुट्यो जावै रे साँवरा, यो धीरज म्हारो रे,
हिवडो यो पूछै रे, हिवडो यो पूछै रे,
हिवडो यो पूछै थांसै बात साँवरा ॥

□

मिलबा नै थांसू बाबा, आँऊ घणै चाव सैं,
बाबा थारै मंदरियै मं, जाऊ बडे चाव सैं,
देख म्हानै मुळकै रे, देख म्हानै मुळकै रे,
देख म्हानै मुळकै रे दिलदार साँवरा ॥
छुट्यो जावै रे साँवरा, यो.....



प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

जी म्हारो चाहवै थानै, साथीडो बणाऊ जी,
बाँह पकड़कै सागै, मैं तो ले आऊ जी,
फेर थांसू पूछूँ रे, फेर थांसू पूछूँ रे,
फेर थांसू पूछूँ दिल की बात साँवरा ॥
छुट्यो जावै रे साँवरा, यो.....

□

थांसै बिछड़कै थारी, बातां याद आवै जी,
ग्यारस की इक-इक बाबा, रात याद आवै जी,
कंईया नचावै तं, कंईया नचावै तं,
कंईया नचावै, सारी रात साँवरा ॥
छुट्यो जावै रे साँवरा, यो.....

□

खाटू सैं आकै सबसै, पूछूँ याही बात जी,
फेर कद आसी 'रोमी', ग्यारस की रात जी,
कद थांसै होसी जी, फेर कद होसी जी,
कद थांसै होसी, मुलाकात साँवरा ॥
छुट्यो जावै रे साँवरा, यो.....

□ □ □

श्री हरमहेन्द्रपाल सिंह 'रोमी' द्वारा राजस्थानी
गीत 'झीणी-झीणी रात मं, थारी ओळ्यूं आवै
रे' (पाढ़ा जातां साँवरा, म्हारो जी दुःख पावै
रे) की तर्ज पर रचित अनुपम रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

श्री श्वामरेण संग्रहालय

झूमो नाचो जी, है श्याम जनम दिन,
चंग बजावो जी, झूमो नाचो जी ।
ढप-ढोलक संग झाँझा-मंजीरा,
रंग जमाओ जी, झूमो नाचो जी ॥

1

द्वारे बंदनवार बंधाओ,
आंगण चौक पुराओ जी,
भांत-भांत का इत्तर छिड़को,
घर महकावो जी, झूमो नाचो जी ॥

माळी नै बुलवाय श्याम को,
सोहणो सो सिणगार करो,
नयो नवेलो बागो-दुपट्टो,
ये पहरावो जी, झमो नाचो जी॥

हलवाई बिठाय मिठाई,
खीर चुरमो बणवाओ,
रुच-रुच भोग लगावै बाबो,
श्याम जीभावो जी. झमो नाचो जी ॥

भगतां नै बुलवाय श्याम नै,
मीठा भजन सुणाओ जी,
कहवै 'रवि' आशीशां पाओ,
क क्लासो जी वासो ताजो जी

श्री रविन्द्र के जरीवाल 'रवि' द्वारा श्याम
हस्ताक्षर संग्रह
जन्मोत्सव पर रचित 'धमाल' ।

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□□□□□□□□□□

आणो पड़सी हे मनमोहन, थानै भगत बुलावै है,
दीनानाथ अनाथ का बंधू थानै सब ही बतावै है ॥

□

जब-जब भीड़ पड़ी भगतां पर,
तब-तब आप पथारया जी,
निर्बल का बल निर्धन का धन,
सब का काज संवारया जी,
हारया हुआ का साथी नाथ थे,
फिर क्यूँ देर लगावै है ॥

□

थारै भगत नै प्रभुजी म्हारा,
थारो एक सहारो है,
थे नहीं आया तो गिरधारी,
काई हाल हमारो है,
पल-पल बीतै बरस बरोबर,
इतनो क्यूँ तरसावै है ॥

□

इतणी देर करो काई मोहन,
मन म्हारो घबरावै है,
बाट उड़ीकत अँखियां म्हारी,
रो-रो नीर बहावै है,
अक्तवत्सल भगवान कहाकर,
अक्त को जीव जळावै है ॥

□

नैया म्हारी बीच भँवर मं,
केवटियो जाणे कठे गयो,
थारै भरोसे छोड़ी नैया,
तूं भी क्यांसे अटैक गयो,
बेगा आओ गिरवरधारी
नैया डूबी जावै है ॥

□

सूत्या हो तो जागो मोहन,
जागो तो प्रभु आओ जी,
आओ लाज बचाओ म्हारी,
ज्यादा ना तरसाओ जी,
'सोहनलाल' का हाल देखकर,
तूं भी क्यूँ चकरावै है ॥

□□□

स्व. सोहनलालजी लोहाकार द्वारा 'चांदी' की दीवार ना तोड़ी, प्यार भरा दिल
तोड़ दिया' गीत की तर्ज पर रचित भावपूर्ण प्राचीन रचना ।

□□□□□□□□□□

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षाली वर्ष

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

हसनाम समिति

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

००००००००००

कभी तो करोगे महर,
श्याम हम पर ॥

□

भरोसा हमें तो बस आपका है,
कहाँ है किनारा हमें क्या पता है,
तूफान हो या भंवर, श्यामसुन्दर ॥
कभी तो करोगे महर.....



॥ श्री यामशाली नमः ॥



॥ श्री योग हनुमते नमः ॥

पलकें बिछाये बैठे हैं मोहन,
कहीं भी हमारा लगता नहीं मन,
चौखट पे है बस नजर, श्यामसुन्दर ॥
कभी तो करोगे महर.....

□

बैरी ज़माना सितम लाख ढाये,
बेबस समझा चाहे हँसी भी उड़ाये,
छोडँ ना तेरी डगर, श्यामसुन्दर ॥
कभी तो करोगे महर.....

□

भरोसा हमें तो बस आपका है,
कहाँ है किनारा हमें क्या पता है,
तूफान हो या भंवर, श्यामसुन्दर ॥
कभी तो करोगे महर.....

□

जोड़ लिया जब तुमसे नाता,
तूं ही मेरा भाग्य विधाता,
कर लेंगे हम तो गुजर, श्यामसुन्दर ॥
कभी तो करोगे महर.....

□

'नन्दू' दिखा मत दिल के छाले,
आकर कन्हैया कभी तो सम्हालै,
कुछ दिन की है बस कसर, श्यामसुन्दर ॥
कभी तो करोगे महर.....

□ □ □

श्री नन्दकिशोर जी शर्मा 'नन्दू' द्वारा
'उठेगी तुम्हारी नजर धीरे-धीरे' गीत
की तर्ज पर रचित अनुपम रचना ।

००००००००००

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

मुरलीवालो सांवरियो मन आ गयो,
ठोकर खातो, गिरतो-पड़तो, बैंके नीड़ आ गयो ॥

□

मोरमुकुट नख बेसर सोहे,
कुण्डल की छवि न्यारी है,
युगलछवि की आभा ज्यं
सूरज ने किरण सँवारी है,
बिना पीयां ही आज नशो सो छा गयो ॥
ठोकर खातो, गिरतो-पड़तो.....

□

ैन कमल सा नील वरण,
गळ में वैजयन्ती माला है,
तिरछे चरण अरुण होठों पर,
बंशी का स्वर आला है,
जादूगारो जीव मेरो भरमा गयो ॥
ठोकर खातो, गिरतो-पड़तो.....

□

मणि माणक हीरा और पन्ना,
हिय पर हार अनूठो है,
जै मिलज्या नैणा सें नैणा,
मिथ्या है जग झूठो है,
खोयोड़ो अनमोल रतन मेरो पा गयो ॥
ठोकर खातो, गिरतो-पड़तो.....

□

शरद चन्द्र की पूरणमासी,
श्री वृषभानु दुलारी है,
कर में कमल भ्रमर से नैना,
मोहन पे मतवारी है,
श्री राधे संग हिवड़े श्याम समाय गयो ॥
ठोकर खातो, गिरतो-पड़तो.....

□

हसनपुर बन्द कर राखूँ आँखां की,
खिड़क्यां मं अनुपम जोड़ी हो,
युगल चरण मं 'शिव' मन मं,
प्रीत ना होवे थोड़ी हो,
रोम-रोम दर्शन कर हरषा गयो ॥
ठोकर खातो, गिरतो-पड़तो.....

□ □ □

अद्धेय स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव' द्वारा राजस्थानी गीत 'खड़ी नीम के नीचे,
मैं तो एकली' की तर्ज पर रचित अनुपम रचना ।

□ □ □ □ □ □ □ □

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

हसनपुर बन्द

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □

श्याम मेरे आ जाओ, तेरी दरकार है,
साथ छूटे ना बाबा, इतनी मनुहार है ॥

□

श्याम सेवा को तरसे, दीवाना भक्त ये तेरा,
दूर करदो अँधेरे, कर दो रोशन सवेरा,
लेलो अपनी शरण में, अपने ही पास रखलो,
मेरे दिल के भवन में, लगालो श्याम डेरा,
मेरी सूनी नज़र को, तेरा इंतज़ार है ॥
श्याम मेरे आ जाओ, तेरी



प्रानव-माधव सेवा के 30 गाँवशाली वर्ष

तेरी शक्ति को बाबा, मैंने पहचान लिया है,
तूं मेरा पालनहार, मैंने ये जान लिया है,
मेरा हर काम तुझसे, है मेरा नाम तुझसे,
कोई माने ना माने, मैंने ये मान लिया है,
मेरे सुख-दुःख का साथी, तूं ही हर बार है ॥
श्याम मेरे आ जाओ, तेरी

□

और क्या मांगू तुमसे, बस मेरा मान रखना,
लाज मेरी ना जाए, इतना सा ध्यान रखना,
और कुछ मैं ना चाहूँ, इतनी मेरी अर्ज़ है,
अपनों चरणों में सुरक्षित, मेरा स्थान रखना,
कहदो 'सोनू' की विनती, तुम्हे स्वीकार है ॥

श्याम मेरे आ जाओ, तेरी

श्री आदित्य मोदी 'सोनू' द्वारा 'थोड़ा सा प्यार
हुआ है' गीत की तर्ज पर रचित भजन ।

□ □ □ □ □ □ □ □

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

बोलै नारी, सुणो पियाजी, मानो म्हारी बात,
द्वारका थे जाओ ॥

□

माल उधारो मिलै नहीं, मुश्किल दाणे-दाणे की,
दोय वकत मं एक वकत, बिद लागै है खाणे की,
कैंया निकळे भूख पिया थारा,

दुर्बल हो गया गात, द्वारका थे जाओ ॥

□

आन गरीबी आ घेरी, बरतण ना फूटी कौड़ी,
तन का वस्त्र फाट गया, फाट्योड़ी चादर ओड़ी,
सीयां मरता फिरो रात-दिन,
थे दियां कांख मं हाथ, द्वारका थे जाओ ॥

□

जाकर भेट करो प्रभु सें, मन मं काँई आंट करो,
अपणै मन की बात प्रभु सें,
कहता काँई आंट करो,
सारी बातां समरथ है,
म्हारो देवर है बृजनाथ, द्वारका थे जाओ ॥

□

मोहन कहै मत भूलो प्रभु नै,
याद करो दो-चार घड़ी,
लख चौरासी घिर आई या, चौपड़ गंदे स्यार पड़ी,
चलती आई रीत प्रभु की,
दे दुर्बल नै साथ, द्वारका थे जाओ ॥

□ □ □

सुप्रसिद्ध भजन 'गाड़ी वाले मन्नै बिठाले' की
तर्ज पर रचित अति प्राचीन भावपूर्ण रचना ।

लेखक - 'मोहन' (अज्ञात)

□ □ □ □ □ □ □ □ □



॥ श्री याम समिति ॥



॥ श्री याम हनुमते नमः ॥

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

ॐ श्री रथाभसंख्या संघ समिति ॥

हे हनुमान दयानिधान, कर थोड़ा एहसान रे,
अटकी नैया पार लगादे, बालक अपना जान रे ॥

रोम-रोम में राम बसे हैं, रामकृपा तुम्हें हासिल है
राम के काज संवारे तूने, काम मेरा क्या मुश्किल है
भरत समान बताया भाई, ऊँची तेरी शान रे ॥
अटकी नैया पार लगादे, बालक.....

कुछ तो डर तूफान का, फिर नाव भी पुरानी है
लहरों के थपेड़े खा ये, बेशक छूब जानी है
ले पतवार हाथों में, अब कहना मेरा मान रे ॥
अटकी नैया पार लगादे, बालक.....

मेहनत सब बेकार हुई, हम जीती बाजी हार गये
किस्मत के हैं खेल निराले, बेबस और लाचार हुये
छूब रहे हैं बीच भँवर में, संकट तूं पहचान रे ॥
अटकी नैया पार लगादे, बालक.....

मेरे बस की बात नहीं, अब आना हो तो आ जाओ
काम हमारा नाम तुम्हारा, नैया पार लगा जाओ
देख तेरी नाराजी 'अनिल' अब, हूँ मैं तो हैरान रे ॥
अटकी नैया पार लगादे, बालक.....

सुप्रसिद्ध भजन 'दीनानाथ मेरी बात, छानी कोनी तेरै सैं' की तर्ज पर
श्री अनिल जी अग्रवाल (हसनपुरा) कीं कलम द्वारा रचित प्राचीन हनुमत वन्दना ।

हसनपुरा, जयपुर

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

ऐ जी म्हारै श्यामधनी खाटू वाले को,
जळवो न्यारो है ॥

स्वर्ण मुकुट कानां मं कुण्डल,
नैण बणै प्रभु के नभमंडल,
दर्शन करले रे मनवा चल,
नख बेसर मुख पान रच्यो, दिलदार हमारो है ॥
ऐ जी म्हारै श्यामधनी खाटू.....

हीरा जड़ियो हार गळै मं,
गलपटियो गुलजार गळै मं,
कैरूं को भण्डार गळै मं,
जे मेरी ले मान, दूध को भरयो दुहारो है ॥
ऐ जी म्हारै श्यामधनी खाटू.....

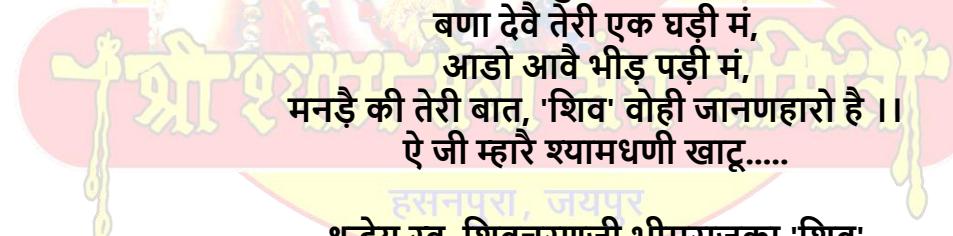
पाण्डव वंश उजागर किन्यो,
शीश दान हरि कूँ दे दिन्यो,
दीन जान मोहे अपना लिन्यो,
अटकी करदे पर, विपद मं श्याम सहारो है ॥
ऐ जी म्हारै श्यामधनी खाटू.....

श्यामबहादुर वो बिगड़ी नै,
बणा देवै तेरी एक घड़ी मं,
आडो आवै भीड़ पड़ी मं,
मनडै की तेरी बात, 'शिव' वोही जानणहारो है ॥
ऐ जी म्हारै श्यामधनी खाटू.....

हसनपरा, जयपर
श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव'
द्वारा 'रसिया' (हो रह्यो बाबा की नगरी मं)
तर्ज पर रचित भावपूर्ण रचना ।



मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा



ॐ श्री ईश्वाम सेवा संघ समिति ॥

राम लक्ष्मण के संग जानकी
जय बोलो रे हनुमान की,
करते भक्ति सदा राम की,
जय बोलो रे हनुमान की ॥

दीन-दुखियों का दाता कहूँ
या कहूँ हो अनाथों के नाथ,
अपने भक्तों के सर पे सदा
रहे तेरी दया का ये हाथ,
माला जपते तेरे नाम की ।
जय बोलो रे हनुमान की ॥

बल-बुद्धि हमें ज्ञान दो
नित्य पापों से हम सब डरें,
बैठ कर तेरे द्वारे पे हम
तेरे चरणों की पूजा करें,
ऐसी भक्ति दो निष्काम की ।
जय बोलो रे हनुमान की ॥

भवसागर खिलैया हो तुम
पार करते हो मझधार से,
निज भक्तों के संकट सदा
दूर करते बड़े प्यार से,
बात होती है जब आन की ।
जय बोलो रे हनुमान की ॥

कितने पतितों को पावन किया
जो तनमन से तेरा हो गया,
सेवक मण्डल तो पाकर तुझे
चिर भक्ति में यूँ खो गया,
मन में ज्योति जलै ज्ञान की ।
जय बोलो रे हनुमान की ॥

'जिंदगी की ना टूटे लड़ी' गीत की तर्ज़
पर रचित अनुपम श्री राम-हनुमान
वन्दना । रचियता - अज्ञात ।



मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

ॐ श्री ईश्वाम सेवा संघ समिति ॥

ॐ श्यामरसेवा संघ समिति

मेरा तो तूं ठिकाना, मुरली बजाने वाले,
ये दिल तेरा दीवाना ॥

दीदार की लगन है, आँख्यां नमीं-नमीं है,
थोड़ी दया तो करदे, तुझपे भी क्या कमी है,
करना नहीं बहाना, मुरली बजाने वाले ।
ये दिल तेरा दीवाना ॥ मेरा तो तूं ठिकाना....

बेखौफ चला आया, तुम पर ये जी टिकाया,
दामन तुम्हारे दर पे, इस दास ने बिछाया,
सुनले मेरा फसाना, मुरली बजाने वाले ।
ये दिल तेरा दीवाना ॥ मेरा तो तूं ठिकाना....

नजरे तेरी इनायत, इस दास पर अगर हो,
तो प्यारे श्यामसुन्दर, दिल मे मेरे सबर हो,
मुझको ना भूल जाना, मुरली बजाने वाले ।
ये दिल तेरा दीवाना ॥ मेरा तो तूं ठिकाना....

'शिव' श्यामबहादुर के, दाता हो तुम पुराने,
दर का तेरे भिखारी, आया तुम्हे लडाने,
जलवा तेरा सुहाना, मुरली बजाने वाले ।
ये दिल तेरा दीवाना ॥ मेरा तो तूं ठिकाना....

श्रद्धेय स्व. शिवचरणजी भीमराजका 'शिव'
द्वारा 'मौसम है आशिकाना' (पागल बना दिया
है - भजन) की तर्ज पर रचित अनुपम रचना ।

हसनपुरा, जपुर



॥ श्री श्यामरसेवा के 30 वर्ष की शुभावस्थीति ॥

॥ श्री श्यामरसेवा के 30 वर्ष की शुभावस्थीति ॥

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

म्हारै साँवरिया री भोत मन मं आवै
म्हारा साथीड़ा, म्हानै खाटू मं ले चालो जी ॥

हो गंगा भी न्हायो मैं तो जमुना भी न्हायो,
म्हारै श्यामकुण्ड री भोत मन मं आवै,
म्हारा साथीड़ा, म्हानै खाटू मं ले चालो जी ॥



रात नै सोऊँ म्हानै नींद कोनी आवै,
म्हारो मंदरियै मं जीव उड़-उड़ जावै,
म्हारा साथीड़ा, म्हानै खाटू मं ले चालो जी ॥

लाडू भी खाया मैं तो पेड़ा भी खाया,
म्हारै चूरमा री गाढ़ी मन मं आवै,
म्हारा साथीड़ा, म्हानै खाटू मं ले चालो जी ॥

ढोलक भी बाजै मजीरा भी बाजै,
म्हारै नाचबा री गाढ़ी मन मं आवै,
म्हारा साथीड़ा, म्हानै खाटू मं ले चालो जी ॥

'सोहनलाल' का भजन सुणालां,
म्हारै भजनां री भोत मन मं आवै,
म्हारा साथीड़ा, म्हानै खाटू मं ले चालो जी ॥

स्व. सोहनलाल जी लोहाकार द्वारा राजस्थानी गीत 'लड़ली झूमा-झूमा
ऐ, म्हारो गोरबन्द नखराळो' की तर्ज पर रचित अनुपम रचना ।

प्रानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षीय
समिति का जनना

हसनपुरा, जयपुर

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

घनश्याम म्हारै हिवडै मं बस जाओ,
बाबा श्याम,
मैं दास हँ चरण कमल को दास हँ,
ओ जी प्यारा श्याम ॥

जीवन नैया दास की, छूब रही मझधार,
जाणै कंईया पहुँचस्थूं भवसागर सैं पार,
घनश्याम म्हारो बेड़ो पार लगाओ बाबा श्याम
मैं दास हँ चरण कमल को दास....

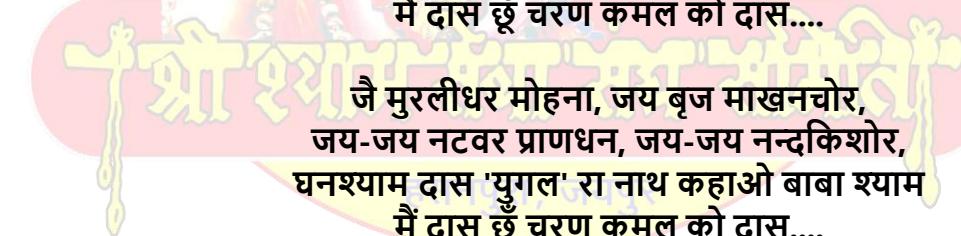
मोह-माया कै जाळ मं, दुःख पाऊँ दिन-रैन,
दर्शन दयो जी साँवरा, व्याकुल छै दो नैन,
घनश्याम थांको नटवर रूप दिखाओ बाबा श्याम
मैं दास हँ चरण कमल को दास....

करुणासागर आप छो, शरणागत प्रतिपाल,
मैं शरणागत दास हँ, काटो भव-जंजाळ,
घनश्याम म्हारा आवागमन छुड़ाओ बाबा श्याम
मैं दास हँ चरण कमल को दास....

ई थांका ब्रह्मांड मं, लख चौरासी जूण,
करणी का फल भोगतां, पाई मिनखा जूण,
घनश्याम अब तो थांकै धाम बुलाओ बाबा श्याम
मैं दास हँ चरण कमल को दास....

जै मुरलीधर मोहना, जय बृज माखनचोर,
जय-जय नटवर प्राणधन, जय-जय नन्दकिशोर,
घनश्याम दास 'युगल' रा नाथ कहाओ बाबा श्याम
मैं दास हँ चरण कमल को दास....

द्वंद्वाड़ी भाषा के सुप्रसिद्ध कवि एवं भक्त मनचोर श्री प्रेमभाया के
उपासक श्रद्धेय स्व. युगलकिशोर जी चतुर्वेदी 'युगल' द्वारा राजस्थानी
तर्ज 'उमराव' पर रचित सर्वप्रिय अति प्राचीन रचना ।



ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

कन्हैया रुलाते हो, जी भर रुलाना,
मगर आँसूओं में, नजर तुम ही आना ॥

तुम्हारे है ये चाँद, तारे हँसाओ,
तुम्हारे ही हैं ये, नजारे हँसाओ,
दशा पर मेरी चाहे, जग को हँसाना,
मगर उस हँसी में, नजर तुम ही आना ॥
कन्हैया रुलाते हो....



ये रो-रो के कहते हैं, तुमसे पुजारी,
क्यों फरियाद सुनते, नहीं तुम हमारी,
दया के समन्दर, दया अब दिखाना,
मगर उस दया में, नजर तुम ही आना ॥
कन्हैया रुलाते हो....

हो कितनी ही विपदा, ना विश्वास टूटे,
लगन श्याम चरणों की, मन से ना छूटे,
भले ही अनेकों, पड़े जनम पाना,
मगर हर जनम में, नजर तुम ही आना ॥
कन्हैया रुलाते हो....

'तुम्ही मेरे मंदिर, तुम्ही मेरी पूजा' गीत की
तर्ज पर रचित ओति प्राचीन एवं भावपूर्ण
भजन । लेखक - अज्ञात ।

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

हसनपुरा, जयपुर

ॐ श्री ईश्वर सेवा संघ समिति ॥

म्हारो बेड़ो लगा दीज्यो पार,
बावड़ी का बालाजी ।
बालाजी महाराज, अंजनी रा लाला जी ॥

सालासर सैं आवज्यो जी,
कोई अरज़ करे नर-नार, बावड़ी का बालाजी ॥
म्हारो बेड़ो लगा दीज्यो.....

शुभ दिन मंगलवार नै जी,
कोई व्रत करे नर-नार, बावड़ी का बालाजी ॥
म्हारो बेड़ो लगा दीज्यो.....

धीरत मिठाई चूरमो जी,
नारेलां री भरमार, बावड़ी का बालाजी ॥
म्हारो बेड़ो लगा दीज्यो.....

अन्न-धन मांगे लोगड़ा जी,
कोई बेटा माँगे नार, बावड़ी का बालाजी ॥
म्हारो बेड़ो लगा दीज्यो.....

सब भगतां री विनती जी,
कोई सुणियो पवनकुमार, बावड़ी का बालाजी ॥
म्हारो बेड़ो लगा दीज्यो.....

राजस्थानी गीत 'म्हारी सवा लाख री लूम' की तर्ज पर रचित
अति प्राचीन एवं भावपूर्ण हनुमत वन्दना । लेखक - अज्ञात ।

हसनपुरा, जयपुर

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

बजरंग बली, बजरंग बली,
भगतों की नाव धीरे-धीरे चली,
भवसागर में छूब ना जाये,
करियो भली थे करियो भली ॥

जय हनुमान ज्ञान-गुण सागर,
भरदो सबकी ज्ञान से गागर,
रामदूत अतुलित बल धामा,
देना हमें चरणों में ठिकाना,
तेरी शक्ति के आगे प्रभु,
शक्ति किसी की भी ना चली ॥
बजरंग बली, बजरंग बली.....

कंचन बरण बिराज सुवेशा,
अपनी किरपा रखियो हमेशा,
हाथ वज्र और ध्वजा बिराजे,
श्री राम की धून में नाचे,
तेरी भक्ति और शक्ति से,
श्रीराम की विपदा टली ॥
बजरंग बली, बजरंग बली.....

शंकर सुवन केसरी नन्दन,
करता हूँ चरणों मे वन्दन,
सूक्ष्म रूप धरि सियहि दिखावा,
विकट रूप धरि लंक जरावा,
रावण जैसे बलशाली की,
सोने की लंका पल में जली ॥
बजरंग बली, बजरंग बली.....

लाय संजीवन लखन जिलाया,
श्री राम को धीर बँधाया,
तुम उपकार सुग्रीवहीं कीन्हा,
राम मिलाय राजपद दीन्हा,
तेरी बल-बुद्धि के आगे,
हार गये सब कपटी-छली ॥
बजरंग बली, बजरंग बली.....

प्रभु मुद्रिका मैली मुख मांही,
माँ की गोद मे जाय गिराई,
तुम मम प्रिय भरत सम भाई,
अस कह श्रीपति कंठ लगाई,
इतनी किरपा श्री राम की,
तेरे सिवा किसी को ना मिली ॥
बजरंग बली, बजरंग बली.....

चारों जुग परताप तुम्हारा,
बजरंगी दुःख हरलो हमारा,
अष्ट सिद्धि - नव निधि के दाता,
हाथ जोड़कर तुम्हें मनाता,
'बनवारी' मुझे लेलो शरण में,
आऊँगा हरदम तेरी गली ॥
बजरंग बली, बजरंग बली.....

श्रद्धेय स्वामी तुलसीदास जी कृत श्री
हनुमान चालीसा के पदों पर आधारित
श्री जयशंकर चौधरी 'बनवारी' द्वारा
रचित अनुपम हनुमत भजन । तर्ज -
स्वरचित (अमृतवाणी आधारित)



॥ श्री गणेशाय नमः ॥



॥ श्री गणेशाय नमः ॥

प्रान्तव-माधव सेवा ३५

श्री श्याम संघ
पुरा, जयपुर

॥ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री खीर हनुमते नमः ॥

बालासा थानै कुण सजायो जी,
म्हारो मनडो हर लिन्यो, थारी सूरत मतवारी ॥

थारै हाथ मं घोटो, लाल लंगोटो जी,
थारै लाल सिन्दूर चढै, थे देव हो बलकारी ॥

थारो उत्सव आयो, मन हषायो जी,
सब झूम-झूम नाचै, जय बोलै हैं थारी ॥

थे राम नाम की, धून मं मतवाळा जी,
है अजर-अमर गाथा, है माया गजब थारी ॥

माळा नै तोड़ी, सीनै नै चीर दियो,
हे अंजनी का लाला, जय हो जय हो थारी ॥

सेवकिया थारा, लाड लड़ावै जी,
थारी सूरत पर बाबा, 'बनवारी' बलिहारी ॥

श्री जयशंकर चौधरी 'बनवारी' द्वारा राजस्थानी गीत 'बाईसा रा बीरा,
जैपुरियै जाईज्यो जी' की तर्ज पर रचित अनुपम रचना ।

हसनपुरा, जयपुर

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥



॥ श्री यामशाय नमः ॥



॥ श्री योर हनुमते नमः ॥

भक्ति और शक्ति का दाता,
राम चरण से जिनका नाता,
म्हारा बजरंगबली, म्हारा बजरंगबली ॥

राम बिना जिनको कुछ भी ना भाये,
राम में हरदम जो ध्यान लगाये,
राम करे जो भी बजरंग कराये,
पर ना कभी दिल मे, अभिमान लाये ॥
म्हारा बजरंबली, म्हारा बजरंगबली

जिनके हो सिर पर प्रभु कर हमेशा,
ऐसा ना सेवक अभी तक है देखा,
प्राण ना प्यारे प्रभु जिनको प्यारे,
ऐसे ही हैं वो पवन के दुलारे ॥
म्हारा बजरंबली, म्हारा बजरंगबली

रावण को ललकारा लंका में जाके,
लक्ष्मण बचाये ये पर्वत उठाके,
राम भी जिनको भरत सम बताये,
काल भी जिनसे है आँखें चुराये ॥
म्हारा बजरंबली, म्हारा बजरंगबली

राम की भक्ति का मारग बता दो,
बाधा अनेकों उन्हें तुम हटा दो,
राम से कैसे मिलन हो हमारा,
'श्याम' कहे करदो कारज हमारा ॥
म्हारा बजरंबली, म्हारा बजरंगबली

'नदिया चले, चले रे धारा' गीत की तर्ज
पर स्व. श्यामसुन्दर जी शर्मा 'पालम
वालों' द्वारा रचित हनुमत वन्दना ।

मानव-माधव सेवा के 30 वर्षों की वर्षा

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति ॥

हसनपुरा जयपुर

ॐ श्री श्याम सरेषा संघ समिति ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री वीर हनुमते नमः ॥

श्याम का नाम मुझे मस्त बना देता है,
श्याम सागर में छब जाता हूँ मैं,
दर्दो-गम दिल के भूल जाता हूँ मैं ॥

जब भी पुकारूँ मैं, मेरे बंशी बजैया को,
हर बार देखा है, मेरे हमदम कन्हैया को,
आके चुपके से वो, मेरे सपने में वो,
तान मुरली से गङ्गाब की, सुना देता है ॥
श्याम का नाम मुझे.....

कई बार तो ये दिल, बड़ा गमगीन होता है,
उस वक्त साँवरिया, मेरे नजदीक होता है,
होश रहता नहीं, कुछ भी कहता नहीं,
मीठी मुस्कान से दिल को, लुभा लेता है ॥
श्याम का नाम मुझे.....

मैं याद में उसकी, सभी कुछ भूल जाता हूँ,
मैं लेके उसका नाम, खुशी के गीत गाता हूँ,
श्याम सरकार है, बड़ा दिलदार है,
आज 'बनवारी' तुझे दिल से, नमन करता है ॥
श्याम का नाम मुझे.....

श्री जयशंकर चौधरी 'बनवारी' द्वारा 'जाने क्यूँ लोग मुहब्बत किया करते हैं'
गीत की तर्ज पर रचित अनुपम रचना ।

ॐ श्री श्याम सेवा संघ समिति



॥ श्री गणेशाय नमः ॥



॥ श्री वैष्णवे हनुमते नमः ॥



जय श्री श्याम